नव भारत

के

नव युवकों

को

समर्पित

प्रस्तावना

आज जर्मनी की ओर समस्त संसार की आंखें लगी हुई हैं। जिस जर्मनी का कल तक गत महायुद्ध का हर्जाना देते २ कचूमर निकल रहा था, वही आज गौरवपूर्ण मुस्कराहट के साथ मूछों पर ताव देता हुआ संसार के सब से अधिक उन्नत राष्ट्रों में सिर ऊँचा किये हुये खड़ा है। जो जर्मनी कल तक पद दलित, दिवालिया और परतन्त्र था, वही आज विजय गर्वित, धनवैभव सम्पन्न और स्वतन्त्र है। आज जर्मनी के पास संसार में सब से प्रबल हवाई सेना है। उसकी जल और स्थल की सैनिक शक्ति भी उपेक्षणीय नहीं है। व्यापारिक जगत् में उसने फिर महायुद्ध के पहिले जैसा सम्मान प्राप्त कर लिया है। सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि यह सारी उन्नति उसने केवल कुछ मास और वर्षों में ही करली है।

निःसंदेह जर्मनी की शीघ्रता पूर्वक इतनी बड़ी उन्नति करने वाला व्यक्ति ऐडल्फ हिटलर है। एक मध्यम श्रेणि के मनुष्य से यह आशा नहीं की जा सकती थी कि वह इतनी शीघ्र

इतना बड़ा कार्य सफलता पूर्वक कर सकेगा। अपनी इस शीघ्रता पूर्वक उन्नति करने की शक्ति के कारण कहना पड़ता है कि निश्चय से ही हिटलर एक महान् आत्मा है। जेनेरिल गोएरिंग ने हिटलर के चरित्र चित्रण की अपने ग्रन्थ की भूमिका में कितने सुन्दर दार्शनिक शब्दों का उपयोग किया है —

"Ideas are eternal they hang in the stars, and a man must be brave and strong enough to reach it up to the stars and fetch down the fire from heaven and to carry the torch among men"

'विचार नित्य होते हैं और वह आकाश के तारों में लटकते रहते हैं। मनुष्य को उन तारों तक पहुंचने के वास्ते पर्याप्त रूप में धीर और प्रबल होना आवश्यक है, जिससे वह उस अग्नि को आकाश से लाकर उसी की मशाल का प्रकाश मनुष्यों को दे सके।

इन शब्दों के ऊपर किसी टीका टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है। यह अवश्य है कि हिटलर ने निस्संदेह नशनल सोशियलिज्म अथवा नाजीवाद के सिद्धांतों को आकाश के तारों में से उतारा है, और उसी की मशाल के प्रकाश में उसने जर्मनी को इतना उन्नत राष्ट्र बना डाला। उपरोक्त शब्दों से प्रगट है कि हिटलर केवल एक सामान्य पुरुष ही नहीं है, वरन् उसकी इतिहास के अब तक के सबसे बड़े महापुरुषों में गणना की जानी चाहिये। इसी कारण हमने भी उसको अपने इस ग्रन्थ में महान् पद से विभूषित किया है।

प्रस्तुत पुस्तक में जर्मनी के राष्ट्रीय भाव तथा प्राचीन इतिहास का साराश देते हुए उसके महायुद्ध में सम्मिलित होने के कारणों पर प्रकाश डाला गया है। फिर महायुद्ध में उसकी असफलता के कारण स्वरूप उस आंदोलन का इतिहास दिया गया है, जिसके कारण जर्मनी पन्द्रह वर्ष तक दासता के बंधन में जकड़ा हुआ पड़ा रहा। युवक हिटलर गत महायुद्ध में एक सामान्य लैंस कार्पोरल था। कुछ वर्ष के पश्चात् ही इस युवक ने अपनी पीड़ित मातृभूमि के कष्ट को सहन न कर सकने के कारण देशसेवा की दीक्षा ले ली। और अंत में उसने चिरकाल तक अनेक प्रकार का राजनीतिक संयम करने के पश्चात् सन्मुख होकर नेशनल सोशियलिज्म के सिद्धांतों की स्थापना की। सन् १९१९ ई० से हम उसको फिर कार्यक्षेत्र में खुला युद्ध करता हुआ पाते हैं। जेनेरल गोएरिंग प्रत्येक कार्य में उसका दाहिना हाथ रहा। निदान सन् १९३३ के जनवरी मास में उसका तपश्चरण पूर्ण हुआ और वह जर्मनी का चैंसेलर बनाया गया। इससे केवल उसके दल वालों के ही संकट दूर नहीं हुए, वरन् जर्मन राष्ट्र में फिर नव जीवन का संचार हुआ। हिटलर और गोएरिंग ने दस मास में ही इतनी उन्नति कर ली कि निश्चय ही उसको जर्मनी का पुनर्निर्माण कहना चाहिये।

सन् १९३४ ई० के मध्य में जर्मनी के राष्ट्रपति वृद्ध फील्ड मार्शल हिंडेनबर्ग का देहान्त हो गया, जिससे उनके पश्चात् हिटलर ही चैंसेलर होने के साथ २ जर्मनी का राष्ट्रपति भी बनाया गया।

जर्मनी के निःशस्त्रीकरण परिषद्, राष्ट्रसंघ से पृथक् होने तथा राइनलैण्ड पर सैनिक अधिकार करने का कुल का समाचार इस पुस्तक में दिया हुआ है। हिटलर के इस साहसपूर्ण कार्य से समस्त पश्चिमीय जगत् में आश्चर्य और आतंक छा गया।

अब समस्त संसार को विदित हो गया कि वर्तमान जर्मनी कल का पददलित और नियत जर्मनी नहीं है, वरन् यह एक ऐसा पराक्रमी सिंह है जो अपने शत्रुओं के द्वारा आक्रमण किये जाने पर उनसे सब प्रकार से लोहा लेने के लिये तयार है।

इसका वही परिणाम हुआ जो ऐसी परिस्थिति में हुआ करता है। अभी तक सब उसको निर्बल राष्ट्र समझ कर उसकी उपेक्षा करते थे। किन्तु अब उसको एक बलवान राष्ट्र पाकर सब कोई मित्रता के लिये उसका मुंह जोहने लगे।

इटली के भाग्य विधाता साइनर मुसोलिनी ने इस कार्य का श्रीगणेश किया। और रोम में चार शक्तियों का समझौता हुआ। इसके पश्चात् इंगलैण्ड की बारी आई। इंगलैण्ड के परराष्ट्र सचिव सर जान साइमन हवाई जहाज पर बैठ कर बर्लिन गये और वहां उन्होंने ऐडल्फ हिटलर के परराष्ट्र विभाग से वार्तालाप किया। यद्यपि इस वार्तालाप के परिणामस्वरूप कोई नयी सन्धि नहीं हुई, किन्तु इससे अन्तराष्ट्रीय क्षेत्रों में हिटलर और जर्मनी की साख और प्रतिष्ठा हो गई। इसके पश्चात् आस्ट्रो-जर्मन पैक्ट ने तो यूरोप के राजनीतिक क्षितिज में ही खलबली उत्पन्न करदी है।

इस समय फ्रांस और रूस जर्मनी के शत्रु हैं। चाहे शेर और बकरी में सन्धि हो जावे, किन्तु फ्रांस और रूस की जर्मनी के साथ कभी सन्धि नहीं होगी। प्रस्तुत पुस्तक में भी इस विषय की ओर पर्याप्त संकेत किया गया है। वर्तमान राजनीति में इंगलैण्ड और जर्मनी का पारस्परिक व्यवहार अच्छा है। आस्ट्रिया और इटली से उसका मित्रता का सम्बन्ध है। इस प्रकार जर्मनी का स्थान यूरोप की राजनीति में इस समय अत्यन्त सम्मानपूर्ण है।

मातृभाषा हिन्दी आज भारत की राष्ट्रभाषा बनती जा रही है। खेद की बात है कि राष्ट्रभाषा बनने वाली भाषा में अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर बहुत ही कम लिखा गया है। प्रस्तुत पुस्तक से न केवल इस विषय में राष्ट्रभाषा के एक अंग की कुछ पूर्ति ही होगी, वरन् आशा है कि इस से विद्वानों का ध्यान इधर आकर्षित हो कर वह भी इस प्रकार के साहित्य-निर्माण के कार्य को आरम्भ कर देंगे।

जो दशा जर्मनी की सन १९१९ से लगा कर सन् १९३२ तक थी, लगभग वही दशा भारत की आज भी है। नाजीदल के आन्दोलन, उनकी सभाओं में विघ्न, उन पर लाठी चार्ज, उनका जेल यातना और गोलियों की बौछार को सहन करना इस प्रकार की घटनाएं हैं, जिनका अनुभव कांग्रेस की दीक्षा लेने वाले अनेक भारतवासी भी कर चुके हैं। दोनों का उद्देश्य रक्तहीन क्रान्ति था। अन्तर दोनों में यह है कि नाजीवाद अपने उद्देश्य

में सफल हो गया है, जब कि कांग्रेस अभी तक युद्धक्षेत्र में डटी हुई है। कांग्रेस वीरों के युद्ध के अनुभव में चार चांद लगाने के उद्देश्य से ही प्रस्तुत पुस्तक में नाज़ी आन्दोलन का पूर्ण विस्तार के साथ वर्णन किया गया है।

पिछले दिनों राष्ट्रपति हिटलर ने भारत के विषय में कुछ ऐसे शब्द कह दिये थे, जिसका सभी भारतीय नेताओं ने एक स्वर से विरोध किया था। किन्तु उसके थोड़े दिनों के पश्चात् ही बर्लिन से आये समाचारों से पता चल गया था कि हिटलर का आशय भारतवासियों का दिल दुखाना कदापि नहीं था।

हिटलर बराबर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिये उद्योग करता रहता है। भारतवर्ष के हृदय का अध्ययन तो वह विशेष रूप से जर्मनों को कराना चाहता है। संस्कृत शिक्षा का जितना उत्तम प्रबन्ध जर्मनी में है इतना संसार भर में कहीं भी नहीं है। अभी २ जुलाई मास में वहां म्यूनिक विश्वविद्यालय में आधुनिक भारतीय भाषाओं की शिक्षा के लिये एक भारतवासी प्रोफेसर की नियुक्ति की गई है।

यह हो सकता है कि कुछ पाठक इस ग्रन्थ में नाज़ीवाद का पक्षपात करने का दोषारोपण करें, किन्तु उनको स्मरण रखना चाहिये कि किसी आन्दोलन, धर्म, अथवा सम्प्रदाय का अध्ययन उसी के नेता, आचार्य अथवा धर्मप्रवर्तक के शब्दों में करना चाहिये। ऐसा न करने की दशा में उक्त अध्ययन निश्चय से ही अधूरा रहेगा। इस ग्रन्थ का एक बड़ा भाग स्वयं हिटलर की

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, M O Ph

काव्य साहित्य-तीर्थ आचार्य,
प्राच्यविद्यावारिधि, आयुर्वेदाचार्य,
भूतपूर्व प्रोफ़ेसर बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी।

पुस्तक 'मेरा युद्ध' (My Struggle) तथा जेनेरल गोयरिंग की पुस्तक 'जर्मनी का पुनर्जन्म' (Germany Reborn) के आधार पर लिखा गया है। उचित स्थलों पर उनके वाक्यों और पूरे २ पैरों को भी ज्यों का त्यों ले लेने में सकोच नहीं किया गया है। ऐसा करने का उद्देश्य केवल यह था कि पाठक नाजीवाद को उसके प्रवर्तकों के शब्दों में ही समझ लें।

आशा है कि पाठक इस पुस्तक को अपना कर मेरे उत्साह को बढावेंगे।

नं० ८११ धर्मपुरा, देहली। } चन्द्रशेखर शास्त्री,
१—८—१९३६

विषयानुक्रमणिका

—

हिटलर महान्

अथवा

जर्मनी का पुनर्निर्माण

प्रथम अध्याय

जर्मनी के अतीत पर एक दृष्टि

जर्मन जाति आर्य जाति है—जर्मनी को यदि यूरोप का हृदय कहें तो सम्भवतः अनुचित न होगा। यह अपनी भौगोलिक तथा राजनीतिक दोनों ही प्रकार की स्थितियों के कारण यूरोप का हृदय है। वह यूरोप महाद्वीप के पश्चिम की ओर मध्य में स्थित है। मध्य में होने के कारण उसकी सीमाए तीन ओर से अन्य राष्ट्रों से घिरी हुई हैं। समुद्र उसकी केवल उत्तरी सीमा को ही छूता है। यहाँ का जलवायु मध्यम है। भूमि उपजाऊ है।

यूरोप के अन्य अनेक देशों की अपेक्षा जर्मनी का इतिहास प्राचीन है। यह आदि आर्य जातियों का निवास स्थान था। वर्तमान जर्मन लोग उन्हीं आर्यों की सन्तान हैं, जिनके हम भारतवासी हैं। दोनों में अन्तर केवल इतना है कि हमको आर्यजाति में उत्पन्न

होन का गौरव न हो कर दास होने के कारण लज्जा है, जब कि प्रत्येक जर्मन को अपने आर्य होने का अभिमान है। यहां तक कि वह अपने विशुद्ध आर्य जर्मन रक्त में अन्य किसी रक्त का मिश्रण होने देना पसन्द नहीं करते।

प्राचीन आर्य जातियों के इतिहास के पर्यालोचन से पता चलता है कि मध्य एशिया में फैलने वाली आर्य जातियों का एक भाग तो भारत में आ गया तथा दूसरा यूरोप के मध्य में जा बसा। वर्तमान् यूरोपियन जातियां उन्हीं आदि पुरुषों की सन्तान हैं। इन जातियों के विकास के साथ ही साथ इनकी सभ्यता का विकास भी होता गया। फलतः इन लोगों के रहन-सहन तथा धर्मावलम्बन में भी बड़ा भारी परिवर्तन हो गया। इस परिवर्तन के कारण आज यूरोप की लगभग सभी जातियां अपनी उस प्राचीन सभ्यता को भूल गई हैं। यह सभ्यता यदि कहीं सुरक्षित है, तो केवल जर्मनी में। यद्यपि जर्मनी से ही यूरोप के मत मतान्तरों का विकास हुआ है, किन्तु जर्मनी आज भी उस प्राचीन सभ्यता को नहीं भूला है, और यही कारण है कि आज जर्मन लोग अपने आप को आर्य (Aryan) कहने में गौरव का अनुभव करते हैं।

जर्मनी की सभ्यता प्रियता

कहा जाता है कि जर्मन शब्द प्राचीन संस्कृत शब्द 'शर्मण' का ही रूपान्तर है। मध्य यूरोप में आकर बसने वाले आदि आर्य अपने आपको 'शर्मण' कहा करते थे। इन शर्मण जातियों ने निवास स्थान का नाम ही

कालान्तर में जर्मनी हो गया। संस्कृत में शर्मण ब्राह्मणों को कहते हैं। अतः कई इतिहासज्ञों का अनुमान है कि जर्मन लोग उन्हीं प्राचीन आर्य ब्राह्मणों की सन्तान हैं, जिनके वंश में भारतवासी ब्राह्मण उत्पन्न हुए हैं। जर्मन लोगों की ब्राह्मणों के समान नीतिज्ञता तथा विचारशीलता को दृष्टि में रखते हुए यह बात बहुत कुछ संभव जान पड़ती है। प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय के जन्म दाता मार्टिन लूथर जर्मन ही थे। इसके अतिरिक्त यूरोप के राजनीतिक क्षेत्र में हलचल मचाने वाले बिस्मार्क भी जर्मन ही थे।

संस्कृत विद्या के द्वारा भी जर्मनी और भारत का घनिष्ट सम्बन्ध है। जर्मनी में संस्कृत का प्रचार आविष्कार की दृष्टि से तो भारत से भी अधिक है। स्वयं जर्मन भाषा भी प्राचीन वैदिक संस्कृत भाषा का ही रूपान्तर है।

यद्यपि संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषा है, किन्तु भारत से बाहिर इसका जर्मनी के अतिरिक्त और कहीं भी विशेष आदर नहीं है। जर्मन भाषा में सभी भारतीय विषयों पर अनेक मौलिक ग्रंथ हैं।

जर्मनी में संस्कृत के बड़े २ धुरन्धर विद्वान हैं। प्रसिद्ध विद्वान मैक्समूलर जर्मन ही थे। पंजाब विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर श्रीयुत ए० सी० वुलनर भी जर्मन ही थे। आपके अतिरिक्त हर्ट्‌ वान ग्लैसेनप आदि अन्य अनेक धुरन्धर विद्वान् आज जर्मनी में ही नहीं, वरन् संसार भर में संस्कृत का प्रचार

कर रहे हैं।

वेद आदि ग्रन्थों को देखने से पता चलता है कि प्राचीन आर्य बड़े भारी वैज्ञानिक थे। उनकी वैज्ञानिक बुद्धि का उत्तराधिकार भारतवासियों को न मिलकर जर्मनों को ही मिला है। आज जर्मन जाति संसार में सब से अधिक विज्ञान जानती है। इन्होंने विज्ञान सम्बन्धी अनेक आविष्कार किये हैं। अन्य जातियों ने जर्मनों की देखा देखी ही विज्ञान क्षेत्र में प्रवेश किया है। विशेष कर अंग्रेजों ने तो यह विद्या जर्मनी से ही सीखी है।

जर्मनी का प्राचीन इतिहास

यूरोप के मध्य में खुले मैदान में पड़े रहनेके कारण जर्मनी की राष्ट्रीयता, उसकी राज्य सीमा तथा उसका जाति अभिमान अठारहवीं शताब्दी तक भी विकसित नहीं हुए थे। इससे पूर्व का जर्मनी अनेक जातियों की राजनीतिक दलबन्दियों का केन्द्र था। इस समय जर्मनी के विभिन्न राज्य एक दूसरे के ही विरुद्ध लड़ते रहते थे, जिससे जर्मनी को हानि होती रही और दूसरी जातियों को उसका लाभ पहुंचता रहा।

जर्मनी की कोई प्राकृतिक सीमा नहीं है। यह कभी ऐसा सदस नहीं रहा, जिसके दुर्ग समुद्र और पर्वत थे। यह तो यूरोप के ठीक मध्य भाग में खुली हुई छावनी के समान सदा उस प्रकार पड़ा रहा है कि इसकी रक्षा का भार उसके अपने निवासियों पर ही रहा है।

पोप शार्लमेन को राजमुकुट पहिना रहा है।

पृष्ठ ४

चार्ल्स महान् अथवा शार्लमेन

जर्मन राज्य का सूत्रपात सन ७५१ में पिपिन (तृतीय) ने किया था। यद्यपि उस समय इस देश का नाम जर्मनी न था, और न वह केवल वर्तमान जर्मनी का ही शासक था, किन्तु आगे चलकर इस राजा के वंशजों के उद्योग से ही जर्मन साम्राज्य का निर्माण हुआ। सन् ७६८ में पिपिन की मृत्यु के पश्चात् उसका कनिष्ठ पुत्र चार्ल्स राजा हुआ। इतिहास में यह चार्ल्स महान् अथवा शार्लमैन के नाम से प्रसिद्ध है। चार्ल्स महान् का राज्य काल इधर उधर चढाइयां करने में ही बीता। रोम के पोप से इस वंश की बड़ी घनिष्ठ मित्रता थी। पोप को इन पिता पुत्रों स बड़ी भारी सहायता मिली थी। अत एव सन ८०० ई० को बड़े दिन के अवसर पर, जब चार्ल्स रोम में सेंट पीटर के गिर्जे में झुका हुआ प्रार्थना कर रहा रहा था तो पोप ने उसके सिर पर एक सुवर्ण मुकुट रख कर उसको सम्राट् घोषित किया। उसका राज्य जर्मनी, फ्रांस और इटली सभी में फैला हुआ था। यद्यपि वह जर्मन जाति का था (फ्रैंक जाति जर्मन अथवा ट्यूटोन जाति का ही एक भाग है), जर्मन भाषा बोलता था और जर्मन भूमि पर ही रहता था, तथापि इस समय तक उसे फ्रांस और जर्मनी दोनों ही अपना २ राष्ट्रीय वीर मानते हैं। उसका प्रभाव समस्त यूरोप पर था।

उसके राज्य में दो सभाएं थीं। पहिली तो जन साधारण की सभा थी, जो 'डाइट' कहलाती थी। यह प्रथा ट्यूटोन लोगों

म बहुत दिनों से चली आ रही थी। दूसरी सभा में कुछ चुने हुए अधिकारी बैठते थे। इनका मुख्य कार्य राजा को केवल सलाह देना था।

यह सम्राट् चौदह वर्ष तक सम्राट् रहकर सन् ८१४ में मर गया। उसके पश्चात् उसका पुत्र लुई (धर्मात्मा) सम्राट् हुआ। यह अपने पिता के समान बुद्धिमान् अथवा प्रबल न था। यह पूर्णतया पोप के आधीन था।

वर्डून की सन्धि

सन् ८४० में लुइ भी तीनों पुत्रों–लुई, लोथेयर और चार्ल्स को छोड़ कर मर गया। सन ८४३ में इन तीनों में वर्डून स्थान की प्रसिद्ध सन्धि हुई, जिसके अनुसार साम्राज्य को तीनों ने बराबर २ बांट लिया। राइन नदी के पूर्व का भाग लुई को मिला। चार्ल्स को रोन नदी के पश्चिम का भाग, और इन दोनों के बीच का पहिला देश जो उत्तरी सागर से भूमध्य सागर तक फैला हुआ था, तथा जिसमें इस समय के हालैण्ड, वेलजियम, राइन का पश्चिमी भाग, स्वीजरलैण्ड तथा आधा इटली आदि देश हैं–तथा सम्राट् की पदवी लोथेयर को दी गई। यह सन्धि इस कारण विशेष महत्वपूर्ण है कि इसी विभाग के अनुसार कुछ दिन बाद चार्ल्स वाले पूर्वी भाग से जर्मनी तथा पश्चिमी भाग से फ्रांस की उत्पत्ति हुई। वास्तव में जर्मनी के प्राचीन इतिहास को तो इसी सन्धि से आरम्भ किया जाता है।

पवित्र रोमन साम्राज्य की स्थापना

चार्ल्स शक्तिमान शासक नहीं था। अतएव इसके वंश से

हाथ से राज्य एक शताब्दी के भीतर ही निकल गया और सरदारों ने सेक्सनी के ड्यूक हेनरी को राजा बनाया। हेनरी के पुत्र ओटो ने भी सन ९६२ ई० में शार्लमैन के समान रोम में जाकर पोप के हाथ से अपना राजतिलक कराया और सम्राट् की पदवी धारण की। इस समय से यह नियम होगया कि जर्मन सरदार जिसको अपना राजा चुनें वही इटली का राजा हो और वही पोप से अभिषिक्त होकर सम्राट् की पदवी धारण करे। इस समय से यह साम्राज्य 'पवित्र रोमन साम्राज्य' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शार्लमैन और ओटो में अनेक बातों की समानता होते हुये भी मुख्य भेद यह था कि शालमैन के राज्य में फ्रेंच, इटालीय, स्पेनिश आदि अनेक जातियों के लोग थे, परन्तु ओटो का साम्राज्य प्राय जर्मन था।

सन् ११३८ ई० में इस वश का साम्राज्य होहेनस्टीफन वश के हाथ में आया। इस वश के साथ पोप की सदा ही खटकती रही। अन्त में सन् १२६८ ई० में पोप के विरोध के कारण ही इस वश के अन्तिम सम्राट् कानसेडिनो को नेपिल्स के बाजार में सरे मैदान मार डाला गया। इस से साम्राज्य की दशा बड़ी खराब हो गई।

चार्ल्स महान के वश का अन्त होने के बाद ही जर्मनी के कुछ शक्तिमान् सरदारों तथा महन्तों ने राजा को चुनने का अधिकार प्राप्त कर लिया। ये चुनने वाले एलेक्टर कहलाते थे। इनके कारण राजा अत्यत निर्बल होने लगे। केन्द्रीय शक्ति को

निमल पाकर सरदार लोगों ने अपनी शक्ति बढ़ाली। परिणामत तेरहवीं शताब्दी के मध्य में होहेनस्टीफन वंश का अन्त होने के समय जर्मनी में दो सौ से अधिक रियासतें थीं। अब से जर्मनी का इतिहास इन्हीं रियासतों का इतिहास होगया, जिनमें दो वंश सब से अधिक शक्तिमान् प्रमाणित हुये-हैप्सबर्ग और होहेनजोलर्न। इस अशान्ति से अनेक नगरों ने पूर्ण स्थानीय स्वतन्त्रता प्राप्त करली।

सन् १२७२ ई० में नौवर्ष साम्राज्य पद रिक्त पड़े रहने के बाद हेप्सबर्ग वंश का रूडोल्फ सम्राट् बनाया गया। इसने युद्ध और विवाह आदि करके फिर जर्मनी के एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया। किन्तु इसकी विजय और शक्ति से डरकर चुनने वालों ने दूसरे वंशों से सम्राट चुनना आरम्भ किया। सन १३४७ ई० में बोहेमिया का राजा चार्ल्स चतुर्थ सम्राट् बनाया गया। इसका राज्य भी बहुत विस्तृत था। इसके बाद वन्जेल और सिजिसमंड सम्राट् हुए। सिजिसमंड के केवल एक पुत्री एलिजाबेथ थी, जिसका विवाह आस्ट्रिया के ड्यूक अलबर्ट के साथ हुआ था। सिजिसमंड के पश्चात् यह अलबर्ट द्वितीय के नाम से सम्राट् हुआ और इस प्रकार साम्राज्य पद फिर हैप्सबर्ग वंश के हाथ में आगया और बाद में इस साम्राज्य के अन्त तक इस वंश के हाथ में रहा। इस वंश के स्थायी होने के पूर्व ही कई नगरों ने अपने संघ बना लिये थे।

इस समय पवित्र रोमन साम्राज्य जो यूरोप का प्रधान राज्य समझा जाता था, मय से निर्बल था। यहा सम्राट भी पोप की भांति चुना जाता था। चुनने वालों में (जो एलेक्टर कहलाते थे) मेन्ज, कोलोन तथा ट्रीव्स के तीन आर्क बिशप (लाट पादरी) तथा सेक्सनी, बोहेमिया, ब्रेडनबर्ग और पेलेटाइन के चार शासक थे। सम्राट् की सहायता के लिये एक डाइट अथवा राजसभा स्थापित की गई थी, जिसमें तीन विभाग थे। पहिले में सातों चुनने वाले, दूसरे में अन्य रईस तथा राजा और तीसरे में स्वतन्त्र नगरों के निवासी थे। यही सभा यहां की व्यवस्थापक अर्थात् कानून बनाने वाली सभा थी। इन सभाओं में समग्र देश का प्रतिनिधित्व न होने से साम्राज्य के बाहिरी हिस्से बिना सींचे पेड़ की डालियों के समान सूख २ कर अलग होने लगे। इटली हाथ से निकल ही चुका था, हंगरी तथा बोहेमिया का रुख भी फिर रहा था। स्वीजरलैंड भी स्वतन्त्र होगया था तथा फरासीसी ने अनेक स्थानों पर कब्जा कर लिया था।

ऐसे समय में सम्राट् मेग्जिमिलियन सन् १४६३ में गद्दी पर बैठा। सन् १५१६ में इसके मरने पर चार्ल्स पचम सम्राट् हुआ। प्रोटेस्टेण्ट मत के प्रचारक मार्टिन लूथर ने अपना धर्म सशोधन का प्रचार इन्ही के समय में किया, जिससे उसको चार्ल्स पचम के क्रोध का भाजन भी बनना पड़ा।

तीस वर्षीय युद्ध

सन् १६१७ में फर्डिनेण्ड द्वितीय- जो पूरा कैथोलिक

था—सम्राट् हुआ। उसने प्रोटेस्टैण्ट लोगों के विरुद्ध दमन आरम्भ किया, जिससे सन १६१८ में 'तीस वर्षीय युद्ध' आरम्भ हुआ। यह युद्ध वास्तव में धर्म संशोधन के वास्ते था। इस में जर्मनी का सम्राट् एक ओर तथा समय २ पर पैलेटाइन, डेनमार्क तथा स्वीडन दूसरी ओर थे। किन्तु सन १६३५ तक इन सभी को पराजित होना पड़ा। इस समय फ्रांस में प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ मंत्री रिचल्यू का शासन था। इसने कैथोलिक होते हुए भी राजनीतिक कारणों से प्रोटेस्टैण्ट लोगों का पक्ष लेकर सन १६३५ में सम्राट् के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करदी।

सन् १६३७ में फर्डिनेण्ड द्वितीय की मृत्यु होने पर फर्डिनेण्ड तृतीय सम्राट् हुआ। इस समय तक अनेक स्थानों पर पराजित होने के कारण सम्राट् की अकल ठिकाने आगई थी। अतः सन १६४८ में वेस्टफालिया की प्रसिद्ध सन्धि हुई। इस सन्धि से तीस वर्षीय युद्ध और जर्मनी के धार्मिक झगड़ों का अन्त हुआ और यूरोप का नक्शा बिल्कुल बदल गया। यूरोप तथा विशेषकर जर्मनी के इतिहास में यह सन्धि बड़े महत्त्व की है। इस सन्धि से जर्मनी और भी अधिक विभागों में बट गया। ब्रेडनबर्ग, बवेरिया, सेक्सनी तथा अन्य छोटी २ रियासतें जिनकी संख्या साढ़े तीन सौ के लगभग थी पूर्ण स्वतन्त्र होगईं। उन्हें आपस में मिलने, लड़ने झगड़ने तथा विदेशों से सन्धि अथवा युद्ध करने का पूरा अधिकार होगया। केवल सम्राट का अधिकार नाम मात्र को रह गया। जर्मनी स्वतन्त्र रियासतों का एक ढीला

गुट बन गया। अल्सेस प्रान्त तथा मेज,टोल और वर्डून (लारेन प्रान्त में) फ्रांस के अधिकार में रहे। अल्सेस हाथ में आने से फ्रांस के लिये राइन प्रदेश और जर्मनी का द्वार खुल गया। परन्तु अल्सेस का झगड़ा फ्रांस तथा जर्मनी में रुक २ कर अनेक वर्षों तक चलता रहा और अब भी चल रहा है।

ब्रेडनबर्ग को पश्चिमी पोमरानिया खोने के बदले (जो स्वेडेन को देदिया गया था) मेग्डेबर्ग आदि कई स्थान मिले और यह जर्मनी में सब से बड़ा राज्य होगया। ब्रेडनबर्ग की उन्नति यहीं से शुरू हुई। यह राज्य शीघ्र ही आस्ट्रिया को हरा कर जर्मनी में प्रधान होगया।

स्वीजरलैन्ड और नीदरलैन्डस् इस सन्धि के अनुसार सम्राट् के शासन से हटा कर स्वतन्त्र घोषित किये गये। इस सन्धि से यूरोप के सभी राज्य अपना सगठन करने और विस्तार करने में लग गये। यद्यपि इससे सम्राट की शक्ति घटी और उनका स्थान फ्रांस तथा ब्रेडनबर्ग ने ले लिया, किन्तु इससे प्रशाका उदय हुआ, जिससे यह एक जर्मन राज्य के आदर्श को लेकर यूरोप की राजनीति में अवतीर्ण होसका।

इस युद्ध का जर्मनी पर उसी प्रकार बुरा प्रभाव पड़ा, जिस प्रकार महाभारत युद्ध का भारतवर्ष पर पड़ा था। जर्मनी की आबादी ६ करोड़ से घट कर १ करोड़ २० लाख रह गई। बर्लिन में २४००० में से केवल चौथाई मनुष्य शेष बचे। कृषि, उद्योग, साहित्य, कला, विज्ञान, सदाचार आदि सभी का ह्रास हुआ और सम्राट् की शक्ति भी जाती रही।

प्रशा का उत्थान

तीस वर्षीय युद्ध के पश्चात् जर्मनी में ब्रेन्डनबर्ग सब से प्रधान शक्ति बन गया। उस समय यहां का शासक फ्रेडरिक विलियम (एलेक्टर) था। यह होहेंज़ोलर्न वंश का था। उसके राज्य के तीन बड़े भाग थे। प्रशा, ब्रेन्डनबर्ग और क्लीव। उसने तीनों को संगठित करके एक कर लिया। सन् १६८८ में उसका देहांत होने पर उसका पुत्र फ्रेडरिक प्रथम गद्दी पर बैठा। इसके समय में स्पेन की गद्दी का युद्ध छिड़ा। फ्रेडरिक ने फ्रांस के विरुद्ध सम्राट लीयोपोल्ड को सहायता का वचन दिया, जिससे सम्राट् ने उसे राजा की उपाधि दी। अब तक यह केवल एक जागीरदार अथवा ड्यूक कहलाता था। अब यह 'प्रशा में एक राजा' कहलाने लगा। 'प्रशा का राजा' नहीं। क्योंकि प्रशा के पश्चिमी भाग पर अब भी पोलैन्ड का अधिकार था। अब से ब्रेन्डनबर्ग का नाम प्रशा में लुप्त होगया। यह प्रशा का प्रथम राजा था। यह इतिहास में फ्रेडरिक विलियम प्रथम (१७१३-४०) के नाम से विख्यात है। उसने अपनी सैनिक शक्ति को खूब बढ़ाया।

फ्रेडरिक महान्—(१७४०-८६) इसके समय में ही प्रशा ने अपने बड़े भारी उद्देश्य को हाथ में लिया। उद्देश्य था-जर्मन राष्ट्र की एकता के लिये युद्ध करना। इसके समय में प्रशा यूरोप की प्रथम श्रेणी की शक्तियों में गिना जाने लगा। उसने सप्तवर्षीय युद्ध करके इंगलैन्ड से मित्रता की और आस्ट्रिया को पराजित करके साइलेशिया लिया। फ्रेडरिक के शत्रु भी उसको

'महान्' पद से विभूषित किया करते थे। एक समय वह 'मनुष्यों में सब से अधिक राजसत्तासम्पन्न और राजाओं में सब से अधिक दयालु' था। अपने अतुलनीय कठोरता के जीवन में उसने छोटे से प्रशा को भावी रीश (जर्मन प्रजातन्त्र सभा) की नींव बना दिया।

नेपोलियन और पवित्र रोमन साम्राज्य का अन्त—

फ्रेडरिक महान् के अवसान के पश्चात ही फ्रांस में राज्य क्रान्ति हुई, जिसमें नेपोलियन बोनापार्ट यूरोप की राजनीति का कर्ता, हर्ता और धर्ता बन बैठा। उसने अनेक देशों को अपने आधीन कर लिया। जर्मन साम्राज्य के भीतर वह आष्ट्रिया तथा प्रशा की शक्ति को घटाना चाहता था। इस लिये उसने छोटा २ रियासतों को बलवान बनाया। उसने बर्टिमबर्ग और बवेरिया की जागीरों को रियासत बना दिया। फिर उसने जर्मनी की छोटी२ रियासतों सेक्सन बारसा, बवेरिया, बर्टिमबर्ग, ब्रेडनबर्ग, वेस्टफालिया आदि को मिला कर अपनी अध्यक्षता में 'राइन फेडेरेशन' (राइन संघ) स्थापित किया, और उसके साथ ही 'पवित्र रोमन साम्राज्य' का नाम भी मिटा दिया।

प्रशा में इस समय फ्रेडरिक विलियम तृतीय का राज्य था। उसने रूस से मेल करके सन् १८०६ में नेपोलियन से युद्ध किया। किन्तु नेपोलियन के मुकाबिले में दोनों ही पराजित हुए। फलतः पोलैन्ड के भाग पर से प्रशा का शासन जाता रहा।

किन्तु भाग्य सदा एक सा नहीं रहता। नेपोलियन को

स्पेन तथा रूस में अत्यधिक हानि उठानी पड़ी, जिससे उसकी शक्ति बहुत कम होगई। इस समय जर्मनी में स्टेन नामक एक महापुरुष ने फ्रांस के विरुद्ध आंदोलन किया। फलतः नेपोलियन के विरुद्ध रूस, प्रशा, इंगलैंड और स्वीडन ने गुट बनाया। आस्ट्रिया भी इस गुट में सम्मिलित होगया। पहिले तो नेपोलियन इन से जीत गया, किन्तु बाद में उसको पराजित होना पड़ा। संयुक्त सेनाओं ने उसको जर्मनी से निकाल दिया।

अब राइन कन्फैडरेशन तोड़ दिया गया, और जर्मनी में ३६ रियासतों का गुट बना दिया गया। नेपोलियन हार कर एल्बा द्वीप को भाग गया। कुछ दिनों के पश्चात वह फिर वापिस आया। इस बार इंगलैन्ड तथा जर्मनी की संयुक्त सेनाओं ने उसको वाटरलू के मैदान में बुरी तरह से पराजित किया। इसके पश्चात् नेपोलियन कैद करके सेंट हेलेना भेज दिया गया, जहां उसकी सन १८२१ में मृत्यु हो गई।

वियाना कांग्रेस—नेपोलियन के पतन के पश्चात् यूरोपीय शक्तियों ने फिर यूरोप के निर्माण पर विचार किया। सब देशों की सीमायें निश्चित की गईं। प्रशा का आया सेक्सनी तथा राइन के पास के कुछ जिले मिले। इटली तथा जर्मनी में आस्ट्रिया का प्रभुत्व रखा गया। जिससे इन देशों में राष्ट्रीयता के विचार फैले और उन्होंने स्वतन्त्रता प्राप्त की।

जर्मनी का स्वतन्त्र अस्तित्व वास्तव में यहीं से आरम्भ होता है। सब प्रथम जर्मनी अपनी जन्मभूमि का पतन सहा न जा सका।

की अपेक्षा अधिक शक्तियुक्त बनाने का प्रयत्न करने लगा।

फ्रैंकफोर्ट की सभा—फ्रांस में उसके पश्चात सन् १८३० तथा १८४८ में फिर क्रान्तियां हुई। इन का प्रभाव भी समस्त यूरोप पर पड़ा। जर्मनी में भी अब स्वतन्त्रता के भावों ने उग्ररूप धारण कर लिया। पहले बेडन में विद्रोह हुआ, जिससे कुछ राजाओं ने डरकर शासन में सुधार किया। परन्तु प्रशा, सेक्सनी, हेनोवर और बवेरिया अब भी दृढ़ बने रहे। किन्तु इसके पश्चात् उदार दल के नेता समस्त जर्मनों के लिये एक शासनविधि तयार करने के लिये फ्रैंकफोर्ट में एकत्रित हुए। इन्होंने निश्चित किया कि प्रति पचास सहस्र मनुष्य पीछे एक प्रतिनिधि चुना जाया करे। उन्होंने प्रशा को अपना नेता बनाया, किन्तु वहा के राजा फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ (१८४०—६१) ने यह पद अस्वीकार कर दिया। फलतः यह सभा अधिक सफल न हुई।

विलियम प्रथम

सन १८६१ में विलियम प्रथम प्रशा की गद्दी पर बैठा। उस ने सैनिक शिक्षा सब के लिये अनिवार्य कर दी और सेना भी दो लाख से बढ़ा कर पांच लाख कर दी। इस पर डाइट ने इस बढ़े हुए व्यय को अस्वीकार कर दिया। इसी समय राजा ने वॉन बिस्मार्क नाम के एक चतुर राजनीतिज्ञ को अपना प्रधान मन्त्री बनाया। उसके आते ही जर्मनी में एक नया युग उपस्थित हो गया।

बिस्मार्क

बिस्मार्क लग भग २५ वर्ष तक जर्मनी का भाग्य विधाता रहा। उसने जर्मनी को सर्व प्रधान सैनिक शक्ति बना दिया। इस समय का इतिहास बिस्मार्क की अपूर्व राजनीतिज्ञता, दूरदर्शिता तथा उद्देश्य प्राप्ति के लिये दृढ़ता का इतिहास है। वह कहता था कि बिना शस्त्र बल तथा युद्ध के जर्मनी में ऐक्य होना असम्भव है। डाइट के विरोध करते रहने पर भी वह सेना बढ़ाता रहा और डाइट के अस्वीकृत बजट को अपने विशेषाधिकार से पास करता रहा।

बिस्मार्क की अन्तराष्ट्रीय नीति भी बड़ी सफल रही। उसने रूस को युक्तिसे अपनी ओर मिला लिया, जिससे फ्रांस अकेला ही रह गया।

बिस्मार्क को अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिये तीन युद्ध करने पड़े—पहला डेनमार्क से, दूसरा आस्ट्रिया से तथा तीसरा फ्रांस के राजा नेपोलियन तृतीय से।

स्लेशिवग और हाल्स्टीन के निवासी जर्मन होते हुए भी डेनमार्क के राज्य में थे। उनके निवासी जर्मनी में मिलना चाहते थे। अतः १८६४ में जर्मनी ने डेनमार्क से युद्ध करके उन दोनों जागीरें उससे छीन ली।

बिस्मार्क का आस्ट्रिया के साथ सन १८६६ में युद्ध हुआ। पहिली बार इसी युद्ध में रेल तार आदि के द्वारा काम लिया गया था। इस युद्ध के द्वारा आस्ट्रिया का प्रभाव जर्मनी से

लुप्त होगया। इसके अतिरिक्त हैनोवर राज्य, हीस जागीर, तथा फ्रैंकफोर्ट नगर भी जर्मनी मे मिला लिये गये। अब बिस्मार्क ने अपने राज्य को नये ढग से संगठित किया। मेन नदी के उत्तर की रियासतों का प्रशा की आधीनता में एक सघ बनाया और शासनकार्य के लिये दो सभायें बनाई। पहली रीश्टाग–जिसमे सब रियासतों के प्रतिनिधि रखे गये तथा दूसरी बण्डेसराथ–जिसमें राजाओं की ओर से भेजे हुए प्रतिनिधि रखे गये। रीश्टाग नये नियम बनाती तथा बजट पास करती थी, परन्तु अंग्रेजी पार्लमेंट के समान उसे शासन तथा प्रबध करने का अधिकार न था और न मन्त्रीगण उसके प्रति उत्तरदाता होते थे। प्रबध करने वाले अफसरों के ऊपर एक चासलर होता था, और सब मन्त्री उसी के प्रति उत्तरदायी थे। पहला चासलर बिस्मार्क ही हुआ।

मेन नदी के दक्षिण की रियासतें–बवेरिया, वर्टिमबर्ग, बेडन और हीम स्वतत्र रहीं। परतु उन्हे नेपोलियन तृतीय से भय था। अत उन्हों ने भी प्रशा से सधि करली, जिससे उनकी सैनिक शक्ति पर प्रशा का अधिकार हो गया।

फ्रांस जर्मनी का युद्ध

सन् १८६८ में स्पेन के लोगों ने अपनी रानी आइजाबेला से ऊब कर विद्रोह करके उसे भगा दिया और होहेनजोलन वश के लीयोपोल्ड को सिंहासन पर बिठाया, परतु लीयोपोल्ड प्रशा के राजा का सम्बधी था। अत फ्रांस ने उसका विरोध किया

और जर्मनी ने समर्थन। अतएव सन् १८७० में दोनों में युद्ध आरम्भ होगया। इस युद्ध में दक्षिण की रियासतों ने भी जर्मनी का साथ दिया। फ्रांस की बड़ी भारी पराजय हुई। अंत में २ सितम्बर १८७० को सेडान के बड़े युद्ध में पौने दो लाख फ्रांसीसी सेना ने वान मोल्टके के सामने शस्त्रास्त्र रखकर आत्म समर्पण कर दिया। स्वयं सम्राट् नेपोलियन तृतीय भी कैद कर लिया गया।

इस भयंकर समाचार को सुन कर फ्रांस की जनता ने फिर प्रजातंत्र की घोषणा कर दी। विजयी जर्मन सेना ने चार मास बाद पेरिस में घेरा डाला। फ्रांसीसियों ने बड़ी वीरता से युद्ध किया, परन्तु वे हार गये। फ्रेंकफोर्ट की संधि से अल्सेस और लारेन जर्मनी को वापिस मिले, और फ्रांस को क्षतिपूर्ति के रूप में एक भारी रकम जर्मनी को देनी पड़ी, जिसके चुकने के समय तक फ्रांस के कुछ स्थानों में जर्मनी की सेना रख दी गई।

इस संधि से जर्मनी की एकता पूर्ण हुई। उसे अल्सेस-लारेन, मेत्ज तथा स्ट्रेसबर्ग मिले। यह विजय जर्मनी को उत्तर तथा दक्षिण की संयुक्त शक्ति से प्राप्त हुई थी। अत इससे जर्मनी वालों को ऐक्य के लाभों का पता चल गया और इसमें सब सम्मिलित होने की इच्छा उत्पन्न होगई। वर्षों का स्वप्न पूर्ण हुआ। १८ जनवरी सन् १८७१ ई० को वारसाई के राजमहल के दर्पण के हाल में विलियम प्रथम जर्मनी का सम्राट् घोषित किया गया। बिस्मार्क और सेनापति मोल्टके उसके दोनों ओर खड़े थे। यहीं

जर्मनी की रीश का भी जन्म हुआ था, अर्थात् बंडेसराथ तथा रीस्टाग में दक्षिणी रियासतों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित किये गये। सयुक्त जर्मनी की राजधानी बर्लिन नियत किया गया। कार्यकारिणी की सर्वोपरि शक्ति सम्राट् के ही हाथ में रही।

जर्मनी में एकता स्थापित करके बिस्मार्क ने उसे सुरक्षित करने की ओर ध्यान दिया। उसे भय था की अल्सेस और लारेन को लेने के लिये फ्रांस फिर प्रयत्न करेगा। सन् १८७९ ई० में फ्रांस और रूस के विरुद्ध जर्मनी में सन्धि हो गई। १८८२ में इटली भी उनमें सम्मिलित होगया। इस त्रिगुट ने १९१४ के यूरोपीय महायुद्ध में महत्त्वपूर्ण भाग लिया।

बिस्मार्क ने जर्मनी में साम्यवाद के प्रचार को रोका तथा मजदूरों के हित के कानून बनाकर उन्हें अपनी ओर कर लिया। वह व्यापार में संरक्षण का पक्षपाती था। अत उसकी इस नीति के कारण देश का उद्योग भी बढा।

जर्मनी क उपनिवेश

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दिनों तक जर्मनी के पास कोई उपनिवेश नहीं था। अत उसके प्रयासी लोगों को अमेरिका, स्पेन तथा इ गलैण्ड आदि के उपनिवेशों में बसना पड़ता था। १८७० की विजय से जर्मनी का उत्साह बढा और उसने विश्व-साम्राज्य स्थापित करना चाहा। जिस समय अफ्रीका के बटवारे के लिये यूरोपीय देशा में झगड़ा चल रहा था तो जर्मनी भी उसमें कूद पड़ा। उसन १८८४ म आरज

नदी के दक्षिण–पश्चिमी किनारे के मैदान पर अपना अधिकार घोषित कर दिया और भूमध्यरेखा के पास के अन्य देश भी दबा लिये । पूर्वी किनारे पर भी उसने जर्मनी से भी दुगने देश पर अधिकार कर लिया, जहां बड़ी २ झीलें हैं । यह देश ' जर्मन पूर्वी अफ्रीका ' कहलाया । इस प्रकार १८८४ और १८९० के बीच में जर्मनी ने चार विस्तृत भूमिभागों पर अधिकार कर लिया, जो टागोलैण्ड, कैमरून, जर्मन दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका तथा जर्मन पूर्वी अफ्रीका कहलाये ।

साम्यवादी दल की प्रगति

१८७० के युद्ध के बाद आकर्षण का केन्द्र पेरिस से बदल कर बर्लिन हो गया । वहां १८७१ से १८८८ तक पूर्वोक्त विलियम प्रथम का राज्य रहा । धीरे २ जर्मनी के उद्योग धन्धे बढ़े । बड़े बड़े २ कारखानों वाले नगर बस गए, तथा शीघ्र ही वहां श्रम और पू जी के झगड़े आरंभ हो गये । सन् १८७७ तक वहां साम्यवादी दल में पांच लाख मनुष्य हो गये । इन लोगों ने महाराज विलियम को भी मार डालने का प्रयत्न किया था। अल्सेस–लारेन को भी जर्मनी में मिलाने का इन्होंने विरोध किया था । यह लोग जर्मनी में प्रजातन्त्र भी स्थापित करना चाहते थे ।

१८७८ में पार्लमेंट के एक कानून द्वारा साम्यवादियों का दमन किया गया । इस नियम के कारण बारह वर्ष में ९०० मनुष्य देश–निर्वासित किये गये, और १५०० को कारागार की

दण्ड भोगना पड़ा। किन्तु दमन यहां भी निष्फल हुआ। साम्यवाद का प्रचार चुपचाप होता रहा।

यह सब बातें देख कर बिस्मार्क ने श्रमजीवियों के हित के नियम बना कर उन्हें अपनी ओर मिलाया। किन्तु लोगों का असन्तोष दूर न हुआ। साम्यवाद का प्रचार बढ़ता गया, जिससे अन्त में १६१८ की क्रान्ति हुई।

विलियम द्वितीय अथवा कैसर विलियम

मार्च १८८८ में विलियम प्रथम का ६१ वर्ष की आयु में देहान्त हुआ। उसके पश्चात् उसका बड़ा पुत्र फ्रेडरिक गद्दी पर बैठा। किन्तु वह बीमार था और तीन मास बाद ही मर गया।

फ्रेडरिक के बाद उसका पुत्र विलियम द्वितीय (जर्मनी का वर्तमान राज्य-च्युत कैसर) ७६ वर्ष की आयु में गद्दी पर बैठा। वह चुस्त, पराक्रमी तथा विचार शील था। यह प्रत्यक्ष था कि इस की और बिस्मार्क की नहीं बनेगी तो भी बिस्मार्क ने स्वय त्याग-पत्र न दिया। दोनों में आरंभ से ही मतभेद हो चला। अन्त में उपनिवेशों के प्रश्न पर दोनों में झगड़ा हो गया, जिससे बिस्मार्क को सन् १८६० में त्यागपत्र देना पड़ा। इसके पश्चात् बिस्मार्क आठ वर्ष तक और जीवित रहा। वह अपना नाम संसार के सब से बड़े राज-संस्थापकों में लिखा कर १८६८ में मर गया।

विलियम ने पार्लमेंट को भी अपने आधीन कर लिया

और उसे शक्ति-हीन बना दिया। मंत्रिमंडल का उत्तरदायित्व सम्राट् के प्रति हो गया, पार्लमेण्ट के प्रति नहीं।

विलियम के समय में जर्मनी में औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति बहुत हुई। जर्मन माल भारत आदि अनेक देशों में जाने लगा। इससे जर्मनी बहुत मालदार होकर इंगलैंड तथा अमेरिका का प्रतिद्वन्द्वी बन गया।

विलियम ने जल सेना को बढ़ाने के लिये प्रति वर्ष चार नये जहाज बनाने की आज्ञा दी।

उसने मुसलमानी देशों की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया और अपने को इस्लाम धर्म का संरक्षक बताकर १८९८ में फिलिस्तीन की यात्रा की। उसने धीरे २ साइप्रस, एशिया माइनर तथा मेसोपोटामिया में अपना व्यापार बढ़ाना आरंभ किया। उसने बर्लिन से फारिस की खाड़ी तक रेल भी चलाई, जो १८८८ से १९०३ तक बनती रही।

जर्मनी की इस उन्नति से फ्रांस को भय हुआ। अतएव उसने इंगलैण्ड से मित्रता जोड़ ली। सन् १९०७ में रूस भी इधर आ मिला, जिस से इधर भी एक त्रिगुट बन गया। कुछ दिन बाद इटली भी जर्मनी और आस्ट्रिया को छोड़ कर इधर आ मिला। बस महायुद्ध के लिये इसी समय से दल निश्चित हो गये।

महायुद्ध

इस प्रकार यूरोप में महायुद्ध की तयारियां हो चुकी थीं।

आवश्यकता थी केवल एक चिंगारी पड़ने की, सो वह भी सर्विया में पड़ ही गई।

२६ जून १६१४ ई० को आस्ट्रिया का राजकुमार फर्डिनेण्ड सर्विया में मारा गया। उसका मारा जाना था कि आस्ट्रिया में सनसनी फैल गई। जर्मनी तो ऐसे मौके की ताक ही में था। उसने आस्ट्रिया को भड़का दिया। इस पर आस्ट्रिया ने सर्विया से राजकुमार फर्डिनेण्ड के घातक ४८ घंटों के अंदर अंदर मांगे। सर्विया के लिये यह कार्य कठिन था। फलत: आस्ट्रिया सर्विया पर टूट पड़ा।

उधर रूस का जार भी युद्ध की प्रतीक्षा में था, परंतु महायुद्ध आरंभ करने का श्रेय जर्मनी को ही दिया जाता है। उन दिनों जर्मनी के पास लड़ाई की इतनी सामग्री और सेना थी कि उसके अपने अनुमान के अनुसार जर्मनी फ्रांस को छ महीने के अंदर ? तहस-नहस कर सकता था। क़ैसर ने इसी आशा और विश्वास से युद्धक्षेत्र में पदार्पण किया था।

आस्ट्रिया के सर्विया पर आक्रमण करने पर फ्रांस ने उसकी रक्षा के निमित्त आस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। जर्मनी के लिये इतना ही काफी था। उसने आस्ट्रिया का साथ देने के बहाने से फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। इस पर रहा-सहा इंग्लैण्ड भी युद्ध में कूद पड़ा, और इस प्रकार शीघ्र ही समस्त यूरोप उबल पड़ा।

कहां छ महीने और कहां चार साल। जर्मनी और

क़ैसर के सब मान ढीले होगये। इधर अमेरिका भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध क्षेत्र में आ धमका। अंत में जर्मनी पराजित होगया। उसके सारे उपनिवेश छीन लिये गये।

जर्मनी में राज्य-क्रांति

१९१८ ई० में जर्मनी की अवस्था बहुत बिगड़ी हुई थी। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। अराजकता फैल चुकी थी। कराल दुर्भिक्ष मुंह बाए खड़ा था। महामारी फैली हुई थी। साम्यवादियों का ज़ोर बढ़ गया था, जिससे उन्होंने क़ैसर के विरुद्ध प्रबल आंदोलन किया हुआ था। बर्लिन में बड़ा भारी विप्लव हुआ। क़ैसर इस बढ़ती हुई अराजकता को न रोक सका। हताश होकर ६ नवम्बर १९१८ ई० को संसार विजय की कामना को अपने साथ लिये हुये ही उसने जर्मन-राज्य-सिंहासन का परित्याग कर दिया और हालैण्ड में आकर शरण ली। इसके पश्चात् वह जर्मनी में कभी नहीं गया।

यद्यपि महायुद्ध की जर्मन सेनाओं ने क़ैसर की अनुमति से ही शस्त्र डाले थे, किंतु शस्त्र डालते ही जर्मनी में विद्रोह होगया, जिससे क़ैसर को जर्मनी से भागकर हालैण्ड में शरण लेनी पड़ी और संधि करने का कार्य विद्रोहियों ने अपने हाथ में लिया।

वार्साई की संधि

जर्मनी के हार मान लेने पर संधि की पूरी शर्तों का मसौदा तयार करने के लिये विजयी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों की

एक सभा १८ जनवरी १६१६ को पेरिस में बैठी। २८ जून १६१६ को वारसाइ के प्रसिद्ध दर्पणों के हाल में—जिसमें १८७१ में विलियम प्रथम ने अपने को सम्राट् घोषित किया था—सन्धिपत्र पर एक ओर विजयी दल के प्रतिनिधियों और दूसरी ओर जर्मनी के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये। इस समय जर्मनी की ओर से मार्शल वान हिंडेनबर्ग खिड़कियों के नीचे खड़ा था। इन्हीं लोगों में किसी स्थान पर एक ऐसा व्यक्ति भी खड़ा था, जो अन्य असंख्य लोगों के समान अज्ञात, परंतु अन्य असंख्य वीरों से अधिक वीर था। संसार को पता नहीं था कि इसी सामान्य सैनिक का नाम जर्मन राष्ट्र के रक्षक के रूप में इतिहास की अमर कहानी में लिखा जाने वाला था। आगे जाकर इसी महान् व्यक्ति ने जर्मनी के संगठन और उसकी एकता को पूर्ण किया। यह व्यक्ति ऐडल्फ हिटलर था।

वारसाई की सन्धि से अल्सेस और लारेन फिर फ्रांस को दे दिये गये। जर्मनी की राइनलैण्ड की कोयले और लोहे की प्रसिद्ध खानों पर अन्तर्राष्ट्रीय अधिकार हो गया। जर्मनी की बहुत सी खानें फ्रांस को दे दी गईं। जर्मनी के सभी उपनिवेशों को छीन लिया गया, तथा उसकी स्थल और जलसेना इतनी कम कर दी गई कि वह फिर कभी युद्ध का नाम भी न ले सके। युद्ध का सामान तयार करने वाली जर्मनी की सब फैक्टरियाँ बंद करदी गईं। उसके सैनिक स्कूल भी तोड़ दिये गये। जर्मनी पर युद्ध के हर्जाने के रूप में एक अरब पौण्ड की रकम लादी गई।

इस सन्धि के अनुसार ही जेनेवा में राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई, जो यूरोपीय राज्यों की पंचायत थी।

प्रारंभ में दंड के रूप में जर्मनी को १० करोड़ पौंड प्रतिवर्ष ३७ वर्ष तक बराबर देते रहने के लिये विवश किया गया। ३७ वर्ष के बाद २२ वर्ष तक और भी १० करोड़ पौंड से कुछ कम रक़म प्रति वर्ष देने के लिये विवश किया गया। यह भी व्यवस्था की गई कि यदि प्रथम १० वर्ष में जर्मनी नक़द हरजाना न दे सके तो माल के रूप में निम्न प्रकार से हरजाना दे—

फ्रांस को	५ करोड़ २० लाख	प्रतिवर्ष
इंगलैण्ड को	२ ,,	,,
इटली को	१ ,,	,,
बेल्जियम को	६० लाख	,,
यूगोस्लेविया को	४० ,,	,,
अमरीका को	३० ,,	,,
रूमानिया को	१० ,,	,,

जर्मन प्रजातंत्र की स्थापना

११ फर्वरी १६१६ को जर्मन राजनीतिज्ञों ने एक अस्थायी सरकार (Provisional Government) की स्थापना की। फ्रेडरिक एवर्ट इसका प्रधान चुना गया।

समस्त स्थिति का निरीक्षण करके जर्मनी की भावी शासन-प्रणाली की व्यवस्था की गई, और सर्वसम्मति से ३ जून

१६१६ ई० को अस्थायी सरकार के स्थान में जर्मन प्रजातन्त्र की घोषणा की गई।

इस प्रजातन्त्र के पहले प्रधान फ्रेडरिक एबर्ट ही चुने गये। उनका शासन काल जर्मनी के इतिहास में महा विपत्ति का समय है।

इस जर्मन प्रजातन्त्र की व्यवस्था अत्यन्त दोष पूर्ण थी। प्रजातन्त्र के आधीन १७ स्वतन्त्र रियासतें थीं। इन रियासतों का एक डिक्टेटर होता था। यह डिक्टेटर अन्य प्रतिनिधियों की अनुमति से शासन कार्य चलाता था। परन्तु यह रियासतें प्रजातंत्र की केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा रीश के साथ नियमित तथा उचित रूप से सम्बद्ध नहीं थीं। रीश का उन पर पूर्ण अधिकार नहीं था। इसी त्रुटि के कारण बहुत से राजनीतिज्ञ इस व्यवस्था से सहमत नहीं थे।

इस के अतिरिक्त जर्मनी में इस समय अनेक दल थे, और उनमें कोई भी दल प्रभाव पूर्ण नहीं था। इन में से किसी दल के सम्मुख कोई राजनीतिक कार्य क्रम नहीं था। वारसाई संधि के कारण प्रजा पर इतना अधिक अर्थसंकट आया हुआ था कि देश में अकाल पर अकाल पड़ते जाते थे।

इसी समय २८ फर्वरी १६२५ ई० को प्रेसीडेंट एबर्ट का देहांत होगया, जिससे शासन कार्य भी कुछ समय के लिये स्थगित होगया। एबर्ट के समय में जर्मनी की दशा सब से अधिक पतित थी।

प्रेसीडेन्ट हिंडेनबर्ग

एवर्ट की मृत्यु के पश्चात् वॉन हिंडेनबर्ग जर्मनी के प्रधान चुने गये। यह २६ अप्रैल १९२५ को पदारूढ़ हुए। यह बड़े भारी राजनीतिज्ञ तो थे ही, भाग्यशाली भी थे। इनके समय में हिटलर के नाजी दल ने यहां तक जोर पकड़ा कि सन् १९३३ में इन्होंने हिटलर को ही चांसलर बना दिया। अन्त में २ अगस्त १९३४ ई० को इनका देहांत हो जाने पर इनके स्थान में ऐडल्फ हिटलर ही चान्सलर होने के साथ २ राष्ट्रपति भी बनाया गया।

ऐडल्फ हिटलर

वास्तव में जर्मनी को उसकी पतित अवस्था से उठाने वाला ऐडल्फ हिटलर ही है। यदि जर्मनी की राजनीति में हिटलर का पदार्पण न होता तो यह नहीं कहा जा सकता कि आज जर्मनी का क्या परिणाम होता। ऐसे महत्वपूर्ण कार्य को सम्पादन करने के कारण ही आज हिटलर को संसार के महापुरुषों में गिना जाता है। अत: अगले पृष्ठों में उसके जीवनचरित्र के ऊपर विस्तार से विचार किया जाता है।

द्वितीय अध्याय

हिटलर का बाल्यकाल

ऐडल्फ हिटलर का जन्म २० अप्रैल १८८९ ई० को अवेरिया के ब्रौनो (Brounou) नाम के नगर में हुआ था। ब्रौनो नगर यद्यपि एक छोटा सा नगर है, किन्तु जर्मनी तथा आस्ट्रिया की सीमा पर होने के कारण उसका स्थान कुछ महत्वपूर्ण है। इस प्रकार के सीमावर्ती नगर के निवासियों को आए दिन दोनों रियासतों के एक न होने की असुविधाओं का सामना करना पड़ा करता है। यही दशा ब्रौनो नगर की भी थी। उस नगर का बच्चा २ तक यह चाहता था कि किस प्रकार यह दोनों राज्य एक हो जाए तो उन आए दिन की असुविधाओं से पीछा छूटे। इस प्रकार हमारे चरित्रनायक को जन्म से ही राष्ट्र की गुत्थियों को सुलझाने के संस्कार मिले।

होश सम्भालते २ यह समस्याएं उसके सामने अधिका-

चिक बढती गई और वह सोचा करता कि यदि जर्मनी और आस्ट्रिया एक जर्मन पितृभूमि के नाम से एक नहीं हो सकते तो उनको अन्तर्राष्ट्रीय नीति में भी टाग लगाने का कोई अधिकार नहीं है। जब तक जमन राज्य प्रत्येक व्यक्ति को भर पेट रोटी न दे सके उसको किसी उपनिवेश की स्थापना करने का अधिकार नहीं है। ऐडल्फ हिटलर के मन में इस प्रकार के विचारों को बचपन से ही उत्पन्न करने का श्रेय उसके जन्म के गाव को है।

हिटलर के पिता कोई सम्पन्न व्यक्ति नहीं थे। किन्तु अपने परिश्रम द्वारा ही उन्होंने एक सरकारी पद प्राप्त कर लिया था। हिटलर की माता एक निर्धन किसान की लड़की थी वह बड़ी ही चतुर और दक्ष थी। उसने हिटलर का पालन पोषण बड़े लाड़ प्यार तथा सावधानी से किया। उसे चित्रकारी का बहुत शौक था। अत उसकी प्रबल इच्छा थी कि हिटलर एक विख्यात चित्रकार बन। इस आशय से उसन हिटलर को किशोरावस्था म ही चित्र बनाने सिखा दिये थे। परन्तु हिटलर का पिता उसको एक उच्च पदाधिकारी बनाना चाहता था। इसी उद्देश से उसन बालक हिटलर म आत्मगौरव तथा महत्वाकांक्षा के भाव भर दिय थ। किन्तु हिटलर को अफसर बनन की इच्छा बचपन से ही नहीं थी। उसको इस बात से घृणा होती थी कि एक व्यक्ति दास के समान बधा हुआ निश्चित घटा भर दफ्तर म बठा रह कर और अपन समय का

स्वय निर्णायक न होता हुआ केवल कागज काले करने में ही जन्म बितादे।

इन सब बातों का प्रभाव हिटलर के जीवन पर यह पड़ा कि वह बचपन से ही राष्ट्रीय (Nationalist) होगया और इतिहास को उसके यथार्थ रूप में समझने लगा।

हिटलर का स्कूल जीवन

थोड़ा बड़ा होने पर उसके पिताने उसको गाव के ही स्कूल में पढने बिठला दिया। इस स्कूल में एक वादवर्द्धनी सभा भी थी। विद्यार्थी लोग इसमें अनेक विषयों पर वाद विवाद करने के अतिरिक्त आस्ट्रिया और जर्मनी के सम्बन्ध पर भी अनेक प्रकार से टीका टिप्पणी किया करते थे। इसी सभा में एक बार हिटलर ने प्राचीन आस्ट्रिया राज्य की राष्ट्रीयता विषयक वाद विवाद में भी भाग लिया था। इस प्रकार इन नवयुवकों को उस समय ग्रामीण स्कूल में भी राजनीतिक शिक्षा मिल रही थी, जिस समय हमारे बालक अपनी भाषा के अतिरिक्त राष्ट्रीयता के विषय में कुछ भी नहीं जानते। इसका परिणाम यह हुआ कि युवक होते २ ही हिटलर जर्मन राष्ट्रीयता का कट्टर पुजारी बन गया। हिटलर की वर्तमान नाजी पार्टी का मूल आधार भी आज यही जर्मनी राष्ट्रीयता है।

हिटलर के यह विचार क्रमश अधिकाधिक परिपक्व होते गये, यहा तक कि वह पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही

राजवंश विषयक देशभक्ति और प्रचलित राष्ट्रीयता के भाव को अच्छी तरह समझने लगा।

स्कूल में हिटलर सदा ही अपने सहपाठियों में सर्वप्रथम आता रहा। उसमें बाल्यकाल से ही शासन की भू थी। वह अपने सहपाठियों के साथ नेता के समान व्यवहार किया करता था। उसकी आकृति चाल ढाल तथा वक्तृत्व शैली में कुछ ऐसा आकर्षण था कि सब सहपाठी उसकी ओर खिंच चले आते थे।

हिटलर का वियाना को प्रस्थान

परन्तु मनुष्य इच्छा कुछ करता है और विधाता कुछ और ही दिखाता है। हिटलर के इस सुखमय जीवन की इति-श्री होगई। अकस्मात उसके पिता का देहांत होगया। हिटलर पर यह बड़ा भारी वज्रापात था क्यों कि कुटुम्ब के एक मात्र वही अवलम्ब थे। पिता के मरते ही हिटलर अनाथ होगया। इस समय उसकी अवस्था सोलह वर्ष की थी।

अतएव इस समय हिटलर के सन्मुख उसकी आशा से पूर्व ही अपने लिये स्वतन्त्र जीवन का मार्ग बनाने का प्रश्न उपस्थित होगया। निर्धनता तथा अकिंचनता ने उसको इस विषय में शीघ्र ही कोई निर्णय करने पर बाधित कर दिया। उसकी पैतृक सम्पत्ति बहुत कुछ उसकी माता की रुग्णावस्था में व्यय हो चुकी थी। यद्यपि पिता की मृत्यु के पश्चात् अनाथ होने के कारण उसको राज्य की ओर से कुछ वृत्ति मिलने लगी थी किन्तु

वह भरण पोषण के योग्य पर्याप्त न थी। अतएव उसको स्वयं ही आजीविका का प्रबन्ध करने के लिये विवश होना पड़ा।

अन्त में स्वतन्त्र जीवन यापन करने का पूर्ण निश्चय करके वह एक सन्दूक में अपने कपड़े भरकर आस्ट्रिया की राजधानी वियाना को गया। उसको आशा थी कि जिस प्रकार पचास वर्ष पूर्व वियाना में उसके पिता का भाग्य खुल गया था उसी प्रकार उसका भी खुलेगा।

तृतीय अध्याय

वियाना में हिटलर

जिस समय हिटलर वियाना में आया तो उसके पास एक फूटी कौड़ी भी न थी। वह भूखा प्यासा नगर की गलियों और सड़कों में फिरता रहा। कोई उपाय न देख कर अन्त में सब ओर से निराश होकर उसने कुछ चित्र बनाये। परन्तु जब वह इन चित्रों को बेचने के लिये बाजार में लाया तो उनकी ओर किसी ने देखा भी नहीं। इस घटना से उसके हृदय को बहुत ठेस लगी उसने क्रोधित होकर चित्रकारी का कार्य छोड़ दिया तथा अन्य किसी कार्य को खोजना आरम्भ किया। परन्तु अर्ध शिक्षित युवक को नौकरी कौन देता? जब उसको अनेक स्थानों में घूमने पर भी कोई नौकरी न मिली तो उसने मजदूरी करने का निश्चय किया। अतः वह एक मकान बनाने वाले मिस्त्री के पास काम करने लगा।

इस प्रकार बड़ी भारी कठिनता के पश्चात् उसको आजीविका प्राप्ति में सुविधा मिली। उसका हृदय आरम्भ से ही भावुक था। वह बाजारों में फिरते हुए नागरिका के आमोद प्रमोद तथा विलासिता को देखकर दरिद्रों के दु ख से अधीर हो जाता था। मकानों की छत पर ईट चूना लगाते २ उसके मन में इसी प्रकार के उच्च विचार उठते रहते थे।

वियाना की स्थिति

वियाना में आस्ट्रियन साम्राज्य की अढाई करोड़ जनता की दशा का यथार्थ चित्र अंकित था। उसमें आमोद प्रमोद का बड़ा सुन्दर प्रबंध था। वहा के दर्बार का आंखों को चकाचौंध करने वाला प्रताप साम्राज्य की सम्पत्ति को चुम्बक के समान आकर्षित कर रहा था। वहा पर उच्च पदाधिकारियों, राज्याधिकारियों, कलाकारों और प्रोफेसरों के समूह से भी अधिक उन निर्धन मजदूरों का समूह था, जो अपनी अकिंचनता में आप ही पिसे जा रहे थे। राजमहल के चारों ओर सहस्रों बेकार चक्कर काटा करते थे, जिनमें से अनेकों के घर नहीं थे। उनको केवल सुनसान सड़कों और नालियों की गदगी के पास ही दिन बिताने पड़ते थे। इन सब बातों को देख कर हिटलर के हृदय में निर्धनों के प्रति अत्यंत सहानभूति होती थी।

तत्कालीन वियाना नगर एक राजनीतिक विद्यालय था

हिटलर के लिये वियाना में एक भारी विशेषता थी। यहा सभी प्रकार के तथा सब दलों के व्यक्तियों की उपस्थिति होने से

वियाना में उसको सामाजिक प्रश्न को अध्ययन करने का इतना अच्छा अवसर मिला, जितना दूसरे नगरों में सम्भव नहीं था। इस अध्ययन से हिटलर की रुचि सामाजिक कार्यों में अधिक बढ़ने लगी। उसने प्रत्येक प्रश्न का गंभीरता से अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। इस अध्ययन से उसको एक नये और अज्ञात संसार को जानने का अवसर मिला।

सन १९०६ तथा १९१० में हिटलर अपनी आजीविका अच्छी तरह उपार्जन करने लगा। अब उसका स्केचेस मैन और पानी के रंग की चित्रकारी का काम अच्छा चल निकला।

हिटलर का राजनीतिक दलों का अध्ययन

अपनी २० वर्ष की अवस्था तक हिटलर ने सामाजिक प्रजातन्त्रवाद और ट्रेड यूनियन आंदोलन दोनों का अध्ययन कर डाला। इस समय राजनीतिक आकाश में 'स्वतन्त्र ट्रेड यूनियन वाद' मंडला रहा था, जिससे प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को तूफान के बादलों के समान भय लग रहा था। हिटलर के ट्रेड यूनियन के महत्व को समझने तथा उनको अपने साथ ले लेने ही से आगे चल कर सामाजिक प्रजातन्त्रवाद को इतनी अच्छी सफलता मिली।

कुछ वर्ष और बीतने पर हिटलर के विचार इतने विस्तृत तथा गम्भीर होगये कि उसको उन में भविष्य में परिवर्तन करने का कोई कारण न मिला।

अभी तक हिटलर को यहूदियों के विषय में कुछ भी पता नहीं था। वियाना की बीस लाख जनसंख्या में दो लाख

यहूदी होने पर भी हिटलर को उनके विषय में कुछ भी पता नहीं था। किन्तु धीरे धीरे सामाजिक प्रजातन्त्रवाद के अध्ययन के साथ ही साथ उसको यहूदियों की वास्तविकता का भी पता लगा। उसको इस बात का पता चल गया कि यहूदियों का उद्देश्य पैसा कमाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता।

जर्मन सम्राट् विलियम कैसर के प्रति हिटलर के हृदय में बड़ी भारी भक्ति थी। वह उनकी निन्दा नहीं सुन सकता था। समाचार पत्र कैसर की निन्दा करते थे। हिटलर ने देखा कि उनके सम्पादक तथा व्यवस्थापक यहूदी ही हैं। उसने सामाजिक प्रजातन्त्र वादियों के साहित्य को उठा कर देखा तो उसके भी लेखक यहूदी ही थे, बड़े २ नेता, रीशरैट (Reichrat) के सदस्य ट्रेड यूनियन के सेक्रेटरी, संगठनों के सभापति अथवा आदोलक सभी यहूदी थे। इस समय उसको पता चला कि वास्तवक में राष्ट्र को बिगाड़ने वाले कौन हैं। सामाजिक प्रजातन्त्र वादियों का यथार्थ रूप जान लेने से उसकी अपने देश के प्रति भक्ति अत्यन्त दृढ़ होगई।

अब उसने मार्क्सवाद (Marxism) का अध्ययन करना आरम्भ किया। इस सब अध्ययन के कारण उसमें सब से बड़ा परिवर्तन यह हुआ कि वह एक निर्बल नागरिक बनने के स्थान पर यहूदियों का प्रबल विरोधी होगया।

चतुर्थ अध्याय

वियाना की तत्कालीन विचारधारा

जर्मन इतिहास के अतीत पर दृष्टि देते हुये बतलाया जा चुका है कि आरंभ में जर्मनी और आस्ट्रिया एक ही 'पवित्र रोमन साम्राज्य' के अंग थे, और उन पर जर्मन जाति का शासन था। पीछे यह भी बतलाया जा चुका है कि जर्मनी के चारों ओर पर्वत, खाई अथवा नदी रूप में कोई सीमा नहीं। अतएव जर्मन राष्ट्रीयता की किसी प्रकार कोई सीमा नहीं की जा सकती।

जर्मन आस्ट्रियन भाव

जर्मनी और आस्ट्रिया के बीच में इस प्रकार प्राकृतिक सीमाओं के अभाव से तथा दोनों राज्यों के अनेक शताब्दियों तक एक रहने से आस्ट्रिया के अन्दर इस प्रकार के जर्मन-आस्ट्रियन भाव उत्पन्न होगये जिनकी राष्ट्रीयता का मूल जर्मन

संस्कृति थी। जर्मनी और आस्ट्रिया के प्राय निवासी जर्मन थे। देश की अर्थनीति भी प्राय जर्मनो के ही हाथ में थी। सब बड़े २ कार्य भी जर्मनो के हाथ में ही थे। आस्ट्रिया के बड़े २ शिल्पी तथा अफ़सर भी प्राय जर्मन ही थे। व्यापार भी यहूदियों की अपेक्षा जर्मनो के हाथ में ही अधिक था। सेना और सैनिक अफ़सर भी प्राय जर्मन थे। कला और विज्ञान भी जर्मन थे। वियाना के बड़े से बड़े संगीत, वास्तु विद्या, शिल्प तथा चित्रकारी के विद्वान् भी जर्मन थे, यहा तक कि वैदेशिक नीति भी प्राय जर्मनों के हाथ में ही थी। यद्यपि कुछ इन गिने हंगरी वासी भी वैदेशिक विभाग में थे।

अतएव आस्ट्रियन साम्राज्य का निर्माण उसको जर्मन सभ्यता से प्रथक रख कर नहीं किया जा सकता था।

आस्ट्रिया के जर्मन देश होते हुए भी वियाना के राजधानी होने से उसमें अनेक जातिया आकर बस गई थीं। हंगरी की सभ्यता तो जर्मन सभ्यता से बहुत कुछ प्रथक थी। उसकी राजधानी बुडापेस्ट सदा ही वियाना के साथ प्रतिस्पर्धा करती रहती थी। प्रेग (Prague), लेम्बर्ग (Lemburg) लैबक (Laiback) तथा अन्य केन्द्र भी इसी प्रकार वियाना तथा उसके जर्मन-आस्ट्रियन भाव के साथ प्रति-स्पर्द्धा में लगे हुए थे।

इस प्रकार आस्ट्रिया हंगरी राज्य किसी एक जाति का राज्य न होकर अनेक जातियों का सम्मिश्रण था। फलत:

उसके अन्दर एक राष्ट्रीयता का भी अभाव था। इसके विरुद्ध जर्मनी में केवल एक जर्मन जाति ही थी। जर्मनी की रीश में भी जर्मनों के अतिरिक्त अन्य किसी जाति के प्रतिनिधि नहीं थे। वियाना में इस प्रकार जर्मन सभ्यता को पाकर हिटलर का जर्मन भाव प्रबल हो उठा। उसके हृदय में अपनी पितृभूमि के प्रति प्रेम उमड़ आया, और उसको अपने जर्मन होने पर गौरव का अनुभव होने लगा।

आस्ट्रिया में जर्मनों की स्थिति

आस्ट्रिया की पार्लमेंट का नाम रीशरैट (Reichsrat) है। यह स्पष्ट है कि उस का जन्म भी इंगलैंड की पार्लमेंट के उदर से ही हुआ था। उसी संस्था का एक दूसरा पौधा सन् १८४८ की क्रान्ति के पश्चात् कुछ थोड़े बहुत बदले हुए रूप में वियाना में लगाया गया। इंगलैंड के ही समान यहां भी दो सभाएं बनाई गई।

आस्ट्रिया वासी जर्मनों का भाग्य उनकी रीशरैट की सभ्या के ऊपर निर्भर था। बहुत समय तक वहां की पार्लमेंट में जर्मनों का बहुमत रहा। किन्तु साम्यवादी और प्रजातन्त्रवादी इस प्रकार एक जाति की उन्नति को नहीं देख सकते थे। वह आस्ट्रिया हंगरी की अन्य जातियों के समान उनको भी विभक्त रूप में ही रखना चाहते थे। शीघ्र ही आस्ट्रिया में वहां के सब बालिगों को मताधिकार दिया गया। इससे रीशरैट में जर्मनों का बहुमत कम हो गया और उनके इने गिने सदस्य ही रीशरैट में

रह गये । अब राज्य में से जर्मनवाद को निकाल फेंकने के मार्ग में कोई बाधा शेष नहीं रही ।

किन्तु जर्मन लोग इससे निराश न हुए । उनका विश्वास था कि जिस प्रकार सौ मूर्ख मिल कर भी एक बुद्धिमान् मनुष्य के जैसे उपयोगी नहीं बन सकते उसी प्रकार सौ कायर भी कोई वीरतापूर्ण निर्णय नहीं कर सकते । उन्होंने अन्य संस्थाओं में जर्मन प्रतिनिधित्व प्राप्त करने का यत्न किया, किन्तु परिमित शक्ति से वहां कुछ भी न किया जा सकता ।

आर्क ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड

थोड़े दिनों के ही पश्चात् रीशरैट में अनेक दल हो गये । उनका प्रधान उद्देश्य अपने राज्य में से जर्मन तत्त्व को मिटा देना था । जिस समय आर्क ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड युवराज बना उस समय से तो राज्य को जेक (Czeck) बनाने के निश्चित कार्यक्रम पर आचरण किया जाने लगा । जिन नगरों में केवल जर्मन ही रहते थे उन में भी दूसरी २ भाषाएं प्रचलित की गईं । इस प्रकार के कार्य से जेक लोग वियाना को अपना प्रधान नगर समझने लगे । युवराज के इस प्रकार जर्मन विरोधी होने का कारण उसकी पत्नी थी । वह एक जेक कांउटेस (Czeck countess) और जर्मनों की विरोधी थी । वह और उसका पति मध्य यूरोप में कैथोलिक प्रणाली पर स्लैव राज्य स्थापित करना चाहते थे ।

इस सब का परिणाम यह हुआ कि आस्ट्रिया राज्य में पान

पंचम अध्याय

म्यूनिक में हिटलर

म्यूनिक में आकर हिटलर का हृदय वास्तव में प्रसन्न हो गया। वियाना के समान यहां अनेक जातियों का सम्मिश्रण न हो कर केवल एक जर्मन जाति का ही निवास था।

इस समय जर्मनी विलियम कैसर की अध्यक्षता में अपने चरम उत्कर्ष पर था। उसकी जनसंख्या में प्रति वर्ष ६ लाख की वृद्धि हो रही थी। अत उसको इस बढ़ी हुई जनता के लिये उपनिवेशों की आवश्यकता थी। किन्तु बीसवीं शताब्दी का आरम्भ होते २ उपनिवेश सभी घिर गये थे। अतएव जर्मनी के लिये यूरोप में हाथ पैर फैलाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग शेष नहीं था।

इस समय इङ्गलैण्ड जर्मनी से मित्रता करना चाहता था। यदि जर्मनी इङ्गलैण्ड के मित्रतापूर्ण हाथ का स्वागत करता तो उसके उद्देश की पूर्ति हो सकती थी। इस बात को जर्मनी और

इङ्गलैण्ड दोनों ही जानते थे कि पारस्परिक सद्भावना के बिना कुछ नहीं मिल सकता था। किन्तु जर्मनी ने अपनी कुशलतापूर्ण विदेशी नीति से यही कार्य किया जो सन् १६०४ में जापान ने किया था।

इस समय जर्मनी का उद्योगधंदों, संसार के व्यापार, समुद्री शक्ति और उपनिवेश इन्हीं के विषय में मुकाबला था। यदि जर्मनी चाहता तो इस समय यूरोप में ही रूस के विरुद्ध राज्यप्राप्ति की नीति को बर्ता जा सकता था। अथवा इसके विरुद्ध यदि जर्मनी रूस से मित्रता करता तो उसकी सहायता से ब्रिटेन के विरुद्ध उपनिवेश प्राप्ति और संसार के व्यापार की नीति का अवलम्बन किया जा सकता था। और इस प्रकार वह आस्ट्रिया को अंगूठा दिखाकर बड़ा भारी लाभ उठा सकता था।

जर्मनी की संसार की शान्तिपूर्ण आर्थिक विजय

जर्मनी की नीति थी "संसार की शान्ति पूर्ण आर्थिक विजय"। किन्तु इससे उसकी शक्ति संचय की वह नीति सदा के लिये ही नष्ट हो जाती, जिसका उसने अब तक पालन किया था। अन्त में जर्मनी ने निश्चय किया कि एक जहाजी बेड़ा बनाया जावे, जो केवल आक्रमण करने और शत्रुओं को नष्ट करने के लिये ही न हो वरन् 'संसार की शान्ति' और 'संसार की शान्ति पूर्ण विजय' करने के लिये भी हो। इस प्रकार जर्मनी को एक छोटा सा जहाजी बेड़ा बनाना पड़ा। इस बेड़े में केवल जहाजों की संख्या ही कम न थी वरन् शस्त्रास्त्र भी कम थे, जिससे यह प्रगट किया जा सके कि जर्मनी का अन्तिम उद्देश्य शान्ति पूर्ण था।

" ससार की शान्ति पूर्ण आर्थिक विजय " का सिद्धान्त सब से बड़ी राजनीतिक मूर्खता थी । जर्मनी ने ब्रिटेन से भी यह निर्भयता पूर्वक कह दिया कि यह सिद्धान्त कार्य रूप में परिणत किया जा सकता है । यह ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की चतुरता थी कि उन्हों ने राजनीतिक शक्ति से आर्थिक लाभ उठा लिया, और साथ ही साथ प्रत्येक आर्थिक लाभ को राजनीतिक शक्ति के रूप में बदल भी दिया ।

जर्मनी का यह समझना बड़ी भारी भूल थी कि इगलैन्ड अपनी आर्थिक नीति की रक्षा करने में कायरता दिखलावेगा। यह कोई प्रमाण नहीं था कि ब्रिटेन के पास कोई राष्ट्रीय सेना नहीं है, क्योंकि विजय सेनाओं से नहीं मिलती वरन् कार्य के अध्यवसाय और निश्चय से मिलती है। इगलैंड के पास सदा ही अपनी आवश्यकता के अनुसार शस्त्रास्त्र तयार रहते हैं। उसने सफलता के लिये सदा ही प्रत्येक आवश्यक शस्त्र से युद्ध किया है । उसने सदा ही किराये के सिपाहियों की सहायता से तब तक युद्ध किया है, जब तक वह अच्छे बने रहते हैं । किन्तु विजय प्राप्ति का निश्चय होने पर इगलैंड अपना रक्त बहाने में भी किसी से पीछे नहीं रहा है । उसने सदा ही अध्यवसाय के साथ निर्भयता से युद्ध किया है ।

जर्मनी का महायुध्द क पूर्व प्रचार कार्य

कुछ समय के पश्चात जर्मनी में स्कूलों, समाचार पत्रों और हास्य चित्रों के द्वारा ब्रिटिश जीवन और उनके साम्राज्य

में विजय की इच्छा से सम्मिलित न होकर अपने राष्ट्र की रक्षा के लिये सम्मिलित हुए थे। जर्मनी में कंजर्वेटिव लोगों ने बार २ इस बात की चेतावनियां दीं, किन्तु यह सब बातें हवा में उड़ादी गई। उनको विश्वास था, कि वह संसार-विजय के मार्ग पर हैं, सफलता अनन्त मिलेगी और बलिदान कुछ न करना होगा।

यहूदियों के राज्य की यद्यपि कोई सीमा न थी। किन्तु वह एक जाति में सम्मिलित अवश्य थे। इस युद्ध के लिये राष्ट्र को ईसाई बना कर यहूदी लोग अलग हट गये। इस समय जर्मनी से उसके आर्य नाम पर अपील की गई कि वह आर्यधर्म की विशेषता—धार्मिक सहन शीलता दिखला कर यहूदियों के साथ हस्तक्षेप न कर।

इस समय हिटलर ने बिस्मार्क के उद्देश्यों, युद्धों तथा जीवन कार्यों का अध्ययन किया। इस अध्ययन से उसके विचार इतने दृढ तथा निश्चित हो गये कि वह उसके पश्चात् फिर कभी नहीं बदले। उसने मार्क्सवाद तथा यहूदी धर्म के पारस्परिक सम्बन्ध का भी गंभीर अध्ययन किया।

महायुद्ध के पूर्व हिटलर का प्रचार

हिटलर ने १९१३ तथा १९१४ में ही अनेक क्षेत्रों में अपने विचार प्रगट करने आरंभ कर दिये थे। उसके तत्कालीन विचार ही आज भी नेशनल सोशियलिस्ट आन्दोलन के आधार हैं।

वास्तव में तो जर्मन राष्ट्र के पतन का आरंभ इस समय

वियाना कांग्रेस ।

पृष्ठ १४

से भी बहुत पहिले ही हो चुका था, किन्तु इस समय जनता को अपने अस्तित्व को नष्ट करने वाले का पता न लग सका। राष्ट्र ने इस रोग की चिकित्सा करने का बार २ प्रयत्न किया, किन्तु उनकी सबसे बड़ी भूल यह रही कि वह रोग के लक्षणों को ही रोग का कारण समझते रहे।

जर्मनी का विश्वव्यापी व्यापार

यह पीछे दिखलाया जा चुका है कि गत शताब्दी में प्रशा द्वारा जीते हुए तीन भारी युद्धों में ही जर्मनी का जन्म हुआ था। लीपजिग और वाटरलू के युद्ध स्थलों में, फानीग्रैज और सेडेन में जर्मन लोग बार बार एकत्रित हुए। किन्तु साम्राज्य का अत्यन्त प्राचीन स्वप्न पैरिस की बन्दूकों के सामने लुई चौदहवें के वारसाई के राजमहल में ही पूर्ण हुआ। उस समय सभी जर्मन राष्ट्रीय सेनाओं के एक निश्चय से अभूतपूर्व उन्नति हुई।

जर्मनी को उस शक्ति शाली सेना के संरक्षण में न केवल लगभग पचास वर्ष तक शान्ति ही मिली, वरन् उसका एक अच्छा जहाजी बेड़ा भी तयार हो गया। इस बेड़े ने ही नवयुवक रीश को बुद्धिमानी से अपने उद्योग धन्धों को बढाने और देश की समृद्धि को बनाये रखने में सहायता दी।

इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १८७१ ई० की जर्मनी की ४ करोड़ १० लाख जनसंख्या सन् १६१४ ई० में बढ़कर

सात करोड़ हो गई। इस समय जर्मन लोगों का बड़ा भ
समूह बराबर उन्नति करता जा रहा था।

यह खेतों, कारखानों, प्रयोगशालाओं, खानों, दफ्त
दफ्तरों, बन्दरगाहों और पुल के बांधों पर संसार भर में काम क
रहा था। जर्मनी की इस बड़ी भारी सफलता का ज्ञान सम
भर को है और अंकों द्वारा इसको प्रमाणित भी किया ज
सकता है।

बिजली के सामान, कांच और खिलौने के व्यापार, धा
गलाने और खान के काम में जर्मनी संसार भर
व्यापार में सब से आगे था। संसार भर के औषधि
के व्यापार का ¾ तो अकेले जर्मनी के ही हाथ में था
यूरोप से बाहिर के बन्दरगाहों के साथ जर्मनी का व्यापार इ
शताब्दी के आरंभ में ४०० प्रति शतक तक पहुंच गया था
इस प्रकार जर्मनी कठिन परिश्रम, पूर्णता और संगठन के द्वा
शान्तिपूर्ण प्रतीयोगिता में संसार के आर्थिक जीव
का एक शक्तिशाली अंग बन गया था। शान्तिपूर्ण कार्य के द्वा
प्राप्त की हुई इस परिस्थिति का ही परिणाम अन्त में सब से
से अधिक से अधिक भयकर—महायुद्ध हुआ। इस समय जर्म
का परिधिकरण पूर्ण हो गया था। इसी को न सह सकने
कारण यूरोप की जातियां रक्त और दुःख के समुद्र में डू
समस्त संसार असंख्य परिमाणवाली विपत्ति में डूब गया।

छटा अध्याय

महायुद्ध

२८ जून सन् १९१४ ई० को एक उन्नीसवर्षीय विद्यार्थी
ने सर्बिया में आस्ट्रिया के युवराज के गोली मार दी। इस गोली में
से अचानक ही यह निर्दय तूफान उमड़ पड़ा, जिसकी घटाए
वर्षों से यूरोप के ऊपर छाई हुई थीं। तूफान की पहिली गड़-
गड़ाहट उन असीम रेलगाड़ियों ने की जो जर्मन सीमा पर
पहिले से तयार बैठी हुई रूसी सेनाओं को लाई। युद्ध के
भीमकाय एञ्जिन ने घेर कर बन्द करने के भयानक कार्य को
प्रारंभ कर दिया। सारा यूरोप युद्ध के लिये तयार हो
गया। पांसा डाल दिया गया। चारों तरफ से घिर जाने पर
जर्मनी को भी अपने हाथों में तलवार पकड़नी पड़ी। इस सब
से बड़े महायुद्ध के प्रारम्भ के विषय में केवल यही कहा जा

सकता है कि निर्दोप जर्मनी को अपने प्राण और सम्मान की रक्षा के लिये युद्ध करना पड़ा।

युद्धके समाचार का हिटलर पर प्रभाव

जिस समय आर्क ड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड की हत्या का समाचार म्यूनिक पहुंचा तो हिटलर अपने गांव में था। सकल समाचार के स्पष्ट रूप से न सुनने के कारण उसको पहिले तो यह भय हुआ कि गोली किसी ऐसे जर्मन विद्यार्थी की पिस्तौल की है जो युवराज के स्लैव लोगों की रियायत करने पर क्रोध में भरा हुआ था और जो जर्मन राष्ट्र की अपने शत्रु से रक्षा करना चाहता था। उसने तुरत कल्पना करली कि इसका क्या परिणाम होगा। वह समझने लगा कि अब आस्ट्रिया में जर्मनों को और अधिक कष्ट पहुचाये जायेंगे और अत्याचारों को समस्त संसार के सामने न्यायपूर्ण ठहराया जाने की अवश्य की जायेगी। जब उसने तुरत ही उसके बाद कथित अपराधियों के नाम सुने, और यह पता चला कि वह सर्बिया-निवासी थे तो उस को इस अतुलनीय भाग्य के भयकर रूप से बदला लेने का स्मरण करके कुछ भय होने लगा।

स्लैव लोगों का मित्र स्लैव लोगों के शत्रु की गोली से मार डाला गया।

आज वियाना सरकार की धमकी और उसके निराले अल्टिमेटम के रूप और विषय के सम्बन्ध में आस्ट्रिया की निन्दा की जाती है किन्तु ऐसी परिस्थिति में संसार की कोई भी सर

इससे भिन्न प्रकार का आचरण नहीं कर सकती थी। आस्ट्रिया की दक्षिणी सीमा पर उसका एक भयंकर और अदम्य शत्रु था, जो समय २ पर आस्ट्रिया के सम्राट को धमकी दे दिया करता था। वह इस साम्राज्य के नष्ट होने तक कभी बाज आने वाला नहीं था। इस बात से डरने के पर्याप्त कारण थे कि वृद्ध सम्राट की मृत्यु के पश्चात् निश्चय से यही होगा, और ऐसी दशा में आस्ट्रियन साम्राज्य को कुछ विरोध करने की गुंजायश न रहती। पिछले वर्षों में सम्पूर्ण राज्य फ्रासिस जोसेफ के जीवन पर इतना अधिक निर्भर था कि उस व्यक्ति की मृत्यु को राज्य की ही मृत्यु समझा गया।

आस्ट्रियन सरकार की यह अवश्य गलती है कि उसने मामले पर इतना अधिक जोरदिया कि महायुद्ध हो ही गया। अन्यथा युद्ध को रोका भी जा सकता था। यद्यपि यूरोप की तत्कालीन दशा में एक भयकर महायुद्ध का होना अनिवार्य था, किन्तु वह कम से कम एक दो वर्ष को तो टल ही सकता था।

बहुत वर्षों से सोशल डेमोक्रैटिक पार्टी जर्मनी में रूस के विरुद्ध युद्ध करने का बहुत बुरी तरह से आन्दोलन कर रही थी। इधर सेन्टर पार्टी (Centre Party) धार्मिक कारणा के वशवर्ती होकर जर्मनी की नीति को आस्ट्रिया की मैत्री की ओर घुमा रही थी। इन सब शक्तियों के परिणामों को सहन करना आवश्यक ही था। जो कुछ होगया, उसका होना

अनिवार्य था, यह तो किसी प्रकार भी नहीं टल सकता था। जर्मन सरकार की ग़लती तो आस्ट्रिया से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने में ही थी। जर्मन सरकार ने जिस उपाय को शान्ति स्थापना के लिये आवश्यक समझा उसी उपाय से विश्वव्यापी महायुद्ध चेत उठा।

इस प्रकार स्वतन्त्रता के लिये इतना भारी विश्वव्यापी संग्राम आरंभ हो गया कि जैसा संसार ने कभी न देखा था।

म्यूनिक में युद्ध घोषणा का समाचार पहुंचा ही था कि हिटलर के मन में दो विचार आए। प्रथम यह कि युद्ध होना अनिवार्य है और दूसरा यह कि अब हैप्सबर्ग राज्य को जर्मनी की मित्रता निभानी ही पड़ेगी। हिटलर को अंदेशा केवल यह था कि इस मित्रता के कारण एक दिन संभवतः शत्रुओं की संख्या इतनी अधिक बढ़ जावेगी कि उनको आस्ट्रिया और जर्मनी कठिनता से सम्भाल सकेंगे।

हिटलर की दृष्टि में उस समय सर्विया से बदला लेने के लिये आस्ट्रिया युद्ध नहीं कर रहा था, युद्ध कर रहा था अपने जीवन के लिये अपने भावी अस्तित्व को बनाये रखने के लिये जर्मन राष्ट्र अब जर्मनी को बिस्मार्क के दिखलाये हुए पथ पर अग्रसर होना था। युवक जर्मनी को एक बार फिर अपनी उसी प्रकार रक्षा करनी थी, जिस प्रकार उसके पूर्वजों ने वीसेनबर्ग से सेडन को पैरिस तक वीरतापूर्वक युद्ध करके की थी। यदि इस युद्ध

जर्मनी की विजय हो जाती तो उसको अपनी शक्ति से ही यह २ राष्ट्रों में यह स्थान मिलता कि जर्मन रीश ही मसार की शान्ति की शक्तिशाली सरक्षक होती और उसके लिये उसको अपने बच्चों की रोटी की लेशमात्र भी चिन्ता न करनी पड़ती।

हिटलर का महायुद्ध में सम्मिलित होना

३ अगस्त सन् १६१४ को हिटलर ने बवेरिया के बादशाह लुडविग तृतीय (H M King Ludwing III) के पास प्रार्थना पत्र भेजा कि उसको भी बवेरिया की सेना में सेवा करने का अवसर दिया जावे। इस समय मंत्री मडल के कार्यालय में कार्य की बाढ आई हुई थी। अतएव हिटलर का प्रार्थनापत्र उसी दिन स्वीकार कर लिया गया। युद्ध में सेवा करने का अवसर पाकर युवक हिटलर को अत्यंत आनद हुआ।

अब हिटलर जर्मन सेना में सम्मिलित होकर युद्ध करने लगा, युद्ध भी वर्षों तक ही चलता रहा। अतएव जर्मनों के उष्ण रक्त की उष्णता धीरे २ कम होने लगी। इस परिस्थिति के आने पर प्रत्येक व्यक्ति केवल कर्तव्यवश ही युद्ध कर रहा था। हिटलर भी जितने उत्साह से युद्ध में सम्मिलित हुआ था अत तक उतने ही उत्साह से कार्य न कर सका।

अब नवयुवक स्वयसेवक भी वृद्ध सैनिकों जैसे जान पड़ने लगे। यह परिवर्तन किसी अश विशेष में न होकर सारी की सारी जर्मन सेना में दिखलाई देने लगा। इस थका देने वाले युद्ध से

जर्मन सैनिक युद्ध और कठोर हो गये। तौ भी इस सेना ने अनेक प्रकार के कष्ट सह कर भी दो तीन वर्ष तक युद्ध किया।

युद्ध के समय यहूदियों का कार्य

यद्यपि हिटलर उस समय राजनीति में भाग नहीं लेता था किन्तु प्रत्येक होने वाले परिवर्तन को वह अब भी बड़ी सावधानी से देखता जाता था। उसको मार्क्सवाद के इस उद्देश्य पर बड़ा क्रोध आया कि सभी गैर-यहूदी राज्य नष्ट हो जायें। सन् १९१४ में सैनिकों के युद्ध में सम्मिलित हो जाने से कार्य क्षेत्र में सब यहूदी नेता ही अकेले रह गये। जर्मन मजदूरों ने इन नेताओं का अनुयायी बनना अस्वीकार कर दिया। अतएव अब इन नेताओं ने अपने ऊपर इस समय आने वाली आपत्ति की आशंका से फौरन रंग पलटा और उन्होंने राष्ट्रोन्नति का स्वांग भरना आरंभ किया। वास्तव में तो जर्मन राष्ट्र में विष फैलाने वाले यहूदियों पर आक्रमण करने का उपयुक्त अवसर यही था। इधर जर्मन सरकार ने जर्मन श्रमिकों के राष्ट्रीय बन जाने पर राष्ट्रीयता विरोधियों की जड़ को उखाड़ फेंकना ही उचित समझा।

किन्तु सम्राट ने उनका दमन करने के बजाय उनकी संस्थाओं को बने रहने दिया। अतएव मार्क्सवाद के विरुद्ध कार्य बंद कर दिया गया। आगे चल कर इसी कारण समाजवाद अथवा सोशियलिज्म के विषय में बिस्मार्क का नियम असफल हुआ।

सप्तम अध्याय

युद्ध कालीन प्रचार कार्य

आज कल का युद्ध प्राचीन काल के युद्धों जैसा नहीं है। आज युद्ध में एक ओर गोले बारूद बन्दूकों और मशीनगनों से लड़ना पड़ता है तो दूसरी ओर बस्तियों में विज्ञापनों से लड़ना पड़ता है। अतएव जर्मनी और मित्रराष्ट्र दोनों की ओर से ही बेहद प्रचार कार्य किया गया। मित्र राष्ट्रों और विशेषकर ब्रिटेन की शक्ति अपरमित थी। अत प्रचार कार्य में जर्मनी की अपेक्षा ब्रिटेन को बहुत अधिक सफलता मिली।

प्रचार कार्य केवल शान्त नगरों में ही नहीं किया गया, वरम् युद्ध स्थल में भी किया गया। जर्मन सैनिकों तक को जर्मन पक्ष का अन्याय, जर्मनों के विजित देशों पर अत्याचार और साम्राज्यवाद की बुराइया दिखलाई गई। उधर मार्क्सवादी भी जर्मनी में धीरे २ गुप्त रूप से आन्दोलन कर ही रहे थे।

जर्मन सैनिकों ने पहिले तो इस आन्दोलन को एक पागलपन समझा, किन्तु धीरे२ उनके मन में प्रचार तत्त्व बैठते गये और अन्त में उन्होंने उस पर पूर्ण विश्वास कर लिया।

जर्मनों की युद्ध-प्रणाली

चार वर्ष तक जर्मन सैनिक वीरता पूर्वक पराक्रम दिखलाते रहे। जर्मनसेना और जर्मन-जाति को शत्रुओं के भयकर प्रचारकार्य से अत्यन्त हानि उठानी पड़ी। सम्भवतः जर्मनी के शत्रुओं को यथार्थ में ही यह विश्वास था कि वीर जर्मनों के विरुद्ध संसार की सहानुभूति प्राप्त करने के लिये इस प्रकार के प्रचार कार्य से काम लेना अत्यन्त आवश्यक है। सम्भवतः उनको पूर्ण विश्वास था कि इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये जहाजी साक्षी और जहाजी पेम्फ्ले आवश्यक थे। जर्मनी जानता था कि यह सब केवल बदनामी है। वास्तव में युद्ध बड़ा दुस्तर कार्य है। समग्र जाति के भाग्य की तुलना में व्यक्ति का भाग्य नगण्य हो जाता है, किन्तु अपने शत्रुओं को कष्ट देना और बदनाम करना जर्मनी का मार्ग कभी नहीं रहा, और न उसके पास इतने साधन ही थे। जेनरल गोर्णरिंग लिखते हैं कि "निर्दयता से प्रेम करना कभी भी जर्मनों के आचरण का भाग नहीं रहा। बहुत से फ्रांसीसी या बेल्जियन बच्चे, जिनके हाथ, पाँव या टांग जाते रहे थे, और जो पादड़ियों के अनुसार जर्मनों के द्वारा नृशंसता पूर्वक घायल किये गये थे, अब इस बात को स्पष्ट कर सकते हैं कि उनके अंग भंग उनके देशवासियों के गोलों और बमों के द्वारा किये

गये हैं। युद्ध में ऐसी घटनाओं का होना अनिवार्य होता है। युद्ध के प्रथम दिन से ही अन्त तक मैं स्वयं भी पश्चिमी सीमा पर युद्ध करता रहा। मैं इस बात को शपथपूर्वक कह सकता हूं कि जर्मन सैनिकों ने बस्तियों की जनता को कठिनाइयों में सदा ही सहायता देने का उद्योग किया।"

जर्मन सेनाओं की देशभक्ति

ससार के इतिहास में किसी जाति को अपने ऊपर इस प्रकार शासन नहीं करना पड़ा, जिस प्रकार जर्मन लोग ऐसे भयंकर युद्ध में भी इन वर्षों में अपने ऊपर शासन करने के लिये विवश किये गये। कोई ऐतिहासिक ग्रन्थ उस वीरता, उस शांत सहनशीलता और कर्तव्य पालन में भक्ति को, जो सब ओर से दिखलाई गई, काव्य रूप में वर्णन नहीं कर सकता। चार वर्ष तक जर्मन सेना शत्रुओं के ससार को—जिनकी सख्या और युद्धसामग्री उनसे कहीं अधिक थी—आड़ी पर ही रोके रही और अपने देश की आक्रमण से रक्षा करती रही। चार वर्ष तक जर्मनों ने इस प्रकार कष्ट सहन किये जैसे एक सेना द्वारा घिरे हुए नगर में सहन किये जाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति—वृद्ध और बच्चे तक, जो भी शस्त्र उठाने योग्य था, इस भयंकर युद्ध में भाग लेने के लिये घर से निकल आया। घर पर भी जर्मन स्त्रियों ने अपनी शांतिपूर्ण सहनशीलता तथा आत्मविस्मरण से अपने महत्त्व और उच्चाशय को प्रगट किया। शत्रुओं के सब प्रकार के उद्योग करने पर भी जर्मनी अजेय ही जान पड़ता

था। किंतु अन्त में दु:खद अन्त—भयानक पराजय आ ही पहुंची।

क्रान्ति का सूत्रपात

वर्षों के लम्बे समय के पश्चात् सब से अच्छे मनुष्यों का रक्त बह चुकने और वर्षों तक भूख और विनाश सहन करने पर देशद्रोहियों का एक दल जर्मनी की जनता को बहकाने और उसकी आत्मा में विष भरने में सफल होगया। मित्रराष्ट्रों के प्रचार कार्य से प्रोत्साहन तथा उनके धन से रिश्वत पाकर सामाजिक प्रजातंत्रवादी (Social Democrat) आन्दोलकों ने जनता को क्षुब्ध कर दिया। जर्मनी ने अपने सहस्रों घावों से रक्त बहाते हुए, भूखे मरते तथा श्रम परिक्लान्त होते हुए भी बाहिर के शत्रुओं के विरुद्ध वीरता पूर्वक युद्ध को जारी रखा था। किंतु वह आन्तरिक शत्रुओं के मुकाबले में अधिक न टिक सका। जनता अपने नेताओं के विरुद्ध क्षुब्ध होकर ऐसे २ वाक्यों में घोर शब्द करने लगी 'अपने वर्ग की स्वतंत्रता व्यक्तियों की स्वतंत्रता'। सामाजिक प्रजातंत्रवादी (Social Democrat) नेताओं ने गोला बारूद का काम करने वालों में हड़तालें कराई। उन्हीं नेताओं ने धोखा करने या भाग जाने की अपीलें भी निकालीं। इस प्रकार उस सेना का भाग्य, जो अब भी वीरता पूर्वक युद्ध कर रही थी क्षणमात्र में पलट गया। सब से बड़ी पराक्रमी सेना की भी रीढ़ की हड्डी टूट गयी। शत्रु लोग जो कि भूखे युद्ध

में किसी प्रकार भी न कर सकते थे वह उन्होंने जर्मन सोशल डेमोक्रैटों की सहायता से कर डाला। किन्तु इतना होने पर भी सेनाएं अपने सम्मान की चिन्हरूप बिना धब्बे वाली ढालों और अपने विजयी झण्डों को बिना पराजित हुए ही वापिस ले आईं। इतिहास का सब से बड़ा युद्ध इस प्रकार समाप्त हुआ। जर्मनी ने युद्ध और स्वतत्रता दोनों ही हार दी। किन्तु उसके शत्रु भी देखने मात्र के ही विजयी थे। पश्चिमीय देश सघर्षण के किनारे पर आगये और यूरोप पर अराजकता में लुप्त हो जाने का संकट आता हुआ दिखलाई देने लगा।

अष्टम अध्याय

प्रचार का प्रभाव

सन् १९१८ की बसन्त ऋतु में जर्मनों पर आकाश से छपे हुए पर्चे डालने आरंभ किये गये।

इन सब का एक ही उद्देश्य था और विषय भी सब का थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ प्राय एक ही था। जर्मनी के कष्ट बढ़ते ही जाते थे। युद्ध के समाप्त होने की कोई सूरत दिखलाई नहीं पड़ती थी और विजय की आशा क्रमशः मन्दतर होती जाती थी। इस समय जर्मनी में शान्ति की पुकार मची हुई थी। किन्तु "सैनिकवाद" और कैसर युद्ध बन्द करना नहीं चाहते थे। अतएव इस पर्चा को डालने वाले सम्पूर्ण राष्ट्रों का ही जर्मन राष्ट्र के विरुद्ध युद्ध नहीं था, वरन केवल उसी व्यक्ति कैसर– के विरुद्ध था, जो इसके लिये उत्तरदायी था। अतएव शान्तिपूर्ण जनता के उस शत्रु को हटाए बिना युद्ध बंद नहीं

होने वाला था। यह विश्वास दिलाया गया कि 'लिबरल (उदार दल वाले) और डेमोक्रैटिक (प्रजातंत्र) दल वाले युद्ध के पश्चात् जर्मनी में पूर्ण शान्ति की स्थापना कर लेंगे। अवश्य "प्रशा के सैनिकवाद" को नष्ट कर दो। अधिकाश जनता इन प्रलोभनों पर हसती थी।

इस प्रकार के प्रचार में एक बात स्मरण रखने की है। प्रत्येक मोर्चे पर, जहा कही भी बवेरिया वाले थे, इस बात का प्रचार किया गया कि अपराधी प्रशा है। यह भी घोषणा की की गई कि प्रशा केवल अपराधी ही नहीं है, वरन् और किसी के विशेष कर बवेरिया के साथ तो कोई भी शत्रुता नहीं है। किन्तु जब तक बवेरिया युद्ध में प्रशा के साथ है उसके साथ किसी प्रकार की रियायत नहीं की जा सकती।

सन् १९१५ में ही इस प्रकार के अनुरोध का निश्चित परिणाम होता हुआ दिखलाई दिया। सेनाओं में प्रशा के विरुद्ध भाव उत्पन्न होते हुए स्पष्ट रूप से दिखलाई देने लगे। किन्तु अधिकारियों ने उसका प्रबन्ध करने का भी कोई उद्योग न किया।

सन् १९१६ में घर से भी शिकायत के पत्र आने लगे। इन पत्रों का प्रभाव बहुत अच्छा पड़ा। मित्रराष्ट्रों ने उनको भी आकाश से सेनाओं के सामने फेंक दिया। जर्मन स्त्रियों के लिखे हुए इन मूर्खतापूर्ण पत्रों ने बाद में लाखों व्यक्तियों की जानें ले लीं।

असंतोष पहिले से ही पर्याप्त मात्रा में था। युद्ध करने वाले सैनिक बहुत अधिक रुष्ट और असंतुष्ट थे। इधर तो वह भूखे मर कर कष्ट सहन कर रहे थे उधर उन के घर घर निर्धनता छाई हुई थी।

दुरवस्था बढ़ती गई, किन्तु अभी तक यह केवल घरलू मामला था। असंतुष्ट होने वाले व्यक्ति ने युद्ध मिनट के पश्चात् ही अपने कर्तव्य का पालन इतनी अच्छी तरह से किया कि वह उसके लिये बिल्कुल स्वाभाविक था। असंतुष्ट सैनिकों की एक कम्पनी उन खाइयों से चिपट गई जिनकी रक्षा करती थी। मानो इस समय जर्मनी का भाग्य इन युद्ध गत धीरे कीचड़ के सूराखों पर ही अवलम्बित था। अब सामने की ओर वीरों का एक दल युद्ध कर रहा था। हिटलर भी इन्हीं में से एक था।

हिटलर का घायल होकर अस्पताल में जाना

अक्टूबर १९१६ में हिटलर घायल हो गया। उसको मोर्चा छोड़ कर ऐम्बुलेंस की गाड़ी में वापिस जर्मनी जाने की आज्ञा दी गई। दो वर्ष के पश्चात् हिटलर को अपने घर के फिर दर्शन हुए। हिटलर बर्लिन के पास एक अस्पताल में चला गया। कैसा परिवर्तन था।

किन्तु यहां की दुनिया बिल्कुल निराली थी। सेनाओं वाले भाव यहां बिल्कुल नहीं थे। हिटलर ने यहां वह बातें सुनीं

जो उसने मोर्चे पर कभी नहीं सुनी थीं। वह अपनी कायरता पर शेखी मारता था।

जिस समय वह चलने फिरने योग्य हो गया उसको बर्लिन जाने की अनुमति मिल गई। यहां तो निर्धनता का नग्न नृत्य हो रहा था। लाखों व्यक्तियों वाला नगर भूखों मर रहा था, और बड़ा भारी असतोष फैला हुआ था। जिन घरों में सैनिकों का आना जाना था वहां अस्पताल जैसी ही आवाज थी। ऐसा जान पड़ता था मानो वह अपनी सम्मति सुनने के लिये ही स्थान खोजते फिरते हैं।

म्यूनिक की दशा तो इससे भी बुरी थी। अस्पताल से अच्छा हो कर हिटलर सरक्षित सेना (Reserve Battalion) में म्यूनिक भेजा गया। वह बड़ी कठिनता से नगर को पहचान पाया। प्रत्येक स्थान में क्रोध, असंतोष और अभिशाप था। युद्ध से आए हुए सैनिकों के भाव अवश्य ही भिन्न प्रकार के थे। अफसरों का सम्मान भी जनता थोड़ा बहुत करती ही थी। प्राय पदों पर यहूदी काम करते थे। लगभग प्रत्येक क्लर्क यहूदी था, और प्रत्येक यहूदी क्लर्क था। हिटलर को यहूदियों की इस मनोवृत्ति पर बड़ा आश्चर्य हुआ।

व्यापार की दशा इससे भी बुरी थी। यहां तो पूर्णतया यहूदियों का ही साम्राज्य था।

सन् १६१७ के अन्त में भी युद्ध का कोई परिणाम न हुआ और सैनिकों के पास गोला बारूद भी समाप्त होने लगा,

अब पराजय होना अवश्यम्भावी था। किंतु आरम्भ किये हुए कार्य को छोड़ने में नैतिक हानि कितनी बड़ी और कितनी अपमान जनक थी? इस समय दो प्रश्न उपस्थित थे—प्रथम यह कि यदि घर वाले भी विजय नहीं चाहते तो सेना किसके वास्ते युद्ध कर रही थी? यह असंख्य बलिदान किसके वास्ते किये जा रहे हैं? सैनिकों को तो विजय के वास्ते लड़ना पड़ता है और घर वाले उसी विजय के विरुद्ध हैं। दूसरा यह कि इसका शत्रु पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

सन १९१७-१८ की शरद् ऋतु में संयुक्त संसार के आकाश में काले २ बादल छागये।

रूस के सम्बन्ध की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। सब से अधिक रक्त का बलिदान देने वाला साथी अपनी शक्ति की चरम सीमा पर पहुंच कर अपने बलवान घातकों की दया के भरोसे पड़ा हुआ था। मित्रपक्ष वाले सैनिकों के हृदय में भय और अन्धकार छाया हुआ था। उनको आने वाली वसन्तऋतु से भय था। उनको भय था कि जब हम अपनी पूरी शक्ति से भी जर्मन सेना की एक टुकड़ी को ही पराजित न कर सके तो उसकी पूर्णशक्ति वाली विजयी सेना तो क्या हाल करेगी।

जिस समय जर्मन सेनाओं को एक बड़े भारी सम्पूर्ण आक्रमण की अन्तिम आज्ञा मिली, जर्मनी में सार्वजनिक हड़ताल होगई।

पहिले तो संसार इसको चुपचाप देखता रहा। किन्तु बाद

में मित्र राष्ट्रों ने उसमें प्रचार करना आरम्भ किया। इस समय एक आवश्यकता यह थी कि सैनिकों के हटने वाले विश्वास को फिर प्राप्त किया जावे, और उनको विश्वास दिलाया जावे कि आने वाली घटनाओं से कष्ट दूर हो जावेंगे।

ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका के समाचारपत्रों ने भी अपने पाठकों के हृदय में यही भाव प्रगट करने आरम्भ किये, और युद्ध करने वाले सैनिकों को भड़काने के लिये भी बड़ा भारी प्रचार कार्य किया गया।

"जर्मनी क्रांति के मार्ग पर! संयुक्त राष्ट्रों की विजय अनिवार्य," यह समाचार एक बड़ा अमोघ अस्त्र था।

यह सब गोले बारूद की हड़ताल का परिणाम था। उन्होंने विरोधियों की विजय के मार्ग को स्पष्ट कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप सहस्रों जर्मन सैनिकों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। किन्तु इस हड़ताल का प्रबन्ध करने वाले वह व्यक्ति थे, जो क्रान्ति की दशा में जर्मनी में सब से बड़े पदों को लेना चाहते थे।

हिटलर युद्ध करने वालों में था, हड़तालियों में नहीं।

सन् १९१८ की ग्रीष्म ऋतु में सैनिकों में बड़ी भारी सरगर्मी थी। घर पर झगड़े चले हुए थे। उधर सेनाओं की भिन्न २ टुकड़ियों में अनेक अफवाहें उड़ाई जाती थीं। यह दिखलाई देता था कि युद्ध से अब कोई आशा नहीं की जा सकती और विजय की आशा निरी मूर्खता है।

युद्ध को चलता रखने की इच्छा राष्ट्र की नहीं थी, वरन् पूंजीपतियों और सम्राट् की थी। घर से यही समाचार आ रहे थे। मोर्चे पर इन्हीं समाचारों पर वाद विवाद हुआ करता था।

सैनिकों की दशा अभी तक पुरानी ही थी। इस समय एबर्ट (Ebert) शीडेमैन (Scheidemann), बार्थ (Barth) और लीब्कनेच्ट (Liebknecht) आदि ही जनता के नेता थे। इनके नये युद्ध के उद्देश्यों से सैनिकों को कुछ सहायता नहीं मिलती थी। सैनिक यह नहीं समझ सके कि युद्ध से दूर आने वालों को राज्य की सेना पर शासन करने का क्या अधिकार है?

हिटलर के राजनीतिक विचार आरम्भ से ही स्थिर थे। वह राष्ट्र को धोखा देने वाले उन व्यक्तियों से घृणा करता था। वह यह बहुत दिनों से देख रहा था कि यह दल राष्ट्र का शुभ चिन्तक नहीं है वरन् अपनी खाली जेबों को ही भर रहा है; और वह अपने लाभ के लिये सम्पूर्ण जर्मन राष्ट्र का बलिदान करने को तयार है। उनकी ओर ध्यान देना ऐसा ही था जैसा बहुत से जेबकतरों के थामते श्रमिकों के लाभ का बलिदान करना। जर्मनी का पतन कराये बिना उसको कार्यरूप में परिणत नहीं किया जा सकता था। हिटलर के यह विचार थे और अधिकांश सैनिकों के भी यही विचार थे।

अगस्त और सितम्बर में पतन के चिन्ह अधिक शीघ्रता

से बढ गये । किन्तु शत्रु के आक्रमणों से जर्मन सैनिक तनिक भी नहीं घबराये । इन युद्धों की तुलना में सोमे (Somme) और फलैंडर्स (Flanders) के युद्ध अतीव काल की घटनाएं जान पड़ते थे।

सितम्बर के अत में हिटलर की डिवीजन तीसरी बार उसी परिस्थिति पर आ गई । इस समय सेनाओं में राजनीतिक वाद विवाद होते थे । घर से चिप आ ? कर सब कहीं फैलता जाता था।

हिटलर का महायुद्ध में अन्तिम संग्राम

१३ और १४ अक्तूबर को रात्रि को ब्रिटिश सेनाओं ने यप्रेस (Ypres) के सन्मुख जर्मन सेना के दक्षिण की ओर गैस के गोले फेंकना आरम्भ किये । १३ अक्तूबर को सायंकाल के समय हिटलर और उसके साथी वरविक (Werwick) के दक्षिण एक पहाड़ी पर थे कि वह एक ऐसी आग के बीच में घिर गये जो कई घन्टों तक बरसती रही । यह आग थोड़ी बहुत भयकरता के साथ रात भर बरसाई गई । अर्द्ध रात्रि के समय इनमें से बहुत से सैनिक धराशायी हो गये कुछ तो सदा के लिये । प्रातः काल के समय हिटलर के शरीर में बड़ा भयंकर दर्द उठा । यह दर्द क्रमश बढता जाता था । प्रात काल सात बजे तो वह अपनी झुलसी हुई आखों से इस प्रकार देख रहा था जैसे अब नहीं बचेगा ।

कुछ घन्टों के पश्चात उसके नेत्र अगारे के समान लाल

होगये। अब उसके चारों ओर अंधेरा छा गया। उसको पोमेरैनिया (Pomerania) प्रान्त के पेसवाक (Paswack) के अस्पताल में भेज दिया गया। यहीं से उसको क्रान्ति का दृश्य देखना था।

जल सेना से भी बड़ीर अफवाहों की खबरें आ रही थीं। कहा जाता था कि वह भी जोश में भरी हुई है। अस्पताल में सब कोई युद्ध समाप्त होने की ही बातचीत करते थे। उनको आशा थी कि युद्ध शीघ्र ही समाप्त होने वाला है। किन्तु उसके तुरंत समाप्त होने की किसी ने भी कल्पना नहीं की थी। हिटलर उस समय समाचार पत्र पढ़ने योग्य भी नहीं था।

विद्रोह के चिन्ह

नवम्बर में सार्वजनिक असंतोष बहुत बढ़ गया। अन्त में एक दिन यकायक बिना सूचना दिये तूफान आ ही गया। समुद्र के यात्री लारियों में भर २ कर आये। वह सब को विद्रोह में सम्मिलित होने के लिये आह्वान कर रहे थे। इस युद्ध के नेता थोड़े से यहूदी नवयुवक थे। यह जर्मनी के राष्ट्रीय जीवन की 'स्वतंत्रता, सुन्दरता और शान के लिये युद्ध कर रहे थे। इन में से मोर्चे पर एक भी नहीं गया था।

अब अफवाहें अधिकाधिक फैलती गईं। जिसको हिटलर केवल स्थानीय दुर्घटना समझता था वह वास्तव में सार्वजनिक क्रान्ति थी। इस के साथ ही साथ युद्ध स्थल से बड़े कष्टदायक समाचार आ रहे थे। वह आत्मसमर्पण करना चाहते थे। क्या यह सम्भव था ?

दस नवम्बर को वृद्ध पादड़ी अस्पताल में आया। उससे सब बातों का पता चला।

हिटलर को इस से बड़ा भारी कष्ट हुआ। उस वृद्ध पुरुष ने कांपते २ यह समाचार सुनाया कि होहेनज़ोलर्न (Hohenzollern)वंश से ताज छिन गया, और पितृ भूमि प्रजातंत्र हो गई।

इस प्रकार सार का सारा उद्योग व्यर्थ गया। देश और राष्ट्र के नाम पर किया हुआ बलिदान व्यर्थ गया, अनेक मास तक लगातार सहे हुए भूख और प्यास के कष्ट व्यर्थ गये, कर्तव्यपालन में लगाया हुआ इतना समय व्यर्थ गया, और साथ ही साथ बीस लाख व्यक्तियों का समराङ्गण में सोना भी किसी काम न आया। हिटलर के सिर पर तो मानों वज्र गिर पड़ा। वह सोचने लगा।

"और देश भक्तों की यह भूमि ? किन्तु क्या हमको इसी बलिदान के लिये बुलाया गया था ? क्या अतीत का जर्मनी हमारे विचार से भी कम योग्य था ? क्या उसका अपने इतिहास के प्रति कोई कर्तव्य नहीं था ? क्या हम अपने आप को अतीत के स्मरणीय प्रताप का रूप देने चले थे ? भावी सन्तति को इस कार्य का औचित्य किस प्रकार बतलाया जावेगा ?"

इस भयंकर कार्य के विषय में हिटलर जितना ही अधिक सोचता वह उतना ही अधिक लज्जित होता जाता था। उसकी दृष्टि में इससे बड़ा कोई कष्ट नहीं हो सकता था।

अभी उससे भी अधिक भयंकर दिन और दुखदायी रात्रि देखनी पड़ी थी। उस रात्रि में इस कार्य के करने वालों के प्रति हिटलर के हृदय में अत्यंत घृणा का सचार हुआ।

सम्राटों मे सब से प्रथम जर्मन सम्राट विलियम न मार्क्सवादी नेताओं की ओर मित्रता का हाथ बढाया। किन्तु वह एक हाथ में सम्राट् का हाथ थामे हुए दूसरे हाथ में छुरी छिपाये हुए थे। यहूदियों के साथ कोई सौदा नहीं हो सकता था। हिटलर ने राजनीतिज्ञ होने का निश्चय कर लिया।

नवम अध्याय

जर्मनी में राज्यक्रान्ति

महायुद्ध की विनाशकारी समाप्ति के साथ ही साथ जर्मन जाति की परीक्षा का समय आया। जर्मनी में यहूदी कार्ल मार्क्स के हानिकारक सिद्धान्तों के अनुसार कार्य होने के साथ ? रीश की शक्ति पर आक्रमण आरम्भ हो गया और जनता की शान्ति तथा सुरक्षा को नष्ट करने का अदर ही अदर प्रयत्न किया जाने लगा। मार्क्स के सिद्धान्त का आधार श्रेणियुद्ध तथा राष्ट्रीय एकता का समूलोच्छेद है। इससे जर्मनों के विरुद्ध जर्मनों को ही खड़ा किया गया। जर्मनी के विरोधी शत्रु जर्मन सीमा के बाहिर के नहीं, वरम् अपने अन्दर के ही वह देशवासी भी हो गये, जिनका विश्वास एक दूसरे ही प्रकार के समाज सगठन में था। यदि मार्क्स का सिद्धान्त सफल हो जाता तो प्रबल और सन्तुष्ट जर्मनी निर्बल और असंतुष्ट हो जाता। तो भी कई

दशाब्दियों तक मार्क्स के अनुयायियों ने इस उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए क्रमपूर्वक उद्योग किया। सब कहीं घृणा, ईर्ष्या, असंतोष और संदेह का प्रचार किया जा रहा था और देश की निश्चलता खोखली होती जा रही थी। किसी जाति की शक्ति का अनुमान उसकी सेना और उसके जहाजी बेड़े से ही लगाया जाता है। अतएव मार्क्स के सिद्धान्त का पूर्ण प्रचार करना देश की सैनिक शक्ति के विरुद्ध था। अतएव सोशल डेमोक्रेटिक (सामाजिक प्रजातंत्रवादी) पार्टी ने जहां तक भी उनसे हो सका सेना के सम्मान को हानि पहुंचाई। उसके लिये सामान देने की वोट देने से इंकार कर दिया और विनयानुशासन (डिसिप्लिन) को कुचल डाला। कई दशाब्दियों तक यह पार्टी सब प्रकार के शासकों के विरुद्ध आन्दोलन करती रही। इसने प्रत्येक उपाय से वर्तमान संस्थाओं को निर्बल किया, और अन्त में पीठ में एक अन्तिम घाव करके इसने राष्ट्र को ही उलट दिया। इस पार्टी को इस बात से कोई मतलब न था कि जर्मनी युद्ध में पराजित होकर बिल कुल नष्ट हो जावेगा।

इस प्रकार ६ नवम्बर सन १६१८ को विद्रोहियों का नीचता पूर्ण उत्थान हुआ और मार्क्स के अनुयाइयों के हाथ में शासनसूत्र आ गया। उसी दिन बेचारे पीड़ित जर्मनों के लिये इतिहास का वह समय आरम्भ हुआ, जिस को 'जर्मनों की लज्जा और कष्ट का युग' कहा जा सकता है।

सोशल डेमोक्रेट पार्टी के शीडेमैन नाम के एक प्रसिद्ध नेता ने रीश्टाग की सीढियों पर से घोषणा की थी। "आज जर्मन लोग सब प्रकार से पूर्ण विजयी हो गये हैं।" और तथ्य यह था कि उसी क्षण जर्मन लोग अपने माननीय शिखर से अनन्त गर्त में जा पड़े थे। उस दिन की 'विजय' जनता की विजय नहीं थी, क्यों कि जनता के सब से अच्छे सभी व्यक्ति अपने देश की रक्षा के लिये अपने रक्त की अन्तिम बूंद तक देने के लिये सब ओर तयार खड़े थे। विजय केवल उन देशद्रोहियों की थी जिनके हृदय में पितृभूमि का कोई विचार तक न था। विजय सन्मुख युद्ध में से भाग आने वालों की हुई थी। यह वही मानवी गवलापन था जो शक्ति के कार्यों के समय सदा उत्पन्न हो जाया करता है। विजय केवल मार्क्स के अनुयाइयों की थी। किन्तु जहां कहीं भी मार्क्स के सिद्धान्त की विजय हुई है उसी क्षण उस राष्ट्र का पतन हुआ है। जहां कहीं भी साम्यवाद (कम्यूनिज्म) का सर ऊँचा होता है जाति नष्ट हो जाती है और देश भक्ति का स्थान विश्वभ्रातृत्व ले लेता है।

युद्ध से वापिस आने वाले बिना नेताओं के सैनिक, जिनकी जड़ उनके देशप्रबन्ध के कार्य में से उखाड़ दी गई थी, अपने २ घरों से दूर बैठे हुए निराश होकर सुगमता से मार्क्स आन्दोलन के शिकार होगये। सोशल डेमोक्रेसी (सामाजिक प्रजातंत्र) का आंदोलन बहुत अधिक बढ गया। सब जगह उन्हीं आदोलकों को नेतृत्व मिला और उसी क्षण से वह जर्मनी के भाग्य के विधाता होगये। मार्क्स के सिद्धान्त के

विरुद्ध पड़ने वाली प्रत्येक बात के विरुद्ध अकथनीय घृणा का प्रचार किया गया। उज्वल अतीत धूल में रौंद दिया गया और उस प्रत्येक बात की घृणा पूर्वक हंसी उड़ाई गई जिसको जनता अब भी पवित्र समझती थी, कर्तव्यपालन की एक दम उपेक्षा की गई और कर्तव्यहीनता को ही वैध घोषित किया गया। दशभक्ति का तो विचार ही त्याग दिया गया और राष्ट्रीय दल नष्ट कर दिये गये। राष्ट्रीय ऐक्यकी शक्ति और सामर्थ्य के स्थान में अंतर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्व की स्थापना की गई। इससे दशभक्त जर्मनों का स्थान श्रेणी में विश्वास रखने वाले निर्धनों को देना था। अब जर्मनी में स्पष्ट रूप से दो दल हो गये। एक अत्यंत निर्धन और दूसरा मध्य श्रेणि वालों का। वर्गयुद्ध के इस अपराध के लिये समस्त जर्मन जाति को प्रायश्चित्त करना पड़ा।

किन्तु सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी पर जनता के विरुद्ध विद्रोह करने का अपराध लगाते हुए यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि यह तभी संभव होसका, जब मध्यश्रेणि वालों ने बिल्कुल ही काम करना बंद कर दिया। मध्यश्रेणी वालों का तो युद्ध से पूर्व ही एक वर्ग रूप में पतन हो चुका था। युद्ध के पूर्व मध्य श्रेणि वालों में किसी नेता के भी न होने, मध्य श्रेणि वालों के जर्मन श्रमिकों के भाव को न समझने, उनके कमीनपन और आत्म गोपन से ही यह संभव हो सका कि बिना नेता वाले जर्मन श्रमिक मार्क्सवाद के भुलावे में पूरी तरह बहक गये और उन्होंने उन नेताओं की बात को यहीं तत्परता से

सुना, जो प्राय विदेशी वश के थे और जो श्रमिकों के स्वत्वों का प्रतिनिधि होने का दम भरते थे। यदि कोइ व्यक्ति युद्ध से पूर्व के समय पर ध्यान दे तो उसको यह देख कर आश्चर्य होगा कि राष्ट्र के नेता वास्तव में कितने निर्बल थे, और उस समय भी वह कितनी बेपरवाही से वैठे हुए थे जब कि लोग इस प्रकार धोखे में डाले जा रहे थे।

किन्तु यह बात और भी आश्चर्य में डालने वाली है कि सोशल डेमोक्रेटिक नेताओं और आंदोलकों में अधिकाश यहूदी थे। अब युद्ध के समाप्त होजाने के दिनों में यह यहूदी नेता पृथ्वी में से विषबेल के समान उत्पन्न होगये। जहा कहीं भी सैनिकों की सभाए खुलीं, यहूदी ही नेता बने—वही यहूदी जो कभी भी युद्ध स्थल में दिखलाई नहीं पड़ते थे और जो सदा सेना के भोजनसामग्री विभाग में काम करते रहे अथवा जिन्होंने दफ्तरों अथवा घरेलू सैनिक पदों पर ही काम किया था। भीड़ सड़कों में से क्रोधित होकर भागी। सैनिकों ने अपने बिल्ले और कधों के फीते तोड़ डाले। वह जर्मन पताका जो शताब्दियों तक रीश के महत्व का चिन्ह बनी रही कीचड़ में रौंद दी गई। सभी मकानों पर विद्रोह का लाल झंडा लग गया। सब कहीं अनियम और विशृखलता फैली हुई थी। इस अनियम का जनता ने स्वेच्छापूर्वक प्रदर्शन किया, जिससे यह बिल्कुल स्पष्ट हो जावे कि अब प्रत्येक व्यक्ति चाहे जो करे अथवा चाहे सो न करे। इस समय कोई राज्य, कोई आज्ञा अथवा कोई

अधिकार नहीं था और स्वतन्त्रता के नैतिक विचार का त्याग करके अनैतिक निर्लज्जता धारण कर ली गई थी। भूले हुए सैनिकों का इतना पतन हुआ कि वह भी केवल गंवारों की भीड़ ही बन गये। विनाश प्रतिदिन, प्रति घंटे बढ़ता जाता था। 'मौलिक सिद्धान्त वालों का स्थान उनसे भी अधिक बढ़े हुए मौलिक सिद्धान्त वाले' ले रहे थे। क्रमशः यह दिखलाई देने लगा कि इतनी गर्ज तर्ज की घोषणाओं से राज के शिर पर बैठने वाले नय शासक भी विनाश के भंवर में आ पड़ेंगे। अपनी भड़काई हुई आग से वह अपना पीछा नहीं छुड़ा सकते थे। स्वतंत्र सोशल डेमोक्रैट लोग आगे बढ़े थे। किन्तु यह भी पराजित हुए और उनका स्थान स्पार्टेसिस्ट लोगों ने ले लिया। इस गड़बड़ में नये नेताओं के पास उनको जीतने का और कोई उपाय न था, केवल एक ही मार्ग शेष था। अवशिष्ट सैनिकों से, जो कभी इतने शक्तिशाली और अब इतने निबल थे, अपील की गई।

इस सर्वसामान्य विनाश में कुछ सहस्र व्यक्ति, जो भय के कारण ही सब कुछ छोड़ने को तयार नहीं थे, सामान्य मुकाबले और देश भक्ति तथा सम्मान के आदर्शों की रक्षा के लिये सामने आये। यह व्यक्ति स्वयंसेवक संघ के थे और इन्हीं से नयी सरकार ने अपील की थी। यह स्वयंसेवक संघ को यह विश्वास करा कर मूर्ख बनाने में बड़ी चतुरता से सफल हो गये कि उनको अपने देश की रक्षा करने का अवसर मिल रहा है।

किन्तु इससे सरकार के नेताओं का अभिप्राय केवल अपनी ही शक्ति और सुरक्षा से था। राजनीति से अनभिज्ञ स्वयंसेवक संघ के सैनिक वास्तविक बातों को बिल्कुल नहीं समझे। उनको तो यह अभ्यास पड़ा हुआ था कि जहां कहीं भी देश पर आपत्ति आवे वह हस्तक्षेप करें। अस्तु एक बार और भी उन्होंने अपने विषय में कोई विचार न कर अपने कर्तव्य का पालन किया। उन्हों ने अपने जीवन की बाजी लगाई और फिर एक बार स्पार्टेसिस्ट जनता के विरुद्ध युद्ध में कूद पड़े। किन्तु अभी २ उन्होंने युद्ध जीतकर परिस्थिति को अपने वश में किया ही था कि सरकार ने अपने को काठी पर फिर सुरक्षित पाकर अपना वास्तविक रूप प्रगट कर दिया और स्वयंसेवक संघ को यह पारितोषिक दिया कि उनका दल तोड़कर उनको सड़कों में फेंक दिया।

अब जर्मन सोशल डेमोक्रैटों ने संसार के सामने अचानक अपने को शान्ति की रक्षा करने वाले तथा रीश के संरक्षकों के रूप में घोषित किया। यहां तक कि अब भी उस ऐतराज के बारे में बार बार उत्तर दिया जाता है कि सोशल डेमोक्रैट लोगों ने किस प्रकार सन् १६१८ व १६१६ में रीश को बचा कर साहस पूर्वक शान्ति स्थापित की थी। कहा जाता है कि एल्बर्ट, स्नेडेमैन और नोस्के ने रीश को नष्ट होने से बचाया था। सोशल डेमोक्रैटों की ओर से इस प्रकार घटनाओं में उलट फेर की बातें और उत्तरदायित्व से अपने को प्रथक रखने के

ऐसे प्रयत्नों के विषय में सुनने के जर्मन लोग अभ्यस्त हो गये हैं। जनता के प्रतिनिधियों ने बड़े २ जोर के घोषणापत्रों में घोषित किया था कि स्वतंत्रता का युग आ गया। अब देश के शासक हमी लोग हैं। उन को काम कम करना पड़ेगा और लाभ अधिक होगा। शान्ति और विश्वोन्नति का युग समीप है। दूसरे राष्ट्र भी जर्मनी का (जो सैनिक वाद और सम्राट् के प्रबल शासन से मुक्त हो चुका था) प्रसन्नता से स्वागत करेंगे। निर्धनता और अभाव दूर हो जायेंगे, और दुराचरण बन्द हो जायेंगे। सारांश यह है कि स्वर्ण युग आरंभ ही होने वाला है। किन्तु वह भूलते थे कि इस प्रसिद्ध घोषणापत्र के पूर्व जर्मन लोग यह जानते भी नहीं थे कि दुराचरण किस को कहते हैं। यह काम सोशल डेमोक्रैट लोगों के लिये छोड़ दिया गया था कि वह दुराचरण को जनता में फैलायें, जो उनके शासन की अत्यंत आवश्यक विशेषता थी। घोषणापत्र के अंत में कहा गया था कि जर्मनी अब स्वतंत्रता, सुन्दरता और सम्मान की भूमि बनने वाला है। इनमें से एक भी वचन का पालन नहीं किया गया। इसके विरुद्ध आज यह स्पष्ट रूप से प्रमाणित किया जा सकता है कि जो कुछ हुआ इसके ठीक विपरीत हुआ।

वारसाइ की सन्धि

पृष्ठ ८, १७

दशम अध्याय

वारसाई की सन्धि

गत महायुद्ध को समाप्त करने वाली इस सन्धि पर ता० २८ जून १६१६ को वारसाई के प्रसिद्ध दर्पणों के महल में हस्ताक्षर किये गये और इसके पश्चात् ता० १० जनवरी सन् १६२० से इसके ऊपर आचरण किया गया था।

अस्थायी संधि से पूर्व पत्रव्यवहार

यह आवश्यक जान पड़ता है कि इस संधि का वर्णन करने से पूर्व उस पत्रव्यवहार का भी कुछ वर्णन कर दिया जावे जो अक्तूबर और नवंबर १६१८ में जर्मन सरकार और प्रेसीडेंट विल्सन में जर्मन सरकार की सन्धि की इच्छा प्रगट करने पर हुआ था। जर्मन सरकार की सन्धि की इच्छा प्रगट करने पर राष्ट्रपति विल्सन ने फ्रांस, ग्रेटब्रिटेन, इटली और संयुक्त राज्य

अमरीका की सम्मति से तारीख ५ नवम्बर को जर्मन सरकार को पत्र भेजा।

इस पत्र के द्वारा वचन दिया गया था कि सन्धि राष्ट्रपति विल्सन के उन चौदह सिद्धांतों (Fourteen points) के अनुसार ही की जावेगी, जिनका वर्णन उनके ता० ८ जनवरी १६१८ के भाषण में किया गया था। (इन में से केवल सामुद्रिक स्वतन्त्रता के सिद्धांतों को ही छोड़ा गया था।) इसके अतिरिक्त यह भी वचन दिया गया कि तारीख ५ नवम्बर १६१८ के अन्य भाषणों में भी जिन ७ सुविधाओं का उल्लेख किया गया है, सन्धि में वह सभी सुविधाएं दी जावेंगी।

इस प्रकार जर्मनी को राष्ट्रपति विल्सन के चौदह सिद्धांतों के अनुसार सन्धि करने का वचन दिया गया। जर्मनी ने यद्यपि इसका कोई लिखित उत्तर नहीं दिया, किन्तु उसने वास्तव में इस योजना को स्वीकार करके मार्शल फोश से अस्थायी सन्धि (Armistice) की बातचीत आरंभ कर दी। अस्थायी सन्धि के पश्चात पेरिस में १८ जनवरी को सन्धि का मसौदा बनाने के लिये मित्र-राष्ट्रों के प्रतिनिधियों की बैठक हुई। इसके पश्चात ता० २८ जून को उस पर उत्तरी फ्रांस के प्रधान नगर वारसाई में हस्ताक्षर हो गये। यह सन्धिपत्र सब तक के सन्धिपत्रों में सब से बड़ा है। इसके पन्द्रह भाग हैं। पाठकों की सुविधा के लिये यहां उन पन्द्रहों भागों का संक्षिप्त विवरण दिया जाता है—

सन्धि का विवरण

प्रथम भाग—राष्ट्र संघ

प्रथम भाग में राष्ट्रसंघ (League of Nations) की स्थापना का आयोजन किया गया है। इसके अनुसार उसके सब सदस्यराष्ट्रों की सीमाओं की रक्षा करने की गारंटी के आधार पर राष्ट्रसंघ की स्थापना की गई। इसके सदस्यों ने जर्मनी के राष्ट्र संघ में रखे जाने पर प्रतिबंध लगा दिया। राष्ट्रसंघ में जर्मनी का प्रवेश ता० १ दिसम्बर १९२५ को लोकार्नो पैक्ट पर हस्ताक्षर होने के पश्चात् ही सम्भव हो सका। राष्ट्रसंघ को आदेश प्राप्त उपनिवेशों (धारा २२) के शासन का निरीक्षण करने का अधिकार दिया गया। इसके अनुसार जर्मनी के सभी उपनिवेश छीन कर आदेशप्राप्त-उपनिवेशों के स्थायी कमीशन के निरीक्षण में रखे गये। इस कमीशन की नियुक्ति राष्ट्रसंघ द्वारा होती है। यह अपने आधीन उपनिवेशों के शासन की रिपोर्ट पर प्रति वर्ष विचार करता है।

इसी प्रकार अल्पसंख्यक जातियों और अल्पसंख्यक धर्म वालों की संधि भी राष्ट्रसंघ के संरक्षण में की गई। किन्तु इनका निरीक्षण उपनिवेशों जितना कठोर नहीं था। जर्मनसंधि के अनुसार निशस्त्रीकरण का प्रश्न भी राष्ट्रसंघ को सौंपा गया। २५ वीं धारा के अनुसार स्वास्थ्य और रोग के अंतर्राष्ट्रीय अधिकार भी राष्ट्रसंघ को ही दिये गये।

धारा २३ के अनुसार मजदूरी के प्रश्न (भाग १३) पर अन्त
र्राष्ट्रीय सहयोग स्थापित किया गया।

धारा १२ १६ तक के अनुसार राष्ट्रसंघ के सदस्य
प्रतिज्ञा करते हैं कि वह आपस में तब तक युद्ध न करेंगे
तक राष्ट्रसंघ की पंचायत या आप-कार्यवाही को पूर्ण हुए छ
माह न बीत जायें। धारा ८ के अनुसार यह निश्चय किया
कि राष्ट्रसंघ शस्त्रों के परिमाण को कम करेगा।
विषय में राष्ट्रसंघ ने सन् १६२६ में निशस्त्रीकरण कांफ्रेंस का
नेतृत्व किया था।

राष्ट्रसंघ का सम्पूर्ण कार्य नौ राष्ट्रों की एक स
समिति करती है, जिसमें फ्रांस, ग्रेटब्रिटेन, इटली, जापान व
संयुक्तराज्य अमेरिका का स्थायी स्थान है। अमरीका
राष्ट्रसंघ में भाग लेने से निषेध करने पर नौ में से पां
स्थान छोटे २ राष्ट्रोंद्वारा पूर्ण किये गये। इसके प्रतिनिधियों
निर्वाचन राष्ट्रसंघ की महासभा (Assembly of the League
करती है। सन् १६२६ में जर्मनी को राष्ट्रसंघ का सदस्य बना
से उसको भी उसके १४ अक्टूबर सन १६३३ को त्याग पत्र देने
इस नौ राष्ट्रों की समिति (Council of nine) में स्थायी स्
दिया गया था। महासभा में सभी सदस्य राष्ट्रों के प्रतिनि
होते हैं। यह एक वार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय पार्लमेन्ट है। राष्ट्रसंघ
उससे विम्मुख प्रथक-दो संस्थाएं और भी बनायी गई। एक अ
राष्ट्रीय न्यायालय (धारा १४ के अनुसार यह सन् १६२१ में स्था

ार्य कर रहा है।) और दूसरा अन्तर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय
nternational Labour office)

द्वितीय तथा तृतीय भाग—राज्यों का बटवारा

(क) पश्चिमी सीमाएं—युद्ध के परिणामस्वरूप जर्मनी को दक्षिण, उत्तर और पूर्व में अपने राज्य के एक बड़े भाग से हाथ धोना पड़ा। इसके अतिरिक्त अन्य भी अनेक ऐसे कार्य किये गये, जिससे वह अपनी सीमाओं पर अत्यन्त निर्बल हो जावे। उदाहरणार्थ, धारा ३१ के अनुसार बेल्जियम ने एक तटस्थ राज्य न रह कर फ्रांस के साथ सैनिक संधि करली। धारा ३२, ३३ और ३४ के अनुसार उसको जर्मन सीमा के मोर्स्ने ट (Moresnet), यूपेन (Eupen) और मलमेडी (Malmady) के जिले दिये गये। धारा ४०, ४१ के अनुसार लक्सेमबर्ग (Luxembourg) भी तटस्थ राज्य न रहा और उसने बेल्जियम से आर्थिक सहयोग कर लिया। धारा ४२, ४३ और ४४ के अनुसार राइन नदी का पूरे का पूरा बाया किनारा तथा दाहिने किनारे का भी पचास किलोमीटर अथवा लगभग ३१ मील प्रदेश सदा के लिये निश्शस्त्रीकरण प्रदेश बनाया गया। वहा के जर्मन किले गिरा दिये गये और वहाँ किसी प्रकार की सेनाओं के आने पर कठोर प्रतिबन्ध लगाया गया।

धारा ४५–५० के अनुसार सार प्रदेश के शासन को एक अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन के आधीन किया गया, और उसकी

कोयले की खानें फ्रांस को दे दी गई। इसके विषय में ग्रन्थ में आगे विस्तृत वर्णन किया गया है। इस विषय में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह हुई की धारा ५१-७६ के अनुसार अल्सेस और लोरेन प्रांत जर्मनी से छीन कर फ्रांस को दे दिये गये। इस प्रकार फ्रांस को लगभग बीस लाख जनसंख्या की प्रजा, अनेक प्रकार की सुविधाएं और जर्मनी के उत्पन्न किये हुए में से तीन चौथाई से अधिक लोहा तथा अनेक बहुमूल्य खनिज पदार्थ मिल गये।

(ख) उत्तरी सीमा—उत्तर की ओर जर्मनी ने धारा ११५ के अनुसार अपना हलीगोलैंड (Heligoland) प्रांत के किलों को गिराने का वचन दे दिया। किन्तु अधिकार उस प्रदेश पर जर्मनी का ही रहा। किन्तु उसका श्लेसविग (Schleswig) का उत्तरी प्रदेश डेनमार्क को दिलवा दिया गया। धारा १०६-१४ के अनुसार यह योजना की गई कि उसके दो भागों में शासन के सम्बन्ध में जनमत लिया जाय। उनमें से उत्तरी भाग ने डेनमार्क के पक्ष में मत दिया और दक्षिणी भाग फ्लेन्सबर्ग (Flensburg) ने जर्मनी के पक्ष में मत दिया। इस प्रकार डेनमार्क को अनायास ही यह प्रदेश मिल गया, जिसको उन का सन १८६६ में वचन देकर भी बिस्मार्क ने उसे वापस नहीं दिया।

(ग) पूर्वीय सीमा—धारा ८७-९३ के अनुसार निश्चय किया गया कि अपर साइलेशिया (Upper Silesia) में भी शासन के लिये जनमत संग्रह किया जाय। सन १९२१ की मतगणना

फलस्वरूप इसका दक्षिणार्द्ध—बहुमूल्य खानों सहित पोलैंड को मिल गया और ऊपर का आधा भाग जर्मनी को वापिस मिल गया। पूर्वीय प्रशा, ऐलेंस्टीन (Allenstein) और मैरियनवरडर (Marienwerder) जिलों में भी शासन के लिये जनमत लिया गया। किन्तु उन सब ने ही जर्मनी के पक्ष में सम्मति दी। नयी बनाई हुई सीमान्त रेखा से पोसेन (Posen) और ब्रामबर्ग (Bromburg) का एक बड़ा भाग पोलैंड की नयी प्रजातन्त्र सरकार को मिल गया। मैमेल (Mamel) नगर और प्रदेश सन् १६२४ में लीथूनिया को दे दिये गये। जर्मनी के लगभग पैंतीस लाख निवासी पूर्व में पोलैंड अथवा लीथूनिया को दे दिये गये। किन्तु इनमें जर्मन एक तिहाई से भी कम थे। सारांश यह है कि इस संधि के अनुसार जर्मनी के लगभग साठ सहस्र निवासी विभिन्न राष्ट्रों को दे दिये गये। किन्तु इस संधि के अनुसार जर्मनी को जो लोहा तथा अन्य खनिज पदार्थ क्षतिपूर्ति के रूप में देने पड़े वह हानि इस जनसंख्या की हानि से भी बहुत बड़ी थी।

चतुर्थ भाग—जर्मनी के उपनिवेशों का बँटवारा

धारा ११६-२७ के अनुसार जर्मनी को अपने सभी उपनिवेश मित्रराष्ट्रों को देने पड़े। इस प्रकार अफरीका में उससे निम्नलिखित उपनिवेश लिये गये—

कैमेरुन (Cameroons) इसको आदेशप्राप्त उपनिवेश के रूप में फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन ने बाँट लिया।

टोगो लैण्ड (To goland) इंगलैण्ड को आदेशप्राप्त द
के रूप में दिया गया।

दक्षिण पश्चिम अफ्रीका(South West Afnca) दक्षि
अफ्रीका के यूनियन को आदेश प्राप्त देश के रूप में दिया गया।

पूर्वीय अफ्रीका, ग्रेट ब्रिटेन और बेल्जियम को आदे
प्राप्त देश के रूप में दिया गया।

इन उपनिवेशों में लगभग १८,०० जर्मन तथा लगभग एक लाख
तीस हजार सफ देशी निवासी थे।

प्रशांत महासागर में जर्मनी के निम्नलिखित उपनिवे
छीने गये—

मार्शलद्वीप (Marshall Isles) आदेश प्राप्त देश
रूप में जापान को दिया गया।

समाओ (Samoa) आदेश प्राप्त देश के रूप में न्यूजी
लैंड को दिया गया।

न्यू ग्यीनी (New Gumea) आस्ट्रेलिया को आदे
प्राप्त देश के रूप में दिया गया।

नौरू द्वीप (Nauru Island) आदेश प्राप्त देश के रूप
ब्रिटिश साम्राज्य को दिया गया।

चीन का शान्तु ग प्रायद्वीप जापान को दे दिया गय
जिसने उसको सन १६२१ में चीन को वापिस कर दिया।

इन उपनिवेशों के अतिरिक्त इन में जो कुछ भी जर्मन
की घर या अपर सम्पत्ति थी, यह सब जब्त करली गई

इसके अतिरिक्त उसको चीन, लाइबेरिया, स्याम, मिस्र और मोरोक्को देशों में प्राप्त सुविधाओं तथा इनके सम्बन्ध में प्राप्त सन्धि अधिकारों से भी हाथ धोना पड़ा। धारा ४३८ से उक्त उपनिवेशों के जर्मन पादरियों तक की सम्पत्ति को जब्त कर लिया गया और यह निश्चय किया गया कि वह उस २ उपनिवेश की नई सरकारों की इच्छा से ही वहां रह सकेंगे। इस प्रकार जर्मनी के समस्त उपनिवेश, उसकी वहा की चर अचर सम्पत्ति, उसके औपनिवेशिक जहाजी बेड़े और पादरियों सभी पर हाथ साफ किया गया।

पंचम भाग—सेना, नौसेना और आकाशी सेना

इन धाराओं का उद्देश्य भी जर्मनी को अत्यन्त निर्बल करना, उसके तत्कालीन किलों को गिराना, और उसकी युद्ध सामग्री को कम करना था, जिससे जर्मनी इतना निर्बल हो जावे कि भविष्य में कभी भी फिर सिर न उठा सके। जर्मनी की सेना की संख्या घटकर १ लाख कर दी गई। उसी परिमाण में उसकी बन्दूकों तथा युद्ध सामग्री को भी घटा दिया गया। इस परिमाण से अधिक युद्ध सामग्री को छीन लिया गया, सेना को तोड़ दिया गया और जर्मनी के युद्ध सामग्री के कारखानों को बंद कर दिया गया। जर्मनी में अभी तक सैनिक शिक्षा अनिवार्य थी। उस पद्धति को एक दम बंद कर दिया गया। इस के अतिरिक्त देश में सब प्रकार की सैनिक शिक्षा पर प्रतिबंध लगा दिया गया। सैनिक अफसरों की संख्या भी अत्यन्त परिमित

करदी गई। हां सैनिक स्वयं सेवक बनाने की अनुमति दे दी गई।

नौसेना सम्बन्धी धाराएं भी उसी प्रकार बड़ी भयंकर थीं। जर्मनी की नौसेना को घटा कर उसे केवल छै हल्के क्रूजर (जंगी जहाज), १२ विनाशक जहाज (Destroyers), और १२ पनडुब्बियों में ही परिमित कर दिया गया। पनडुब्बी विनाशक नौकाओं (Submarines) का रखना तो जर्मनी के लिये एक दम बंद कर दिया गया। दस सहस्र टन से अधिक भारी जहाजों का बनना भी जर्मनी में बंद कर दिया गया। नौसेना में भी स्थल सेना के समान अधिक समय तक रहने वाले स्वेच्छा-स्वयं-सेवकों को रखने की अनुमति दी गई। जर्मनी के शेष जंगी जहाजों को नष्ट कर दिया गया। आकाशीय सेना की तो जर्मनी को बिल्कुल अनुमति नहीं दी गई। उसके सभी जंगी हवाई जहाजों को नष्ट कर दिया गया। जर्मनी के सैनिक प्रबंध की देख भाल के लिये एक कमीशन बिठलाया गया, जिसका कार्य सन १९२५ में बिल्कुल समाप्त होगया। किंतु जर्मनी के सैनिक प्रबंध का निरीक्षण इस के बाद भी राष्ट्रसंघ द्वारा तब तक किया गया जबतक १४ अक्टूबर सन् १९३३ को उसको हिटलर ने स्पष्टतया अंगूठा न दिखला दिया।

छठा भाग—युद्ध के कैदी और कबरें

यह भाग अन्य देशों के सन्धिपत्रों के समान ही है। इसके अनुसार युद्ध के कैदियों को वापिस लिया गया तथा कबरों की सुरक्षा का वचन लिया गया।

सप्तम भाग—दण्ड

इस सन्धि पत्र में यह भाग सब से अधिक विचारणीय

है, और न इसके ऊपर कभी कुछ आचरण ही किया जा सका। इसकी धारा २२७ के अनुसार निश्चय किया गया कि भूतपूर्व जर्मन सम्राट क़ैसर विलियम द्वितीय पर खुली अदालत में अन्त र्राष्ट्रीय नैतिकता का पालन न करने का मुक़दमा चलाया जावे। इस मुक़दमे के लिये एक विशेष कमीशन बनाया जाने वाला था, जिसमें मित्र राष्ट्रों की प्रत्येक सरकार का एक २ प्रतिनिधि होता। किन्तु मित्रराष्ट्रों की यह अभिलाषा इसलिये पूर्ण न हो सकी, कि नीदरलैण्ड (हालैण्ड) की सरकार ने–जिसके यहां पदच्युत क़ैसर ने आश्रय लिया था–उसको शत्रुओं के बारबार मांगने पर भी देने से एकदम इन्कार कर दिया।

धारा २२८–३० के अनुसार जर्मनी के अफ़सरों को दण्ड देने का निश्चय किया गया। इस विषय में सौ से भी अधिक अप राधियों की सूची बना कर उनको जर्मन सरकार से मांगा गया। किन्तु मित्रराष्ट्रों की यह इच्छा भी इस रूप में पूर्ण न हो सकी। मित्रराष्ट्रों की इस मांग से जर्मनी पराजित हो जाने पर भी विक्षुब्ध हो उठा। अन्त में बड़े झगड़े के पश्चात् उन में से लग-भग बारह अधिकारियों पर जर्मनी में ही जर्मनों द्वारा मुक़दमा चलाया गया। इनमें बहुत कम को सज़ा दी गई। मित्रराष्ट्रों ने भी इससे अधिक इस मामले पर ज़ोर नहीं दिया, क्योंकि समग्र जर्मनी इस प्रश्न पर उत्तेजित हो उठा था। उसने इस अपमान का मुक़ाबला करने के लिये फिर अपने प्राणों की बाज़ी लगाने का निश्चय कर लिया था। अतएव मित्रराष्ट्रों ने फिर युद्ध की संभा-

यना के भय से इस मामले को वहीं छोड़ दिया। इन सजा पाये हुए व्यक्तियों में जर्मनी के प्रधान सेनापति स्वयं फील्ड मार्शल हिंडेनबर्ग भी थे, जो सन् १९२४ में जर्मनी के राष्ट्रपति निर्वाचित किये गये।

आठवां भाग—हर्जाना

इस सन्धिपत्र का यह भाग सब से अधिक महत्त्वपूर्ण है। धारा २३२ में जर्मनी द्वारा की हुई क्षति का विवरण दिया हुआ है। इनमें सिविल अधिकारियों की पेंशनों तक को सम्मिलित किया गया है।

इसके पश्चात् इस भाग में हर्जाना वसूल करने की पद्धति पर विचार करके एक 'हर्जाना कमीशन' की स्थापना की गई। इस कमीशन को अपरिमित अधिकार दिये गये। यह जान पड़ता है कि इंगलैंड के तत्कालीन प्रधान मन्त्री मिस्टर लायडजार्ज हर्जाने के विषय में जर्मनी को इतना अधिक दबाना नहीं चाहते थे। किन्तु समझौते की बातचीत से अमरीका के हट जाने, ब्रिटिश लोकमत के जर्मनी के विरुद्ध होने और फ्रांस के उसको कुचलने के पूर्ण निश्चय के सामने उनकी एक न चली। यह अनुमान लगाया गया था कि जर्मनी दो अरब पौंड दे सकता है। किन्तु हर्जाने की रकम तीन या चार अरब तक लगाई गई। अन्त में डावे कमीशन ने सन् १९२४ में हर्जाने के इस जटिल प्रश्न को हल किया। जिस चीज की हानि हुई उसके एवज में उसी वस्तु को लिया गया। यहां तक कि जंगी जहाजों के एवज में जंगी जहाज ही लिये गए। इस

प्रकार की सामग्री ग्रेट ब्रिटेन को अधिक मिली। फ्रांस ने कोयले तथा कोयला सम्बन्धी अन्य पदार्थ लिये, बेल्जियम ने पशु आदि लिये।

नौवां भाग—सम्पत्ति सम्बन्धी धारा

इस धारा में यह हिसाब लगाया गया कि कौन २ सी वस्तु किस क्रम से दी जावें। करेंसी के प्रश्न पर भी इसमें विचार किया गया।

दसवां भाग—आर्थिक धारा

इसकी धारा २६४—७५ तक व्यापारिक सम्बन्धों, जहाजों तथा अनुचित प्रतीयोगिता और व्यापारिक सन्धियों आदि पर विचार किया गया। नदियों, नहरों और आवागमन के साधनों को अन्तर्राष्ट्रीय बनाने पर अत्यंत अधिक बल दिया गया। यहां तक प्रस्ताव किया गया कि कच्चे माल पर संसार भर में कहीं भी चुंगी न ली जावे। किन्तु अंत में इसका सब से बड़ा लाभ यह हुआ कि मित्रराष्ट्रों को पांच वर्ष तक के लिये जर्मनी से अनेक प्रकार की अनुचित सुविधाएं मिल गईं। इस कार्य के लिये अनेक व्यापारिक संधियां की गईं।

धारा २९६—३११ तक शत्रुओं की सम्पत्ति, ऋण और ठेकों आदि पर विचार किया गया। यह निश्चय किया गया कि विदेशों में बसने वाले जर्मनों की सम्पत्ति को छीनकर उसको जर्मनी के हर्जाने के हिसाब में जर्मनी की ओर से जमा कर

जारहे थे, उधर जर्मनी में सोशल डेमोक्रैट नेता—जैसा कि पी
बतलाया जा चुका है—जर्मन जनता को नवीन शासन के स्वर्ग
के कल्पना लोक के दर्शन करा रहे थे । जनता को वारसाइ
संधि की सत्यानाशकारी धाराओं का कुछ भी पता नहीं था। जि
समय इस संधि पर हस्ताक्षर होकर इसका समाचार पत्रों में छ
तो जर्मन जनता का यह स्वप्न यकायक ही टूट गया और इस
प्रकार उसकी अनन्त शान्ति, भावी सुख और सब ओ
उन्नति की आशा भी टूट गयी। अचानक भविष्य के इस प्रसन्न
पूर्ण राग के बीच में मानवता के विषय को इस मानसिक
में वारसाइ के नरसिंघ का तेज और बेसुरा शब्द सुनाई दिया
जर्मनी पहले पहल सामाजिक युद्ध के नशे से जाग पड़ा।
चमक में यह दिखलाई दिया कि जर्मनी ठगा गया। विल्स
के वचनों और चौदह सिद्धान्तों पर विश्वास करके उसने तलवा
म्यान कर ली थी। जर्मनी ने अपने आपको विश्वास पूर्वक सं
भर की प्रसन्नता और अन्तर्राष्ट्रीय ऐक्य के सिद्धान्तों पर छो
दिया था, और अब उसने अपने को मशस्त्र और पूर्णत
यान्त क्रोधी शत्रु के विरुद्ध बिल्कुल अरक्षित अनुभव किया। वा
साई की सन्धि की शर्तें दान्ते(Dante)के मस्तिष्क की कल्पनाओं
अधिक शैतानी से भरी हुई थी। संसार के इतिहास में किसी
जाति को कभी ऐसी शर्तें नहीं दी गई। वारसाई की
जनक सन्धि की तुलना में कार्थेज का विनाश भी कोई चीज
। 'सन्धि शब्द को इस से लज्जित किया गया है और सारा

लिये उसकी मिट्टी पलीद की गई है। अब एक वीर शान्तिपूर्ण, कठिन-परिश्रमी, स्वतन्त्रता और सम्मान प्रेमी जाति वारसाई के जेलखाने में बन्द की गई। इस प्रकार भयप्रद किन्तु सम्माननीय शत्रु के पूर्णतया नष्ट होने से बदला लेने की तृष्णा शान्त हो गई। जर्मनी के शत्रुओं ने अपनी अन्ध घृणा में यह नहीं देखा कि इस कथित सन्धि से न केवल जर्मनी पर, वरन् सम्पूर्ण संसार भर पर घोर आपत्ति आने वाली है।

किन्तु यह सब कुछ होते हुए भी जर्मनी में मार्क्सवादी सन्धि के देवदूत जनता के सन्मुख अन्तर्राष्ट्रीय ऐक्य की बकवास बराबर लगाये रहे। वारसाई की स्वेच्छापूर्ण शर्तों का दोष युद्ध हारने पर दिया जाता है, किन्तु यह बात भूली जा रही है कि स्वयं सोशल डेमोक्रेट लोगों ने ही अपनी धोखादेही के कार्य से जर्मन जाति को पराजित कराया था। किन्तु जर्मन लोगों ने इस बात को बहुत देर में अनुभव किया कि पिछले महीनों में उन्होंने अपना सम्मान खो दिया और अब बिना सम्मान के उसकी स्वतन्त्रता भी छीनी जा रही है। केवल एक बार ही एक पुरुष के समान वह दोबारा फिर उस समय उठे, जब लज्जा असह्य हो गई और उन्हों ने सुना कि जर्मन सेनापति शत्रुओं को सौंप दिये जाने वाले हैं। यदि उस जाति वालों के सन्मुख ऐसा प्रस्ताव रक्खा जाता तो कौन सा अङ्गरेज या फ्रांसीसी लज्जा से नतमस्तक न हो जाता? किन्तु जर्मन लोग आज इस बात को जानते हैं कि उनके शत्रु ऐसी अपमानपूर्ण मांगों को उनके सन्मुख तब तक कभी नहीं

रख सकते थे यदि वह जर्मनी के नैतिक पतन को अपनी आँख से न देख लेते। उन्हों ने यह देख लिया था कि किस प्रकार जर्मन नेता उस समय सम्मान और राष्ट्रीय अभिमान के प्रत्येक विचार खो चुके थे, और केवल इसी लिये वह जर्मनी का इस प्रकार अपमान कर सके थे।

ग्यारहवां अध्याय

वीमर की सरकार

फ्रेडरिक एबर्ट की प्रधानता में पहिला चैंसलर वीमर बनाया गया। वीमर की मार्क्सवादी डेमोक्रैटिक राष्ट्रीय असेम्बली को नये जर्मन विधान का आधार वारसाई की सन्धि को बनाते हुए लज्जा नहीं आई। वीमर का राज्य धोखेबाजी और भीरुता से उत्पन्न हुआ था। दुःख और लज्जा उसके सीमान्त पत्थर थे। नए जर्मनी ने इस प्रजातन्त्र का शासन न किये जाने योग्य पार्लमेन्ट के रूप में पूर्ण लाभ उठाया। सब विचार उलट पलट गये। पार्लमेंट–शासन–प्रणाली का नेतापने के सिद्धान्त के मुकाबले में विशेष चिन्ह स्वरूप वह अधिकार है जो नीचे से ऊपर को दिया जाता है और जिसका उत्तरदायित्व ऊपर से नीचे को आता है। सारांश यह है कि असख्य दल और उनके प्रतिनिधि अपना अधिकार सरकार पर जमाते हैं और सरकार को उनकी

आज्ञा माननी पड़ती है। अतएव सरकार इन दलों के प्रति उत्तरदायी हो जाती है और उन्हीं के स्वत्वों का खिलौना बनी रहती है। किन्तु प्रकृति के नियम यह चाहते हैं कि अधिकार ऊपर से नीचे को आवे और उत्तरदायित्व नीचे से ऊपर को जावे। प्रत्येक नेता के हाथ में अधिकार रहता है और वह अपने नीचे के अफसरों और अनुयायियों के नाम आज्ञापत्र निकालता है। किन्तु उत्तरदायी वह केवल अपने अफसर के सामने होता है, और सब से बड़ा नेता समग्र जनता के सन्मुख वर्तमान और भविष्य के विषय में उत्तरदायी होता है। प्राचीन समय में केवल इसी गुण के कारण अधिकार दिया गया था। इसी सिद्धांत के कारण राष्ट्रों का उत्थान हुआ और इतिहास बनाया गया। किन्तु जर्मनी में इस समय पार्लमेंट का शासन था, जो बहुमत के गुमनाम विचार के नाम से शासन करती थी, और कायरता जिसके सदस्यों की एक विशेषता थी।

श्रेणियों और दलों के इन विभागों में असभ्य वर्गों ने जनता के व्यय पर अपना २ काम बनाया। मार्क्सवाद ने अपनी सबसे बड़ी विजय का समारोह मनाया था। राजा सब निकाल दिये गये और रंग बिरंगे स्वामी उनके खाली सिंहासनों पर बैठ गये। किन्तु इतने मात्र से ही वह शासक नहीं बन। उन सबके ऊपर सुनहरा बछड़ा सिंहासन पर बिठलाया गया और पार्टियाँ अपना आप तीतर आप बटेर का नाच नाचती रहीं। तत्कालीन जीवन की प्रत्येक गति में हम पतन ही पतन

देखते हैं। प्रतिवर्ष राष्ट्र की अपनति स्पष्ट होती जाती थी और इस समय से लगा कर रोश को केवल छायामात्र रह जाती है। यह केवल ऐसा ढांचा मात्र रह जाता है, जो बिना किसी अभिप्राय अथवा उद्देश्य के बहुत स्थानों में इतना नाजुक होता है कि इसको बड़ी कठिनता से एक साथ रोका जा सकता है। दुराचरण, अनैतिकता और बेढंगापन इस 'अभिमानी' प्रजातंत्र के बाह्य चिन्ह थे। इसमें नैतिकता की हानि के साथ २ सभ्यता का पतन भी आरम्भ होता है।

इसके पश्चात् भयकर महगापन आया। वास्तविक मार्क्स सिद्धान्त के ढग पर सब प्रकार के सभ्यता सम्बन्धी आदर्श और नैतिक मूल्यों को नष्ट करने का उद्योग किया ही गया था, अतएव यह तर्कपूर्ण था कि विनाश का यह युद्ध अब राष्ट्र के आर्थिक जीवन के विरुद्ध किया जावे। मार्क्सवाद को तभी सफलता प्राप्त हो सकती है जब जनता असंतुष्ट, गृहहीन, अपने खेतों से निकाली हुई और इसी लिये असत्य सिद्धान्तों को स्वीकार करने को तयार हो। इस बात का उद्योग किया गया कि प्रत्येक सामाजिक कार्य में एक सब से छोटा निर्धन विभाग उत्पन्न किया जावे। जर्मन जाति को नैतिक रूप से वास्तव में सब से छोटा निर्धन विभाग बना देना था। उस प्रकार के महगेपन ने उस प्रत्येक प्रकार की समृद्धि को नष्ट कर दिया जो इस समय तक थोड़ी बहुत बची थी।

जहां कहीं भी उत्तराधिकार-प्राप्त सम्पत्ति थी नष्ट कर

दी गई। रात भर के अंदर सहस्त्रों निर्धन बना दिये गये। सम्पत्ति के अंतिम अवशेष महंगेपन तथा टैक्स लगाने के विशुद्ध बोलशेविक प्रथा द्वारा नष्ट कर दिये गये। उनको स्मरण कर केवल आदूगरनी की छुट्टी के दिन लाखों उड़न वाले की ही याद आती है। क्या यह मार्क्सवाद का आर्थिक पराक्रम था? क्या उनकी पूर्ण सामाजिकता का यही अभिप्राय था? बाद के दिनों में उन्हों ने इस को नम्रतापूर्वक एक प्राकृतिक दुर्घटना बतलाया था। उस समय वह यह भूल गये कि यह केवल उनके अपराधपूर्ण—सिद्धान्तों का परिणाम था। यहां पर हम फिर उस निकट संबंध को देखते हैं जो मार्क्सवाद और उदारतावाद (लिबरलिज्म) में वर्तमान है। जब जन संख्या के मध्य से निर्धन विभाग न आर्थिक क्षेत्र में उदारतावाद के नाम पर प्रचार किये हुए समानता, स्वतन्त्रता और भाईचारे के आदर्शों की मांग उपस्थित की तो मध्यश्रेणि वालों को किस प्रकार आश्रय हो सकता था? यह एक हम दिखलाई दे सकता है कि सोशल डैमोक्रेसी और मध्यश्रेणि के दलों की सीमाएं किस प्रकार उत्तरोत्तर कम स्पष्ट होती गईं। सोशल डमोक्रेट नेता लोग अधिकाधिक मध्यश्रेणि वाले बनते गये और वह अपने व्यक्तिगत लाभ के पासते उसकी रक्षा करने का प्रबंध करने लगे जो उन्हों ने कमाया था। अब वह 'सोर्वसन्नी के लिये!' आवाज नहीं लगाते थे। अब वह अचानक नियम और आज्ञा की रक्षा करने लगे थे। दूसरी ओर मध्य श्रेणी वाले अपने आचरण की त्रुटि के कारण सामान्य प्रतीयोगिता में लग गई।

आज हम शोसल डेमोक्रैटिक पार्टी वालों पर—चाहे वह जैसे आरंभ में अपनी लाल जैकोबाइट टोपी में थे अथवा जैसे बाद में वह टोप में थे—जर्मनी को धोखा देने और लूटने का दोष लगाते हैं, किन्तु हमको यह नहीं भूलना चाहिये कि मध्य श्रेणि के दल (Bourgeois Parties) वालों और उससे भी अधिक सदा इधर उधर होते रहने वाले केन्द्र दल ने (Centre Party) ने भी ऐसी सब घटनाओं में भाग लिया था।

काले और लाल दलों (Black and white Parties) में बहुत कुछ दार्शनिक मतभेद होने पर भी काले दल ने कभी भी लाल दल का विपत्ति में साथ नहीं छोड़ा। पार्टियों ने बिना किसी विघ्न बाधा के पार्लमेंट के द्वारा शासन किया। किन्तु थकी हुई और बुरी तरह लदी हुई जनता को उनके द्वारा दिये हुए कष्टों के चक्कर सहन करने ही पड़ते थे।

इस आन्तरिक विनाश के साथ विदेशा में जर्मनी के सम्मान को अधिकाधिक धक्का पहुँचता रहा। सब प्रकार की देशभक्ति के नियमविरुद्ध घोषित होजाने पर और सब वीरता के गुणों की हसी उड़ाये जाने पर केवल यही तर्कपूर्ण था कि जर्मन सरकार की अपनी परराष्ट्रीय नीति में नपुंसकता के लिये उस की निन्दा की जाती। जर्मनी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का कोई बाजी का लड़का बन गया था। दूसरी शक्तियों के विवादास्पद स्वत्वों का निर्णय जर्मनी के व्यय पर होता था। राष्ट्रसंघ (League of Nations) तो वारसाई की संधि की रक्षा करने के लिये

जर्मनी को अवनत बनाये रखने का एकमात्र साधन बन ग
ज्ञात पड़ता था। उस सन्धि के अनुसार जर्मनी पूर्णरूप
निःशस्त्र हो गया था, और अपनी रक्षा करने योग्य बिल्कुल
नहीं रहा था। जर्मनी की विभिन्न सरकारों ने स्वयं
निरशस्त्रीकरण के अनुसार कार्य किया था। किन्तु जर्मनी
विरोधी वारसाई की संधि की आवश्यकताओं से भी आगे
गये थे। उन्होंने जर्मनों को नैतिक रूप के साथ ही
आध्यात्मिक रूप से भी निःशस्त्र कर दिया था। उन्होंने
रक्षण और विरोध करने के सब निश्चयों को नष्ट कर दिया था
सन्धि की शर्तों को पूर्ण करने की पागल अभिलाषा में
ज्योतिष के अंकों जैसे नशे में भर गये। जनता के सम्मान
लूट लेने के कारण वह अपने मित्र और शत्रु दोनों के लिये
बने हुए थे। स्पष्टवादिता, ईमानदारी और शान की नीति
स्थान में, जिसके अनुसार बड़ी से बड़ी आपत्ति के समय
कार्य किया जा सकता है, उन्होंने दगाबाजी की नीति
की। उन्होंने परराष्ट्रीय नीति की सब से कठिन समस्या
को अन्तर्राष्ट्रीय ऐक्य के नाम पर अपील करके हल करने
प्रयत्न किया। जर्मन पार्लमेंट की नीति की यह एक विशेष
थी कि वह समस्याओं को सुलझाती नहीं थी। किन्तु प्र
महत्वपूर्ण प्रश्न से किसी कायरतापूर्ण सममझौते के द्वारा भा
निकला करती थी।

इसके पश्चात् साम्यवाद (Communism) आया

"यह अनिवार्य रूप से मार्क्सवाद" के झूठे सिद्धान्तों से ही विकसित हुआ था। कायरता और आत्म-समर्पण की नीति के अनिवार्य परिणामस्वरूप साम्यवाद ने सर उठाया था और मार्क्सवाद की चालाकी भरी और मध्यमवर्गों को कायरतापूर्ण और घड़ी २ से बदलती रहने वाली नीति से प्रोत्साहन पाकर वह अनिवार्य रूप से विजयी हुआ। प्रजातन्त्र (Republic) के जन्म के समय साम्यवाद के अनुयायी कुछ सहस्र ही थे। किन्तु कुछ वर्षों में ही यह संख्या बढ़ कर साठ लाख होगई। अब साम्यवाद शक्ति पर अधिकार करने और सभ्यता, नीति, धर्म तथा व्यापार को नष्ट करने के लिये तयार होगया। वह जर्मनी को मुकाबिले में डालने के लिये तयार था। जर्मन लोग निर्धनता और निराशा में पड़े हुए थे। अतएव अब वह सहस्रों की संख्या में साम्यवाद में दीक्षित होगये। घृणा से भरे हुए लाखों आदमी विनाश चाहते थे, क्यों कि उनकी भी प्रत्येक वस्तु नष्ट होगई थी। निराश और ठगी हुई इस जनता के लिये नेता भी तयार थे। यह नेता नीची दुनिया के थे और जनसंख्या की गाद थे। यहां भी किसी दूसरे स्थान की अपेक्षा यहूदियों का ही अधिक प्रतिनिधित्व था। छोटे आदमियों की नष्ट करने की इच्छा के साथ २ उन्हों ने विचार किया कि उनका समय आगया है। झण्डा फहराया गया। वह सोवियट के सितारे को बीच में लिये हुए लाल रंग को फहरा रहा था। यदि इस चिन्ह की विजय होजाती तो जर्मनी बोल्शेविक वाद के बड़े भारी तूफान में बह जाता।

बारहवां अध्याय

जर्मनी का परिणाम

यह जान पड़ता था कि जर्मनी नष्ट हो गया। यह किस प्रकार सम्भव था कि अभी २ इतनी भारी वीरता से युद्ध करने वाली जाति इस प्रकार पूर्ण रूप से असफल हो जाती ! क्या विनाश की शक्तियों का विरोध करने के लिये कोई तैयार नहीं था ? राष्ट्रीय सम्मान को धारण करने वाले कहीं न कहीं तो होंगे ही, और निश्चय से ही वह थे ? आरम्भ से ही विरोध होता गया। सब कहीं युद्ध के अनुभवी एकत्रित होते थे, सभाएं और संगठन बनाते थे। उन्होंने स्वयं सेवक दल (Volunteer Corps) में स्पार्टसिस्टों (Spartacists) के विरुद्ध, उत्तरी साइलेशिया [illegible] रूप में युद्ध किया था। उन्होंने साम्यवादियों की प्रथम भारी सफलता को मिटाने के लिये युद्ध किया था और म्यूनिक नगर की मजदूरों की सभा (Workers Council) की स्वाधीनता से [illegible]

किया था। सेना के सरकार द्वारा विसर्जित किये जाने के पश्चात् नये २ सगठन बनते गये। सेल्डटे ने मेडेबर्ग नगर में फौलादी टोप वालों (Steel Helmets) की स्थापना की। यह युद्ध के अनुभवियों की सभा थी। बैवेरिया में निवासी रक्षा सेना (Inhabitant Defence Force) बनाई गई। और ऐल्प्स् पर्वत पर ओग्ररलैण्ड कोर बनाई गई। किन्तु इनमें से प्रत्येक का अस्तित्व केवल अपने २ लिये था। उन दोनों में परस्पर कोई संबन्ध नहीं था। आरम्भ में उन दोनों का नियम और आज्ञा की रक्षा करने का उद्देश्य एक ही था। किन्तु आगे चल कर पता चला कि उनका उद्योग नकारखाने में तूती की आवाज थी। क्योंकि नियम और आज्ञा केवल वही थी जो भली प्रकार पले हुए सोशल डेमोक्रेट नेता स्वयं चाहते थे। यह सभी संस्थाएं देश प्रेम के उद्रेक से भरी हुई थीं और वर्तमान शासन प्रणाली के लिये इनके हृदय में घृणा थी। किन्तु उनमें सब से बड़ी त्रुटि यह थी कि उनके पास युद्ध की वीरतापूर्ण विधि नहीं थी, जो कि वास्तव में एक बड़ा उद्देश्य है और जो वास्तव में स्थिर नींव है। उनके हृदय में अपने पूर्वजों के गत सब कथानक भरे हुए थे और वह उनकी रक्षा करने के लिये तयार थे। किन्तु वह नवीन भविष्य के प्रामाणिक निर्माता नहीं थे। तो भी जर्मनी उनका अत्यन्त ऋणी है। क्योंकि वह सब से बड़ी आवश्यकता के समय भी न चूके। जो लोग देश के लिये युद्ध करने को तयार थे उनके लिये वह एकत्रित होने के साधन बन गये। किन्तु वह नवम्बर के राज्य को

उटलन में कभी सफल नहीं हो सकते थ, क्योंकि उस राज्य के नेतृत्व ऐसे लोगों के हाथों में था, जो एक विशेष विचार के प्रतिनिधि थ, यद्यपि वह विचार भी विनाशात्मक ही था। किसी विचार को केवल शक्ति से ही कोई भी कभी नष्ट नहीं कर सकता।

किसी विचार का त्याग तभी किया जा सकता है जब उसके स्थान में कोई ऐसा विचार उपस्थित किया जावे जो उससे अच्छा और अधिक मनोग्राही हो और जिसके प्रतिनिधियों में उत्साहपूर्ण सामर्थ्य हो। प्रतिषेधात्मक विचार का स्थान केवल विध्यात्मक विचार ही ले सकता है। विचार नित्य होते हैं और वह आकाश के तारों में लटकते रहते हैं। मनुष्य को उन तारों तक पहुंचने के वास्ते पर्याप्त रूप में धीर और प्रबल होना आवश्यक है, जिससे वह उस अग्नि को आकाश से लाकर उसी की मशाल का प्रकाश मनुष्यों को दे सके। संसार के इतिहास में ऐसे ही व्यक्ति सदा पैगम्बर और प्राय अपने आदमियों के नेता होते आए हैं।

किन्तु जर्मनी में उसके निवासी और उस देश की रक्षा करने वाले ऐसे व्यक्ति कहां थे, जिनमें प्रबल मस्तिष्क शक्ति और सामर्थ्य दोनों ही हों? जनता ने उन लोगों की ओर व्यर्थ ही देखा, जो अपने जन्म, शिक्षा, आर्थिक सम्पत्ति के अभिमान अथवा भारी ख्याति से नेता बने हुए थे। किन्तु उनका बड़प्पन निकल गया; इन व्यक्तियों ने थोड़ा भी विरोध नहीं किया। उन्होंने अपने पूर्वपुरुषों की कई शताब्दियों की विजय को बिना लड़ाई

भिक्षाई के ही छोड़ दिया । शुभकाक्षी परमात्मा के द्वारा हाथों में आये हुए को बिना झगड़े के छोड़ने वाले व्यक्ति को भाग्य कभी क्षमा नहीं करता। 'अपने पूर्वजों से प्राप्त किये हुए को अपने हाथ में स्थायी रूप से रखने के लिये उसको नये सिरे से जीतना चाहिये'। दुर्भाग्यवश जर्मनी के राजपरिवारों ने इस नित्य सत्य की उपेक्षा की। वह अपनी किसी वस्तु को भी खतरे में डालने के लिये तयार नहीं थे। अतएव जब दूसरों ने भी उनके या उनकी वस्तुओं के लिये कुछ नहीं किया तो उनको इस बात पर आश्चर्य करने का कोई अधिकार नहीं था। इन राजघरानों का उद्देश्य कुछ भौतिक वस्तुओं को अपने कब्जे में रखना था और इसके वास्ते उन्होंने अपने क़ानून परामर्शदाताओं को काम पर लगा दिया था। जनता और सबसे अधिक युद्ध के अनुभवियों ने अत्यन्त निराशा के साथ देखा कि किस प्रकार इन जन्मसिद्ध नेताओं ने उनको पराजित करवाया। जेनेरल गोयरिंग ने साम्राज्यवादी के रूप में इस लोकापवाद का विरोध किया था कि १६१८ के विद्रोह से साम्राज्यवाद पूर्णतया नष्ट हो गया। जर्मन जाति में गत पन्द्रह वर्षों में साम्राज्यवाद का विचार इस कारण उठ गया कि राजपरिवार के प्रतिनिधियों ने स्वयं अपने लिये कब्र खोद डाली। १६१८ में भीड़ के थोड़े ही से विरोध पर उन्होंने उन झंडों को नीचा कर लिया, जो कभी बड़े प्रतापी थे। इसी प्रकार उनका उन वीरों में कभी पता नहीं चला जो उत्साह पूर्वक जर्मनी के पुनर्निर्माण के लिये युद्ध कर रहे थे। इनमें कुछ उल्लेख

sner) की मृत्यु से क्रान्ति की प्रगति और भी बढ़ी। अब देश की डिक्टेटर एक कौंसिल बनी। इस समय को 'मजदूरों का अस्थायी शासन' कहते हैं। उस समय हिटलर के मन में अर्थ स्य कार्यक्रम दौड़ा करते थे।

नई क्रान्ति में हिटलर ने कुछ ऐसे कार्य किये, जिससे केन्द्रीय कौंसिल उससे अप्रसन्न हो गई। २७ मार्च १९१९ को हिटलर को ठीक सूर्योदय के समय गिरफ़्तार किया गया। किन्तु जब हिटलर ने उनको अपनी बन्दूक (राइफिल) दिखलाई तो तीनों युवकों का साहस छूट गया, और वह जिधर से आए थे वापिस चले गये।

म्यूनिक में छूटने के कुछ दिनों के पश्चात् हिटलर को उस कमीशन में सम्मिलित किया गया, जिस को सेकिंड इन्फैंट्री रेजिमेंट (2nd Infantry Regiment) की क्रान्ति सम्बन्धी घटनाओं की जांच करनी थी। न्यूनाधिक राजनीति में प्रवेश करने का हिटलर के लिये यह प्रथम अवसर था।

इसके कुछ सप्ताह के पश्चात् हिटलर को रक्षक सेना (Defence Force) की सदस्यता की शिक्षा लेने का निमन्त्रण मिला। इस शिक्षा का उद्देश्य यह था कि सैनिकों को शासक पर विचार के बारे निश्चित सिद्धान्त बतलाये जायें जिनसे वह राज्य के नागरिक बन सकें।

हिटलर इस प्रस्ताव पर इस लिये सहमत हो गया कि वह अपने जैसे कुछ और ऐसे साथियों से जान पहचान करना चाहता

। जिनके साथ यह इस आन्दोलन की परिस्थिति पर पूर्णतया
: विवाद कर सकता। इस बात का सभी को विश्वास था कि
नी का पतन अवश्यभावी है। नवम्बर के अपराधी-सेन्ट्रल और
ाल डेमोक्रैटिक पार्टियां अथवा मध्यम श्रेणि के राष्ट्रवादी इस
न के मार्ग को और साफ करते जाते थे।

सैनिकों के उस छोटे से क्षेत्र में एक नयी पार्टी बनाने के
। पर वादविवाद हुआ। इस पार्टी के उद्देश्य वही रखने थे, जो
ृ में जर्मन श्रमिक दल के बनाये गये। नये आन्दोलन का
श्य जनता की सहानुभूति प्राप्त करना था। क्योंकि यदि
न्दोलन में यह गुण न होता तो सारे का सारा कार्य निरुद्देश्य
र निर्जीव दिखलाई देता। अतएव यह निश्चय किया गया कि
। नये दल का नाम 'सोशल रेवोल्यूशनरी पार्टी' (सामाजिक
न्तिकारी दल) रखा जावे। क्योंकि नयी पार्टी का सामाजिक
चार वास्तव में क्रान्ति करने का था।

यह सब विचार इस निष्कर्ष के परिणाम थे कि सभी
मलों में पूंजी श्रम का फल थी, पूंजी ही मानवी कार्यों को
ागे बढाने अथवा नियमित करने का मूल थी। उस समय
जी का राष्ट्रीय रूप राष्ट्र के बड़प्पन, स्वतन्त्रता और शक्ति पर
र्भर था। राष्ट्र की उन्नति श्रमी और धनी दोनों के मिलने से
: सकती थी और इन दोनों के मिलने से ही पूंजी बढ सकती
:। पूंजी से आत्मनिर्भर राष्ट्र ही स्वतन्त्र और शक्तिशाली हो
ाकता है।

इस प्रकार पूंजी के प्रति राष्ट्र का कर्तव्य सुगम और स्पष्ट था। पूंजी को राज्य का सेवक होना चाहिये, राष्ट्र अरु जाति का नहीं। अपनी इस नीति से राज्य दो काम कर सक है। एक ओर तो वह पूर्ण राष्ट्रीय और स्वतंत्र शासन की र करके उसकी उन्नति कर सकेगा और दूसरी ओर वह अमिर्यो सामाजिक अधिकारों की रक्षा कर सकेगा।

इस समय इन्हीं विचारों पर एक प्रसिद्ध व्याख्याता गे फ्राइड फडर (Gottfried Feder) के व्याख्यान हो रहे थे। हिटलर ने भी इन व्याख्यानों को सुना। अब उसके विच पूर्णतया व्यवस्थित हो गये और वह उस मार्ग पर चल प जिस पर नयी पार्टी की स्थापना की जा सकती थी। फेडर व्याख्यानों में उसको भावी युद्ध की आवाज मिली।

हिटलर तथा अन्य सच्चे नेशनल सोशिएलिस्टों के लि केवल एक ही सिद्धान्त था। राष्ट्र और पितृभूमि।

उनको सुरक्षा के लिये, अपनी जाति और राष्ट्र की उन्न के लिये, उसके अस्तित्व के लिये, उसके बच्चों को पा तथा रक्तशुद्धि के लिये, पितृभूमि की स्वतंत्रता के लिये, सब से अधिक उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये युद्ध करना था परमात्मा ने मनुष्य जाति के लिये निश्चित किया है।

हिटलर ने अब नये सिरे से अध्ययन करना आरंभ दिया। अब वह यहूदी कालमार्क्स की शिक्षाओं और उस इच्छाओं को ठीक २ समझ गया। अब जाकर वह उसकी पू

को समझ पाया। और अब वह राष्ट्र की अर्थनीति के विरुद्ध सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के युद्ध को समझा।

हिटलर का प्रथम सार्वजनिक व्याख्यान

दूसरे प्रकार से इसके बड़े २ परिणाम हुए। एक दिन हिटलर ने स्वयं व्याख्यान देने की इच्छा की घोषणा की। श्रोताओं में से एक ने सोचा कि हिटलर यहूदियों पर आक्षेप करेगा। अतएव उसने अनेक युक्तियों से उनका मण्डन करना आरम्भ कर दिया। इससे हिटलर में भी विरोध करने का उत्साह हो आया। उपस्थित जनता ने बड़े भारी बहुमत से हिटलर का साथ दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ दिनों के बाद ही हिटलर को शिक्षक के रूप में म्यूनिक की सेना में सम्मिलित होना पड़ा।

उस समय सेनाओं में विनयानुशासन का एक दम अभाव था। वह 'सैनिक समिति' के समय के कष्टों से पीड़ित थे। बड़ी कठिनता और सतर्कता से उनसे आधीनता स्वीकार कराई गई। साथ ही साथ सैनिकों को अपने को उसी राष्ट्र और पितृभूमि के निवासी समझने की शिक्षा भी देनी थी। हिटलर अब यही नया कार्य करने लगा। हिटलर ने उन में प्रेम और उत्सुकता की उमंग भर दी।

इसमें हिटलर को सफलता भी अच्छी मिली। अपने व्याख्यान से हिटलर सैंकड़ों ही नहीं, वरन् हजारों को देशभक्त बना देता था। इस प्रकार हिटलर ने सेनाओं को पूर्णतया राष्ट्रीय बना दिया

और तब उनमें स्वयं ही विनयानुशासन आ गया।

इसके अतिरिक्त उसकी ऐसे भी बहुत से साथियों से व
पहचान हो गई जिनके विचार उसके जैसे ही थे और जो बाद
नये आन्दोलन की नींव डालते समय हिटलर से मिल गये।

चौदहवां अध्याय

जर्मन श्रमिक दल

एक दिन हिटलर के नाम प्रधान कार्यालय से आज्ञा आई कि वह उस सभा में जाकर वहा की कार्यवाही का पता लगावे, जो स्पष्ट रूप से राजनीतिक थी, और जिस का अधिवेशन आगामी कुछ दिनों में ही जर्मन श्रमिक दल (German Workers Party) के नाम से होने वाला था। उसमें पूर्वोक्त गोटफ्राइड फेडर का भाषण होने वाला था । हिटलर को इस सभा में जाकर तथा उसकी कार्यवाही देखकर उसकी सूचना अधिकारियों को देनी थी ।

सेना में भी राजनीतिक दल के प्रति बड़ी भारी उत्सुकता थी। क्रान्ति से सैनिकों को राजनीति में भी क्रियाशील होने का अधिकार मिला था । उनमें से सब ने ही—सब से कम अनुभवी तक ने—उसका पूरा उपयोग किया । बहुत दिनों के बाद सेन्टर

और सोशल डमोक्रेटिक पार्टियों ने अनुभव किय कि सैनिकों की सहानुभूति क्रान्तिकारी दलों से न होकर राष्ट्र आन्दोलन के साथ बढ रही है । अतः उनको इस बात का कार मिल गया कि वह सेना से मताधिकार छीन लें और उसका रा नीतिक में भाग लेना बन्द कर दें ।

मध्यमश्रेणि वालों ने इस बात पर गम्भीरता से विचा किया कि सेना को जर्मनी की रक्षा करने का पूर्ण स्थान मि मिल जावेगा । किन्तु सेन्टर और मार्क्सवादी पार्टियों की इच्छ थी कि राष्ट्रीयता के जहरीले दांतों को अभी से तोड़ दिया जाय क्यों कि इसके बिना सेना पुलिस के जैसी ही बन जाती है औ न शत्रु का मुकाबला ही कर सकती है । इसके बाद के वर्षों में य बात पूर्णतया प्रमाणित भी हो गई ।

हिटलर ने इस दल की उक्त सभा में जाने का पूर्ण निश्च कर लिया । उसकी आन्तरिक स्थिति के विषय में उसको बिल्कु पता नहीं था ।

हिटलर की युक्तियों से सभापतिका कुर्सी छोड कर भागना

फेडर के व्याख्यान के पश्चात हिटलर वापिस जाने वाला था कि व्याख्यान मञ्च से यह आवाज आई 'अब चाहे जो बोल सकता है ।' इस पर हिटलर को भी बोलने का प्रलोभन हुआ । उस समय एक प्रोफेसर भाषण देने को खड़ा हुआ । उसने फेडर के तर्क में शंकाएं कीं । इसके पश्चात फेडर ने उसका बड़ी अच्छी तरह से समाधान किया । उस

समय उसने यह घोषणा की कि नवयुवक दल बैवेरिया को पूशा से पृथक करने के लिये युद्ध करना चाहता है। उसने यह भी कह डाला कि यदि बैवेरिया पृथक होगया तो जर्मन-आस्ट्रिया बैवेरिया से मिल जावेगा और सब जर्मनी में शान्ति छा जावेगी। इस पर हिटलर ने अनुमति लेकर बोलना आरंभ किया। उसने इन बातों का इतनी सफलता के साथ खण्डन किया कि सभापति कुर्सी छोड़कर भाग गया।

हिटलर का श्रमिक दल का सदस्य बनना—

हिटलर को उन बातों का ध्यान कई दिनों तक बना रहा। वह उन्हीं बातों पर बार २ विचार करता था। कई बार वह यह सोचता था कि वह क्यों इन झमेलों में पड़े। किन्तु उसको यह देख कर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उसके बाद उस सप्ताह के अन्दर ही उसको एक पोस्टकार्ड मिला, जिसमें उसको सूचना दी गई थी कि उसको जर्मन श्रमिक दल (German Workers Party) का सदस्य बना लिया गया है और उसको इसी बुधवार को कमेटी की मीटिंग में सम्मिलित होना चाहिये।

हिटलर को इस प्रकार सदस्य बनाने के ढंग पर बड़ी हंसी आई। वह यही सोचने लगा कि वह उस पर परेशान हो अथवा हंसे। उसने इस नये बने हुए दल में सम्मिलित होने का कभी विचार भी नहीं किया था। वह तो एक अपनी पृथक् पार्टी की स्थापना करना चाहता था।

वह उसका उत्तर लिख कर देने ही वाला था कि उत्सुकता ने उसको रोक दिया। उसने निश्चय किया कि नियत दिन पर वहां पहुंच कर मौखिक ही सब बातें कहना ठीक होगा।

बुधवार भी आ गया। हिटलर को यह सुन कर घं हिचकिचाहट हुई कि उसमें रीश (Reich) की ओर से दल क सभापति स्वय भी व्यक्तिगत रूप से सम्मिलित होंगे। अतः उसने अपनी घोषणा को स्थगित रखने का निश्चय किया और वहा पहुच गया। सभापति भी यहां आया। फेडर के व्याख्यान में वह उसको सहायता दे रहा था।

इससे हिटलर की उत्सुकता और बढ़ गई और वह य देखने के लिये ठहर गया कि अब क्या होता है। आखिर उसने उन महाशयों के नामों का पता चल गया। इस दल का सभापति हर हेरर(Herr Herrer)था। यही रीश का सदस्य भी था। म्यूनिक का चेयरमैन ऐंटन ड्रेक्सलर (Anton Drexler) भी यहा था।

गत सभा की कार्यवाही पढी गई और व्याख्याता को धन्यवाद दिया गया। अब नये सदस्यों के निर्वाचन का समय आया। अर्थात् इस समय हिटलर को सदस्य निर्वाचित करना था।

हिटलर न प्रश्नों की झड़ी लगादी। कुछ मुख्य उद्देशों के अतिरिक्त यहां और कुछ भी न था। कोई कार्यक्रम नहीं था, न कोई पर्चा था, छपा हुआ तो कुछ भी नहीं था, यहा तक कि दुखिया मोहर तक न थी। किन्तु श्रद्धा और सदभिलाषा की कमी न थी।

हिटलर ने फिर भी इस पर दो दिन तक विचार किया। बहुत कुछ सोच विचार के पश्चात उसने सदस्य बन जाना ही उचित समझा। अब यह जर्मन श्रमिक दल का सदस्य बन गया। उसको सदस्यता का अस्थायी टिकट दिया गया, जिस पर संख्या 'सात' पड़ी हुई थी।

पन्द्रहवां अध्याय

राष्ट्रीय साम्यवादी जर्मन श्रमिक दल की उन्नति का प्रथम युग

जाति और वंश की शुद्धता

यदि जर्मनी के पतन के सभी कारणों की आलोचना की जावे तो इनमें अन्तिम कारण निश्चय से यह है कि जर्मन लोग वंश की समस्या (Racial Problem) के महत्त्व को न समझ सके। यहूदियों के भय का तो उनको ध्यान भी नहीं आया।

सन् १६१८ में युद्धस्थल में मिली हुई पराजय को जर्मनी सुगमता से सहन कर लेता। जर्मनों को उसके विरोधी राष्ट्रोंने पराजित नहीं किया। जर्मनों को पराजित करने वाली शक्ति एक दूसरी ही थी। उसके सभी राजनीतिक और नैतिक भावों तथा शक्ति को छीनने के लिये कइ दशाब्दियों से योजनाए बनाई जा रही थीं। यह

४—यदि राष्ट्र के एक वर्ग विशेष को दूसरों की समान का स्थान दिलाना है तो इसके लिये दूसरों को नीचे न ... जावे, वरन उसी वर्ग को ऊपर उठा कर अधिक समुन्नत बना जावे। ऐसे लोग ऊँचे वर्ग में से कभी नहीं होते। वह तो समानता के लिये युद्ध करने वालों में से होते हैं। वर्तमान समय में मध्य श्रेणि वालों को राज्य प्रबन्ध में आने के लिये किसी उच्च वर्ग की सहायता नहीं मिली। उन्होंने केवल अपनी कार्यपटुता और नेतृत्वशक्ति से ही प्रबन्ध को अपने हाथ में ले लिया है।

आज कल के श्रमिकों के हृदय तक पहुँचने के मार्ग की बाधा उस वर्ग की ईर्ष्या नहीं है वरन उसके अन्तर्राष्ट्रीय नेताओं की कार्यशैली है, जो राष्ट्रीयता और पितृभूमि दोनों के विरोधी हैं। यदि इन्हीं ट्रेड यूनियनों को राजनीति और राष्ट्रीयता की दृष्टि से राष्ट्रीय बना कर चलाया जावे तो इनमें से लाखों ऐसे बड़े ? मूल्यवान् सदस्य निकल आवेंगे, जो राष्ट्र के लिये अत्यन्त उपयोगी हो सकते हैं।

इस प्रकार काम करने वाले श्रमिकों के संरक्षित कोष में से ही मिल सकते हैं।

इन सब बातों के साथ ? हिटलर ने सोचा कि पहिले सार आंदोलन और प्रचार का केंद्र म्यूनिक हो। नेता के साथ में कुछ विश्वसनीय सहयोगियों का होना भी आवश्यक है। उनको शिक्षा दी जानी चाहिये, और अपने विचारों के भावी प्रचार के लिये एक समिति बनायी जानी चाहिये। जब तक म्यूनिक के केंद्रीय अधि

री सफलता पूर्वक सब बात न मान लें तब तक उसके स्थाननीय गठन न बनाये जावें। नेतापने के लिये केवल इच्छाशक्ति का ही ना आवश्यक नहीं है, वरन् नेता में वह योग्यता होनी चाहिये तससे शक्ति अधिकाधिक बढती जावे। नेता की आत्मा भी अत्यंत बलहोनी चाहिये। इन तीनों गुणों के सम्मिश्रण से ही कोई पुरुष ता बन सकता है।

चाहे किसी दूसरी सस्था का उद्देश्य कैसा ही मिलता जुलता यों न हो किंतु यह सोचना बड़ी भारी गलती है कि कोई आदो- लन दूसरी सस्था के साथ मिल कर अधिक शक्ति सम्पन्न हो तकता है।

हिटलर के विचार में सच्चा जर्मन वही था, जिस पर यहूदी समाचार पत्र आक्रमण करे, और उसकी निंदा करें। राष्ट्री यता की सबसे बड़ी परीक्षा यही है कि राष्ट्रीयता के शत्रु उसका विरोध करें।

आदोलन का सम्मान प्रत्येक प्रकार से अधिक बढाना ाहिए। जितना ही आदोलन का व्यक्तित्व और सम्मान अधिक बढेगा उतनी ही अधिक उसको सफलता मिलेगी।

आदोलन के आरम्भ में हिटलर को बड़ी २ कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, क्योंकि जनता उसको बिल्कुल नहीं जानती थी। देश में तो क्या, म्यूनिक में भी उसको या उसके दल को कोई नहीं जानता था। अतएव यह आवश्यक हो गया कि इस छोटे

से दल को बढाया जावे, नये २ साथी मिलाये जावें और।
प्रकार हो आंदोलन को लोक प्रसिद्ध किया जावे।

दल की प्रारंभिक सभाएं

इस उद्देश्य को दृष्टि में रखते हुए हिटलर और उस
साथियों ने प्रति मास और बाद में प्रति पक्ष सभायें करनी आर
कर दीं। इन सभाओं में प्रवेश निमंत्रण पत्रों द्वारा होता था
निमंत्रण पत्र कुछ छपे हुए होते थे कुछ हाथ से लिख लिये ज
थे। हिटलर ने एक समय अपने हाथ से ऐसे अस्सी निमंत्रण प
लिख कर बांटे थ, किन्तु बहुत प्रतीक्षा करने पर भी सभा क
सात सदस्यों से ही करनी पड़ी थी।

अब की बार इन लोगों ने कुछ चंदा जमा करके एक ब
सभा सार्वजनिक स्थान में की। इसका विज्ञापन खूब किया ग
था। इस बार आश्चर्य जनक सफलता मिली।

सभा के वास्ते एक कमरा किराये पर लिया गया था। •
१११ व्यक्ति उपस्थित थे। सभा आरम्भ कर दी गई। प्रधान भा
म्यूनिक के प्रोफेसर का होने वाला था। उसके पश्चात् हिटलर
व्याख्यान रक्खा गया था। हिटलर ने आध घंटे तक भा
दिया। आध घंटे के बाद कमरे की जनता में बिजली जैसी
गई। उस समय जनता में इतना अधिक उत्साह भर गया था
हिटलर के अपील करने पर सभा के खर्चे के लिये ३०० मार्क
उसी समय आ गया। इससे उनको बड़ी भारी चिंता से छुट्टी मि
गई।

वारसाई की सन्धि के विधाता—

पार्टी के तत्कालीन सभापति हर हैरर का व्यवसाय पत्रों में लेख लिखना (journalism) था। किन्तु दल का नेता होने के लिये उसमें एक बड़ी भारी अयोग्यता थी। वह अच्छा वक्ता नहीं था। म्यूनिक का सभापति हर ड्रेक्सलर भी कार्यकर्ता अच्छा था, किंतु वक्ता नहीं था। और न वह सैनिक ही था। उसने युद्ध-स्थल में कभी काम नहीं किया था, किंतु हिटलर इस समय भी सैनिक ही था।

सन् १९१९-२० में हिटलर और उसके साथी शक्ति सचय करने में ही लगे रहे। वह इतने शक्ति सम्पन्न होना चाहते थे कि पर्वतों को भी हिला सकें।

एक अन्य सभा में इन सब बातों का फिर प्रमाण मिल गया। इस बार उपस्थिति २०० व्यक्तियों की थी। इस बार भी जनता और सहायता दोनों ही अच्छी रही। एक माह के पश्चात् उनकी सभा में ४०० की उपस्थिति हो गई।

सन् १९२० के आरम में हिटलर ने जोर दिया कि अबके सबसे बड़ी सार्वजनिक सभा की जावे। इस बात से सहमत न होने के कारण हर हैरर अपने पद से हट गये। उनके उत्तराधिकारी हर ऐन्टन ड्रेक्सलर हुए। इस आंदोलन के सगठन का भार हिटलर ने अपने सिर पर ले लिया।

दल का हिटलर के सिद्धान्तों को स्वीकार करना

इस सभा के लिये २४ फर्वरी सन् १९२० का दिन निश्चित किया गया। इसका प्रबन्ध स्वय हिटलर ने ही किया था।

सभा सवा सात बजे आरम्भ हुई। सभा के वातम में निकलते हुए हिटलर का हृदय बल्लियों उछल रहा था। हाल खचाखच भरा हुआ था। उपस्थिति दो सहस्र की थी।

प्रथम वक्ता के बोल चुकने के पश्चात् हिटलर बोलने आई। कुछ मिनट तक तो शोर गुल होता रहा। किंतु स्वयंसेवक ने शीघ्र ही शान्ति स्थापित कर दी। हिटलर ने अपने एक घंटे तक के भाषण में अपने २५ सिद्धान्तों की व्याख्या की। जनता नवीन विचार, नवीन विश्वास और नवीन निश्चय से भरी हुई थी। आग फूंक दी गई थी, जिसकी चमक में जर्मनी की स्वतन्त्रता को प्राप्त करने वाली तलवार निकलने ही वाली थी।

अगले दिन तारीख २५ फर्वरी सन् १६२० को नशनल सोशिएलिस्ट जर्मन श्रमिक दल के सदस्यों की फिर बैठक हुई। इसमें भाग दिये हुए हिटलर के पच्चीस सिद्धांतों पर पूर्ण विचार किया जाकर उनको पार्टी के उद्देश्यों में सर्वसम्मति से स्वीकार करके सम्मिलित कर लिया गया। यही नशनल सोशिएलिस्ट जर्मन श्रमिक दल आज कल नाज़ी पार्टी कहलाता है।

सोलहवां अध्याय

हिटलर के पच्चीस सिद्धान्त

नेशनल सोशियलिस्ट जर्मन श्रमिक दल ने २५ फरवरी सन् १६२० की अपनी बड़ी भारी सभा में संसार के सम्मुख अपना निम्न लिखित कार्यक्रम रखा था।

दल की नियमावली के नियम २ के अनुसार इस कार्य-क्रम में परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

कार्यक्रम

नेताओं की यह कोई इच्छा नहीं है कि एक बार घोषित किये हुए उद्देश्यों में परिवर्तन करके उनके स्थान में नये उद्देश्य रखे जावें। यह किसी प्रकार भी जनता के असंतोष को बढ़ाना नहीं चाहते और इसी प्रकार यह दल के अस्तित्व के बराबर बने रहने का विश्वास दिलाते हैं।

१—हम सभी जर्मनों की संस्थाओं को एक करके राष्ट्र

के द्वारा उपभोग किये जाने वाले आत्मनिर्णय के अधिकार के आधार पर एक विशाल जर्मनी का निर्माण करना चाहते हैं।

२—हम दूसरी जातियों के साथ व्यवहार में जर्मन जनता का समान अधिकार चाहते हैं। हम वारसाई और सेंट जर्मेन की सन्धियों को रद्द करना चाहते हैं।

३—हम अपने देशवासियों के भरणपोषण और अपनी बढ़ती हुई जनसंख्या को बसाने के लिए भूमि और उपनिवेशों को वापिस चाहते हैं।

४—राज्य का नागरिक राष्ट्र के सदस्यों के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। जर्मन रक्त के अतिरिक्त—उसका चाहे जो धर्म भी हो—अन्य व्यक्ति राष्ट्र का सदस्य नहीं हो सकता। अतएव कोई भी यहूदी राष्ट्र का नागरिक नहीं बन सकता।

५—जो कोई व्यक्ति राज्य का नागरिक नहीं है वह राज्य में अतिथि के रूप में ही रह सकता है। उसको विदेशी कानून के आधीन समझा जाना चाहिये।

६ राज्य की सरकार और व्यवस्था के विषय में मताधिकार केवल राज्य के नागरिकों को ही मिलेगा। अतएव, हम चाहते हैं कि कैसे भी पदों के स्थान, चाहे वह रीश, देश, अथवा छोटे २ नगरों में ही हों केवल राज्य के नागरिकों को ही दिये जावें।

हम पार्लमेंट में पार्टियों की दृष्टि से, आचरण अथवा योग्यता पर बिना दृष्टि दिये स्थान देने की बुरी पद्धति का विरोध करते हैं।

७—हम चाहते हैं कि राज्य अपना प्रथम कर्तव्य व्यापार की उन्नति करना, और राज्य के नागरिकों की आजीविका का प्रबन्ध करना समझे। राज्य की पूरी जन संख्या को पालना संभव नहीं है। अतएव विदेशी जाति वालों को (जो राज्य के नागरिक नहीं हैं) देश में से निकाल दिया जावे।

८—जर्मनों के अतिरिक्त अन्य सभी लोगों को जर्मनी में आबाद होने से रोक दिया जावे। हम चाहते हैं कि सभी अनार्यों को (Non-Aryan)—जिन्होंने २ अगस्त १९१४ के पश्चात् जर्मनी में प्रवेश किया है—देश में से तुरत प्रथक् कर दिया जावे।

९—अधिकारों और कर्तव्यों के विषय में राज्य के सभी नागरिक समान होंगे।

१०—राज्य के प्रत्येक नागरिक का यह प्रथम कर्तव्य होगा कि वह अपने मस्तिष्क अथवा शरीर से कार्य करे। किसी व्यक्ति विशेष के कार्य का समष्टि के लाभ से मुकाबला न पड़े। उसको जाति के नियमों के अनुसार ही चलना चाहिये और सब की भलाई का ध्यान रखना चाहिये।

अतएव हम चाहते हैं कि

११- काम बिना किये हुए कोई आमदनी न ली जावे।

सूद की दासता पर पाबंदी

१२—प्रत्येक युद्ध में आवश्यकता पड़ने वाले राष्ट्र के प्राणों और सम्पत्ति के अत्यधिक बलिदान को ध्यान में रखते हुए युद्ध

२२ हम वैतनिक सेना और राष्ट्रीय सेना के निर्माण से बन्द करना चाहते हैं।

२३ हम जान बूझ कर बोले हुए राजनीतिक झूठ और उसके समाचार पत्रों में प्रयोग के विरुद्ध कानूनी युद्ध करना चाहते हैं। जर्मनी के राष्ट्रीय समाचारपत्रों के निर्माण में सुविधा देने के लिये हम चाहते हैं —

(क) कि समाचार पत्रों के सभी सम्पादक और उनके सहायक, जो जर्मन भाषा से काम लेते हैं, राष्ट्र के ही सदस्य हों।

(ख) गैर जर्मन पत्र को राज्य मे प्रकाशित करने के लिये राज्य मे विशेष स्वीकृति लेनी आवश्यक होगी। इनका जर्मन भाषा में छपना अनिवार्य न होगा।

(ग) इस बात का कानून बनाया जावे कि जर्मन समाचार पत्रों में गैर-जर्मन लोग न तो आर्थिक भाग लें और न उन पर उनका कुछ आर्थिक प्रभाव ही हो। इस नियम का भंग करने वाला समाचार पत्र को तुरत बन्द कर दिया जावेगा, और उससे सम्बन्ध रखने वाले गैर जर्मन को निर्वासित कर दिया जावेगा।

राष्ट्रीय भलाई न करने वाले समाचार पत्रों को प्रकाशित न होने दिया जावेगा। कला अथवा साहित्य में अपने राष्ट्रीय जीवन को छिन्न भिन्न करने वाली प्रवृत्ति के विरुद्ध हम मुकदमा चलाना चाहते हैं, और जो संस्थाएं भी उपरोक्त आवश्यकताओं के विरुद्ध कार्य करेंगी उनको जब्त कर लिया जावेगा।

२४—हम राज्य में सभी धार्मिक संस्थाओं को, जब तक वह

नराज्य के लिये आतंक रूप न हों, और जर्मन जाति के नैतिक भावों के विरुद्ध कार्य न करें—स्वतन्त्रता देना चाहते हैं।

हमारा अपना दल निश्चय से ईसाइ है, किन्तु वह अपने को किसी विशेष प्रकार के विचारों में नहीं बाधता। वह अपने अन्दर अथवा बाहिर के यहूदी प्रकृतिवादियों (नास्तिकों) से युद्ध घोषणा करता है। हम को विश्वास है कि इसी सिद्धान्त का पालन करने से हमारा राष्ट्र ठीक हो सकेगा।

व्यक्ति के सन्मुख सार्वजनिक कर्त्तव्य

२५—हम चाहते हैं राज्य की केन्द्रीय शक्ति बड़ी बलवान् हो। राजनीति का केन्द्र बनाई हुई पार्लमेंटका समस्त रीश और उसके संगठनों के ऊपर पूर्ण अधिकार हो। सघ के भिन्न २ राज्यों में रीश के बनाये हुये भिन्न २ सार्वजनिक नियमों का पालन कराने के लिये वर्गों और पेशों के लिये पृथक् २ समितिया बनाई जावें।

पार्टी के नेता इस बात की शपथ करते हैं कि इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये यदि आवश्यकता हुई तो अपने प्राणों तक का बलिदान कर देंगे।

म्यूनिक २४ फर्वरी सन् १६२०

सतरहवां अध्याय

आरम्भिक दिनों का युद्ध

२४ फर्वरी १९२० की सभा समाप्त हुई ही थी कि दूसरी के लिये तयारी की जाने लगी। अभी तक तो यह लोग प्रति मास या प्रति पक्ष म्यूनिक जैसे नगर में भी सभा करने का साहस नहीं कर सकते थे, किन्तु अब उनको यही २ सभाओं का प्रति सप्ताह प्रबन्ध करना पड़ता था।

उन दिनों राष्ट्रीय समाजवादियों (National Socialists) के लिये 'हाल' शब्द का अर्थ बड़ा पवित्र हो गया था। जिस प्रकार भारत में एक कट्टर आर्यसमाजी के लिये 'मन्दिर और समाज' का अर्थ होता है, उसी प्रकार जर्मनी में इस समय हाल का अर्थ हो गया था। प्रति बार हाल की उपस्थिति अधिकाधिक होती जाती थी और सभाओं में आकर्षण बढ़ता जाता था। कार्यवाही के आरम्भ में सदा ही इस विषय पर वार्तालाप होता था कि पु

करना मनुष्य जाति के लिये पाप है। इस विषय में सभा में कोई मतभेद नहीं था। इस पर बात चीत होने के पश्चात् सन्धियों की बातचीत चलती थी, इस विषय पर बड़े २ उग्र भाषण हुआ करते थे।

उन दिनों में यदि किसी ऐसी सार्वजनिक सभा में—जिसमें आलसी मध्यम श्रेणी वालों के स्थान में द्रुतगति के निम्न श्रेणी वाले व्यक्ति उपस्थित होते थे—वारसाई की सन्धि के विषय में बातचीत की जाती थी, तो उसको जर्मन प्रजातंत्र पर आक्रमण समझा जाता था और उस भाव को यदि साम्राज्यवादी नहीं तो प्रतिक्रियावादी होने का चिन्ह समझा जाता था। जिस समय वारसाई की सधि की आलोचना की जाती थी तो बोलने में अनेक प्रकार से बाधा की जाती थी। भीड़ तब तक शोर मचाती रहती थी कि जब तक या तो वक्ता धीरे २ अधिक गरम हो जाता था अथवा वह उस विषय पर बोलना बन्द कर देता था। जनता की इस मनोवृत्ति में परिवर्तन करने के उद्योग को हिटलर और उस के साथी दीवार में सिर मारने जैसा समझते थे। जनता यह नहीं समझती थी कि वारसाई की सन्धि लज्जा और अपमान जनक थी। न वह यह समझती थी कि यह बलात् लादी हुई सन्धि उनके राष्ट्र को दिन दहाड़े भयंकर रूप से लूट रही है। मार्क्सवादियों के विनाशकारी कार्य और जर्मनी के शत्रु राष्ट्रों के विषैले प्रचार के कारण यह लोग सभी प्रकार के तर्क के वास्ते अंधे हो गये थे और तो भी किसी को शिकायत न थी।

हिटलर के सम्मुख यह बात स्पष्ट थी कि यहां आ आन्दोलन के आरभ का संबन्ध है युद्ध के पाप को ऐतिहासिक तथ्य के आधार पर स्पष्ट कर देना चाहिये।

यदि कोई बलवान व्यक्ति अथवा संस्था किसी को धोखे देकर अथवा चालाकी से इसी प्रकार का विश्वास करा देती तो किसी निर्बल आन्दोलन को स्वयं ही इस बात का लक्ष्य होता है कि नासमझी को दूर कर दिया जावे।

यह बात शीघ्र ही स्पष्ट हो गई कि वारसाई संधि के पक्षपाती हिटलर के दल से वाद विवाद करते समय एक निश्चित प्रकार की युक्तियां ही दिया करते थे। उनके व्याख्यान में बार वही युक्तियां आती थीं। किन्तु हिटलर बहुत शीघ्र बातों को समझ गया। उसने केवल उनके आन्दोलन को प्रभाव रहित करने के साधन ही नहीं खोज लिये वरन उनके निर्माताओं का खंडन उन्हीं के शब्दों में किया।

जब कभी हिटलर व्याख्यान देता था तो उसको पहिले से ही आभास हो जाता था कि इस प्रकार की युक्तियां दी जावेंगी और इस प्रकार का वादविवाद होगा। अतएव वह उन्ही बातों को ले कर उनका अपने व्याख्यान के आरंभ में ही और शोर से खंडन कर देता था।

इसी कारण हिटलर ने वारसाई की संधि के विषय में अपने उस भाषण के पश्चात—जो उसने सेनाओं में व्याख्यान के रूप में दिया था—कहा कि अब मैं ब्रेस्ट लिटोव्स्क (Brest

Litovsk) और वारसाई के विषय में कहूंगा। क्योंकि उसको अपने प्रथम व्याख्यान के पश्चात् ही इस बात का पता चल गया था कि जनता ब्रेस्ट लिटोस्क की सन्धि के विषय में कुछ नहीं जानती, वरन् वह जर्मन विरोधी दलों के सफल प्रचार कार्य के कारण यह कल्पना कर रही थी कि उक्त सन्धि में जर्मनों ने वास्तव में संसार मे सब से अधिक दमन का कार्य किया था। इसी कारण लाख। जर्मन वारसाई की सन्धि को ब्रेस्ट लिटोस्क की सन्धि में किये हुए अपने अपराध का ठीक प्रतिशोध सम-झते थे, और इसी कारण वह वारसाई सन्धि के विरुद्ध किये हुए किसी भी विरोध को करना ठीक नहीं समझते थे। और इसी कारण जर्मनी में लज्जारहित और भयंकर शब्द 'हर्जाना' चुपके से सुन लिया जाता था अपने व्याख्यान में हिटलर ने दोना सन्धियों को एक साथ लेकर अंश २ में उनकी तुलना की और बतलाया कि पहली सन्धि दूसरी अमानुषिक और निर्दय सन्धि की तुलना में मनुष्योचित भावनाओं से कितनी गिरी हुई थी। इसका परिणाम अत्यन्त आश्चर्यजनक हुआ। एक बार फिर सहस्रों श्रोताओं के हृदय और मस्तिष्को मे से वह भारी असत्य निकल गया और उसके स्थान में सत्य ने घर कर लिया।

इन सभाओं का हिटलर को एक यह लाभ हुआ कि वह एक बड़ा भारी व्याख्याता (Orator) होगया। अब वह सहस्रों की सख्या वाली सभाओं में बड़ी निर्भीकता से धाराप्रवाह व्याख्यान देने लगा।

सन्नाटा रहया था। ऐसा जान पड़ता था मानों सब समाधि में
बैठे हैं। केवल किसी के बाहर जाने या जम्माई लेने का ही शब्द
सुनाई देता था। अंत में सभापति जर्मनी की देशभक्ति का गा
गायन कराता था। इसके पश्चात् सभा विसर्जित हो जाता थी।

इसके विरुद्ध राष्ट्रीय समाज वादियों अथवा नेशनल
सोशिएलिस्टों की सभाएँ किसी प्रकार भी शांति पूर्वक नहीं होते
थीं। इनमें दो विरोधी पक्षों में सदा ही गरमागरम बहस हो
जाती थी। इन सभाओं के अंत में संगीत के स्थान में गर्जन
उत्साह हुआ करता था।

इन सभाओं में आरम्भ से ही अध विनयानुशासन रख
कर सभापति को ही पूर्ण अधिकार दिया जाता था।

लाल झंडी वाले इन सभाओं में विरोध करने आते थे।
वह क्रमश बड़ी २ संख्या में बार २ आने लगे। उन में इस
आंदोलनकारी भी होते थे। उनकी आकृतियों पर ही लिखा रहता था
"आज हम तुमको सभा मंडप से निकाल कर दम लेंगे" प्राय.
तनिक २ सी बात पर झगड़ा हो जाता था। केवल सभापति के
सद्व्यवहार से ही परिस्थिति काबू में आया करती थी। लाल
झंडी वाले इस बात पर बड़े परेशान हुआ करते थे।

बहुत कुछ सोच विचार के पश्चात् हिटलर ने भी अपने
पर्चे लाल रंग में ही निकाले। उसका उद्देश्य दूसरों को दिक करके
अपनी सभाओं में बुलाने का नहीं था। वह तो उनमें केवल भेद
नीति से काम लेना चाहता था, जिससे उनसे बात चीत करने का
अवसर मिले।

अब उन लोगों ने निम्न श्रेणि वालों के नाम अपील निकाली कि वह नेशनल सोशिएलिस्ट सभाओं में बड़ी २ संख्याओं में आकर दंगा मचा दिया करें।

अब इन सभाओं का तीन चौथाई स्थान नियत समय से पौन घंटा पूर्व ही दंगा करने वाले श्रमिकों से भर जाता था। किन्तु इससे परिस्थिति और ही प्रकार की हो जाती थी। वह आते तो थे झगड़ा करने के लिये किन्तु जाते बहुत कुछ सन्तुष्ट होकर थे।

उनके ढंग सुधरते न देख उनसे खुल्लमखुल्ला सभा से चला जाने को कहा जाता। यह बातें लाल दल के समाचार पत्रों में भी निकलती रहती थीं। क्रमशः जनता की उत्सुकता बढ़ी और लालदल वालों की कार्यप्रणाली एकदम बदल गई। अब राष्ट्रीय समाजवादियों के साथ मनुष्य जाति के शत्रुओं जैसा व्यवहार किया जाने लगा। उनके शत्रुओं के लेख बराबर निकलते रहते थे। किन्तु थोड़े समय के पश्चात् ही समझदार उनको पता चल गया कि ऐसे आक्रमणों का कोई प्रभाव नहीं होगा। वास्तव में इससे जनता का सारा ध्यान उनकी ही ओर केन्द्रित होने लगा था।

उनकी सभाओं को भंग करने के उन्होंने अनेक प्रयत्न किये। ऐसे अवसरों पर वह सभा का परिणाम देखने के लिये हाल के बाहिर खड़े रहा करते थे।

हिटलर के दल का स्वावलम्बी बनना

ऐसे अवसरों पर हिटलर के दल वालों को भी अपनी सभाओं की रक्षा करने का कार्य अपने हाथ में लेना पड़ता था।

अधिकारी लोग तो कभी हस्तक्षेप करते नहीं थे। परन्तु इन विरुद्ध यह प्राय लाल दल वालों की ही रियायत किया करते थे। अतएव उन लोगों ने अपनी रक्षा करने के लिये पुलिस से इसकी सहायता नहीं मागी।

दल वाले स्वय ही विरोधियों का मुकाबला किया करते और अन्त में पन्द्रह बीस आदमी अवश्य ही वृथा भी प्रिय प्राण थ। किन्तु हिटलर के दल वाले जानते थे कि विरोधी लोग तब बार बार सिर उठा सकते हैं। अत यह पूर्णतया सतर्क रहते थ।

शासनसूत्र मध्यम श्रेणी वालों के हाथ म था। हिटलर अपन दल वालों को बतलाया करता था कि उनका उद्देश्य अत्यन्त पवित्र है। किन्तु शान्ति की मृदुल देवी तब तक प्राप्त नहीं हो सकती जब तक उसके साथ में युद्ध का देवता न हो। इसप्रकार उनमें जीवित जागृत रूप में धीरे २ सैनिक भाव भर गये। इस दल का प्रत्येक सदस्य राष्ट्र के जीवन के लिये अपने जीवन का बलिदान करने के लिये तयार हो गया।

नरसिंघों के शब्दों के समान यह सभा में हुल्लड़ मचाने वालों पर झपटते थ। संख्या के कम अधिक होने, जख्मी होने अथवा मृत्यु तक की उनको चिन्ता न होती थी। यह तो केवल पवित्र उद्देश्य के मार्ग के कांटों को दूर करना चाहते थ।

रक्षक दल की क्रमिक उन्नति

सन १९२० की ग्रीष्म ऋतु म शान्ति स्थापन करने

र सेना का एक निश्चित रूप बन गया। सन् १६२१ की बसन्त
नु में उनके अधिक बढ़ जाने के कारण उनको कई २ कम्प
यों में विभक्त कर दिया गया। बाद में इन कम्पनियों को भी
टी २ सेक्शनों में बांट दिया गया।

यह इस कारण से और भी आवश्यक हो गया कि इस
च में सभाओं का काम उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया।

हिटलर का नया झंडा

सभाओं की रक्षा करने के लिये बना हुआ यह संगठन
ी भारी कठिन समस्या को हल करने का साधन बन गया।
स समय तक इस संगठन के पास न तो कोई अपने दल का
न्ह था और न झंडा ही था। उस समय इन चिन्हों के न होने
केवल असुविधा ही न थी, किन्तु भविष्य की दृष्टि से भी
ह सहन करने योग्य नहीं था। क्योंकि इस दल के सदस्यों के
ास सभा की सदस्यता का कोई निश्चित चिन्ह नहीं था। अतएव
विष्य में अन्तर्राष्ट्रीय लोगों के विरुद्ध स्थापित करने के लिये
गठन के किसी चिन्ह का होना आवश्यक था।

भावों की दृष्टि से भी हिटलर को ऐसे चिन्ह का महत्त्व
पने जीवन में कई २ बार विदित हो चुका था। बर्लिन में
द्ध के पश्चात् हिटलर राजभवन के सन्मुख किये हुए मार्क्सवादियों
े एक विराट् प्रदर्शन में उपस्थित था। लाल झंडियों, लाल
ों और लाल फूलों के समुद्र ने इस एक लाख बीस सहस्र
यक्तियों की भीड़ को शक्ति का रूप दे रखा था। इस प्रकार वह

समझ गया था कि एक विशेष चिन्ह के द्वारा किस प्रकार जनता के मनुष्यों पर प्रभाव जमाया जा सकता है।

मध्य श्रेणी दल वालों के पास कोई चिन्ह नहीं था किन्तु उनके पास कोई सिद्धान्त भी तो नहीं था। उन लोगों ने प्राचीन साम्राज्यों के काले-श्वेत और लाल रंग को ही अपना रंग बनाया।

जिस चिन्ह को मार्क्सवाद ने पराजित कर दिया था उसको धारण करना तो कुछ विशेष उचित जचता नहीं था और विशेष कर उस समय, जब कि मार्क्सवाद स्वयं भी नष्ट होने वाला था।

नेशनल सोशियलिस्ट लोग नष्ट साम्राज्य का शव फिर से निकालकर लाना नहीं चाहते थे। वह तो एक नये राज्य का निर्माण करना चाहते थे। अतएव मार्क्सवाद से युद्ध करने वाले इस आन्दोलन का कोई नया ही चिन्ह होना चाहिये था।

अनेक चिन्हों की परीक्षा करने के पश्चात् हिटलर ने एक चिन्ह निश्चित कर ही लिया। उसने ऐसा झंडा चुना जिसका रंग लाल हो, उसके बीचों बीच में सफेद जगह छोड़ी गई थी जिसमें ठीक बीचों बीच टेढ़े किनारों वाला एक क्रास (Cross) बनाया गया। बहुत कुछ सोच विचार के पश्चात् हिटलर ने झंडे के आकार में सफेद स्थान और क्रास के रूप और उसकी मोटाई के अनुपात का भी निश्चय कर दिया। यह चिन्ह तब से अब तक बराबर चला आता है।

हिटलर के स्वस्तिक झंडे की व्याख्या

आश्चर्य की बात है कि यह चिन्ह बिल्कुल भारतीय स्वस्तिक है। हिटलर अपनी पुस्तक में इसको टेढ़े किनारों वाला क्रास बतलाता है। क्राम ईसाइयत का चिन्ह है, किन्तु उसके किनारे टेढे नहीं होते। हिटलर को अपने और जर्मन जाति के आर्य होने का अभिमान है। प्राचीन आर्यों में निश्चय से स्वस्तिक का प्रचार था। हमारा अनुमान है कि हिटलर ने उसी भावना को प्रतिध्वनित करने के लिये स्वस्तिक के चिन्ह को अपनाया है, किन्तु अपने हृदय में यह भाव होते हुए भी—हमारे अनुमान में—ईसाई होने के कारण वह इसकी व्याख्या बिल्कुल ही दूसरी करता है। अस्तु, व्याख्या चाहे जो हो, लाल झंडे के सफेद भाग के अन्दर बना हुआ स्वस्तिक चिन्ह ही आज जर्मनी की राष्ट्रीय पताका है। इस झंडे की विशेषता यह है कि अन्य राष्ट्र भी इसको स्वस्तिक झंडा ही कहते हैं। उपरोक्त स्वयंसेवकों को भी इस चिन्ह के धारण करने की आज्ञा दी गई। यह नई पताका सर्वसाधारण के समक्ष सन् १९२० की ग्रीष्म ऋतु में आई।

दो वर्ष के पश्चात् स्वयंसेवकों के उस दल को भी युद्ध करने के वास्ते वही पताका दी गई। स्वयंसेवकों के इसी दल को कालान्तर में तूफानी सेना (Storm Troops) और नेशनल सोशिएलिस्ट पार्टी को नाजी पार्टी नाम दिया गया।

उस समय म्यूनिक में इतना बड़ा प्रदर्शन करने योग्य कोई दल नहीं था।

हिटलर का प्रथम विराट् प्रदर्शन

जनवरी १९२१ के अंत में फिर अधिक चिन्ता के कारण उपस्थित हो गये। पेरिस के समझौते को, जिसके अनुसार जर्मनी को प्रति वर्ष एक अरब सोने के मार्क (जर्मनी का सिक्का) देने पड़ते थे लन्दन की अंतिम चेतावनी (London Ultimatum) के रूप में दोबारा स्वीकार करना था।

दिन निकलते गये और किसी बड़े दल ने इस भयानक बात की ओर विशेष ध्यान न दिया। श्रमिकों के संगठन भी उस प्रदर्शन की तारीख निश्चित न कर सके, जिसकी आयोजना की जा रही थी।

१ फर्वरी मंगलवार को हिटलर ने अंतिम उत्तर मांगा। उसको एक दिन के लिये और रोक दिया गया। बुधवार को हिटलर ने जोरदार शब्दों में प्रश्न किया कि सभा होने वाली है अथवा नहीं? यदि होगी तो कहां होगी? उत्तर अब भी अनिश्चित और हिचकिचाहट का था। उत्तर था कि वह उसी सप्ताह में श्रमिकों को प्रदर्शन के लिये निमंत्रण देना चाहते थे।

अब हिटलर के धैर्य का बांध टूट गया। उसने स्वयं अपने उत्तरदायित्व पर विरोध-प्रदर्शन करने का निश्चय किया। बुधवार को दोपहर के समय हिटलर ने दस मिनट के अंदर ? पोस्टरों को लिखवा दिया। उसने अगले दिन ३ फर्वरी के लिये सर्कस क्रोन को किराये पर ले लिया।

सर्कस क्रोन (Circus Krone) म्यूनिक में सबसे बड़ा

हाल था। इसमें ५ सहस्र मनुष्यों के बैठने का स्थान था। अभी तक हिटलर के दल को हाल में सभा करने का साहस नहीं हुआ था।

उन दिनों में यह साहस वास्तव में बड़ा भयकर था। यह बिल्कुल निश्चित नहीं था कि बड़ा हाल भरा जा सकेगा या नहीं। सभा के भग होने का भी पूरा अंदेशा था। एक बात निश्चित थी कि यदि असफलता हुई तो बहुत समय तक के लिये उन्नति रुक जावेगी।

प्रचार के लिये केवल एक दिन बीच में था। दुर्भाग्य वश बृहस्पतिवार को प्रात काल वर्षा भी होने लगी। अतएव यह विचारना योग्य था कि ऐसे समय में सभा में आने की अपेक्षा बहुत से आदमी अपने घरों में रहना पसंद करेंगे। विशेष कर ऐसे समय में जब कि शान्ति भंग होने और हत्या होने की भी संभावना थी।

बृहस्पतिवार को हिटलर ने दो लारियां किराये पर लीं। उनको यथासम्भव लाल वस्त्र और कागज से ढक दिया गया। उनके ऊपर दो झंडे लगा दिये गये। प्रत्येक लारी पर उसके दल के पन्द्रह या बीस सदस्य थे। यह आज्ञा दी गई कि गलियों में से तेजी से हांकते और पर्चे फेंकते हुए चले जाओ। जिससे सायकाल को होने वाली सभा के सम्बन्ध में अच्छा प्रचार हो जावे। यह पहिला अवसर था कि मार्क्सवादियों के अतिरिक्त दूसरों ने पर्चे फेंकते हुए लारियों को गलियों में से निकाला था।

हाल में प्रवेश करते समय हिटलर के हृदय में उसी प्रकार का आनन्द भरा हुआ था जैसा एक वर्ष पूर्व प्रथम सार्वजनिक सभा के अवसर पर भरा हुआ था। जब वह हाल की भीड़ को चीरता हुआ व्याख्यान मंच पर आया तो उस समय उसे सभा की आशातीत सफलता का पता लगा। हाल में लाखों मनुष्यों की भीड़ थी।

हिटलर के व्याख्यान का विषय था "भविष्य अथवा पूर्ण विनाश।" उसने व्याख्यान देना आरम्भ किया। वह लगातार अढाई घन्टे तक बोलता रहा। अपने व्याख्यान के पहिले आधे घन्टे में ही जनता की मनोवृत्ति से उसको पता चल गया कि सभा को बड़ी भारी सफलता प्राप्त होगी।

मध्यम श्रेणि के पत्रों ने इस प्रदर्शन को केवल राष्ट्रीय ही बतलाया था। अपनी सदा की नीति के अनुसार उन्होंने उसके कार्यकर्ताओं के विषय में कुछ भी नहीं लिखा था।

सन १९२१ में इस प्रकार म्यूनिच में कार्य आरम्भ करने के पश्चात् हिटलर जल्दी २ सभाएं करने लगा। अब सभाएं केवल प्रति सप्ताह ही नहीं होती थीं परन्तु कभी २ सप्ताह में दो २ बार भी होती थीं। ग्रीष्म और शरद ऋतु में तो एक सप्ताह में तीन २ बार सभाएं होती थीं। यह सभाएं अब प्रायः सर्कस भौन में ही हुआ करती थीं। प्रतिवार उपस्थिति बहुत अच्छी होती थी।

इसका परिणाम यह हुआ कि नेशनल सोशियलिस्ट पार्टी के सदस्यों की गिनती बराबर बढ़ती गई।

लाल दल वालों से खुला युद्ध

इस आन्दोलन को इतनी बड़ी सफलता मिलते देख कर इसके विरोधी भी चुपचाप बैठने वाले नहीं थे। उन्होंने इन सभाओं में बाधा डालने के विचार से एकबार फिर विभीषकामय उपायसे काम लेने का निश्चय किया। इसके कुछ दिनों के पश्चात ही काम करने का दिन भी आ गया। होफब्रौहौसफेस्टसाल (Hofbrauhausfestsaal) नाम के हाल में सभा होने वाली थी। सर्कस क्रोन की प्रथम सभा से पूर्व पार्टी की सभाएं इसी हाल में हुआ करती थीं। इस सभा में हिटलर का भाषण होने वाला था। ४ नवम्बर सन् १९२१ को सायकाल छै बजे से सात बजे तक के अन्दर हिटलर को समाचार मिला कि आज की सभा निश्चय से भंग कर दी जावेगी।

दुर्भाग्यवश इससे पूर्व यह समाचार न मिल सका। इसी दिन उन लोगों ने अपने दफ्तर के पुराने स्थान को छोड़ कर नया स्थान लिया था। यद्यपि उन्होंने अपना पुराना स्थान छोड़ दिया था, किन्तु नये में अभी तक नहीं जा सके थे। परिणाम यह हुआ कि सभा की रक्षा के लिये बहुत थोड़े व्यक्ति बच सके। केवल ४६ व्यक्तियों की एक निर्बल कम्पनी ही उनके पास थी। दलामें के टलीफोन भी ठीक काम नहीं कर रहे थ, जिससे सूचना देकर घंटे भर के अन्दर २ और सहायता बुला ली जाती।

हिटलर ने पौने आठ बजे हाल में प्रवेश किया। उसने भयकर परिस्थिति को तुरत भांप लिया। हाल खचाखच भरा

हुआ था। शेष आने वालों को पुलिस रोक रही थी। हिटलर के शत्रु लोग बहुत पहिले से ही आकर हाल के अन्दर बैठ गये थे और उसके दल वाले हाल के बाहिर थे। मरखकों का थोड़ा सा समूह दहलीज में खड़ा हुआ हिटलर की प्रतीक्षा कर रहा था। हिटलर ने हाल का दरवाजा बन्द करवा दिया और अपने पैंतालीस या छयालीस आदमियों को अपने पास बुलाया। उसने उन नवयुवकों से कहा कि "तुमको सभा भंग होने या सभा में हुल्लड़ होने के विरुद्ध पहली पहल अपनी सच्चाई का परिचय देना है। हम में से कोई भी हाल में से बाहिर न जावे। हमारी लाशें भले ही बाहिर चली जावें। यदि मैंने किसी भी व्यक्ति को कायरता प्रगट करते हुए पाया तो मैं स्वयं उसका वर्दी को फाड़ कर उसका बिल्ला छीन लूंगा। जिस समय तुम मीटिंग को भंग करने का प्रयत्न होते हुए देखो तो तुरन्त आगे बढ़ आना। इस बात को स्मरण रखना कि अपनी सबसे बड़ी रक्षा आक्रमण करने में ही है।"

इसका उत्तर बड़े उत्साह पूर्वक स्वीकृति के रूप में दिया गया। तब हिटलर ने हाल के अन्दर जाकर वहां की परिस्थिति को स्वयं अपनी आंखों से देखा। विरोधी बिल्कुल पास ही बैठे हुए थे। हिटलर के तो वह अपनी दृष्टि से ही छुरी मार देना चाहते थे। हिटलर के अन्दर आते ही असंख्य व्यक्तियों ने घृणा से उसकी ओर को देखा। वह जानते थे कि इस समय उनका दल अधिक बलवान है। अतएव उनको अपनी सफलता का

विश्वास था। तो भी सभा आरम्भ कर दी गई और हिटलर व्याख्यान देने लगा।

रक्षक दल का तूफानी सेना नाम पड़ना

लगभग डेढ़ घंटे के पश्चात् संकेत किया गया। कुछ लोग क्रोध से चिल्लाये। एक व्यक्ति कूद कर सभापति की कुर्सी के पास आया और चिल्लाने लगा, "स्वतन्त्रता" इस पर स्वतंत्रता के लिये युद्ध करने वालों ने अपना काम करना आरम्भ कर दिया। कुछ सेकिंड में ही हाल गाली गलौज और शोर शराबे की आवाज से भर गया। धक्का मुक्की हुई। कुर्सियों की टांगें टूट गई, खिड़कियों के शीशे टूट गये। लोग गर्जते थे और चिल्लाते थे। सारे का सारा दृश्य पागलों जैसा था।

हिटलर जहां का तहां खड़ा हुआ अपने फुर्तीले नवयुवक साथियों की कार्यवाही को देखता रहा।

यह नृत्य आरम्भ हुआ ही था कि हिटलर के वीरों ने आक्रमण कर दिया। इस दिन से इन वीरों का नाम तूफानी सेना अथवा स्टार्म ट्रुप्स् (Storm Troops) रख दिया गया। यह लोग आठ २ की टुकड़ियों में भेड़ियों के समान शत्रुओं पर वार २ झपटते थे। धीरे २ उन्होंने शत्रुओं को हाल से निकालना आरम्भ कर दिया। पांच मिनट के पश्चात् ही सब रक्त वमन करने लगे। हिटलर उनकी योग्यता को जान रहा था। उनका नेता मौरिस हेस (Maurice Hess) था, जो हिटलर का आज कल प्राईवेट सेक्रेटरी है। उनमें से दूसरे अत्यधिक घायल

हो जाने पर भी तब तक आक्रमण करते रहे जब तक उनकी टांगों ने जवाब नहीं दे दिया।

हाल के एक कोने में बड़ी भारी भीड़ थी, जो अब भी दृढ़ता के साथ विरोध कर रही थी। तब अचानक दरवाजे में से व्याख्यान मंच की ओर को पिस्तौल की दो गोलियां छोड़ी गई और एक बड़ा भयंकर शब्द हुआ। युद्ध की स्मृतियों के फिर जागृत हो जाने पर हृदय में आनन्द की हिलोरें उठने लगीं। यह पहचानना असंभव था कि गोलियां किसने चलाई थीं। किन्तु हिटलर ने देखा कि उसके नवयुवकों ने फिर इतने बड़े भारी वेग से आक्रमण किया, कि अन्तिम गड़बड़ी करने वाला तक हाल से भाग गया।

यह कार्य पांच से लगा कर बीस मिनट तक के अंदर हो गया। इसके पश्चात परिस्थिति काबू में आ गई। सभा के तत्कालीन सभापति हरमन इसर (Hermenn Esser) ने घोषणा की कि "सभा फिर आरम्भ होती है, व्याख्याता महाशय अपना व्याख्यान करें। हिटलर ने फिर व्याख्यान करना आरंभ किया।

मीटिंग समाप्त होते ही एक मज़ा हुआ। पुलिस लेफ्टिनेंट हाल के अन्दर दौड़ कर आया और अपने हाथ घुमाते हुए

चिल्लान लगा, "सभा विसर्जित की जाती है।" हिटलर हँस पड़ा। क्योंकि यह कोरी अफसरी शान ही थी।

उस दिन हिटलर और तूफानी सेनाओं को बड़ी भारी शिक्षा मिली। उनके विरोधी भी उस दिन के मिले हुए सबक को कभी न भूले।

सन १६२३ की शरद् ऋतु तक फिर कोई ऐसी घटना नहीं हुई।

या गुप्त कार्य से कभी देश का हित नहीं हो सकता था। हिटलर की सम्मति में आन्दोलन का मार्ग छुरी, विष अथवा पिस्तौल से साफ न होकर मनुष्य को गलियों में जीतने से ही होता है। उसको तो मार्क्सवाद को नष्ट करना था, जिससे गलियों का शासन भविष्य में नेशनल सोशियलिस्ट दल के हाथ में रहे।

हिटलर की सम्मति में गुप्त समिति से एक और भय है। उनके सदस्य कार्य के महत्त्व को प्राय नहीं समझ पाते। यह राष्ट्रीय कार्य की सफलता की प्राय केवल एक व्यक्ति विशेष की हत्या में ही कल्पना कर लेते हैं।

वह तो तूफानी सेनाओं को न तो सैनिक संगठन बनाना चाहता था और न गुप्त समितिया ही। वह उनको निम्न लिखित सिद्धान्त पर चलाना चाहता था—

१—उनकी शिक्षा सैनिक उद्देश्यों के अनुसार न होकर दल के हित की दृष्टि से हो। उनके शरीरों को उत्तम बनाने के लिये उनको क़वायद करने की इतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी खेलों का प्रबन्ध करने की। हिटलर ने चांदमारी की अपेक्षा घूंसेबाज़ी और जुजित्सु को सदा अधिक पसंद किया।

२—उनके रूप में गोपनीयता न आने देने के लिये केवल उनकी वर्दी सर्वजनविदित ही न हो वरन् वह आन्दोलन को सहायता देने योग्य भी हो। गुप्त उपायों से तो उनको कभी भी काम नहीं लेना चाहिये।

प्रथम जर्मन राष्ट्रपति फ्रेडेरिक एबर्ट पृष्ठ ७५

३—तूफानी सेनाओं की रचना और सगठन में पुरानी सेनाओं की वर्दी और बनाव सिंगार में नकल न की जावे।

तूफानी सेनाओं की तीन घटनाओं से कालान्तर में बड़ी भारी उन्नति हुई।

प्रथम, प्रजातन्त्र (Republic) के द्वारा देश रक्षा के विषय में बनाये हुए कानून के विरुद्ध म्यूनिक में सन् १९२२ की ग्रीष्म ऋतु में सभी देशभक्त दलों की ओर से बड़ा भारी सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया था। इस पार्टी के जुलूस के आगे २—जिसमें नेशनल सोशिएलिस्टों ने भी भाग लिया था—म्यूनिक की छै कम्पनिया थीं। उनके पश्चात् राजनीतिक पार्टियों के दल थे। उस समय साठ सहस्र जनता की भीड़ में हिटलर ने भी भाषण दिया था। इस प्रबन्ध में बड़ी भारी सफलता प्राप्त हुई, क्यों कि लाल दल वालों का विरोध होते हुए भी पहली पहल यह प्रमाणित हो गया कि राष्ट्रीय म्यूनिक लोग सड़कों में परेड करने योग्य थे।

कोबर्ग की चढाई

द्वितीय, अक्तूबर १९२२ में कोबर्ग (Coburg) की चढाई से भी अच्छी उन्नति हुई। कुछ राष्ट्रीय समितियों ने कोबर्ग में 'जर्मन दिवस' मनाने का निश्चय किया। हिटलर को भी कुछ अपने मित्रों सहित आने का निमन्त्रण मिला। वह तूफानी दल के आठ सौ व्यक्तियों को साथ लेकर ट्रेन से कोबर्ग गया। कोबर्ग इस समय बैवेरिया का भाग बन गया था।

स्टेशन पर इनका 'जर्मन दिवस' का सगठन करने वालों

ने स्वागत किया। उन्होंने हिटलर को सूचना दी कि स्थानीय ट्रेड यूनियनों अर्थात् स्वतन्त्र (इंडिपेंडेंट) और साम्यवादी (कम्यूनिस्ट) पार्टियों ने यह आज्ञा दी है कि नेशनल सोशिएलिस्ट लोग अपने भंडों को फहराते हुए और अपना बाजा बजाते हुए (उनके पास बयालीस बाजे वाले भी थे) पंक्ति बना कर मार्च करते हुए नगर में न घुसें। हिटलर ने इन लज्जाजनक शर्तों को मानने से उसी समय इंकार कर दिया। हिटलर ने उनको ऐसे हल्के विचार वालों के सहयोग से 'जर्मन दिवस' मनाने पर धिक्कार दी। उसने घोषणा की कि तूफानी सेनाएं उसी समय अपनी पंक्तिवार कम्पनी के रूप में झंडा फहराती हुई और बाजा बजाती हुई नगर में से मार्च करेंगी।

स्टेशन के अहाते में कई सहस्र व्यक्तियों की भीड़ मिली जो बुरी तरह से चिल्ला रहे थे, "हत्यारे" "लुटेरे" "डाकू" और "अपराधी"। यह नाम हिटलर के दल वालों को जर्मन प्रजातन्त्र के संस्थापकों की ओर से दिये जा रहे थे। तूफानी सेनाओं के नवयुवक पूर्णतया शान्त रहे। वह लोग मार्च करते हुए नगर के मध्य भाग में होफब्रौहौसकेलर (Hofbrauhauskeller) की अदालत के पास गये। उनके पश्चात् भीड़ को न आने देने के लिये पुलिस ने उनके सामने के अदालत के दरवाजे बन्द कर दिये। यह असहनीय होने के कारण हिटलर ने पुलिस से दर्वाजा खोलने को कहा। बड़ी भारी हिचर मिचर के पश्चात् उन्होंने दरवाजे खोल दिये। वहां से मार्च करते हुए यह लोग अपने

थान पर आये। यहां पर उनको अन्तिम रूप से भीड़ का
मुक़ाबला करना था। सच्चे समाजवाद (Socialism), समानता
और भाईचारे के प्रतिनिधियों ने पत्थर फेंकने आरम्भ किये।
तूफ़ानी सेनाओं ने भी धैर्य खो दिया। उन्होंने भी दस
मिनट तक दाहिनी और बाईं ओर को पत्थर फेंके। पन्द्रह
मिनट के पश्चात् सड़कों में एक भी लाल दल वाला दिखलाई
न दिया।

रात्रि के समय भी कई बार भयानक मुकाबला हुआ। नेशनल
सोशियलिस्टों के ऊपर तूफ़ानी सेनाओं की चौकियां (Patroles)
बिठला दी गईं। इन लोगों को अकेला पा २ कर इन पर आक्रमण
किये जाते थे, जिससे बुरी दशा हो रही थी। इस प्रकार शत्रुओं
ने काम को स्वयं ही हल्का कर दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल लाल
दल वालों का भय, जिससे कोबर्ग नगर को वर्षों से कष्ट पहुँच
रहा था, पूरी तौर से दूर हो गया।

दूसरे दिन वह लोग उस स्थान पर मार्च करके गये, जहां
दस सहस्र श्रमिकों का प्रदर्शन किये जाने की घोषणा की गई थी।
घोषणा के दस सहस्र के स्थान में वहां केवल कई सौ श्रमिक ही
उपस्थित थे। यह लोग हिटलर के दल के पहुँचते ही बिल्कुल
चुप हो गये। इधर उधर लाल दल वालों के समूह ने जो बाहिर से
आये हुए थे और हिटलर के दल को नहीं जानते थे, झगड़ा करने
का प्रयत्न किया। यह स्पष्ट हो रहा था कि लाल दल वालों से
बहुत समय से कष्ट पाने वाली जनता में अब धीरे २ जागृति हो

रही थी। उनमें हिटलर के दल का चिल्लाकर स्वागत करने का साहस बढ़ता जाता था। सायंकाल के समय उनको बड़ा भारी स्वागत करके विदा किया गया।

तूफानी सेनाओं की एक वर्दी

कोबर्ग के अनुभव से इस बात का पता चला कि तूफानी सेनाओं में एक वर्दी का होना नितान्त आवश्यक है। इससे केवल बल ही नहीं बढ़ता, वरन् गड़बड़ी बच जाती है और विरोध के समय अपने आदमियों को तुरन्त पहचाना जा सकता है। अभी तक केवल बिल्ले से ही काम लिया जाता था। अब लम्बे बूट और प्रसिद्ध टोपी को भी वर्दी में स्थान दिया गया।

इस बात का महत्त्व भी समझ में आ गया कि सब कहीं सैनिक ढंग से ही नियमित रूप में जाना चाहिये। इससे अनेक स्थानों पर लाल दल वालों की विभीषिका दूर हो गई, और सभाओं के भंग होने का अंदेशा बहुत कुछ जाता रहा।

तृतीय, मार्च १९२३ में एक घटना हुई, जिससे हिटलर को विवश होकर अपने आन्दोलन का ढंग बदल देना पड़ा। उस समय बड़े २ परिवर्तन किये गये।

उस वर्ष के आरम्भ में ही फ्रांस वालों ने रूर | (Ruhr) की कोयले की खानों पर कब्जा कर लिया था। तूफानी सेनाओं की उन्नति में यह घटना बाद में बड़ी भारी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई।

रूर पर कब्जा किये जाने से, जर्मनों को कुछ अधिक आश्चर्य होने पर भी इस बात की आशा करने ...

| रूर के झगड़े का विस्तृत वर्णन इसी ग्रंथ में आगे दिया हुआ है।

अच्छे कारण मिल गये कि उनको आधीनता स्वीकार करने की कायरतापूर्ण नीति को छोड़ देना चाहिये, और अब मरक्षक संस्थाओं को कुछ निश्चित कार्य करना पड़ेगा। यह निश्चय ही था कि तूफानी सेनाओं को भी इस राष्ट्रीय सेवा स प्रथक् न रखा जावेगा। सन् १९२३ ई० की वसन्त तथा ग्रीष्म ऋतु में तूफानी सेनाओं का रूप युद्ध करने वाली सेना के जैसा हो गया। इसका कारण उनके आदोलन की बाद की उन्नति जनक घटनाएँ थीं।

तूफानी सेनाओं का पुनः सगठन

यद्यपि सन् १९२३ के अंत की घटनाओं को पहिली पहल देखने से घृणा होती है। किंतु उनको उच्च दृष्टि से देखने पर वह अत्यंत आवश्यक ज्ञात पड़ती हैं। क्योंकि उनसे आदोलन को इस समय हानि पहुँचाने वाली तूफानी सेनाओं का परिवर्तन एक चोट में ही रुक गया। इसी समय यह आवश्यकता प्रतीत हुई कि दल का फिर उसी प्रकार सगठन किया जावे, जिस प्रकार आरम्भ में किया गया था।

सन् १९२५ ई० में नेशनल सोशियलिस्ट जर्मन श्रमिक दल की दोबारा स्थापना की गई। उसकी तूफानी सेना का भी आरम्भिक ढंग पर पुन: संगठन किया गया। वह फिर अपने आरम्भिक सिद्धान्तों पर वापिस आ गया। अब तूफानी सेनाओं का कर्तव्य केवल रक्षा करना और आन्दोलन के युद्ध को शक्ति देना था।

तूफानी सेनाओं को गुप्त समिति बनने से भी रोकना था। नेशनल सोशियलिस्टों के लिये एक लाख तूफानी सैनिक रखे गये। उनका विचार पूर्णतया राष्ट्रीय था।

बीसवां अध्याय

प्रचार और संगठन

दल को प्रचार विभाग का अध्यक्ष होने के कारण हिटलर केवल आंदोलन के भावी महत्त्व के लिये क्षेत्र तयार करने में ही सतर्क नहीं था, वरम् उसने ऐसे उद्देश्यों से कार्य किया, जिससे संगठन में अच्छे से अच्छे व्यक्ति ही आ सकें। हिटलर का प्रचार जितना ही अधिक उत्तेजक होता था, उतना ही निर्बल लोग उससे अधिक भयभीत होते जाते थे, और उसमें प्रवेश करने से हिचकिचाते जाते थ, किन्तु यह वास्तव में अच्छा ही था।

सन् १६२१ के मध्य तक उत्पादक शक्ति पर्याप्त थी। उस से आंदोलन की भलाई के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता था। किन्तु उसी वर्ष की ग्रीष्म ऋतु में कुछ घटनाओं से यह स्पष्ट हो गया कि प्रचार के साथ २ संगठन नहीं किया जा

सकता। क्योंकि प्रचार की सफलता क्रमश स्पष्ट होती जाती थी।

सन् १६२०-२१ में संस्था का शासन एक कमेटी करती थी, जिसमें असेम्बली (श्रमिकों की बड़ी सभा) के द्वारा निर्वाचित किये हुए सदस्य थे। किन्तु इस कमेटी ने उसी सिद्धान्त को धारण किया, जिसके विरुद्ध संस्था उत्साह पूर्वक युद्ध कर रही थी। यह सिद्धान्त पार्लमेन्टवाद था।

हिटलर ने ऐसी मूर्खता की बातों की ओर देखने से भी इंकार कर दिया। थोड़े समय के पश्चात् तो उसने कमेटी के अधिवेशनों में जाना भी बंद कर दिया। उसने उस कमेटी को समाप्त करने का आन्दोलन करना आरम्भ किया। उसने उन मूर्ख व्यक्तियों से बातचीत करना भी बन्द कर दिया। साथ ही साथ उसने दूसरों के विभागों में हस्तक्षेप न करने की नीति भी धारण कर ली।

हिटलर का दल का सभापति बनना

थोड़े समय के पश्चात् ही दल के नये नियम स्वीकार किये गये और हिटलर को दल का सभापति बनाया गया। अब उसको पर्याप्त अधिकार मिल गये। अब ऐसे सब मूर्खता पूर्ण कार्य आप ही बंद हो गए। कमेटी के निर्णयों के स्थान में पूर्ण उत्तरदायित्व के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया। सभापति को संस्था के पूरे शासन का उत्तरदायित्व सौंपा गया।

स्वभावत ही संस्था के आंतरिक क्षेत्रों में भी—जहां तक पार्टी का शासन था—इस सिद्धान्त को स्वीकार किया गया।

कमैटी से हानिप्रद कार्य न होने देने का सब से अच्छा उपाय यही था कि उससे कुछ वास्तविक कार्य कराया जाता। इस बात को देखकर हंसी आती थी कि सदस्य लोग बैठे २ ऊबा करते थे, और यकायक उठ कर चले जाते थे। उसको देखकर रीस्टाग (Reichstag) का स्मरण हो आता था, क्योंकि उस की दशा भी उस समय बहुत कुछ ऐसी ही थी। हिटलर ने सोचा कि यदि प्रत्येक सदस्य को कुछ उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य दिया जावे तो यह सुस्ती दूर हो जावेगी।

हिटलर का समाचारपत्र

दिसम्बर १६२० में हिटलर की नेशनल सोशियलिस्ट पार्टी ने वाल्किस्चर बिओबैचर (Volkischer Beobachter) नाम का एक समाचार पत्र निकाला। इस पत्र को ही पार्टी का मुखपत्र बनाना था। आरंभ में यह सप्ताह में दो बार निकलता रहा, किन्तु सन् १६२३ ई० के आरंभ में यह दैनिक हो गया। अगस्त के पश्चात् तो यह अपने बाद वाले अत्यंत प्रसिद्ध बड़े आकार का हो गया।

यह पत्र शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। यद्यपि इसमें अच्छे २ विषय रहते थे, किन्तु इसका प्रबन्ध व्यापारिक ढंग पर नहीं किया जा सका। अभी तक यही विचार था कि इसको सार्वजनिक सहायता से चलाया जावे। इस बात का अनुभव नहीं किया गया

कि यह प्रतीयोगिता में अपना मार्ग स्वयं साफ करके स्वावलंबी हो जावेगा। वास्तव में दूसरों की गलतियों में देश भक्तों के पैसे को लगाना उचित न था।

समय पर इन बातों को बदलने के लिये हिटलर को बड़ी भारी दिक्कत का सामना करना पड़ा। सन् १६१४ में युद्ध स्थल में हिटलर का परिचय मैक्स ऐमन (Max Amann) से हो गया था। वह आज कल इस पार्टी के व्यापार का डाइरेक्टर है। सन् १६२१ में हिटलर ने उससे अनुरोध किया कि वह पार्टी के व्यापार का मैनेजर बन जावे। वह पहिले से ही एक उन्नतिशील अच्छे पद पर काम कर रहा था। अत बड़ी भारी हिचकिचाहट के साथ वह एक शर्त पर सहमत हुआ। शर्त यह थी कि उसको अपूर्ण और अयोग्य कमैटी की दया पर न छोड़कर केवल एक व्यक्ति के सम्मुख ही उत्तरदायी होना पड़े।

बैवेरिया की पीपुल्स पार्टी के कुछ व्यक्तियों को पत्र के काम में रख कर देखा गया तो उनका काम बहुत सन्तोषजनक था। बाद में यह सब भी नेशनल सोशियलिस्ट हो गये।

दो वर्ष तक हिटलर ने अपने विचारों का और अधिक जोरशोर से प्रचार किया।

पार्टी की आर्थिक उन्नति

जैसा कि आगे बतलाया जावेगा नौ नवम्बर सन् १६२३ को इसका निश्चित परिणाम देखने को मिला। चार वर्ष पूर्व

जब हिटलर उसका सदस्य बना था तो पार्टी के पास एक रबड़ की मुहर तक न थी। किन्तु ९ नवम्बर १९२३ को जब पार्टी तोड़ी गई और उसकी सम्पत्ति जब्त कर ली गई तो इस कुल सामान के बेचने से १ लाख ७० हजार सोने के मार्क मिले।

ट्रेड यूनियन का प्रश्न

अब इस बात की आवश्यकता प्रतीत हुई कि नेशनल सोशिएलिस्ट दल का अपना स्वतन्त्र ट्रेड यूनियन सगठन हो।

इस सगठन को वर्गयुद्ध का साधन न बना कर इसको रक्षा और श्रमिकों के प्रतिनिधित्व का साधन बनाना था। नेशनल सोशिलिस्ट राज्य किसी वर्ग को नहीं जानता। वह तो राजनीतिक रूप में समान अधिकार वाले नागरिकों को और बिना अधिकार वाली प्रजा को जानता है।

ट्रेड यूनियनों का मूल सिद्धान्त वर्गयुद्ध करना नहीं होता। उसको तो मार्क्सवाद ने अपना वर्गयुद्ध करने का साधन बना लिया था। मार्क्सवाद ने एक आर्थिक शास्त्र की रचना की, जिसका उपयोग उसने अन्तर्राष्ट्रीय स्वतन्त्र राष्ट्र के आर्थिक आधार को नष्ट करने में किया। उनका उद्देश्य तो स्वतन्त्र राष्ट्रों को यहूदियों के ससार व्यापी व्यापार का दास बनाना था। क्योंकि वह तो किसी राज्य की सीमा को नहीं जानते।

नेशनल सोशिएलिस्ट ट्रेड यूनियन के हाथ में राष्ट्र की

उत्पत्ति को नष्ट करने का साधन हड़ताल नहीं है। यह तो उत्पत्ति को बढ़ाता है और व्यापार को चलाता है।

नेशनल सोशिएलिस्ट ट्रेड यूनियन के साथ दूसरे ट्रेड यूनियनों से सहयोग नहीं किया जा सकता। क्योंकि इन दोनों में पृथ्वी और आकाश का अन्तर रहता है।

किन्तु हिटलर इस बात का विरोधी था कि ट्रेड यूनियनों की सदस्यता में निर्धन श्रमिकों के पैसे को लगाया जावे। अब यह प्रश्न जहां का तहां ही रह गया।

इक्कीसवां अध्याय

युद्ध के पश्चात यूरोप की जर्मनी के सम्बन्ध में परराष्ट्र नीति

इतिहास से यह बात प्रगट है कि महारानी ऐलीजैबेथ के समय से ब्रिटेन की यह नीति चली आती है कि यूरोप महाद्वीप में किसी भी राज्य की शक्ति को साधारण मान से अधिक न बढ़ने दिया जावे। यदि कोई राज्य अपनी शक्ति बढ़ा लेता था तो ब्रिटेन उसके ऊपर सैनिक आक्रमण करने में कोई संकोच नहीं करता था। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिये ब्रिटेन अनेक प्रकार के साधनों से काम लेता रहा है। इस प्रकार यूरोप की बड़ी शक्तियों में से स्पेन और नीदरलैंड (हालैण्ड) का नाम निकल जाने पर ब्रिटेन की सेनाओं ने फ्रांस की बढ़ती हुई नेपोलियन की शक्ति की ओर ध्यान दिया। अन्त में नेपोलियन के पतन से उसके सैनिकवाद का आतंक दूर हुआ।

अभी तक ब्रिटिश राजनीतिज्ञों का ध्यान जर्मनी की ओर नहीं गया था। क्योंकि अपनी राष्ट्रीय एकता के बिना जर्मनी का प्रबल शक्ति बनना कठिन जान पड़ता था।

सन् १८७०–७१ में इङ्गलैंड ने नया ढग पकड़ा। अब आर्थिक संसार में अमरीका का महत्त्व बढ़ गया था। इधर रूस भी एक प्रबल शक्ति बन गया था। जर्मनी भी इस समय व्यापार में उन्नति करता जाता था। अत ब्रिटेन का विचार जर्मनी के व्यापार से प्रतीयोगिता करने का हुआ।

किन्तु सन् १९१८ में जर्मनी में क्रान्ति हो जाने से ब्रिटेन को जर्मनी से भी कुछ खटका न रहा। ब्रिटेन अपना लाभ इसमें भी नहीं समझता था कि जर्मनी एक दम यूरोप के मानचित्र में से मिट जावे। १९१८ में ब्रिटिश नीति को बड़ी कठिनता का सामना करना पड़ा। उस समय जर्मनी नष्ट हो चुका था और फ्रांस यूरोप भर में सब से प्रबल राजनीतिक शक्ति था। जर्मनी के यूरोप के मानचित्र से मिट जाने में ब्रिटेन का नहीं, वरन् शत्रुओं का ही लाभ था। सो भी नवम्बर १९१८ से १९१९ की ग्रीष्म ऋतु तक ब्रिटिश राजनीतिज्ञ लोग अपने ढग को नहीं बदल सके।

वास्तव में इंगलैंड महायुद्ध से जो लाभ उठाना चाहता था, नहीं उठा सका। यूरोप में एक शक्ति साधारण मान से बहुत अधिक बढ़ गई। इंगलैंड उसकी उन्नति के मार्ग में कोई रुकावट न डाल सका।

आज फ्रांस की परिस्थिति अपने ढंग की अनोखी है। सैनिक शक्ति उसकी यूरोप भर में प्राय सबसे अधिक है। इटली और स्पेन के विरुद्ध उसकी सीमायें सुरक्षित हैं। जर्मनी की ओर उसने बड़ी भारी सेना जमाकर अपनी रक्षा की हुई है। यह सेना ससार भर में सबसे अधिक शक्तिशाली है। उसके जहाजी बेड़े की शक्ति से और जर्मनी की निर्बलता से उसका समुद्री किनारा भी सुरक्षित है। वह इस समय ब्रिटिश साम्राज्य से भी अधिक शक्ति प्राप्त कर चुका है।

ग्रेट ब्रिटेन की सबसे बड़ी इच्छा यह रहती है कि यूरोप के राज्यों का पारस्परिक अनुपात न बिगड़ने पावे। क्योंकि इसी से ब्रिटेन का संसार में प्रभाव बना रह सकता है।

फ्रांस की एक मात्र इच्छा जर्मनी को शक्ति प्राप्त न करने देने की थी। वह जर्मनी में छोटी २ रियासतों को ही बने रहने देना चाहता था। क्योंकि वह सभी रियासतें शक्ति में एक दूसरी के बराबर हैं और उनमें कोई नेता बनने योग्य नहीं है। वह राइन (Rhine) नदी के बायें किनारे को यूरोप में अपने स्थान को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये सुरक्षित रखना चाहता था।

फ्रांस की नीति यूरोप के विषय में वास्तव में ब्रिटिश नीति की ठीक उलटी है।

किसी भी ब्रिटिश, अमरीकन अथवा इटालियन राजनीतिज्ञ को जर्मनी का पक्षपाती नहीं कहा जा सकता। प्रत्येक अंगरेज राजनीतिज्ञता में पहिले अंगरेज है। अमरीकनों के

वपय में भी यही बात है। कोई इटली वासी भी इटली के पक्ष के अतिरिक्त अन्य किसी नीति को पसन्द नहीं करता। अतएव जो कोई भी दूसरे देशों के राजनीतिज्ञों में जर्मन पक्षपातिनी नीति पर विश्वास करके अन्य राष्ट्रों से मित्रता सम्पादन करने की आशा करता है वह या तो निरा बुद्धू है अथवा राजनीतिज्ञ नहीं है।

इंग्लैंड भी जर्मनी को संसार की प्रसिद्ध शक्ति बनने देना नहीं चाहता। फ्रांस तो उसको किसी प्रकार की भी शक्ति बनने देना नहीं चाहता। दोनों में कितना भारी अंतर है। हिटलर उस समय संसार की शक्ति बनने के लिये युद्ध नहीं कर रहा था। वह तो जर्मनी के अस्तित्व, उसकी राष्ट्रीय एकता और उसके बच्चों की दैनिक रोटी के लिये लड़ रहा था। इस दृष्टि कोण से जर्मनी की मित्रता थोड़ी बहुत केवल ग्रेट ब्रिटेन और इटली से ही हो सकती थी।

इटली भी फ्रांस की शक्ति के यूरोप में और अधिक बढ़ने की इच्छा नहीं कर सकता। इटली का भविष्य सदा ही भूमध्य-सागर (Meditaranean) के किनारे के राज्यों की परिस्थिति के विकाश पर निर्भर रहता है। उसका महायुद्ध में सम्मिलित होने का उद्देश्य फ्रांस की सहायता करना नहीं था, वरन् अपने ऐड्रियाटिक (Adriatic) पर के शत्रुओं को निर्बल करना ही उसको अभीष्ट था। यूरोप में फ्रांस की शक्ति में वृद्धि होने का अभिप्राय तो इटली के भविष्य में प्रतिबन्धक है। वह इस बात को

सोच कर अपने आपको कभी धोखा नहीं देता कि राष्ट्रीय संघर्षों से विरोध निकल जाता है।

ठंड दिल से विचार करने पर प्रगट होता है कि केवल ग्रेट ब्रिटन और इटली ही जर्मनी के अस्तित्व के विरोधी नहीं हैं।

जर्मनी के और पतन मे ब्रिटन की नीति का कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें हाथ तो अन्तरराष्ट्रीय सम्पत्ति वाले यहूदियों का है। यहूदी लोग जर्मनी का लगातार होने वाला केवल आर्थिक पतन ही नहीं चाहते वह उसकी राजनीतिक दासता को भी पसन्द करते हैं। इसी कारण जर्मनी के विनाश के लिये सबसे बड़े आन्दोलनकारी यहूदी हैं।

इंग्लैंड और इटली में साधारण राजनीतिज्ञों से यहूदियों के आर्थिक संसार का मत भेद बिल्कुल स्पष्ट है। कभी २ तो यह बहुत बुरे रूप मे प्रगट हुआ करता है।

केवल फ्रांस में ही स्टाक के विनिमय की इच्छा में यहूदियों और राष्ट्रीय राजनीतिज्ञो में गहरा समझौता हो चुका है। किन्तु इस मेल से जर्मनी को बड़ा भारी खतरा है।

नेशनल सोशियलिस्ट दल वाले तो ब्रिटन की भावी मित्रता का भी भरोसा नहीं कर सकते थ। क्योंकि जर्मनी के यहूदी समाचार पत्र जर्मनी के प्रति ब्रिटन की घृणा उत्पन्न करने में बार २ सफल हो जाते थे।

अतएव जर्मन राष्ट्र को अपने प्रति किये गये अन्य राष्ट्रों के व्यवहार के लिए कोई शिकायत करने का अवसर नहीं था।

उनको तो अपने घरके उन अपराधियों को दण्ड देने की आवश्यकता थी, जिन्होंने स्वयं अपने देश को धोखा देकर बेच दिया था।

इटली में फासिस्टों ने यहूदियों की तीनों शक्तियों को छिन्न भिन्न कर दिया। गुप्त समितियों पर रोक लगा दी गई। स्वतन्त्र और राष्ट्रोत्तर (Super national) पत्रों पर मुकदमे चलाये गये और अन्तर्राष्ट्रीय मार्क्सवाद को तोड़ डाला गया।

इंगलैण्ड में भी ब्रिटिश राजनीतिज्ञों और यहूदियों के डिक्टेटरों में झगड़ा चलता ही रहता है।

युद्ध के बाद यह बात पहिली पहल दिखलाई दी कि सब विरोधी शक्तियां किस प्रकार जापान की समस्या की ओर एक तरफ ब्रिटिश राज्य के नेतृत्व के और दूसरी ओर समाचार पत्रों के प्रश्न पर आपस में एक दूसरे से टकरायीं। युद्ध के समाप्त होते ही अमरीका और जापान का पुराना मनोमालिन्य फिर प्रगट हो गया। सम्बन्ध का पर्दा ईर्ष्या के भाव को न रोक सका।

जर्मनी के विनाश में ब्रिटेन का इतना हित नहीं था, जितना यहूदियों का था। इसी प्रकार जापान के विनाश से भी आज ब्रिटेन की अपेक्षा यहूदियों का व्यापार ही अधिक चमकेगा। इंगलैण्ड जहां आज संसार में अपनी स्थिति की रक्षा करने में लगा है, वहां यहूदी लोग अपनी व्यापारिक विजय के उपाय करते आ रहे हैं।

यहूदी इस बात को जानते हैं कि यूरोप में एक सहस्र वर्ष तक रह कर वह यूरोप वासियों को पददलित अवश्य कर चुके हैं, किन्तु एशियाई देश जापान का मुकाबला करना सुगम नहीं है।

इसी वास्ते वह जर्मनी के समान ही जापान के विरुद्ध भी राष्ट्रों के हृदय में घृणा उत्पन्न करते रहते हैं। इसी कारण जब इंगलैण्ड में जापान से मित्रता की बात चीत हो रही थी तो यहूदी लोग जापान के सैनिकवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध आन्दोलन कर रहे थे। इस प्रकार यहूदी केवल पैसे के ही मीत हैं, यह किसी राष्ट्र के अपने नहीं हैं।

पूर्व के सम्बन्ध में जर्मनी की नीति

सन् १९२०—२१ के आरम्भ में नेशनल सोशिएलिस्ट पार्टी के पास अनेक देशों से संदेश आये कि उनके साथ मिल कर एक संघ बनाया जावे। इस संघ का रूप "पीड़ित राष्ट्रों का संघ" होना था। इनमें बल्कान राज्यों के प्रतिनिधि विशेष रूप से थे। हिटलर ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि इनमें कुछ व्यक्ति मिस्र और भारत के भी थे। हिटलर ने उनके उद्योग को केवल खिलवाड़ समझा। क्योंकि उनके पीछे समर्थन किसी का नहीं था। उनमें भी ऐसे गिने चुने ही थे, जो किसी भी मिस्र वासी अथवा भारत वासी को वहां का सच्चा प्रतिनिधि समझते थे। यह अवश्य

रह जानते थे कि इन लोगों को किसी संस्था ने नहीं भेजा था। अतः उनके पास बिना किसी प्रकार का अधिकार हुए उनके साथ किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता था। क्योंकि ऐसे व्यक्तियों के साथ व्यवहार करने का परिणाम शून्य और समय नष्ट करने के अतिरिक्त और कुछ न होता।

भारत के सम्बन्ध में जर्मनी की नीति

हिटलर ने लिखा है कि "उस समय जर्मनी के राष्ट्रीय क्षेत्रों में यकायक एक बच्चों की भी आशा होगई थी। यह समझा जाता था कि इंगलैण्ड का शासन भारत में समाप्त होने वाला है। भारतवर्ष के कुछ राष्ट्रीय व्यक्तियों ने यूरोप का दौरा किया। उन्होंने कुछ राजनीतिज्ञों को विश्वास करा दिया कि एशिया में से ब्रिटिश साम्राज्य समाप्त होने वाला है। किन्तु मुझको इसका कभी विश्वास नहीं हुआ। क्योंकि मैं इन बातों को बच्चों जैसी समझता था। मुझको विश्वास था कि इंगलैण्ड ब्रिटिश साम्राज्य के लिये भारत के मूल्य को खूब जानता है। अतएव यह सोचना मूर्खता है कि इंगलैण्ड सुगमता से भारत को अपने हाथ से निकलने देगा"। हिटलर की सम्मति में भारत इंगलैण्ड के हाथ में से तभी निकल सकता है, जब या तो उसके शासन में जातियों की गड़बड़ फैल जावे, अथवा उसको किसी शक्तिशाली शत्रु की तलवार के सामने ऐसा करने को विवश होना पड़े। हिटलर की सम्मति में भारत की जागृति कभी

सफल नहीं हो सकती। हिटलर को किसी दूसरी शक्ति की अपेक्षा भारत का अङ्गरेजों के हाथ में होना ही अधिक योग्य जंचता है।

मिस्र के ब्रिटिश शासन में से निकल जाने की आशा भी इसी प्रकार निर्मूल है।

रूस के साथ तो जर्मनी का पुराना वैमनस्य है और आज तो वहां मार्क्सवाद का बोल बाला है। अब रूस से मित्रता करने का तो जर्मनी को स्वप्न में भी विचार नहीं उत्पन्न हो सकता।

बाईसवां अध्याय

रूर के अधिकार पर फ्रांस और जर्मनी का मुकाबला

सन् १९१८ में जर्मनी के पतन के पश्चात् युद्ध समाप्त हो जाने पर फ्रांस को पहिली चिंता जर्मनी से बदला लेने की नहीं हुई, वरन् उसकी सेनाओं को अपने देश और वेल्जियम में से यथासम्भव शीघ्र हटाने की हुई। अतएव पेरिस में एकत्रित नेताओं ने पहिले तो जर्मन सेनाओं से शस्त्र रखवा लिये और फिर उनको यथासम्भव शीघ्र फ्रांस और वेल्जियम में से दूर करके वापिस जर्मनी भेजा। जब तक यह सब कार्य पूर्ण न हो गया उनको युद्ध के अपने उद्देश्य की ओर ध्यान देने का साहस भी नहीं हुआ। जर्मनी की औपनिवेशिक शक्ति और व्यापारिक शक्ति का नष्ट हो जाना ही इंगलैण्ड के लिये युद्ध की वास्तविक विजय थी। उसको जर्मनी का पूर्ण नाश करने की कोई इच्छा न थी। किन्तु

फ्रांस के लिये इस नयी सन्धि का बड़ा भारी महत्त्व था। क्लेमेन्शू की घोषणा के अनुसार तो फ्रांस सन्धि को भी युद्ध का जारी रहना ही समझता था।

दिसम्बर सन् १९२२ में जर्मनी और फ्रांस के बीच की परिस्थिति फिर बिगड़ती दिखलाई देने लगी। फ्रांस दमन के उपाय सोच रहा था और रूर पर कब्जा करने की स्वीकृति लेना चाहता था। क्योंकि उसने तो चार वर्ष तक के युद्ध में इसी आशा पर रक्त बहाया था कि हर्जाने के रूप में यह सारी हानि पूरी हो जावगी। फ्रांस की दृष्टि पहिले से ही एल्सेस और लारेन (Alsace Louraine) पर थी। उनको ले लेना फ्रांस के राजनीतिक कार्यक्रम का एक अंग था।

रूर पर फ्रांस का अधिकार

यद्यपि कोलोन (Cologne) में मित्रदेश का अधिकार होने से फ्रांस का व्यवहारिक रूप से रूर से सम्बन्ध स्थापित हो गया था, किन्तु फ्रांसीसी लोग सैनिक दृष्टिकोण से इस योजना से संतुष्ट नहीं थे। क्योंकि वेस्टफालिया का इलाका जर्मनी के लोहे और इस्पात के उद्योग धन्धों का केन्द्र था। मार्च १९२१ में फ्रांसीसियों ने ड्यूसबर्ग (Duisburg), रूरार्ट (Rohrort) और डूसेलडार्फ (Dusseldorf) पर भी अधिकार कर लिया, इससे जर्मनी की पांच सहस्र वर्ग किलोमीटर भूमि तथा ८७५००० निवासी उनके अधिकार में आ गये। जर्मनी को यह दण्ड पेरिस के हर्जाना प्रस्तावों को स्वीकार न करने के कारण दिया गया था। इसके

पश्चात् सन् १९२३–२४ में ३७७०० वर्ग किलोमीटर भूमि तथा ३११९००० निवासियों पर और भी अधिकार करके भाग के लगभग पूरे रूर जिले पर अधिकार कर लिया गया।

महायुद्ध से पूर्व लोरेन के अधिकांश लोहे और इस्पात के कारखाने या तो रूर वालों के हाथ में थे अथवा उनसे सम्बन्ध रखते थे। लोरेन का हल्की किस्म का कच्चा लोहा लोरेन से बेचने के बाद रूर की भट्टियों में गलाया जाता था। लोरेन के कुल ७१ करोड़ १० लाख टन कच्चे लोहे में से ३१ लाख टन केवल रूर में ही आता था। इसके अतिरिक्त रूर के कोक (Coke) की लोरेन के कच्चे लोहे को गलाने में आवश्यकता पड़ती थी। लोरेन के साफ लोहे और इस्पात की भी दक्षिण-पश्चिमी जर्मनी के बाजार में ही खपत होती थी।

ऐल्सेस-लोरेन तथा लक्सेमबर्ग के जर्मनी के हाथ से निकल जाने के कारण जर्मनी के पास कच्चे लोहे की आय पहिले से पचमांश मात्र ही रह गई, और इससे कच्चे लोहे के उत्पादकों में फ्रांस यूरोप में सब से बड़ा राज्य हो गया। लोरेन की लोहे और इस्पात के सुव्यवस्थित जर्मन कारखानों का मालिक भी फ्रांस ही हो गया। फ्रांस ने अपने लोहे के व्यापार के वास्ते कोक पाने की आशा से सार प्रदेश की खानों पर भी अस्थायी अधिकार कर लिया। सार के कोक के ठीक न होने के कारण सन्धि पत्र में इस बात की विशेष सुविधा रखी गई थी कि जर्मनी रूर के कोयले को नियम बद्ध मूल्य पर फ्रांस

तथा अन्य मित्र शक्तियों को देता रहे।

राजनीतिक बाधाओं के कारण जर्मनी के कोयला वालों का हाथ रुक गया। अतएव उन्होंने जर्मन हर्जाने के न जाने से लाभ उठा कर रूर में लोहे और इस्पात के नये २ कारखाने बना लिये। यह कारखाने स्वेडन अथवा स्पेन के अव्वल किस्म के कच्चे लोहे से चलाये जाते थे। इससे लोरेन के हल्की किस्म के कच्चे लोहे का गलाना लोरेन और रूर दोनों ही स्थानों पर बन्द हो गया। लोरेन में गलाने का कार्य रूर के कोक के नियमित आय पर ही निर्भर था। पक्के लोहे का निर्यात व्यापार भी जर्मनी के बाजार पर ही निर्भर था। इधर जर्मन बाजार पांच वर्ष के लिये बिना महसूल फ्रांस के लिये खोल दिया गया था। अतएव रूर के कोयले के व्यवस्थापक ही वास्तव में लोरेन के लोहे और इस्पात के उद्योग धन्दों के भी व्यवस्थापक थे।

सन् १९२० में जर्मनी के पास कोयला की कमी होने पर मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी को धमकी दी कि यदि वह उनकी शर्तों को स्वीकार न करेगा तो रूर पर अधिकार कर लिया जावेगा। यद्यपि इस प्रकार इलाका बदलने का कार्य बिना पंचायत की स्वीकृति के नहीं हो सकता था, किन्तु जर्मन सरकार ने उस पर कोई आपत्ति नहीं की। इस समय से फ्रांस ने हर्जाना वसूल करने के कार्य में इस धमकी से बराबर काम लिया। जब जर्मन सरकार ने २९ जनवरी सन् १९२१ को पेरिस कान्फ्रेंस के प्रस्तावों का स्वीकार करने से मना कर दिया तो उन्होंने डूसेलडार्फ

(Dusseldorf), रूरार्ट (Ruhrort) और ड्यूसबर्ग (Duisburg) पर अधिकार कर लिया। फ्रांस रूर प्रदेश पर तब तक बराबर अधिकार करता रहा जब तक जर्मनी ने ५ मई १९२१ को लंदन की चुनौती को स्वीकार न कर लिया।

२६ दिसम्बर १९२२ को हर्जाना कमीशन ने फ्रांस के दबाव से यह घोषणा की कि जर्मनी ने बीस सहस्र घोड़े और १ लाख ३० हजार तार के खम्भे अर्थात् कई लाख मार्क का सामान हर्जाने में कम दिया है। उसके कुछ दिनों बाद ही कोयले की कमी भी घोषित की गई। ब्रिटेन की सम्मति के विरुद्ध भी हर्जाना कमीशन ने निर्णय दिया कि जर्मनी ने क्षतिपूर्ति में यह कमी जान बूझकर की है। अतएव मित्र शक्तियों को उसको यथष्ट दंड देने का अधिकार है। फ्रांस और बेल्जियम की सरकारों ने निश्चय किया कि इंजीनियरों का एक कमीशन रूर में भेजा जावे, जो वहां कोयले की सिंडिकेट के कार्यों पर शासन करके कोयले का चालान करे। क्योंकि इनकी सम्मति में कोयले के खान-मालिक ही सन्धि को तोड़ने की चेष्टा कर रहे थे। इस कमीशन में इटली भी सम्मिलित था, किन्तु ग्रेट ब्रिटेन सम्मिलित नहीं था। इस कमीशन के साथ सेना भी थी।

जब ११ जनवरी १९२३ को फ्रांस और बेल्जियम की सेनाओं ने रूर में प्रवेश किया तो कोयले की सिंडिकेट अपना कार्यालय वहां से हटाकर हैम्बर्ग (Hamburg) में ले आई। तारीख १२ जनवरी १९२३ को जर्मन सरकार ने इसका विरोध

किया, फलस्वरूप सभी प्रकार का हर्जाना और विशेष रूप से फ्रांस और बेल्जियम को कोयले और कोक का भेजना बन्द कर दिया गया। सिविल अधिकारियों और रेलवे कर्मचारियों को अधिकार करने वालों की आज्ञा न मानने का आदेश दिया गया। फ्रांस वालों ने करों और सरकारी सम्पत्ति को हस्तगत करने का प्रयत्न किया। उन्होंने कोयले के निर्यात पर कब्जा कर लिया और लकड़ी काटने पर जोर डाला। जर्मन अधिकारियों, रेलवे कर्मचारियों और प्रमुख नागरिकों को निर्वासित कर दिया गया। अनेकों पर जुर्माने किये गये और अनेक जेल भेजे गये। उन्होंने अधिकृत प्रदेश को शेष जर्मनी से विभक्त करके कस्टम्स सीमा बनाई। इस प्रकार उन्होंने जर्मनी के अनधिकृत प्रदेश का आयात और निर्यात का व्यापार एक दम बन्द कर दिया। प्रतिरोध करने में जर्मनी का उद्देश्य था फ्रांस को कोयला और कोक न मिलने देना। किन्तु फ्रांस ने भी उस प्रदेश का आर्थिक रूप से गला घोंटने में कोई बात उठा न रखी।

रूर के झगड़े से जर्मनी की आर्थिक दशा और उसके साथ ही साथ जर्मन करेंसी भी बिल्कुल खराब हो गई।

अब रूर पर कब्जा कर लेने से फ्रांस फिर यूरोप महाद्वीप में सबसे प्रबल शक्ति बन गया। इंगलैंड को तो अब कोई पूछता तक न था। अब इटली का ध्यान भी फ्रांस के विरुद्ध बटने लगा। अब यह समय आने वाला था कि कल के मित्र दूसरे ही दिन फिर शत्रु बन जायें।

जर्मनी में भी यह सब इस कारण हो सका कि उसके पास कोई अनवर पाशा नहीं था। उसका चैंसेलर क्यूनो (Cuno) था।

सन १९२३ की बसन्त ऋतु में फ्रांस के रूर को अपने कब्जे में कर लेने के पश्चात जर्मनी में एक नयी जागृति सी दिखलाई देने लगी।

हिटलर की इच्छा तो यह थी कि इस परिस्थिति से लाभ उठाकर जर्मनी को अपनी सैनिक शक्ति को ठीक करके घर के अंदर के मार्क्सवादी शत्रुओं को समाप्त कर देना चाहिये था।

उसने कई बार अपने को राष्ट्रीय दल कहने वालों से इस बात की अनुमति मांगी कि उनको मार्क्सवाद के साथ खुला मोर्चा लेने का अवसर दिया जावे। किंतु यह सब बातें कानों पर टाल दी गई।

किंतु एक बात भी निश्चित है। वह यह कि बिना मार्क्स वाद से अपने घर को साफ किये जर्मनी का रूर के वास्ते फ्रांस से युद्ध करना बुद्धिमानी का कार्य न होता।

उस आपत्ति के समय परमात्मा ने जर्मनी को एक चतुर व्यक्ति दे दिया था। वह व्यक्ति हर क्यूनो (Herr Cuno) था। वह कहा करता था,

"फ्रांस रूर पर कब्जा कर रहा है। रूर में धरा क्या है? कोयला! क्या फ्रांस कोयले के वास्ते रूर पर कब्जा कर रहा है?"

हर क्यूनो को दिखलाई दे गया कि रूर के आस पास हड़ताल करा देने से फ्रांस को कोयला बिल्कुल न मिल सकेगा।

इस प्रकार कुछ दिन खाली बैठ कर फ्रांस को स्वयं ही अपना सा मुँह लेकर लौटना पड़ेगा। क्योंकि इस कार्य में लाभ के स्थान में उसको हानि बहुत उठानी पड़ेगी।

किंतु यह कार्य मार्क्सवादियों की सहायता के बिना नहीं हो सकता था। मार्क्सवादी नेता तो रुपये के भूखे थे। अतएव उन्होंने क्यूनो के पैसे की सहायता से हड़ताल कराई। अथवा यह कहना चाहिये कि क्यूनो ने पैसा खर्च करके हड़ताल मोल ली।

इस प्रकार जर्मनी ने उस प्रदेश में महात्मा गान्धी के अहिंसामयी प्रबल शस्त्र सत्याग्रह से काम लिया। उन्होंने अपने कुलियों को वहां से हटा लिया, रेलवे कर्मचारियों को वापिस बुला लिया, यहां तक कि उन्होंने अधिकार करने वाली सेना को कुछ भी सहायता न पहुँचने दी। इस का परिणाम यह हुआ कि उन श्रमिकों को सार्वजनिक व्यय पर रखना पड़ा। मार्क के पतन का एक मात्र कारण रूर का अधिकार था।

जर्मनी ने समझौते के लिये कई एक प्रस्ताव किये, किन्तु फ्रांस ने किसी को भी स्वीकार न किया। फ्रांस ने ब्रिटेन के प्रस्तावों को भी ठुकरा दिया। अन्त में स्ट्रेसमैन के सभापतित्व में नई जर्मन सरकार ने २६ सितम्बर को सत्याग्रह बंद कर दिया। किन्तु फ्रांस की सरकार ने बातचीत करने से अब भी इन्कार कर दिया। वह बराबर राइन के बायें किनारे के प्रदेश के पार्थक्य आन्दोलन की सम्पुष्टि करती रही।

नवम्बर १९२३ में अधिकृत जिले के व्यापारियों ने

एकत्रित हुए लोहे और कोयले के स्टाक को खाली करने का एक समझौता किया। क्योंकि फ्रांस सरकार जर्मन सरकार से किसी प्रकार की भी बातचीत करने के लिये तयार नहीं थी। व्यापारियों ने जर्मनी के कोयले के टैक्स और उठाये हुए कोयले को वापिस मांगा। यह भी तय किया गया कि रुपये के स्थान में श्रम को स्वीकार कर लिया जावेगा। हर्जाने के कोयले और कोक का मान निकासी के मान पर निर्भर किया गया। रुपये के स्थान मे लोहे और इस्पात को लेना स्वीकार किया गया। इस समझौते को जर्मन सरकार ने भी स्वीकार कर लिया। उसने व्यापारियों की लागत की पचत में उनको ७० करोड़ मार्क दिये।

इस अस्थायी प्रबंध से सन्धि का मार्ग साफ हो गया। इस के पश्चात् ब्रिटेन और अमेरिका के दबाव से फ्रांस को हर्जाना कमीशन के बनाये हुए दावे कमीशन को स्वीकार करना पड़ा। इस समझौते से उनके भाग में लदन की चुनौती के तिहाई भाग से भी कम पड़ा। —

फ्रांस की नई सरकार कैदियों को छोड़ने और रूर को खाली करने के दावे कमीशन के प्रस्ताव से सहमत थी। इस निश्चय पर ३० अगस्त १९२३ को हस्ताक्षर कर दिये गये। किन्तु रूर प्रदेश पूरी तौर से ३१ जौलाई १९२५ को उस समय खाली किया गया, जब फ्रांसीसी सेनाओं ने एसेन (Essen) और मुलहीम (Mülheim) को खाली किया। २५ अगस्त को

—इस पुस्तक के पृष्ठ ७६ पर दावे कमीशन का ही निर्णय दिया हुआ है।

उनके हृदयों को भावों के आवेश में भर दिया, और तब सर्व उत्साही, आशावादी जर्मनों को यह जान पड़ा कि जैसे छिप हुए जर्मनी के आकाश दीपक ने घोर निराशा की तारों रहित रात्रि को प्रकाशित किया हो। जर्मनी का हृदय फिर भर आया और जादू की शक्ति के समान उसमें सबसे अधिक शानदार रक्त उत्पन्न हो गया, जिसको उसने निश्चय और शक्ति के असत्य स्रोतों के रूप में फिर जर्मनों में भर दिया। दास बने हुए जर्मनी के कर्णधार हिटलर के अनुयायी इन 'विद्रोहियों' को जेल में भेज सकते थे, देश निकाला दे सकते थे, धन कर सकते थे, दबा सकते थे, अपमानित कर सकते थे—किन्तु उनको घुटनों में पतन को कभी विवश नहीं कर सकते थे। जर्मनी की स्वतन्त्रता के निश्चय का बीज सैंकड़ों, हजारों और लाखों हृदयों में बोया जा चुका था। खेत खेत में, गांव गांव में, पर्वतों से समुद्र तक और राइन से विस्चुला तक विद्रोह के फुलिंगे फैल चुके थे। यह विद्रोह प्रत्येक प्रकार की दासता के विरुद्ध था। इन फुलिंगों ने अन्त में अग्नि के एक बड़े समुद्र का रूप धारण कर लिया, जिसके अंदर से एक निर्मल और शुद्ध जर्मनी निकल कर अपने दैव-प्रदत्त आसन पर आ बैठा। 'क्योंकि परमात्मा किसी को दास बनाये रखना नहीं चाहता।'

ऐडल्फ हिटलर इस बात को जानता था कि केवल नवीन, बड़े और उत्पादक विचारों के प्रमाणिक निक्षेपक के रूप में ही उसका आन्दोलन सफल हो सकता था। अतएव उसने जर्मनी

को राष्ट्रीय समाजवाद (National Socialism) का सिद्धान्त दिया। इसी का पवित्र चिन्ह आज आश्चर्यजनक रूप से एकत्रित हुए जर्मनी के ऊपर विजयी होकर फहरा रहा है। नये जर्मनी के वास्ते केवल राष्ट्रीयता के नाम पर ही युद्ध नहीं चलाया जा सकता था, अतएव यही योग्य था कि जर्मन समाजवाद (Socialism) का प्रतिनिधित्व रक्खा जाता। यह केवल सामान्य बात भी नहीं थी कि राष्ट्रीय समाजवाद का झूला बैवेरिया के हृदय म्यूनिक में हो। यह एक प्रकार का संकेत था कि जर्मन आन्दोलन उसी बैवेरिया में आरम्भ हो, जिसने पहिले पार्थक्यवादियों के कार्य का स्वागत करके रीश की एकता को छोड़ने का सबसे अधिक यत्न किया था। युवक राष्ट्रीय समाजवाद (नेशनल सोशिएलिज्म) को यही अपने प्रथम उद्देश्य को पूर्ण करना और उन जर्मन विरोधी उपोगों को युद्ध के लिये ललकारना था। सारांश यह है कि जर्मन विचारों का किला बैवेरिया को ही बनना था।

तत्कालीन अनेक कार्यक्रम

राष्ट्रीय समाजवाद के कार्यक्रम के विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है और उससे भी अधिक इसके विषय में बातें की जा चुकी हैं। उलटफेर, मिथ्यावाद, नासमझी, और न समझने की इच्छा से जहां एक ओर यह कार्यक्रम पूर्णरूप से प्रतिक्रियात्मक जान पड़ता था वहां दूसरी ओर पूर्णतया बोल्शेविक भी जान पड़ता था। किन्तु यह कार्यक्रम सभी तूफानों में से बिना बदले हुए ही निकल आया, और भविष्य में भी इसके नई रीश

की आधारशिला के समान अपरिवर्तित ही रहने की आशा है।

इस कार्यक्रम की मध्यम श्रेणि के दलों के कार्यक्रम से कोई भी तुलना नहीं कर सकता। यदि कोई उन असंख्य कार्यक्रमों का अध्ययन करे जो जर्मनी में गत पन्द्रह वर्षों में निकाले गये तो यह बारबार दिखलाई देगा कि उनमें किसी नैतिक या आध्यात्मिक उद्देश्य का पता नहीं था, यद्यपि उनमें पाठकों को भ्रम में डालने के लिये किसी २ वाक्य में ऐसी बातों का उल्लेख अवश्य किया गया है। वास्तव में इस प्रकार के दलों के कार्यक्रम केवल बिल्कुल निश्चित भौतिक स्वत्वों की आवश्यकताओं को ही प्रगट करते थे। यह हो सकता है कि सोशल डमोक्रैटिक कार्यक्रम मध्यमश्रेणि वालों के एक दल के स्वत्वों को प्रगट करता हो अथवा केन्द्रीय दल (Centre Party) का कार्यक्रम यूनाइटेड कैथलिक चर्च के स्वत्वों को प्रगट करता हो, अथवा बहुत से मध्यम श्रेणि के दल वालों में से कुछ तो बड़े उद्योग धन्धों (थोक व्यापारियों) के स्वत्वों को, कुछ खुदरा व्यापारियों (थोड़ा बेचने वालों) के स्वत्वों अथवा कृषि अथवा अन्य पेशों के स्वत्वों को प्रगट करते हों। किन्तु सभी दशाओं में यह कार्यक्रम निरे भौतिकवाद को ही प्रगट करते थे। कुछ मामलों में तो यह देखा जा सकता है कि किस प्रकार किन्हीं विशेष दलों ने प्रत्येक चुनाव के लिये एक नया कार्यक्रम बनाया और पहिले कार्यक्रम पर बिल्कुल पर्दा डाल दिया। किसी २ समय तो कार्यक्रम का पूर्व भाग स्पष्ट रूप से उत्तरभाग का खंडन करता था। एक चुनाव

के समय तो केन्द्र वाले यहां तक बढ़ गये थे कि उन्होंने दो कार्यक्रम बनाये, एक मध्यम श्रेणी वालों के लिये, दूसरा श्रमिकों के लिये। यदि कोई नया राजनीतिक दल बनता था तो कार्यक्रम उसका आवश्यक अङ्ग होता था। वह बड़ी शेखी से अपने मूल सिद्धान्तों का बखान किया करता था, जबकि वास्तव में यह कार्यक्रम विरोधी स्वत्वों में मुकाबला करने के कारण केवल तुच्छ शृंगार रूप ही बनाये जाते थे। इसके विरुद्ध राष्ट्रीय समाजवादियों ने सदा अपने मूल सिद्धान्तों का पालन किया और कभी किसी कारण से अपने सिद्धान्तों में परिवर्तन नहीं होने दिया। युद्ध-कार्यों में वह सदा ही तरह देने और स्वयं अपनी एक विशेष परिस्थिति बनाये रखने के लिये सहमत रहते थे। किन्तु दूसरे दल वालों की बात बिल्कुल उलटी थी। वह मुकाबले के मौके पर सदा दृढ़ रहते थे, किन्तु अपने सिद्धान्तों को छोड़ने या बदलने के लिये भी सदा तयार रहते थे। यह हो सकता है कि बहुत गहरी छान बीन करने पर हिटलर के कार्यक्रम की जिस किसी बात में स्पष्टता की त्रुटि दिखलाई दे। किन्तु इस बात को कभी नहीं भूलना चाहिये कि नाजीवाद कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है। गम्भीरता पूर्वक विचार करके इसको महीनों में तयार किया गया है। और अंत में इसको दार्शनिक रूप देकर विद्वानों और राजनीतिज्ञों ने प्रतिज्ञा पूर्वक इसको आश्रय दिया है। जर्मन जनता के मुख्य व्यक्तियों ने बिना बुद्धिमत्ता और चतुराई के नेशनल सोशलिस्ट

कार्यक्रम में राष्ट्र की उस गंभीर इच्छा का अर्थ पाया जो विनाश, अत्याचार और प्रतियोगिता में अपने पुनर्जन्म के लिये पहिले से ही युद्ध कर रही थी। इस कार्य क्रम का आधार रूप आरम्भिक सिद्धांत यह सूत्र है जो नव जर्मनी के निर्माण के कार्य में जनता के मार्ग प्रदर्शक हैं। इसका केवल एक उदाहरण दिया जाता है—यह लिखा गया था कि युद्ध के लाभों पर टैक्स लगाया जावगा। किन्तु चतुर व्यक्तियों ने तुरंत आपत्ति करके आक्रमण किया कि आज कल युद्ध का लाभ कुछ नहीं मिल रहा है। वास्तव में यह मौलिक मांग नहीं है। किन्तु इसका यह अभिप्राय है कि जनता के भाव सदा इस विचार के विरुद्ध विद्रोह करते हैं कि कुछ व्यक्ति उन सर्वसामान्य के विनाश से मौलिक लाभ उठायें। इस प्रकार की मांग का सकेत उन लोगों के विरुद्ध था जिन्होंने जनता की कठिन परिस्थिति बना कर युद्ध सामग्री की बिक्री से बड़ा भारी लाभ उठाना चाहा था, जबकि एक २ सामान्य जर्मन अपनी सम्पत्ति, परिवार और जीवन तक का बिना किसी भौतिक लाभ के विचार के, केवल अपने देश की सेवा करने के लिये, बलिदान कर रहा था। इसी प्रकार का विरोध उनके प्रति भी किया जावगा जो, किसी स्वाभाविक दुर्घटना से कोई लाभ उठाना चाहते थे। जब कि उन लोगों को, जो दुर्घटना का शिकार हुए थे, बड़ी कठोरता और आपत्ति उठानी पड़ रही थी। सारांश में इससे इसके अतिरिक्त और कुछ अभिप्राय नहीं है कि अपने द्वारा वासियों के कम से कम रक्त का मूल्य भी समस्त भौतिक लाभ से अधिक

है। इसी प्रकार, जैसा कि इस उदाहरण से दिखलाया जा चुका है प्रत्येक सिद्धांत की उसके उच्च रूप में व्याख्या की जा सकती है। यदि कार्यक्रम पर इस प्रकार से विचार किया जावे जैसा कि उस पर स्वाभाविक रूप से विचार किया जाता है, तो पता चलेगा कि इन सिद्धांतों से कैसी शक्ति प्रगट होती है। एक व्यक्ति यह भी समझता है कि इस कार्य क्रम के सत्य को अर्थात् इन सिद्धान्तों को जनता ने दूसरे कार्यक्रमों की अपेक्षा अधिक ठीक क्यों समझा। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम या उसके वाक्य मृतक पत्र के समान उस कार्य का निश्चय करने वाले नहीं थे। शक्तिशाली युद्ध के लिये नेशनल सोशिएलिस्टों को स्वयं उसके जीवित अर्थ ने ही सामर्थ्य और उत्साह दिया था। उनके नेता हिटलर ने एक समय कहा था, 'जर्मनी का पतन कार्यक्रमों की कमी के कारण नहीं हुआ वरन् इस लिये हुआ कि उसके पास कार्यक्रमों की संख्या आवश्यकता से अधिक थी और काम करने वाले बहुत थोड़े थे। यदि कार्यक्रम ही कार्य का निश्चय भी कर दिया करते तो डेमोक्रैट लोग पार्लमेंट के दलों सहित आज पूर्व की अपेक्षा अधिक स्थिरता से सिंहासन पर बैठे होते। हिटलर से कितनी ही बार पूछा गया, 'हा, किन्तु वास्तव में तुम्हारा कार्यक्रम क्या है?' और वह अभिमान के साथ केवल अपने सरल और वीर तूफानी सैनिकों की ओर संकेत करके कह देता था, 'हमारे कार्यक्रम को उठाने वाले यह खड़े हैं। यह उसको अपने खुले चेहरों पर धारण किये हुए हैं, और यह कार्य क्रम—जर्मनी है। सभी सिद्धान्तों को, जो

जर्मनी के उपयुक्त स्थान की पुन: प्राप्ति में सहायता देते हैं, नेशनल सोशिएलिस्ट लोग अपने कार्यक्रम का विशेष अंग मानते हैं, इसके अतिरिक्त उन सब बातों की जो देश के लिये हानिप्रद हैं वह निंदा करते हैं और उनको नष्ट कर देना चाहिये।

तूफानी सैनिकों का अन्य दलों से संघर्ष

आरम्भ के कुछ वर्ष नये आन्दोलन के लिये कम आशा के थे। जैसा कि पीछे देखा जा चुका है यह आन्दोलन केवल धीरे २ ही उन्नति कर सकता था। नेशनल सोशिएलिस्ट दल केवल म्यूनिक और बैवेरिया की ऊँची भूमियों में ही सीमित रहा। इसकी नर्नवर्ग और कोवर्ग में ही नींव जम पाई थी। हिटलर और उसके अनुयाइयों की हसी उड़ायी जाती थी। उनकी बात गम्भीरता से नहीं सुनी जाती थी। किन्तु यकायक सन् १६२२ के अंत में बड़ी शीघ्रता से उन्नति हुई। इस समय, जब हिटलर व्याख्यान देता था तो बड़े से बड़े हाल ठसाठस भर जाते थे। श्रोता नये सिद्धान्तों को निस्तब्ध होकर सुनते थे और हिटलर के व्यक्तित्व के जादू के सामने पूर्णतया आत्म समर्पण कर देते थे। किन्तु यह दल अभी बैवेरिया में ही सीमित था। हिटलर बड़ी निर्दयता से मार्क्सवाद के हानिकारक सिद्धान्तों की निंदा करता था। वह, उसके आदमी और सब से अधिक तूफानी सेना (Storm Troops) की छोटी, किन्तु आत्म विश्वासी टुकड़ियां निश्चल निश्चय के साथ प्रत्येक स्थान में साम्यवादियों का विरोध

करती थीं। यह नगर के निर्धन से निर्धन घरा—साम्यवादियों के सुरक्षित स्थानों, और मार्क्स-वादियों तक की सभा में सीधे घुस जाते थे और निर्भयता के साथ सोशल डेमोक्रेट राजनीतिज्ञों के साथ वादविवाद करते थे। सब से प्रथम और सब से अधिक युद्ध के अनुभवी और प्रगतिशील नवयुवक हिटलर के झंडे के नीचे एकत्रित हुए थे।

सन् १६२३ ई० के महंगेपन का समय आया। और दुष्काल पड़ा। उस समय बैवेरिया में बैवेरिया निवासियों का मध्यश्रेणि केन्द्रीय दल (Middle Class Centre Party) नाम का एक दल शासन कर रहा था, जो विशेष रूप से बैवेरिया और रीश के सम्बन्धों को तोड़ने का उद्योग कर रहा था। बर्लिन में अभी तक सोशल डेमोक्रैटों का ही शासन था। बैवेरिया की सरकार ने विचार किया कि यह नवयुवक नेशनल सोशिएलिस्टों से अपने उद्देश्य में कार्य ले सकेंगे और उनका वीरतापूर्ण मुकाबला बर्लिन के लाल दल वालों से करा सकेंगे। अतएव उन्होंने हिटलर के आन्दोलन का विरोध नहीं किया। जिस प्रकार सार्वजनिक विनाश अधिकाधिक स्पष्ट होता गया, यह दल प्रबल होता गया और हिटलर भी अपने उद्देश्य में अधिकाधिक दृढ़संकल्प होता गया। क्रमशः दूसरे देश भक्त दल भी उनके प्रभाव और नेतृत्व में आ गये।

चौबीसवां अध्याय

काला शुक्रवार—९ नवम्बर १९२३ ई०

हिटलर की नेशनल सोशियलिस्ट पार्टी बेवेरिया में अब अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँच गई थी। अतएव हिटलर ने इस प्रकार जनसाधारण में हलचल मचाने के पश्चात् सरकारी विभागों को भी हिलाने का निश्चय किया। उसने राजनीतिक प्रतिनिधियों से अपनी पार्टी के घोषणापत्र का समर्थन करने की प्रार्थना की। किन्तु शासन की बागडोर पूंजीपतियों तथा साम्यवादियों के हाथ में होने के कारण हिटलर के अनुरोध की किसी ने भी पर्वाह न की। इस पर हिटलर को बड़ा क्रोध आया। अतएव उसने बलपूर्वक अपने घोषणापत्र का अनुमोदन करवाना आरम्भ किया।

उस समय बेवेरिया की सरकार, सेना और पुलिस की शक्ति क्रमशः हर वॉन काहिर, लासौ और सीसर के हाथ में थी।

हिटलर ने विचार किया कि यदि इन तीनों को किसी प्रकार भी मिला लिया जावे तो रीश की तत्कालीन सरकार तक को पदच्युत किया जा सकता है। अतएव सब से पहिले उसने हर वॉन काहिर को वश में करने का उद्योग किया।

ता० ८ नवम्बर १६२३ ई० को हर वॉन काहिर म्यूनिक नगर के सभा भवन में रियासतों के प्रतिनिधियों के सामने भाषण कर रहा था कि भवन के सामने एक मोटर आकर खड़ी हुई। उसमें से कुछ व्यक्ति बाहिर निकले, जिनमें सब से आगे हिटलर था। हिटलर के सभा भवन के अन्दर आते ही सन्नाटा छा गया। उसने जेब में से पिस्तौल निकाल कर छत की ओर एक गोली चलाई, जिससे काहिर एकदम भयभीत हो गया। हिटलर उसको संकेत करके पास के कमरे में ले गया। और वहां उसने पिस्तौल दिखा कर उससे घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने की प्रेरणा की।

इस धमकी के फलस्वरूप न केवल हर वॉन काहिर ने घोषणापत्र पर हस्ताक्षर ही कर दिये वरन् उसने, लासौ और सीसर तीनों ही ने गुप्त रूप से शपथ लेकर हिटलर का पूर्ण रूप से साथ देने का वचन दिया।

अब क्या था! हिटलर का मन चाहा हो गया। अगला दिन ता० ६ नवम्बर १६२३ जर्मनी की लज्जाजनक क्रान्ति की पांचवीं वर्षगांठ का दिन था। हिटलर ने इसी दिन बर्लिन पर चढ़ाई करने का निश्चय किया। उसने तारीख ८ को ही

नवीन जर्मनी के अस्तित्व को घोषित करते हुए रीश की तत्कालीन सरकार को पदच्युत करने की घोषणा की।

किन्तु जैसा कि बाद में पता लगा कैथलिक लोगों के प्रतिनिधि हरवेन काहिर आदि ने ९ नवम्बर के लिये अपना भिन्न ही कार्यक्रम बनाया हुआ था। उन्होंने हिटलर के सम्मुख शपथ लेकर भी उसको धोखा देने का पूर्ण निश्चय कर लिया था।

तूफानी दल पर गोली वर्षा

अस्तु ९ नवम्बर को दोपहर के समय म्यूनिक से बर्लिन की ओर जाते हुए प्रयाण करने वाली तूफानी दल की पहिली १ टुकड़ी पर पुलिस ने गोली चलाई। जिससे अठारह व्यक्ति उसी समय बलिवेदी पर चढ़ गये और अनेक जख्मी हुए। इस समय प्रयाण करने वाले तूफानी सेना के सेनापतियों में हिटलर के अतिरिक्त जेनेरल लूडेनडार्फ तथा जेनेरल गोयरिंग भी थे। हिटलर और लूडेनडार्फ चमत्कारिक ढंग से बच गये। किन्तु जेनरेल गोयरिंग दो गोलियों से जख्मी होकर गिर पड़ा। इस समय मशीनगनों की चटचट ने अचानक ही अपनी पाशविकता से सैनिकों की प्रसन्नता का हरण करके स्वतन्त्रता की आशा को नष्ट कर दिया। एक बार फिर भी—जैसा कि जर्मन इतिहास में कई २ बार हो चुका है—विश्वासघात ने विजय के मार्ग को बन्द कर दिया। हिटलर के युवक आन्दोलन को निर्दयता से कुचल दिया गया। उसके अनुयायी लोग तितर बितर हो गये। तथा

लोग कुछ तो जेल में भेज दिये गये, कुछ जख्मी हुए और कुछ को देश निकाला दे दिया गया। स्वयं हिटलर भी घायल हो गया था। उसको घायल अवस्था में ही गिरफ्तार कर लिया गया। स्वस्थ होने पर उस पर अभियोग चला कर उसको पांच वर्ष के कारावास का दण्ड दिया गया। जो उसी समय घटा कर आठ महीने कर दिया गया।

हिटलर ने सन् १९२४ ई० की वसन्त ऋतु को अपने इस मुकद्दमे के अन्त में कहा था —

"यद्यपि इस राज्य के न्यायाधीश आज हमारे कार्यों की निन्दा करके प्रसन्न हो रहे हैं, किन्तु वास्तविक सत्य और कानून का देवता–इतिहास–इस फैसले को फाड़ कर फेंकते समय मुस्करावेगा। उस समय वह हम सब को निर्दोष और कर्त्तव्य परायण ही घोषित करेगा।

हिटलर के उपरोक्त वाक्यों का अक्षर २ आज अपनी सत्यता का प्रमाण दे रहा है।

तूफानी दल की नई तयारियां

हिटलर जब दिसम्बर १९२४ ई० में जेल से बाहिर आया तो उसने अपने को पहले से भी अधिक प्रसिद्ध पाया। इस समय चारों ओर हिटलर ही हिटलर की ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। अतएव यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि इतना बलिदान व्यर्थ नहीं गया। रक्त में बोए हुए बीज में आश्चर्यजनक रूप से अंकुर फूटने आरम्भ हो गये थे। अब युद्ध करने वाले फुर्तीले कार्यकर्ता फिर

एक बार पहिले से भी अधिक दृढ़ता से सुसंगठित हो गया। स्वयं हिटलर भी पहिले की अपेक्षा अधिक शक्ति और अनुभव प्राप्त कर भविष्य के विषय में अधिक आशान्वित हो गया था। उसके जेलवास के समय परिस्थिति निराशाजनक थी। किन्तु यह छोड़ा ही गया था कि इस नेता और देवदूत (Prophet) की आकर्षण शक्ति स्पष्ट हो गई। उसने स्वयं अपने हाथ में झंडा उठाया और तुरंत ही पुराने लड़ाके उसके चारों ओर नये सिरे से एकत्रित हो गये और सहस्रों नये भी उनमें सम्मिलित हो गये। अब इस आन्दोलन की जड़ केवल बैवेरिया में ही नहीं वरन् उत्तर जर्मनी में भी जम गई। म्यूनिक में फल्डर्न्हाले के प्रयाण से इस छोटे से आन्दोलन ने संसार के इतिहास में प्रवेश किया था। अब से इन्होंने स्वतंत्रता, सम्मान, कार्य और रोटी के लिये आरम्भ होने वाले युद्ध का नेतृत्व और संचालन अपने हाथों में लिया। भविष्य में इस स्थान का दावा जर्मनी का कोई दूसरा दल न कर सका। नेशनल सोशलिस्ट सैनिकों पर फेल्डर्न्हाले में गोली चलाने की आज्ञा मध्यमश्रेणि की सरकार ने दी थी। और इससे बहुत से ईमानदार जर्मन कार्यकर्ताओं ने आन्दोलन के प्रति अविश्वास के अन्तिम चिन्ह तक मिटा दिये। मध्यमश्रेणि का दल लोगों के सन्मुख अब अधिक दिन तक यह असत्य भाषण नहीं कर सकता था कि वह राष्ट्र का प्रतिनिधि है। फेल्डर्न्हाले में उन्होंने अपना सच्चा रूप प्रकाशित कर दिया और यहीं पर नेशनल सोशलिस्टों का राष्ट्रीयता का विचार मध्यम दल वालों से बिल्कुल पृथक हो गया। उसी

प्रकार इस आन्दोलन ने सोशल डेमोक्रैटों को भी समाजवाद (Socialism) का प्रतिनिधि नहीं कहलाने दिया। मध्यमवर्गों ने राष्ट्रीयता के समग्र जाति के हितसाधन रूप उच्च विचार को हाथ में लेकर उस को धोखे से नष्ट किया था। उनका मूल ता शराब खोरी और स्वय लाभ प्राप्त करने में था। उसी प्रकार सोशल डेमोक्रैटों ने विशुद्ध समाजवाद के विचार को हाथ में लिया था। समाजवाद का अभिप्राय समाज की सेवा और प्रत्यक व्यक्ति को एक उत्तम जीवन व्यतीत करने का अधिकार देना है। किन्तु उन्हों ने उसको घटाते २ केवल भोजन और मजदूरी का प्रश्न मात्र बना डाला।

जर्मनी के तत्कालीन दो वर्ग

अब जर्मनी दो विरोधी कैम्पों में विभक्त हो गया। एक ओर तो सबसे अधिक निर्धन मजदूर और दूसरी ओर मध्यम श्रेणि वाले। मध्यम श्रेणि वाले राष्ट्रीयता के प्रतिनिधि रूप में उपस्थित होते थे। मजदूर लोग इनको विवशता और दमन का स्वरूप समझ कर इनसे घृणा करते थे। डरपोक मध्यमश्रेणि वाले मजदूरों से घृणा करते और डरते थे। यह मजदूरों को विनाश का चिन्ह और व्यक्ति गत सम्पत्ति के नाश करने वाले समझते थे। दोनों ही विचार परस्पर एक दूसरे के अनिवार्य रूप से विरुद्ध दिखलाई देते थे। यदि एक पक्ष राष्ट्र के विरुद्ध आक्रमण करता हुआ जान पड़ता था तो दूसरा पक्ष जनता के विरुद्ध आक्रमण करता जान पड़ता था। दोनों दलों में कोई पुल

नहीं बनाया जा सकता था। दोनों में कोई समझौता नहीं हो सकता था। हिटलर ने देखा कि इन दोनों विचारों के विरोध ने ही जनता को विभाजित किया हुआ है, और जब तक यह एक दूसरे के विरुद्ध रहेंगे कोई ऐक्य सम्भव नहीं है। अतएव उसने दोनों दलों की विशेषताओं को लेकर उनको गलाने के लिये अपने दार्शनिक सिद्धांत के रासायनिक पात्र में डाला, जिससे उनसे एक नया सम्मिश्रण बन जावे। उसी का परिणाम नेशनल सोशि-एलिज्म (राष्ट्रीय सामाजिकवाद) था, जो दोनों विचारों का सबसे गहरा और उत्तम, अपने ढंग का अनोखा न घुलन वाला ऐक्य था। आगे चल कर यही दल नाज़ी पार्टी कहा जाने लगा। उसने मजदूरों को समझाया कि जब तक कोई समस्त राष्ट्र की भलाई को स्वीकार करने को तयार न होगा कोई समाजवाद (Socialism) या सामाजिक न्याय सम्भव नहीं हो सकता। जो कोई भी व्यक्ति के भाग्य को अच्छा बनायगा उसे सम्पूर्ण राष्ट्र के भाग्य को उत्तम बनाने के लिये तयार रहना चाहिये। साथ ही साथ उसने मध्य श्रेणियों के समर्थकों को समझाया कि वह तब तक राष्ट्रीय शक्ति और ऐक्य की प्राप्ति नहीं कर सकते जब तक वह प्रत्येक देशवासी के व्यक्तित्व को उसके अधिकार देने के लिये तयार न होंगे और जब तक वह प्रत्येक देश वासी के व्यक्तित्व के भाग्य को स्वयं अपना भाग्य न समझेंगे। उसने दोनों पक्षों को समझाया कि राष्ट्रीयता (Nationalism) और सामा-जिकता या समाजवाद (Socialism) एक दूसरे के विरोधी नहीं

है। किन्तु इन दोनों का अस्तित्व एक दूसरे के लिये अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार उसने दोनों विचार धाराओं को एक दार्शनिक सूत्र में बांध दिया। अब उसको तर्क द्वारा दोनों विचारों के प्रतिनिधियों को एक स्थान में एकत्रित कर राष्ट्रीय एकता का सम्पादन करना था। अतएव हिटलर के इस सबसे उत्तम कार्य का सदा वर्णन किया जावेगा कि उसने निर्धनों और मध्य श्रेणि वालों में पड़ी हुई खाइ के ऊपर पुल न बांधते हुए मार्क्सवाद और मध्य श्रेणिवाद को जोर से घुमा कर उनको उसी अनन्त गड्ढे में डाल कर उसको वहीं भर दिया। श्रेणियों और दलों का विनाशकारी युद्ध समाप्त हो गया और राष्ट्र की एकता तथा जनता का ऐक्य सम्पादन कर लिया गया।

पच्चीसवां अध्याय

नेशनल सोशिएलिस्टों की कार्यशैली

किन्तु इस समय सबसे कठोर और कठिन युद्ध आरम्भ हो गया। दल को क्रांति सम्बन्धी युद्धकार्य बन्द करके न्याययुक्त उपायों से आगे बढ़ना था। हिटलर अपनी सेनाओं का दोबारा सड़कों के युद्ध के स्तर के लिये फिर प्रदर्शन करना नहीं चाहता था। वह अपने अनुयाइयों और सशस्त्र सैनिकों में दोबारा मुठभेड़ को प्रोत्साहित करना नहीं चाहता था। वह जानता था कि सशस्त्र सेनाएं जहां तक उनका रीश के प्रतिनिधित्व से सम्बन्ध है, हृदय से उसके साथ थीं। वह स्वयं भी अधिकतर सैनिक ही था। वह इस छोटी सी जर्मन सेना से प्रेम करता था और उसके ऊपर राजभक्ति के ऐसे भयंकर विरोध का दबाव देना नहीं चाहता था। वह जानता था और यही उसने म्यूनिक में अपने मुकदमे में देवदूत के समान अपने बचाव के भाषण में कहा था कि एक

ऐसा दिन आवेगा जब रीश वाले और नेशनल सोशिएलिस्ट दोनों ही अपने देश की स्वतन्त्रता के लिये उसी दर्जे में एक साथ लड़े होंगे।' हिटलर युद्ध कार्य के इस परिवर्तन को लाने में सफल हो गया। यह ६ नवम्बर सन् १६२३ का ही दिन था, जिसने इसको संभव कर दिखलाया। क्योंकि अब उस पर क्रांति के कार्य के लिये कायर होने का दोष कोई नहीं लगा सकता था। लोग अब यह नहीं कह सकते थे कि वह बात ही कह सकता है, उसके अनुसार कार्य नहीं कर सकता। उसने सिद्ध कर दिया था कि वह कार्य भी कर सकता है। उसने स्वयं अपनी सेनाओं का नेतृत्व किया था। उसने तथा उसके आधीन अफसरों ने उस अवसर पर इस प्रकार का व्यवहार नहीं किया था जैसा कि मार्क्सवादी और साम्यवादी (Communist) नेताओं ने किया था, कि अपने अनुयाइयों को तो उन्होंने कच्ची मोर्चे बन्दी पर भेजा और स्वयं बुद्धिमानी से अपनी सम्पादकीय कुर्सियों और व्यापारिक सभों के दफ्तरों में डटे रहे और केवल स्याही बहाने में ही संतुष्ट रहे, जब कि उनके अनुयाइयों ने स्वयं अपना रक्त बहाया।

नेशनल सोशिएलिज्म के युद्ध का यथार्थ रूप

किन्तु न्यायपूर्ण संग्राम में इस युद्धकार्य के परिवर्तन का अभिप्राय क्रान्ति को छोड़ देना बिलकुल ही नहीं था। मार्क्सवादियों के शब्दकोष में क्रान्ति का अर्थ था दंगे, सड़कों की लड़ाई, दुकानों और मकानों की लूट, हत्या, घरों में आग लगाना, गड़बड़ी और बेतरतीबी। किन्तु नेशनल सोशिएलिस्टों

के लिये क्रान्ति किसी बड़े और शक्तिशाली कार्य का स्
है। उसका अभिप्राय है—पुराने और सड़े हुए को तोड़ कर फेंक
देना और प्रबल तथा नवयुवक नई सेनाओं को बीच में से आगे
बढ़ाना। यह लोग लगातार क्रान्ति करते गये। उनकी प्रत्येक
सभा, उनका प्रत्येक समाचार पत्र, और उनका प्रत्येक घोषणा
पत्र इसी ऊँचे प्रकार की क्रान्ति का था। क्योंकि उन्होंने जर्मनी
के विचारों में ही क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी। यह निर्वाचन में वोट
के वास्ते नहीं लड़े, वरन् प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा के लिये लड़े।
वह श्रमिकों, किसानों, दूकानदारों, विद्या की आजीविका वाले
और सभी विभागों, पेशों और सिद्धान्त वालों को फिर से
उच्च कोटि के उन्नत और जर्मन बनाना चाहते थे। उन्होंने
लाखों सभाओं में उत्तेजक व्याख्यान दिये, अपने श्रोताओं
के विचारों को परिचालित किया, और उनके हृदय पर
पर अंकित कर दिया कि वस्तुतत्त्व केवल एक है कि उनको
'जर्मन' बनना चाहिये और उनका कर्तव्य केवल एक
'जर्मनी' है।

नेशनल सोशिएलिज्म का निर्धनों में प्रचार

यह बड़ी २ भारी सभाएं किसी अनोखी बात की साधन
थीं। आरंभ में उन्होंने छोटी २ धुंधली सरायों में, या भोजन-
गृहों में या निर्धन व्यक्तियों के घरों में उन श्रमिकों के बीच में
सभाएं कीं, जिनके अंदर अधिक से अधिक घृणा भड़काई गई
थी। इस समय मार्क्सवादी और साम्यवादी दोनों ही प्रकार के

आन्दोलक उनके विरोधी थे। कई २ बार ऐसी सभाओं में भारी २ झगड़े हुई, जिनमें प्रायः बहुत से जख्मी हो जाते थे। नेशनल सोशियलिस्ट लोग कई २ बार बड़ी २ भद्दी तरह से धक्का दे २ कर बाहिर निकाल दिये गये। किन्तु इससे वह नवीन साहस के साथ बार २ वापिस आने से भी न चूके। उन्होंने बार २ लाल दल वालों के दुर्गों पर आक्रमण किया। इस सब का परिणाम यह हुआ कि उनके समर्थकों की संख्या बढ़ती ही गई। श्रमिकों को यह जाँच करने का अवसर मिल गया कि सत्य कहां है ? अपने विश्वास के अनुसार राष्ट्र का शुभकांक्षी कौन है तथा किन के नेता वीर और किनके कायर हैं ? अब सब प्रकार के सामाजिक कार्यों, वर्गों, आजीविकाओं और दलों वाले उनके पास आने लगे। बड़े से बड़े दल भी छोटे ही सिद्ध होते थे। इस आंदोलन के किसी बड़े नेता के भाषण का समाचार पाकर लोग घंटों पहिले से सड़कों तक में जमा हो जाया करते थे। और जब कभी सब से बड़ा नेता-हिटलर-भाषण करता था तो उनकी प्रसन्नता की सीमा न रहती थी। उनको अत्यन्त अधिक प्रसन्नता के साथ साथ सीटियों और गड़बड़ी का मुकाबला करना पड़ता था। अभूतपूर्व प्रेम के साथ २ अधिक से अधिक घृणा का भी अनुभव होता था। जहां एक ओर एकनिष्ठ भक्ति और आत्मबलिदान के अनेक उदाहरण मिलते थे वहां बड़े अहंकार तथा भौतिकवाद के भी कम उदाहरण नहीं थे। इस प्रकार पूर्ण विश्वास के साथ अपने सन्मुख स्पष्ट उद्देश्य लिये हुए वह लोग जनता के बीच में से

आगे बढ़े चले गये। यह लोग गैरकानूनी घोषित और बदनाम किये गये। मध्य श्रेणि वाले उनसे घृणा करते थे और उनको चिढ़ाते थे। समाचार पत्र, जो प्रायः यहूदियों के हाथ में थे उनके विरुद्ध अत्यन्त अवर्णनीय घृणा का प्रचार कर रहे थे।

सोशल डेमोक्रैटों और कम्यूनिस्टों से विरोध

यहूदी बहुत समय से उनके विरुद्ध युद्ध में लगे हुये थे। यह ही उनके सब विरोधियों को उनके विरुद्ध उकसाते रहते थे। कभी २ वह प्रतिक्रिया करने वाले राष्ट्रीय जर्मनों के पृष्ठपोषक के रूप में जान पड़ते थे और किसी समय वह कोमल और कपटी जान पड़ते थे, इसी लिये वह केन्द्रीय पार्टी (Centre Party) के अधिक कपटी सदस्य थे। फिर वह जनता के दल (Peoples Party) के शान्तिपूर्ण मध्य श्रेणि वाले बन जाते थे। किसी समय वह नेशनल सोशियलिस्टों की ओर मार्क्सवादी राजनीतिज्ञों के समान प्रसन्न मुख से देखते थे और फिर वह उनकी ओर निम्नश्रेणि के साम्यवादियों के समान घृणा पूर्ण ढग से देखते थे। मुख के पर्दे बदलते रहने पर भी उनकी अन्दर की आकृति सदा एक सी ही—असुरी और घूमने वाले यहूदियों की ही थी, जो सदा ही प्रत्येक सभ्य सपाय से विरुद्ध आन्दोलन करते हुए छिन्द्रान्वेषण करते रहते थे।

युद्ध अत्यंत क्रोध और कठोरता से चलाया गया था। सब ओर ही उनके आक्रमण की सामर्थ्य का पता लग चुका

था। रोमन कैथोलिक पादरी लोग उनके विरुद्ध युद्धमें स्वतन्त्र रूप से विचार करने वालों और नास्तिकों के साथ मिल गये थे। अधिकारी लोग भी लगातार छुपे २ आक्रमण करते जाते थे। वह लोग कानून विरोधी समझे जाते थे, और निम्न श्रेणि के मनुष्यों के पद पर गिरा दिये थे। उनको कोई अधिकार नहीं थे। तूफानी सेनाए और हिटलर के नवयुवक प्रत्येक साम्यवादी अत्याचारी के खुले शिकार थे। बड़े २ नगरों की सड़कों में रक्त बहने का भय हो गया था। उनके निर्धन से निर्धन घरों के आगन और पीछे के मार्गों में मारी लड़ाई की गई थी।

उनके शत्रुओं को सदा ही उनसे अधिक संख्या में होने की सुविधा होती थी। नेशनल सोशिएलिस्ट वीर पुरुषों को धोखे से आक्रमण करके मार डाला जाता था। अपने विचारों और देश के लिये आज्ञाकारी तूफानी सैनिकों के रूप में मारे जाने वाले प्राय जर्मन श्रमिक थे। सोशल डेमोक्रेटों और कम्यूनिस्टों का क्रोध यह देख कर और भी अधिक बढ़ गया कि नेशनल सोशिएलिस्ट आन्दोलन में उत्तम सभ्य पुरुष, अवसर प्राप्त अधिकारी, मूर्छित होने वाली स्त्रियां और बड़े २ नाम प्राप्त करने वाले मध्यम श्रेणि के व्यक्ति नहीं थे, वरन् तूफानी सेनाओं के ७० प्रतिशतक भाग में श्रमी, दस्तकारी करने वाले और विद्याव्यसनी थे। जन्म, धन, या सामाजिक वर्ग का बिना विचार किये नेशनल सोशिएलिस्ट अधिकारी

लोग श्रमिकों, किसानों, और अध्यापकों के साथ एक श्रेणि में खड़े होते थे। सब में वही पवित्र विचार भरा हुआ था और सभी अपने नेता के आज्ञाकारी अनुयायी थे। किन्तु अब अच्छे २ नवयुवक भी उनके झंडे के नीचे आते जाते थे। उनके पास आने वाले वृद्धों के हृदय भी नवयुवकों से कम नहीं थे। एक बार यह कहा गया था कि भविष्य उनके साथ होगा, क्योंकि नवयुवक उनके पक्ष में थे। किन्तु हिटलर कहता था कि "युवक हमारे पास इस वास्ते आते हैं कि भविष्य हमारे साथ होगा।" इस विचित्र समय से आगे का वर्णन करने में बहुत समय लगेगा। उन को अधिकारियों के दमन, कम्यूनिस्टों की रक्तमय विभीषिका और कायर मध्यश्रेणि वालों के सामाजिक बहिष्कार को सहन करना पड़ता था। किन्तु इस सबसे आन्दोलन अधिकाधिक जोर ही पकड़ता गया। अन्त में जब यह अनुभव कर लिया गया कि उनकी विजयी उन्नति केवल बाहिर से ही नहीं रुक सकती तो आन्दोलन को अन्दर से तोड़ने—उसकी शक्ति को कम करने का प्रयत्न किया गया। किन्तु यद्यपि कभी २ कोई व्यक्ति ग़लत रास्ते पर चल सकता है तो भी यह सभी प्रयत्न आज्ञापालन, प्रेम और विश्वास की कठिन दीवार से टकरा कर पूर्णतया विफल हो गये।

रीश के प्रथम निर्वाचन की सफलता

अब प्रथम निर्वाचन का समय आया और हिटलर ने रीश की पार्लमेंट में अपने बारह सदस्य भेजे। अब उनके सामने

केवल एक कार्य—सब कहीं प्रत्येक समय आक्रमण करना-अवशेष रह गया। तालाब की मछली में कांटे के समान बींधते हुए उन्होंने आनन्द करने वाले पार्लमेंट वालों की कुम्भकर्णी निद्रा को भंग कर दिया। युद्ध की प्रथम शङ्खध्वनि किसानों के उन वादविवादों में की गई, जो कभी गंभीरता से विचार न करते थे और सरल, स्पष्ट, मद्दा और खोखला भाषण करते थे। जिस समय एक नेशनल सोशियलिस्ट सदस्य प्रधान की मेज के पास आया तो दूसरे दल वालों ने बड़ी बेचैनी प्रगट की। इस मामले की बड़ी कड़वी आलोचना की गई। विरोध करने वालों पर कोड़े पड़ने के समान चारों ओर से बौछार पड़ने लगी और जनता ने नेशनल सोशिएलिस्टों का साथ दिया।

रीश के द्वितीय निर्वाचन में सफलता

उनके युद्धघोष 'जर्मनी! जाग!' ने भटकते हुओं को भी हिला दिया। दूसरे निर्वाचन में आश्चर्यजनक उन्नति हुई। रीशस्टाग के १२ सदस्यों से बढ़ कर उनकी संख्या यकायक १०७ हो गई। संसार ने इसको सांस रोक कर सुना। अब से लगा कर दूसरे राष्ट्रों ने भी इस नये आन्दोलन को महत्त्वपूर्ण गिनना आरम्भ कर दिया। अब कोई उनसे एक शब्द भी नहीं कह सकता था, उनको कोई साम्प्रदायिक या दीवाना नहीं बतला सकता था, और इस दृष्टि से मामला लगभग तय हो गया था। वास्तव में वह अवश्य ही दीवाने थे क्योंकि बिना दीवाना बने हुए कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। अपने धार्मिक दीवानों के बिना

आज ईसाइयत कहा होती ? वह अपनी जाति के लिये प्रेमपूर्ण श्वेतोष्ण दीवाने थे। वह अपने सिद्धान्तों को नष्ट करने वालों के प्रति घृणा में दीवाने भी थे। अपने नेता के सबसे बड़े सड़ाके और आज्ञाकारी सहायकों के रूप में उनके नाम बहुत प्रसिद्ध हो गये। अब वह अपने ? व्यक्तित्व को भूल गये। घर, जीवन, कुटुम्ब सभी उनके लिये बहुत कम महत्त्व के हो गये। अब से लगा कर वह पूरे तौर से अपने आन्दोलन अपनी जाति और अपने देश के थे। किन्तु उन सबके सन्मुख उनके नेता ऐडल्फ हिटलर का आदर्श उपस्थित था।

छब्बीसवां अध्याय

ब्रूनिंग की सरकार

जर्मनी के इतिहास में सन् १९३२ का वर्ष सदा ही सबसे बड़ा परिवर्तनशील समझा जावेगा, और वास्तव में ही यह वर्ष बहुत प्रभाव शाली घटनाओं, बड़े भारी झगड़ों और शक्तिशाली मत भेद का वर्ष था। जर्मनी इस समय सबसे अधिक पतित होचुका था। सब कहीं मामला ठंडा पड़ा हुआ था। पार्लमेंट और उसके दलों पर पड़ने वाला देवताओं का सत्यस्वरूप क्षीण प्रकाश दु:ख पूर्ण दिखलाई पड़ता था।

पार्टी के आदमी पीड़ित जनता के विरोधी स्वर से हड़बड़ाये जाकर अपनी पार्लमेंट की नींद से उठ बैठे थे। धोखा देने वाली राजनीतिक घटनाएं एक दूसरे के बाद शीघ्रता से हुईं। एक निर्वाचन के पश्चात् दूसरा हुआ। देश भर में सभाओं का तूमार बंध गया। एक ओर नेशनल सोशिएलिस्ट उत्साह के साथ आक-

मण करते हुए जनता को विचलित करके उत्साह की आग में भर रहे थे, दूसरी ओर कम्यूनिस्ट लोग भी उत्साह से आक्रमण करते हुए निराशा से विरोध कर रहे थे। मध्यम श्रेणि के साथ या काले सम्मिश्रण के दूसरे दल निराशा में अपनी रक्षा करने का प्रयत्न कर रहे थे। सरकार के आदमी भयभीत हो गये। किन्तु यह भली प्रकार प्रसिद्ध है कि भय मनुष्य को मूर्ख बना देता है, और यह सभी प्रमाणित हो गया। सरकार के एक निर्णय के बाद दूसरा होता रहा और उनमें से प्रत्येक अधिकाधिक मूर्खतापूर्ण होता गया। उन्होंने एक बार फिर विचार किया कि दमन के हास्य प्रयत्नों के द्वारा नेशनल सोशिएलिस्टों के लाखों मनुष्यों को पीछे हटाना सम्भव होगा। युद्ध के पर्व में सोशल डेमोक्रेट लोग हिटलर के विरुद्ध थे। किन्तु मध्य श्रेणि के राजनीतिज्ञ आगे २ थे। इस समय स्वतन्त्रता के आंदोलन के विरुद्ध लड़ने वालों में ब्रूनिंग और ग्रोएनर मुख्य थे।

ब्रूनिंग एक विद्वान् साधु था। वह संसार के सम्पर्क में नहीं था। किन्तु वह बेहद अभिमानी था। जेनेरल ग्रोएनर डेमोक्रैटिक और निर्बल था। नेशनल सोशिएलिज्म के प्रति घृणा में यह दोनों एक दूसरे से बढ़े हुए थे। दोनों ही असन्तुष्ट राजनीतिज्ञ थे, जिनकी छोटी २ इच्छाएँ भी पूर्ण नहीं हुई थीं। किन्तु उनको इसका कुछ पता नहीं था, कि जनता की क्या आवश्यकता थी। न वह उस शक्तिशाली नाटक के विषय में कुछ जानते थे जिसमें इन्होंने मुख्य पात्र का कार्य करने का विचार

किया था। उस समय सबसे अधिक लज्जाजनक अनैक्य का दृश्य दिखलाई देता था। किन्तु तो भी विध्यात्मक पक्ष में पार्टियों का चाहे जितना भी विरोध क्यों न किया गया हो, निषेधात्मक पक्ष में वह नेशनल सोशिएलिज्म के स्थिर कर देने वाले भय से दृढ़ता से एक बने हुए थे। वह पदाधिकारियों के वेतन अथवा कुत्तों पर कर बढाने के विषय में एक दूसरे से लड़ सकते थे। किन्तु जिस समय यह प्रश्न आया कि हिटलर को पद से पृथक् किया जावे तो वह सब बचाव के लिये एक हो गये। इस प्रकार इस राजनीतिक नाटक में बराबर दृश्य बदलते रहे। ब्रूनिंग के प्रथम मंत्रिमण्डल का पतन हुआ। किन्तु कुछ सप्ताह के पश्चात् कुछ थोड़े परिवर्तनों के साथ ब्रूनिंग का ही दूसरा मन्त्रिमण्डल फिर जर्मन जनता के सम्मुख उपस्थित किया गया। उन सभ्य व्यक्तियों में से कितनों ही ने जर्मन लोगों की गहरी निराशा के विषय में उस समय सन्देह किया था? जब ब्रूनिंग के मन्त्रिमण्डल ने त्याग पत्र दिया तो जनता को आशा हुई कि अन्त में अब उनका नेता हिटलर शासनाधिरूढ़ होगा। किन्तु आशा निराशा रूप में परिणत हो गई। तो भी कुछ सप्ताह समाप्त न होते ? ब्रूनिंग का जहाज अन्तिम रूप से डूब ही गया।

हिटलर के वाइस चैंसेलर बनाने की बातचीत

एक बार फिर आशा हुई। एक बार फिर राष्ट्रपति के प्रासाद, चैंसेलर के भवन और कैसरहाफ होटल के बीच हरकारे दौड़ने लगे। इस विषय में डाक्टर डीट्रिच की पुस्तक

'हिटलर के शासनाधिरूढ़ होने के विषय में' (With Hitler to Power) की ओर मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। (जिसमें बतलाया गया है कि इस विराट् राजनीतिक कशमकश में चैंसेलर का महल प्रतिषेधात्मक (Negative) खम्भा और कैसरहाफ विध्यात्मक (Positive) खम्भा था।) १३ अगस्त १६३२ को यह कशमकश समाप्त हो गई और उस चमक ने एक बार फिर लाखों अच्छे जर्मनों की आशाओं पर पानी फेर दिया। दुःख, कष्ट और लज्जा अभी समाप्त नहीं होने वाले थे। किन्तु इस बिजली की चमक के पश्चात् होने वाला पक्षपात सब पूर्ववर्ती कष्टों से भी अधिक शक्तिशाली था। नींव जड़ से हिल गई, और केवल ऐडल्फ हिटलर के लोह सम निश्चय और उसके बढ़ते हुये अधिकार ने उस राजनीतिक कशमकश को भयंकर युद्ध का तूफ़ान बनने से रोका। हिटलर का समय अभी नहीं आया जान पड़ता था। आज हम जानते हैं कि १३ अगस्त १६३२ का दिन तो आना ही था। आज हम इस १३ अगस्त के निश्चय के लिये परमात्मा को धन्यवाद भी देते हैं। क्योंकि यदि उस समय हिटलर ने दी हुई शर्तों को स्वीकार कर पैपेन मन्त्रिमण्डल में वापस चैंसेलर के रूप में प्रवेश कर लिया होता तो आज क्या होता ? उस समय हिटलर को वापस चैंसेलर बनाने के विचार से स्पष्ट ज्ञात पड़ता है कि उस समय की सरकार में मनोवैज्ञानिक समझ की कमी अवश्य थी। यह निमन्त्रण शुद्ध और खरा राजनीतिक स्वाग था।

नेशनल सोशिएलिस्टों का निषेध

हिटलर को कोई भी वस्तु दी जा सकती थी। उसकी योग्यता को ध्यान में रखने से उसको कोई भी पद दिया जा सकता था, किन्तु सभी स्थानों में केवल सबका सरताज बनाकर। हिटलर के नाम के सन्मुख 'वाइस या 'सहायक' शब्द लगाना बिल्कुल असमय था। इसको उसके सब अनुयाइयों ने अपना अपमान समझा। यह व्यक्ति जो सौभाग्यवश अकेला ही जर्मनी का उद्धार करने वाला था अब एक ऐसे प्रतिनिधि रूप पद को स्वीकार करता कि नित्य के अनुसार ही प्रतिदिन पार्लमेंट सम्बन्धी युद्ध किया करता और मध्यश्रेणी की सरकार के राजनीतिक उद्देश्यों की उसके प्रतिनिधि रूप में रक्षा करता। यह आवश्यक है कि मध्यश्रेणि की सरकार की जो हिटलर को उस समय वाइस चैंसेलर के रूप में अपने मंत्रीमंडल में लेने को तयार थी तत्कालीन इच्छाओं का अध्ययन किया जावे। इस कार्य से वह दो बातों को पाने की आशा रखते थे। प्रथम यह कि नेशनल सोशिएलिस्टों का खतरा देने वाला शक्तिशाली विरोध बंद हो जावे, दूसरा यह कि नेशनल सोशिएलिज्म की राजनीतिक शक्ति कम हो जावे, उसका घिरा हुआ बादल उतर जावे और वह धीरे २ पार्लमेंट की चक्की में पिसकर नष्ट हो जावे। हिटलर अपनी नीति पर बिना प्रभाव डाले ही प्रत्येक मध्यश्रेणि के मंत्रिमंडल की अयोग्यता और राजनीतिक निर्बलता के लिये उसका

और दमन का मुकाबला नहीं कर सकतीं। किन्तु नेता उनसे अधिक जानता था। उसको पता था कि तूफानी सेनाओं का दम सदा वही रहेगा, वह स्वयं नेता के समान ही दृढ़ चित्त और निर्भय बनी रहेंगी। वह तूफानी सेनाओं के विषय में अधिक जानता था और उसने यहा भी राजनीतिक शक्तियों की बाजी में ठीक ही किया। १३ अगस्त १६३२ के पश्चात् जब वह भीड़ में से अपनी मोटर पर चला तो उसको इस चिल्लाहट को सुनकर आश्चर्यजनक उत्साह और साहस मिला होगा कि 'अपने व्रत पर डटे रहो! नेता! अपने व्रत पर अटल रहो।' अपने गंभीर भावों से जनता ने परिस्थिति को ठीक समझा था। जनता अपने नेता को या तो सब या कुछ नहीं देना चाहती थी। और इस प्रकार सन् १६३२ ई० का युद्ध चलता रहा, बल्कि जहां तक हो सका अधिक उग्र रूप और कठिनता से ही चलता रहा। नेशनल सोशिलिस्टों ने चैंसेलर वान\पैपेन को चेतावनी दे दी थी और उसको समझा दिया था कि वह\व्यक्तिगत कारणों से नहीं, वरन् उस पद के लिये जिसको वह लेना चाहते थे उन पर आक्रमण करने के लिये विवश थे। उन्होंने उसको यह बार बार समझाया कि इसका केवल एक ही हल संभव है और वह है हिटलर को चैंसेलर बना देना। हिटलर का यह विचार करना बिलकुल ठीक था कि या तो चैंसेलर का स्थान लेना अथवा मंत्रीमंडल में एक भी नेशनल सोशिएलिस्ट सदस्य का न होना। किन्तु यह बात बिलकुल ही विचार के बाहिर थी कि मंत्री मंडल चाहे पूरे का

विल्यिम द्वितीय (क़ैसर) सन् १६१४ म प्रष्ठ ७७

गयी नेशनल सोशियलिस्टों का हो किन्तु चैंसेलर नेशनल सोशियलिस्ट न हो। नेशनल सोशियलिस्टों ने घोषणा कर दी थी कि जो कोईभी उनके और उनके इस उद्देश्य के बीच में पड़ेगा उस पर कठोरता से आक्रमण किया जावेगा। उन्होंने घोषणा कर दी थी कि जो कोई भी उनके विरुद्ध तलवार उठाने का विचार करेगा निर्दयता से एक ओर फेंक दिया जावेगा।

सत्ताईसवां अध्याय

पेपेन की सरकार

जेनेरल गोएरिंग का रीश को विसर्जित न होने देना

अंत में इस प्रकार पैपेन के विरुद्ध युद्ध आरम्भ हुआ। व्यक्तिगत विचार से नेशनल सोशियलिस्टों को उस पर दुःख था, क्योंकि उनके हृदय में उसके व्यक्तित्व और उसकी देशभक्ति के लिये श्रद्धा थी। किन्तु राजनीतिक रूप से यह युद्ध एक अनिवार्य आवश्यकता थी। रीशस्टाग की एक ही निर्णयात्मक बैठक में उनका तेज मुकाबला हुआ। यह प्रसिद्ध दृश्य उपस्थित हुआ जिसमें हर वॅान पैपन रीशस्टाग को विसर्जित करना चाहता था, किन्तु जेनेरल गोएरिंग ने इस रीशस्टाग के सभापति (स्पीकर) के रूप में उसको ऐसा करने से निषेध किया।

यह स्पष्ट रूप से तलवारों का खेल था अथवा घड़ी की सेकिंड की सुई के साथ दौड़ थी। किन्तु वास्तव में उस का यह अभिप्राय था कि नेशनल सोशियलिस्ट लोग अपने उद्देश्य पर

पहुँचने के लिये दृढचित्त थे। यह विशेष महत्त्वपूर्ण नहीं है कि जेनरल गोयरिंग को राष्ट्रपति की चिट्ठी कहां और किस प्रकार दी गई। महत्त्वपूर्ण यह है कि नेशनल सोशिएलिस्टों ने उसका अपनी पूर्ण शक्ति से विरोध किया। उनकी तुमुल हर्षध्वनि में पैपेन मंत्रीमंडल टूट गया और रीशस्टाग की बैठकें होतीं रहीं। जेनरल गोयरिंग जानता था कि पैपेन का बैठे हुए रहना केवल बहाना था, किन्तु यह भी कुछ महत्त्वपूर्ण नहीं था। यहां पर फिर भी निर्णयास्पद यही था कि झगड़ा तो हो ही गया, अब पार्लमेंट से खेल खेलना असभव था। यह बात जनता के सन्मुख भी स्पष्ट रूप से प्रदर्शित कर दी गई। कुछ मास के पश्चात् ही—जैसा की पहिले ही अनुमान किया गया था—पैपेन का पतन हुआ। यह था भी अवश्यंभावी, क्योंकि एक तो नेशनल सोशिएलिस्ट आंदोलन की पूरी शक्ति उसके विरुद्ध थी, दूसरे रक्षा मंत्री श्लीचर स्पष्ट रूप से उसके पक्ष में था। क्योंकि कोई भी चैंसेलर, जिसके पक्ष में हर बात श्लीचर होता था शीघ्र या देर से श्लीचर की नौका विध्वंसक नीति द्वारा डूब जाता था। उस समय राजनीतिक क्षेत्रों में एक यह हास्य किया गया कि जेनेरल श्लीचर को वास्तव में ऐडमीरल (जहाजी सेना का प्रधान सेनापति) बना देना चाहिये। क्योंकि उसमें अपने राजनीतिक मित्रों को पानी के अंदर गोली मार देने की असाधारण सैनिक योग्यता है।

सरकार के परिवर्तन का एक और दृश्य

एक बार फिर जनता के सन्मुख सरकार का परिवर्तनकारी दृश्य आया और एक बार फिर मतभेद स्वरूप विरोध हुआ।

एक बार फिर कैसरहाफ और विल्हेल्मस्ट्रासी के इधर उधर मुड़ सा होता जान पड़ने लगा। हिटलर चैंसेलर होगा अथवा नहीं! एक बार फिर उन शक्तियों को साथ २ दौड़ते देखा गया जो हिटलर के चैंसेलर बना दिये जाने के भय के कारण बिना जाने ही एक हो गयी थीं। अभिलाषी जेनेरल वॉन श्लीचर अन्त में अपने राजनीतिक जीवन के उद्देश्य 'एक ही साथ चैंसेलर और रक्षा मंत्री पद' पर पहुँचा हुआ दिखलाई देता था। उससे अगला पद केवल डिक्टेटरी और उसकी अपनी अनियंत्रित शक्ति ही था। अब जेनेरल के पर्दे में रहकर सदा तार नहीं खींचा जा सकता था। अब उसको राजनीतिक रंग मंच पर प्रधान अभिनेता के रूप में प्रकाशन के चकाचौंध करने वाले तेज प्रकाश के सन्मुख खड़ा होना था। किन्तु यहां वह मुकाबला करने वाली असंख्य शक्तियों के द्वारा धक्का दे दिया गया। यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि वह इस स्थान के किसी प्रकार योग्य नहीं था। वह सम्भवत अपने को बड़ा चतुर राजनीतिज्ञ समझता था किन्तु वह जनता के भावों को तनिक भी नहीं समझा। महायुद्ध के बाद के अन्य नेताओं और हिटलर में यही अंतर था। वह सब के सब अपने दल, अपने दलों और अपनी समितियों को अच्छी तरह जानते थे किन्तु वह सभी जनता की थोड़ी बहुत उपेक्षा भी अवश्य करते थे, जनता का तो वह विचार ही नहीं करते थे। इसके विरुद्ध, केवल हिटलर ही अपने आदमियों के अंदर अपने दोनों पैरों से खड़ा होने वाला था, अतएव इस जनता का प्रतिनिधि बनने योग्य केवल वह था।

अठाईसवां अध्याय

श्लीचर की सरकार

यह बात अच्छी तरह कही जा सकती है कि महायुद्ध में बाद की सभी चैंसेलरियों में श्लीचर की चैंसेलरी बड़ी करुणापूर्ण रही। श्लीचर को अपना अधिकार बनाये रखने की आशा थी। उसको एक के विरुद्ध दूसरे को उभार के और प्रत्येक दल को अधिक से अधिक वचन देकर, किन्तु किसी वचन को पूरा न कर, शासन करने योग्य होने की आशा थी। इस व्यक्ति की राजनीतिक बुद्धि के दिवालियेपन का इसी से पता चल जाता है कि उसको पूरी तौर से टूटे हुए मार्क्सवादी संगठनों से अब भी पूरी सहायता पाने की बड़ी आशा थी। उसका नेशनल सोशियलिस्ट पार्टी को अन्दर से तोड़ देने और उसके कुछ सहायक नेताओं को हिटलर को पराजित करने के लिये घूस

द्वारा मिलाने का विचार भी उसी राजनीतिक बुद्धि के दिवालियेपन का प्रमाण है।

स्ट्रैसर की चालाकी

स्ट्रैसर आन्दोलन में अभी तक के व्यक्तियों में सब से अधिक शक्तिशालियों में से एक था। उसने हिटलर के विरुद्ध श्लीचर के साथ काम किया। उसने उद्देश्य से ५ मिनट की दूरी पर ही हिटलर पर पीछे से आक्रमण किया। हिटलर जिस समय इस कठिन युद्ध में लड़ रहा था और चैंसेलरी मांगने के वास्ते अपनी प्रबल इच्छा और पूर्ण निश्चय के साथ युद्ध कर रहा था, तो स्ट्रैसर हिटलर के पीठ पीछे ही श्लीचर के साथ मंत्रीमंडल में स्थान पाने के लिए बातचीत कर रहा था। हिटलर पर दबाव डाल कर उसको झुकने के लिये विवश करने को स्ट्रैसर ही पार्टी के दूसरे अफसरों को अपने पक्ष में मिलाने का उद्योग कर रहा था। इन सभ्य व्यक्तियों ने बड़े सुन्दर ढंग पर सोचसाच कर निश्चय किया था कि—श्लीचर चैंसेलर और रक्षा मंत्री होगा तथा स्ट्रैसर प्रशा का प्रधान मंत्री और वाइस चैंसेलर होगा। हिटलर की सारी शक्ति छीन कर उसको पेन्शन दी जाने वाली थी।

हिटलर ने अपने सब साथियों से किसी प्रकार का स्वतंत्र वार्तालाप करने से कठोरता से निषेध किया हुआ था। जेनरल गोयरिंग उस समय उसका बर्लिन में राजनीतिक प्रतिनिधि था। उसको प्रतिदिन बड़े अच्छे ढंग से पहिले से ही ठीक की हुई

ग्नाए मिला करती थीं। इस प्रकार बातचीत में भी हिटलर
गडोर सदा अपने हाथ में मजबूती से थामे रहता था। स्ट्रैसर
इस निषेधाज्ञा को पार करके नेशनल सोशियलिस्ट पार्टी
ठोस रचना में आग लगाने का प्रयत्न किया। संगठन में
येक बात क्षमा करदी जाती थी, किन्तु नेता के साथ विश्वासघात
क्षमा नहीं थी। उसमें आज्ञोल्लङ्घन, अविनयानुशासन
ndiscipline) और धोखादेही के लिये कभी क्षमा नहीं मिलती
। जिस समय श्लीचर और स्ट्रैसर के कार्य का पता लगा,
में क्रोध का स्वर गूंज उठा। दूसरे नेता, अनुयायी, और
र्थक इस समय अपने को पहिले की अपेक्षा भी अधिक दृढ़ता
ा बंधन में समझते थे। इस समय उन लोगों ने पहिले से भी
येक अंधभक्ति के साथ उसके कठिन विनयानुशासन पर चलने
र उसकी आज्ञा मानने का निश्चय किया।

श्लीचर के विरुद्ध आन्दोलन

बातचीत बंद कर दी गई। श्लीचर चैंसेलर बना रहा,
: उसके विरुद्ध उसी प्रकार उत्साह पूर्ण युद्ध आरम्भ कर दिया
, जिस प्रकार पैपेन के विरुद्ध किया गया था। श्लीचर ने
ोलन तोड़ने के लिये उसमें नेता के प्रति अविश्वास उत्पन्न
े का उद्योग किया। किन्तु वह मेज पर किसी के साथ ताश
न का काम नहीं था। तीसरी दफा भी जर्मन जाति की बचने
आशा नष्ट हो गई। यह कठिनता से विचार होता था कि
मारी विरोध बिना भङ्ग के हुए ही समाप्त हो जावेगा। विशेषज्ञों

ने घोषणा की कि आन्दोलन अब एकदम निर्बल हो गया है। पार्टी तीसरी बार की निराशा के सम्मुख खड़ी नहीं हो सकती और उसके समर्थक कम होने लगे हैं। हिटलर से फिर दल को छोड़ देने का अनुरोध किया गया। किन्तु इस समय भी उसको सब से अधिक मजबूत रहने का निर्णय करना पड़ा। हिटलर अपने निश्चय पर दृढ़ रहा। भीड़ के सब शोर शराबे के ऊपर उसको अपना उद्देश्य अपने सम्मुख स्पष्ट चमकता हुआ दिखलाई दे रहा था। उसने देखा कि उसका समय अधिक दूर नहीं था। जर्मन लोग आज इस बात को जानते हैं कि उनके भाग्य को धन्यवाद देना चाहिये कि हिटलर उन नवम्बर और दिसम्बर के दिनों में चैंसेलर नहीं बना। क्योंकि उस समय की परिस्थिति के अनुसार वह जेनेरल वॉन श्लीचर को रक्षामन्त्री बनाता और मेगर स्ट्रैसर को जिसकी धोखादेही का उस समय किसी को पता नहीं था आभ्यन्तर कार्य का मंत्री बनाया जाता। इस प्रकार शक्ति के दोनों ही महत्त्वपूर्ण साधन ऐसे व्यक्तियों के हाथ में होते, जिनके हृदय में हिटलर के लिये कोई सहानुभूति नहीं थी और जो सफल बनाने की अपेक्षा उसको गिरते हुये देखना अधिक पसन्द करते। आरम्भ से ही यह मन्त्रिमण्डल एक ही प्रकार का न होता, अतएव एक होकर काम करना किसी प्रकार सम्भव नहीं था। जिसके परिणाम स्वरूप आवश्यक रूप से काफी झगड़े होते और कौन कह सकता है कि उसका क्या परिणाम होता ?

अतएव यह लालच भी निष्फल गया। किन्तु निष्फल यह भी केवल हिटलर के दृढ़ निश्चय और आश्चर्यजनक राजनीतिक बुद्धि से। आक्रमण चलते रहे। अब सभाओं और चुनाव के युद्धों में लोग पहिले से भी अधिक उत्साह से भाग लेने लगे। सरकार पर और भी तेजी से आक्रमण किये गये और कई २ बार वह और उनके दल के सहायक कोनों में भगा दिये गये।

श्लीचर की यथार्थ स्थिति

जनता यह अधिकाधिक अनुभव करती गई, और वृद्ध फील्डमार्शल हिंडेनबर्ग (राष्ट्रपति) भी यह अनुभव करने लगे कि श्लीचर की सरकार अयोग्य है और उसका टिकना सम्भव नहीं है। साथ ही राष्ट्रपति को उस ढंग से घृणा हो गई थी, जिससे श्लीचर ने पैपेन का पतन किया था और जिस प्रकार वह अब शासन कर रहा था। किन्तु श्लीचर की एकमात्र राजनीतिक सहायता राष्ट्रपति का विश्वास था। वह केवल राष्ट्रपति के विश्वास से ही अपना कार्य कर सका था। उसको अपने राजनीतिक युद्धों में युद्ध करने के लिये बारबार फील्ड-मार्शल के अधिकार को उधार लेने के लिये विवश होना पड़ा। नेशनल सोशियलिस्ट लोग इस बात को जानते थे कि यदि वह केवल राष्ट्रपति को कुछ अधिक यथार्थ स्थिति बतला सकें और यदि तब वह अपने विश्वास को हटा ले तो श्लीचर समाप्त हो जावेगा। जनता या सेना में एक भी व्यक्ति उसके वास्ते युद्ध करने को तयार न होगा।

राजनीतिक दलों की निराशा

ऐसे २ राजनीतिक भावों की गड़बड़ियों में सन् १६३२ समाप्त हो गया, जैसी जर्मन लोगों को कभी आशा नहीं थी। यह रुकावट सहन करने योग्य नहीं थी। झगड़ों का अधिक से अधिक भयंकर भय भी बना हुआ था। क्योंकि सर्दियों का सब से कठिन भाग अभी आने ही वाला था। सन १६३२ की समाप्ति के पश्चात् जर्मनी कष्ट सहन करने की सीमा पर पहुंच गया था। जर्मन लोगों की परीक्षा का समय असंख्य कष्टों की विशेषता से भरा हुआ है। यह आशा थी कि नवीन वर्ष का आरम्भ या तो पतन अथवा सफलता लावेगा। सभी दल, सभी मुख्य राजनीतिज्ञ, सभी वर्ग और सभाएं थक गई थीं। एक ने तो अपनी घुड़साल से अंतिम और सब से अच्छे २ घोड़ों को निकाल कर भगा दिया। यह सभी तितर बितर हो गये। मनुष्य और दल सभी असफल हुए।

उनतीसवां अध्याय

हिटलर की विजय

३० जनवरी सन् १६३३ ई०

जेनेरल गोएरिंग का रीश के नेताओं से परामर्श

इस प्रकार सन् १६३३ ई० का जनवरी आरम्भ हुआ। संभवत यह महीना जर्मन इतिहास में बहुत समय तक स्मरणीय गिना जावेगा। इस माह के मध्य से ही यह स्पष्ट हो गया था कि अंतिम निर्णय होने ही वाला है। सब ओर गरमागरम कार्यवाही होने लगी थी। २० जनवरी से जेनेरल गोएरिंग राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में बराबर हर वॉन पैपेन, सेक्रेटरी आफ स्टेट मीसनर, फौलादी टोप वालों (Steel Helmets) के नेता सेल्डटे और जर्मन नेशनैलिस्टों के नेता हुगेनबर्ग से भावी कार्यक्रम के सम्बंध में वादविवाद करता रहा। यह स्पष्ट था कि उनके उद्देश्य की प्राप्ति तभी संभव थी जब पेडलक हिटलर के

एक मात्र नेतृत्व में नेशनल सोशलिस्टों का मेल अन्य सर्व अवशिष्ट राजनीतिक शक्तियों के साथ हो। अब यह देखने में आया कि हार वॉन पैपेन, जिसके विरुद्ध नेशनल सोशियलिस्ट लोग राजनीतिक कारणों से युद्ध करने को बाध्य हुए थे, अब यह अनुभव कर रहा था कि यह कितना क्षणिक अवसर था। वह सच्चे प्रेम के साथ उनका मित्र बन गया और वृद्ध फील्ड-मार्शल और महायुद्ध के नवयुवक लैंस कारपोरल के बीच में ईमानदार बिचवैया (संधिदूत) बन गया।

सेल्डटे का त्याग

बिना किसी हिचकिचाहट के सेल्डटे ने फौलादी टोप वालों को नेशनल सोशिएलिस्टों में मिला दिया और अपना स्थान अत्यंत दृढ़ भक्ति पूर्वक ऐडल्फ हिटलर के पीछे ग्रहण किया। जर्मन नेशनैलिस्टों के साथ समझौता करना अधिक कठिन था। क्योंकि दलबन्दी के पुराने ढंग इनमें अधिक दृढ़ता से घर किये हुए थे। यह स्पष्ट था और प्रथम सप्ताह में जेनेरल गोरिंग ने कई बार हुगेनबर्ग से कहा था कि अब इस बात की बड़ी भारी आवश्यकता है कि जर्मन नेशनैलिस्ट पार्टी को विसर्जित कर दिया जावे, जिससे वह नेशनल सोशिएलिज्म की बाढ़ में नहीं बह जावे।

भिन्न २ दलों का मतभेद

किन्तु उस समय तो कोई समझौता करना ही था, अन्यथा सब बना बनाया काम बिगड़ जाता। राष्ट्रपति ऐडल्फ हिटलर को

यदि उससे सब दलों की एकता का विश्वास किया जा सके तो नियुक्त करने पर सहमत थे। समझौता होने में कठिनता यह थी कि एक ओर तो नेशनल सोशिएलिस्ट थे, जिनकी संख्या और शक्ति सब दलों से अधिक थी, और दूसरी ओर मध्यम श्रेणि वालों का दल था, जो अपने पार्लमेंट सम्बन्धी अतीत के कारण अपने अनुपात, विस्तार या महत्त्व से भी अधिक शक्ति चाहता था। बड़ी भारी कठिनाई यह थी कि ऐडल्फ हिटलर की यह मांग थी कि मंत्री मंडल के निर्माण के ठीक बाद एक सार्वजनिक निर्वाचन हो। इसके विरुद्ध जर्मन नेशनैलिस्ट लोग इस विचार के विरुद्ध थे। उन्होंने इस बात को ठीक २ देख लिया था कि इतिहास का चक्र उनके ऊपर से लौट जावेगा और यह जानते थे कि नवीन निर्वाचन से नेशनल सोशिएलिज्म की प्रबल सेनाएं दुगुनी या तिगुनी हो जावेंगी। उस समय विशेष रूप से सब की शक्ति अपने २ अनुपात के अनुसार होगी। किन्तु अंत में समझौता हो ही गया।

सफलता की आशा

शनिवार २८ जनवरी १९३३ को जेनेरल गोपरिंग ने हिटलर को यह समाचार दिया कि आवश्यक बातों का काम समाप्त हो गया है और अब यह कहना चाहिये कि उसकी नियुक्ति हो गई। किन्तु इससे पूर्व उनको ऐसी २ भारी निराशाओं का सामना करना पड़ा था कि उनको इस बात को किसी से भी-अपने निकट से निकट मित्रों से भी—कहने का साहस न हुआ। अतएव

ऐसा हुआ कि ऐडल्फ हिटलर की नियुक्ति ने जो ३० जनव
१९३३ को हुई थी, केवल समस्त जनता को ही नहीं, वरन् उस
पूरे दल को भी आश्चर्य में डाल दिया। २९ तारीख से लगभ
३० तारीख की रात तक पिछले मंत्रीमंडल ने सभी प्रकार
बाधाएं डालीं। एक क्षण के लिये तो लगभग यह जान पड़ता
कि श्लीचर बिना युद्ध किये न हटेगा। किन्तु वह पहिले
अत्यंत निराशा पूर्ण ढंग से युद्ध हार गया। प्रत्येक बात निश्चि
हो गई।

हिटलर का चैंसेलर बनना

सोमवार, ३० जनवरी को ११ बजे प्रातःकाल राष्ट्रपति
ऐडल्फ हिटलर को चैंसेलर नियुक्त किया। और उसके स
मिनट बाद मंत्रीमंडल बन गया और मंत्रियों ने शपथ ली
पहिले मंत्रीमंडल बनने में कई ? सप्ताह और कभी २ तो कई
माह लगा करते थे; किन्तु इस बार प्रत्येक बात पांच घंटे
अंदर ? तय हो गई। वृद्ध फील्ड मार्शल के इन शब्दों के स
'और अब सभ्य पुरुषों, परमात्मा को साथ लेकर अपना का
आरंभ करो! मंत्रीमंडल ने अपना कार्य आरम्भ किया। जेनर
गोएरिंग उस अवसर के विषय में अपनी पुस्तक में लिखते हैं'

"मैं हिटलर के प्रतिनिधि रूप में गत वर्षों में कई २
कैसरहाफ और विल्हेल्मस्ट्रासी में जा चुका था। मैं उस क्षण
कभी नहीं भूलूंगा जब मैं शीघ्रता से अपनी मोटर पर आ
सबसे प्रथम प्रतीक्षा करने वाली भीड़ से कह सका—'हिटल

चँसेलर हो गया।' पहिली पहल सन्नाटा छा गया, और तब भीड़ अत्यंत शीघ्रता से तितर बितर हो गइ। बच्चे, बड़े और स्त्रिया तक इस शुभ सम्वाद को सुनाते हुए दौड़ते दिखलाई देते थे कि जर्मनी बच गया। जब हम कैसरहाफ के कमरे में एक साथ फिर एकत्रित हुए तो मैं उस समय के भावों का वर्णन नहीं कर सकता। अब में कितने आश्चर्यजनक रूप से हमारा भाग्य बदल गया और कितने आश्चर्यजनक रूप से वृद्ध फील्ड मार्शल परमात्मा के कार्य में साधन बन गये। १३ अगस्त १९३२ को और गत वर्ष नवबर में उसने हिटलर को नियुक्त करने से निषेध कर दिया था। किंतु अब ठीक और इस निर्णयात्मक क्षण में उसने उसको नियुक्त कर दिया।

" मन्त्रीमंडल की प्रथम बैठक का समय मध्यान्होत्तर पांच बजे निश्चित किया गया। जिस समय हिटलर ने चँसेलर रूप में सबसे प्रथम आश्चर्यजनक शब्दों में सबको सम्बोधित किया और हमारे उद्देश्य और सामने के कार्य को बतलाया तो हम भावों के उद्रेक में भर गये।"

जर्मन जनता का हर्षोद्रेक

किन्तु बाहिर राजधानी की सड़कों में, जर्मनी के सभी नगरों और गावों मे घटियां बज रही थी। मनुष्य हर्ष मना रहे थे, एक दूसर से आलिंगन कर रहे थे और बड़े भारी उत्साह के उद्वेग में प्रसन्न थे। सब कहीं गाते हुए दल सड़कों में से निकल रहे थ।

करने का कानून पास किया गया। इस कानून से जेनेरल गार्फ को अधिकार मिल गया कि वह उन सब अफसरों को पृथक् कर सके, जिनका ढंग या आचरण यह सिद्ध करता हो कि वह नये राज्य के निर्माण की सहायता करने में उपयोगी होंगे। किन्तु इससे उसको यह भी अधिकार मिला कि वह नौकरशाही को यहूदियों के द्वारा प्राप्त किये हुये भारी प्रभाव से भी मुक्त करे।

जेनरल गोएरिंग पृष्ठ २०२, २३७, १४

तीसवां अध्याय

जेनेरल गोएरिंग का कार्य

हिटलर ने जेनेरल गोएरिंग को नये मंत्रिमण्डल का एक सदस्य नियुक्त किया था। अपनी नियुक्ति से पूर्व भी वह पहिले से जर्मन रीश स्टाग का स्वीकार (प्रधान) था। उसका यही पद रहने दिया गया। किन्तु हिटलर ने उसको प्रशा का आन्तरिक मंत्री सब से अधिक इस वास्ते बनाया कि वह रीश के इस बड़े राज्य में साम्यवाद (कम्यूनिज्म) को उखाड़ फेंके और नष्ट कर दे। हिटलर चाहता था कि जेनेरल गोएरिंग इस विनाशकारी राजद्रोही दल का समूलोच्छेद करदे और राज्य के अफसरों में वर्तमान मार्क्सवादी-मध्यम श्रेणि दल के भद्दे विचारों के स्थान में उनके हृदयों में नेशनल सोशिएलिज्म के पवित्र सिद्धान्त भरे। उस समय प्रशा में सोशल डेमोक्रैट ब्रौन की अध्यक्षता में मार्क्सवादी सरकार का अधिकार था। किन्तु पिछली १९ जन

को इस सरकार को वान पैपेन ने पदच्युत कर दिया था। अतएव इसको कोई अधिकार नहीं था। तो भी यह अभी तक अभिमान और निर्भयता से अपने आपको प्रशा की 'प्रमुख (Sovereign) सरकार' कहती थी, और अपने अस्तित्व के पूर्ण बेहूदेपन के अधिकार की अंत तक घोषणा करती रही।

इस प्रकार जेनेरल गोयरिंग प्रशा के आभ्यन्तर कार्य का कमिश्नर और साथ ही साथ रीश का मन्त्री हो गया। उसके सामने बड़ाभारी काम था। प्रशा के आभ्यन्तर कार्य का मंत्रित्व रीश और राज्य के मंत्रियों में सब से अधिक शक्तिशाली रहा है। सेवेरिंग और गुर्ज़ेसिस्की ने अपनी राजनीतिक चालें यहीं से चली थी। यहीं से उन्होंने नेशनल सोशियलिस्टों के विरुद्ध विभीषकामय कार्य किये थे। इसी कारण जब यह मंत्रिपद उसी आन्दोलन के एक पुराने वीर के हाथों में दिया गया तो प्रत्येक नेशनल सोशियलिस्ट और सब से अधिक तूफ़ानी सेना के सामान्य सैनिक भी इस बात से विशेष प्रसन्न हुए और उन्होंने अभिमान से सिर ऊंचा किया, क्योंकि इसी पद से उनको कष्ट दिये गये और उन पर अत्याचार किये गये थे। इसी पद से उनको दमन करने की सब आज्ञाएं जारी की गई थीं। इसी पद से स्वतन्त्रता के लिये युद्ध करने वालों को पाशविक दुःख देने की आज्ञाएं दी गई थीं। अब १ फर्वरी सन् १९३३ को कई सहस्र व्यक्तियों के कानों को बहिरा करने वाली हर्षध्वनि में मुख्य झंडे के थांभ पर स्वस्तिक झंडा फहराया

गया। उस समय पुलिस, गार्ड आफ आनर, गार्ड और फौलादी टोप वाले सैनिक उपस्थित थ और बाजे मे प्रशा के उत्सव का 'मार्च' बज रहा था।

(क) पुलिस का पुन' सगठन

जेनेरल गोयरिंग ने बड़ा भारी उत्तरदायित्व ले लिया था। उसके सामने कार्य का बड़ा भारी विस्तृत क्षेत्र पड़ा हुआ था। यह स्पष्ट था कि उसको तत्कालीन शासन पद्धति से बहुत कम काम लेना चाहिये था। उसे बड़े २ परिवर्तन करने थे। आरम्भ करने के लिये उसे सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह जान पड़ा कि फौजदारी (Criminal) और राजनीतिक (Political) पुलिस के शस्त्र को दृढता से स्वयं अपने हाथ में ले। यहीं पर उसने कई एक व्यक्तिगत महत्वपूर्ण परिवर्तन किये। ३२ पुलिस अफसरों में से उसने २२ को पृथक् कर दिया। अगले महीने में उसने सैकड़ों इंस्पेक्टरों और सहस्रों पुलिस सार्जेंटों को पृथक किया। और नये व्यक्तियों को भर्ती किया। प्रत्येक दशा में यह व्यक्ति नेशनल सोशियलिस्टों के बड़े भारी सरक्षित व्यक्ति कोष, तूफानी सेनाओं और गार्ड में से लिये गये। जेनेरल गोयरिंग का कार्य पुलिस में बिल्कुल ही नयी आत्मा भर देना था। पहिले पुलिस के पद को घटा कर उनसे कोड़े लगवाने तक का कार्य लिया जाता था। कुछ तो इस कारण कि उनको प्रजातन्त्र के शत्रुओं को कष्ट देने के लिये विवश किया जाता था और कुछ इस कारण कि उत्तरदायित्व सदा ही छोटे २ अफसरों पर बदल दिया जाता था—नेता लोग

अपने भावहर्तों के वास्ते लड़ने के लिये अत्यत भीरु हो गये थे। किन्तु अब यह सभी बदला जाने वाला था, अधिकार ठीक स्थान में ही रहना था। कुछ सप्ताह के पश्चात् ही यह देखने में आया कि पुलिस का रूप ही बदल गया, और यह किस प्रकार दृढ़चित्त और आत्मविश्वासी बन गये। किस प्रकार कठोर अफसर धीरे २ कीमती अफ़सर और पुलिस सार्जेंट बन गये। उनको किसी प्रकार की सैनिक शिक्षा नहीं दी जाती थी किन्तु तो भी उनमें पैतृक सैनिक गुण थे। उनसे कर्तव्य के प्रति भक्ति, राजभक्ति और आज्ञापालन की मांग की गई कि वह बिना किसी विचार के नेशनल सोशिएलिस्ट राज्य और नये जर्मनी की सेवा करने की प्रतिज्ञा करें। नवयुवक और उन अनुभवी अफसरों को जो गतवर्षों में प्रजातन्त्र के द्वारा नहीं दब थे ऊँचे पद देकर उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य दिये गये। पुलिस डिविज़न वेके नाम की एक विशेष टुकड़ी को चुनकर उसको पुलिस के लिए स्वीकृत सभी शस्त्रों से युक्त करके नयी पुलिस फोर्स का अग्र भाग (Vanguard) बनाया गया। इससे दूसरी टुकड़ियों की इच्छा भी जागृत हुई। उन्होंने यह प्रमाणित करने का उद्योग किया कि यह भी उन निर्वाचित व्यक्तियों से जैसे ही अच्छे और योग्य बन सकते हैं। इस नवजागृत अभिमान के भाव के साथ चिन्ह स्वरूप जेनेरल गोएरिंग न सभी अफसरों, इंस्पेक्टरों और बाद में सभी दूसरे पुलिस अफसरों को डंडा रखने से निषेध कर दिया। एक अफसर के रूप में यह गोएरिंग के भावों क

मतलब नहीं था कि पुलिस इधर उधर भागती रहे और जनता पर डंडे चलावे। एक पुलिस अफसर को केवल अत्यंत आवश्यकता होने पर ही शक्ति से काम लेना चाहिये और वह भी ऐसे समय जब जीवन या मरण का प्रश्न उपस्थित हो। यहां तक कि ऐसे समय तो उसको राज्य और जनता की रक्षा करने के लिये रिवाल्वर निकाल कर गोली चलानी चाहिये। किन्तु उस समय तक परिस्थिति इस प्रकार की हो गई थी कि यदि कोई पुलिस वाला आत्मरक्षा में भी रिवाल्वर चलाता था तो उसके विरुद्ध फौजदारी मुकदमा चलाया जाता था, जिसके परिणाम स्वरूप उसको कष्ट उठाना पड़ता था और दण्ड दिया जाता था। इसी कारण पुलिस को उस समय वीरतापूर्ण और निश्चित ढंग पर कार्य करने का साहस नहीं होता था। वह केवल उन डंडों से ही अपना क्रोध उतार सकते थे जिनका वह सुगमता से उपयोग कर सकते थे। सेवेरिंग के अधिकार की पुलिस इस बात को पूर्णतया जानती थी कि हिटलर के आदमी निःशस्त्र हैं और उन पर गोली नहीं चला सकते, अतएव वह केवल डंडों से चोट करने का साहस करते थे। किन्तु साम्यवादियों (कम्यूनिस्ट) के विरुद्ध वह बिल्कुल ही दूसरे प्रकार से पेश आये। वह जानते थे कि साम्यवादी लोग उन पर रिवाल्वर से गोली चला सकते थे। इस बात का उनको भली प्रकार अनुभव हो चुका था तथा अफसरों और सिपाहियों पर प्रायः गोली चलाई जा चुकी थी। किन्तु सरकार के द्वारा उनकी रक्षा करने का कोई उद्योग नहीं किया गया।

हर सेवेरिंग के 'राजनीतिक बच्चे' साम्यवादियों की उनसे सहानुभूति रखने वाले लाल व्यक्ति अंत में सदा ही रक्षा कर लिया करते थे। अब प्रत्येक बात समूल परिवर्तित कर दी गई। जेनेरल गोयरिंग ने इस बात की कठोर आज्ञाएं निकालीं कि पुलिस को अपनी सारी शक्ति विनाशकारी कार्यों को पूर्णतया नष्ट करने में लगानी चाहिये। डार्टमंड की एक सबसे बड़ी सभा में उसने घोषणा की कि "भविष्य में प्रशा में उत्तरदायित्व केवल एक व्यक्ति के हाथ में ही रहेगा। वह व्यक्ति स्वयं मैं हूं गा। जो कोई भी राज्य के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करेगा, जो कोई मेरी आज्ञा का पालन करेगा और राज्य के शत्रुओं के साथ कठोरता करेगा, और जो कोई भी आक्रमण किये जाने पर अपने रिवाल्वर का प्रयोग करेगा उसको अपनी रक्षा का विश्वास रखना चाहिये। किन्तु जो कोई भी कायरता करेगा और युद्ध को बचा कर दूसरे प्रकार का कार्य करेगा, अथवा जो कोई अपने शस्त्रों का प्रयोग करने में हिचकिचाहट करेगा, उसको यथा शक्ति शीघ्र पदच्युत कर दिया जावेगा।' उसने अपने सहस्रों देशवासियों के सन्मुख घोषणा की कि "पुलिस की पिस्तौल से चली हुई प्रत्येक गोली मेरी गोली होगी। यदि तुम उसको हत्या कहोगे तो मैं हत्याकारी हूं। प्रत्येक बात की आज्ञा मैंने दी है। मैं उस पर दृढ़ हूं और उसका उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेने में मुझको कोई भय न होगा।" लगभग नौ मास के बाद ही पुलिस में इतना परिवर्तन हो गया कि पहचानना कठिन हो गया। पुलिस फोर्स का भाव असुत्तम था

कुछ मास में ही प्रशा की पुलिस को एक ऐसा साधन बनाने में सफलता मिल गई जो राज्य को सुरक्षा का ठीक २ भाव दे सकती थी और स्वयं पुलिस वालों में यह अभिमान पूर्ण भाव भर सकती थी कि वह राज्य के प्रथम और सबसे तेज शस्त्र हैं। वर्दी वर्दी के बदल देने और टुकड़ियों को झंडिया देने से अफसरों और सिपाहियों का आत्म सम्मान बढ़ गया। आधीनता की नयी शपथ का भी गहरा अभिप्राय था और उसको पूर्ण करना उनका धार्मिक कर्तव्य हो गया।

(ख) राज्य की गुप्त पुलिस का सगठन

राजनीतिक पुलिस की दशा वास्तव में बहुत बुरी थी। यहां जेनेरल गोयरिंग ने लगभग सभी जगह हर सेवेरिंग के सोशल डेमोक्रैटों के विश्वासी प्रतिनिधियों को पाया। यही लोग बदनाम राजनीतिक पुलिस थे। राज्य की वर्तमान दशा में उनसे काम नहीं लिया जा सकता था। वास्तव में सबसे खराब आदमियों को तो पहिले ग्रैष्ट ने ही हटा दिया था। किन्तु जेनेरल गोयरिंग को अब यह कार्य पूर्ण करना था। वह कई सप्ताह तक पुन संगठन के कार्य में लगा रहा। अत में उसने अपने भावों के अनुसार 'राज्य की गुप्त पुलिस का विभाग बनाया। यही वह साधन है जिससे राज्य के शत्रु इतने अधिक डरते हैं और जो इस बात का विशेष रूप से उत्तरदायी है कि आज जर्मनी और प्रशा में मार्क्सवादी या साम्यवादी आतंक का कोई प्रश्न नहीं है। पुराने और नये का बिना विचार किये उसने योग्य से योग्य

व्यक्तियों को इस 'राज्य के गुप्त पुलिस विभाग' में नियुक्त किया और उनको अपने अत्यंत योग्य अफसरों की आधीनता में रखा। जेनेरल गोयरिंग का कहना है कि "प्रतिदिन मेरी यह धारणा दृढ़तर होती जाती है कि मैं उपयुक्त व्यक्ति का निर्वाचन करता हूं। डील और उसके आदमियों के कार्य जर्मनी के पुन स्वतन्त्र होने के प्रथम वर्ष के सबसे शानदार कार्यों में गिने जायेंगे। गार्ड और तूफानी सेनाओं ने मेरा भी बड़े उत्साह से समर्थन किया। उनकी सहायता के बिना इतनी शीघ्रता और प्रभावशालिता से मैं राज्य के शत्रुओं को कभी आधीन नहीं कर सकता था। मैंने अब गुप्त पुलिस का फिर संगठन किया और उसको स्वय अपने अधिकार में रखा। प्रान्तों में केन्द्रों के जाल के द्वारा उसका प्रधान कार्यालय बर्लिन में रख कर मुझको प्रतिदिन और प्रत्येक घं इस बात का पता लगता रहता है कि इतने बड़े प्रशा राज्य में कहां क्या हो रहा है।

'साम्यवादियों' के रक्षा पाने के अन्तिम स्थान का भी हम को पता लग गया है। वह अपने युद्धस्थानों को चाहे जितनी बार भी क्यों न बदलें और अपने दूतों का नाम बदल कर कु भी क्यों न रखें, कुछ दिनों के पश्चात् उनका पता लग कर रिपो की जाती है और सब निगरानी होने के बाद वह गिरफ्तार क लिये जाते हैं। राज्य के इन शत्रुओं के विरुद्ध हम को पू निर्दयता से कार्यवाही करनी होगी।" यह बात स्मरण रखन चाहिये कि मार्च के निर्वाचन चर्चा के अनुसार हिटलर सरकार

शासनसूत्र हाथ में लेने के समय साम्यवाद और मार्क्सवाद के समर्थकों की संख्या लगभग १ करोड़ ४० लाख थी। यह सभी व्यक्ति राज्य के शत्रु नहीं थे। इनका एक बड़ा भाग, लाखों व्यक्ति अच्छे जर्मन थे। यह लोग साम्यवाद के पागल सिद्धान्तों और मध्यमश्रेणि के दलों के खालीपन और थोथेपन से बहकाये जाते थे। अतएव यह बहुत आवश्यक था कि इन लोगों को नकली करने से बचाया जाकर इनको फिर जर्मन जाति के समाज में वापिस लाया जावे। किन्तु धोखा देने वालों, आन्दोलकों और इनके सरदारों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही करना भी उतना ही आवश्यक था। अतएव सोच विचार करने के बाद कैम्प स्थापित किये गये, जिनमें सबसे प्रथम साम्यवादी और सोशल डेमोक्रेटिक दलों के सहस्रों अफसर भेजे गये। यह स्वाभाविक था कि आरम्भ में कुछ ज्यादतियां की जातीं। यह भी आवश्यक था कि इधर उधर कुछ व्यक्तियों का प्रदर्शन किया जाता। कुछ के साथ तो अत्यंत निर्दयता की गई। किन्तु यदि उस अवसर के महत्त्व और उसके पूर्ववर्ती कार्यों पर विचार किया जावे तो यह स्वीकार करना पड़ेगा कि यह स्वतन्त्रता की जर्मन क्रान्ति इतिहास की सभी क्रान्तियों में सबसे अधिक रक्तहीन और विनयानुशासन से युक्त थी।

(ग) मार्क्सवाद और साम्यवाद का विध्वंस

प्रत्येक क्रान्ति के साथ कुछ अच्छी न लगने वाली और अनभिलषित विशेष बातें हुआ करती हैं। किन्तु यदि यह इतनी कम हों और यदि क्रान्ति का उद्देश्य इतनी पूर्णता से प्राप्त हो

जावे तो उसके विषय में किसी को आन्दोलन करने का अधि
नहीं है। जेनेरल गोयरिंग लिखते हैं कि "मैं उन कायरता
बदनामियों और शरारत भरी कहानियों की नीच धन्
प्रबल विरोध करता हूं जो बिना सम्मान और पितृभूमि
जर्मनी से भागे हुए व्यक्तियों के द्वारा बाहिर फैलायी गयी है
इन कहानियों को फैलाने से जर्मनी के यहूदियों ने उससे
अधिक इनका ठीक परिणाम प्रमाणित कर दिया जितना
अपने व्याख्यानों और आक्रमणों द्वारा बतला सकते कि
उनके विरुद्ध अपने रक्षात्मक कार्य के विषय में कितने औचित्य
थे।" यहूदी लोगों ने झूठ बोल कर और शरारत भरी कहानि
गढ़ कर अपने उस वास्तविक रूप का ही परिचय दिया,
यह अपने उन व्यक्तियों और देश पर सुरक्षापूर्ण फासिले
कीचड़ फेंक कर कर रहे हैं, जिसमें उन्होंने दशाब्दियों
आनन्द का उपभोग किया है। उत्तम यहूदी अब भी अपनी
जाति में रहते हुए धन्यवाद देते हैं कि इस समय सबके स
समान व्यवहार किया जारहा है। वह भी बाहिर उन यहूदी संग
को अपने विरोध का समाचार भेज सकते हैं जिनका कहानि
गढ़ने के युद्ध में प्रधान भाग है। नेशनल सोशियलिस्ट स
यहूदियों के विरोधी केवल इस लिये नहीं हैं कि उन्होंने स
देशों में अपनी जन संख्या के अनुपात में बहुत अधिक
किया, विरोध केवल इस कारण नहीं है कि उन्होंने अर्थ
पूंजी पर अधिकार प्राप्त कर लिया, विरोध इस कारण नहीं

ई उन्होंने बड़े परिमाण में अयोग्य सूद लिया और दुराचार
जाया, जर्मनी को आर्थिक रूप से आधीन करके उसकी नसों
चूस लिया, विरोध इस कारण भी नहीं है कि उन पर मंहगापन
न का आरम्भिक अपराध लगाया जाता है, और उन्होंने
र्विकरूप से निर्बल अपने जर्मन में अमानों के गले को निर्दयता
घोंट डाला। यहूदियों के विरुद्ध सबसे बड़ा दोष यह लगाया जाता
कि मार्क्सवादियों और साम्यवादियों को नेता उन्होंने ही दिये।
र विनाशकारी और अपमानकारक समाचार पत्रों की सम्पादकीय
र्सियां संभालने वाले यही थे, जिन्होंने नेशनल सोशलिस्टों
विरुद्ध विष उगला और घृणा का प्रचार किया। जर्मन उनके
पय में पवित्र थे। यहूदियों ने ही 'जर्मन' और 'राष्ट्रीय, सम्मान
र स्वतन्त्रता और विवाह, आज्ञाकारिता को रूखेपन से बिगाड़ा
र उसकी हंसी उड़ायी। तब इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि अंत
जर्मन लोग ठीक ही इनके विरुद्ध क्रोध में भर गये और इस
र के लिये सहमत नहीं हुए कि यह मुफ्तखोर आक्रान्ता अब
धेक दिनों तक स्वामित्व का कार्य करते रहें। जिन्होंने यहूदियों
कार्यों को जर्मनी में देखा है अथवा जो जर्मनी में यहूदियों के
व को जानते हैं वह आज कल किये गये कार्य की आवश्यकता
भली प्रकार समझ सकते हैं। यहूदियों का प्रश्न अब भी पूर्ण
से हल नहीं हुआ है। अभी तक तो केवल जनता की रक्षा
की गई है, जो कि यहूदियों के द्वारा किये हुए विनाश और
चार की प्रतिक्रिया था। यदि इस दृष्टि से इस पर विचार

किया जावे तो दिखलाई देगा कि यह क्रान्ति पूर्णतया निर्मा. और बिना रक्तपात की थी। इसने पुराने और गले हुए को न कर दिया और नये तथा सुधरे हुए को सन्मुख उपस्थित क दिया।

इस क्रान्ति की सफलता के लिये गुप्त पुलिस ने बहु उद्योग किया है। उसने उसकी रक्षा करने में भी सहायता दी है

इस रचनात्मक कार्य के बीच में ही २७ फरवरी स १९३३ ई० को बड़ी भारी आग लगगई, जिस रीश स्टाग का भवन और गुम्बज जल गये। इस आग क प्रबन्ध अपराधियों ने किया था। जर्मन रीश स्टाग में आग लगाने का आशय भरते हुए साम्यवादी दल का एक अति निराश प्रयत्न करने का संकेत था, जिससे यह हिटलर के सरकार के जमने से पूर्व ही उस पर आक्रमण करलें। यह आ साम्यवादियों की ओर सब के उठने, क्रांति के लिये और सिवि युद्ध की भिमीषिका की संकेत थी। यह साम्यवादियों के इस सरप्रा के कारण नहीं लगाई गई कि उस प्रकार के उत्तरदायित्व पू कार्य नहीं किये गये। साम्यवादियों की इच्छा के अनुरू कार्य तो केवल हिटलर की प्रबल इच्छा शक्ति और शक्तिपूर्ण हाथों तथा उसके अनुयाइयों के कारण नहीं हुए, जिन्होंने शत्रुओं के अनुमान से भी शीघ्रता पूर्वक, और उनके मंदर ए भी अधिक कठोर चोट की, और पहिली ही चोट में उनक एक ही बार पूरी तौर से तहस नहस कर दिया।

उस रात्रि में जब जेनेरल गोयरिंग ने ४००० साम्यवादी अफसरों की गिरफ्तारी की आज्ञा दी थी तो वह जानता था कि दिन उठते ही साम्यवादी लोग बड़ा भारी युद्ध हार जावेंगे। किन्तु अब उनका काम जनता को उस भयकर आपत्ति की सूचना दे देना था, जो उनके ऊपर मंडला रही थी। अन्त में साम्यवादियों के अत्यन्त गुप्त उपायों, सगठनों और उद्देश्यों को देखना भी संभव हो गया। लोग इस बात को देख सके कि वीर जाति और अभिमानी साम्राज्य को नष्ट करने के लिये वह अमानुषिक प्राणी कैसे २ नीच और निर्दय साधनों से काम लेना चाहते थे। साम्यवादियों को युद्ध के सम्बन्ध की पुरानी आज्ञाओं को छाप देने के लिये जेनेरल गोयरिंग पर लानत मलामत की गई थी। क्या कोई व्यक्ति वर्षों पूर्व निकाली हुई आज्ञा को कम भयानक समझ सकता है? क्या कोई यह विचार कर सकता है कि हिटलर की सरकार को रीश स्टाग की अग्नि पर अधिक नम्रता से विचार करना चाहिये था, क्योंकि वह यह कह सकती थी कि साम्यवादियों ने इसका प्रबन्ध कई वर्षों से किया हुआ था? इस विषय में जेनेरल गोयरिंग का कहना है कि "आज यदि मुझसे मध्यम श्रेणि वर्ग के राजनीतिज्ञ यह पूछें कि क्या रक्षा का यह सगीन कार्य वास्तव में आवश्यक था और साम्यवादियों का खतरा वास्तव में इतना बड़ा था तो यदि मैं बहुत दूर नहीं जाता तो मैं आश्चर्य और घृणा से उत्तर दे सकता हूं। 'हां, यदि तुम मध्यमश्रेणि के कायरों के लिये अब

Balanda

साम्यवादियों से डरने का कोई कारण नहीं है और अब आप लोग साम्यवादी क्रान्ति के भय से युक्त हो तो इसका यह कारण नहीं है कि तुम और तुम्हारे जैसे व्यक्तियों का अस्तित्व है; किन्तु इसका कारण यह है कि जिस समय तुम अपने घर के कमर में बैठे हुए बोल्शेविकवाद के विषय में बातचीत कर रहे थे तो उस समय कुछ ऐसे आदमी भी थे, जिन्होंने उस खतर के उद्देश्य को समझ लिया और उसको दूर कर दिया। यदि साम्यवादियों को अपने हाथ में लेन के लिये रीश स्टाग में आग लगाने का स्वयं मेरे ऊपर दोष लगाया जावे तो मैं केवल यही कह सकता हूं कि यह विचार मूर्खतापूर्ण और हंसने योग्य है। साम्यवादियों के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिये मुझे किसी विशेष घटना की आवश्यकता नहीं थी। उनके अपराधों की सूची पहिले से ही इतनी बड़ी हो गई थी और उनके अपराध इतने निर्दयतापूर्ण थे कि मैंने इस महामारी को निर्दयता से मिटा डालने के लिये अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करने का निश्चय कर लिया था। जैसा कि मैं अपने रीशस्टाग के आग के मुकदमे की गवाही में पहिले ही बतला चुका हूं कि मेरे उपाय में रीश स्टाग अग्निकाण्ड बिल्कुल ही ठीक नहीं बैठता। इससे मैं अपनी इच्छा से भी पूर्व कार्य करने और अपनी आवश्यक तयारियों से पूर्व ही चोट करने के लिये विवश हो गया। मुझको इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आग लगाने की आयोजना साम्यवादी दल ने की थी और काम को स्वयं करने

में भी बहुत से आदमियों का हाथ होगा।" जो व्यक्ति पकड़ा गया था वह उनमें सबसे भद्दा और सब मे मूर्ख था। आग लगाने वाले ये स्वय उत्तरदायी नहीं जर्मन जाति के विरुद्ध वास्तव में अपराध करने वाले उनके आध्यात्मिक अभिभावक और पर्दे में मे गुप्त रूप से तार खींचने वाले ही थे, और वही जर्मन सभ्यता को नष्टकरने वाले थे।

(घ) प्रशा का प्रधान मन्त्रित्व

इस विषय में जेनेरल गोयरिंग अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि

"मेरे लिये यह बहुत शीघ्र स्पष्ट हो गया कि यह अत्यत आवश्यक है कि प्रशा का आन्तरिक मंत्री होने के साथ ही साथ में प्रधान मत्री भी बना रहूँ। प्रश्न केवल यह था कि यदि मैं इस स्थान को ले लूँ तो क्या मैं विनाशक विचारा को बहिष्कृत करने, मध्यश्रेणि के दलों से निपटने और नयी आज्ञा का पालन कराने के कार्य को पूरा कर सकूँगा। इस कारण मैंने प्रशा की 'प्रमुख' (Sovereign) सरकार के हृदय प्रश्न को पहिले तय किया। मैंने हर वान पैपेन को, जैसा कि पहिले से ही प्रबंध किया गया था, प्रशा के कमिश्नर के पद से अवसर प्राप्त कराया, जिससे नहा वह स्थान मुझको दे सके। यह केवल इसलिये था कि मैं प्रशा के आभ्यन्तर कार्य के मंत्रित्वपद को प्रशा के प्रधान मत्री पद के अधिकार के द्वारा अधिक मजबूती से करने योग्य था, और इस प्रकार सभी सुधारों को कार्य रूप मे परिणत करना भी मेरे लिये सभव था। क्योंकि अब प्रशा के प्रधान

मन्त्री का पद पहिले की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण और शक्तिशाली हो गया था। पिछले वर्षों में यह केवल एक पार्लमेंटरी मन्त्री के अतिरिक्त और कुछ न था। यह नीति के सामान्य निर्देश पर प्रभाव डालने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकता था किन्तु अब इस स्थान का अर्थ था अनियंत्रित अधिकार। प्रशा का प्रधानमंत्री अब सम्पूर्ण प्रशा राज्य के लिये उत्तरदायी था विशेष कर इस समय तो चैंसेलर ने स्टैथल्टर कानून पास करके अपना प्रशा के स्टैथल्टर का अधिकार जनरल गोयरिंग को दे दिया था। जब जेनेरल गोयरिंग ईस्टर की छुट्टि में रोम में ठहरा हुआ था तो उसको हिटलर का निम्नलिखित हर्षोत्पादक तार मिला, जिस में उसे प्रशा का प्रधानमंत्री बनाये जाने की सूचना दी गई थी —

"मैं आज (१० अप्रैल) से तुमको प्रशा के प्रधानमंत्री पद पर नियुक्त करता हूँ। कृपा कर अपने कार्य को बर्लिन में २० तारीख को संभाल लीजिये।

"मैं तुमको तुम्हारे लिये अपने इस विश्वास का चिन्ह देसकने पर प्रसन्न हूँ।

मैं इस बात से प्रसन्न हूँ कि मैं तुमको अपने विश्वास और उन बड़ी भारी सेवाओं के लिये कृतज्ञता के चिन्ह स्वरूप यह स्थान दे सका हूँ, जो तुमने दस वर्ष तक जर्मनी के पुनर्निर्माण के लिये हमारे आन्दोलन में युद्ध करके जर्मन जाति की की है। प्रशा में आन्तरिक कार्यों के कमिश्नर के रूप में सफलता पूर्वक राष्ट्री

क्रान्ति को निबाह देने की तुम्हारी सेवा के लिये भी मैं तुमको धन्यवाद देता हूँ। और सबसे अधिक मैं उस अनुपम भक्ति के लिये धन्यवाद देता हूँ, जिससे तुम अपने भाग्य को सदा मेरे साथ बांधे रहे।'

इस नियुक्ति से, जो इस प्रकार उसके अन्दर हिटलर के विश्वास का परिणाम थी, प्रशा का भाग्य जेनेरल गोएरिंग के हाथ में आ गया। इसके अतिरिक्त रीश के अपने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान से उसे इस बात का पता चल गया कि वह ऐडल्फ हिटलर के पुनर्निमाण के गुरुतर कार्य में भाग ले सकेगा। क्योंकि प्रशा का उद्देश्य और उत्तरदायित्व सदा ही उसकी सीमा से बाहिर 'जर्मन प्रश्न का हल' रहा है। प्रशा में पास किये हुए कानून साथ दूसरी रियासतों के लिये नमूने का काम देते थे। क्योंकि वह रीश और उसके चैंसेलर की नवनिर्मित राज्यसत्ता थी। इस कारण जेनेरल गोएरिंग ने यथासम्भव शीघ्र ही प्रशा में अपने नेशनल सोशिएलिस्ट उद्देश्यों को कायरूप में परिणत करने का उद्योग किया। यह सममीकरण राज्य के निर्माण अर्थात नेशनल सोशिएलिस्ट पार्टी की जर्मनी भर में विजय और देश भर में उस एक मात्र राजनीतिक संगठन के जारी रहने से सम्भव किया गया। जेनेरल गोएरिंग को पूर्ण अधिकार दे कर हिटलर ने यह भी सम्भव कर दिया। मार्क्सवादियों के कुशासन से बिगड़े हुए प्रशा को फ्रेडेरिक महान की आत्मा से ओतप्रोत नवीन राज्य बनाने के कठिन कार्य को उसने प्रसन्नता से ले लिया। डाइट

(ङ) हवाई सेना

पहिले से उड़ाका होने के कारण जेनेरल गोएरिंग को एक और कार्यक्षेत्र सौंपा गया। चैंसेलर ने आकाशीय मार्ग के महत्त्व को देख कर विचार किया कि उसको आवागमन (Transport) के मन्त्री के अधिकार से ले लेना चाहिये। हवाई मंत्रीमंडल नया बनाया गया और हिटलर ने जेनेरल गोएरिंग को उसका प्रधान नियुक्त किया। उसने जेनेरल को यह कार्य सौंपा कि वह जर्मनी की हवाई सर्विस को संसार भर में सबसे अच्छी, सबसे सुरक्षित बना दे, और व्यापारी हवाई बेड़े को नये महत्त्वपूर्ण शिखर पर पहुंचा दे। सबसे अधिक, जर्मनी की हवाई शक्ति को, जो वारसाई की सन्धि की जंजीरों में बंधी पड़ी थी, हवाई क्रीड़ाओं का नया मार्ग खोजना था।

पुरानी मशीनें तो नहीं के जैसी ही थीं। वह प्राय पुरान नमूनों की थीं। नियमित यात्री जहाज भी बहुत थोड़े ही थे। अतएव इस क्षेत्र में भी उसी को इस बड़े कार्य में भारी शक्ति लगानी पड़ी।

इसके अतिरिक्त उसको दूसरी शक्तियों को भी यह विश्वास कराना आवश्यक जान पड़ा कि जर्मनी को कम से कम अपनी रक्षा करने योग्य जहाजी बेड़ा बनाने का अधिकार अवश्य है। चारों ओर सशस्त्र क्रोधी शक्तियों से घिरे हुए और स्वयं पूर्णतया निःशस्त्र जर्मनी के पास उस समय एक भी पीछा करने वाली मशीन या देखने वाला जहाज नहीं था। वह पूर्णतया दूसरों की

रक्षा पर निर्भर था। यह सत्य है कि जर्मनी को एक छोटे से जहाजी बेड़े और थोड़ी सी सेना की स्थल की रक्षा करने के लिये अनुमति मिली हुई थी। किन्तु यदि कोई शत्रु उस पर आकाश मार्ग से आक्रमण करता तो इस स्थल रक्षा का क्या लाभ होता? जर्मनी के विरुद्ध यद्यपि एक भी फ्रांसीसी सिपाही अथवा शत्रु के एक जंगी जहाज के बढ़ने की सम्भावना नहीं थी, किन्तु फ्रांस, पोलैंण्ड, बेल्जियम, जेको-स्लोवाकिया और दूसरे देशों के हवाई बेड़े जर्मनी के ऊपर उड़कर जर्मनों के नगर और ग्रामों को नष्ट करके उसके निर्दोष मनुष्यों को जान से मार सकते अथवा असमर्थ बना सकते थे। तब यहां पर अधिकारों की समानता के विषय में कौन बोल सकता है? और यहा पर किसी के स्वय रक्षा करने का कौनसा चिन्ह है? और वह अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता, अन्तर्राष्ट्रीय भाव और यूरोपीय सभ्यता के चिन्ह, जिनके विषय में इतना अधिक कहा जाता था, अब कहा थे? जर्मनी ने कभी आक्रमण करने वाले अथवा बम बरसाने वाले हवाई जहाजों के विषय में किसी बातचीत में कभी नहीं पूछा। नवीन जर्मनी केवल अपनी रक्षा करना, शत्रु के आक्रमणों के विरुद्ध रक्षात्मक मशीनें रखना, और शत्रुओं की बम बरसाने वाली सेना के विरुद्ध रक्षा करने वाली मशीनें रखना चाहता था। उसको ऐसी मशीनें रखने की अनुमति क्यों नहीं मिली? यदि दूसरी शक्तियां कहती हैं कि वह कभी आक्रमण करना नहीं चाहतीं, यदि उनका जर्मनी के विषय में कोई बुरा विचार नहीं है तो वह जर्मनी को अपनी

रक्षा करने की अनुमति क्यों नहीं देती थीं ? जर्मनी हवाई विरोध तोपों को क्यों नहीं रख सकता था। अतएव आवश्यक रूप से यही संदेह होता है कि इन लोगों की इच्छा किसी निश्चित समय पर जर्मनी पर आ पड़ने और आकाश मार्ग से उस पर आक्रमण करने की थी। संसार को इस बात को जान लेना चाहिये और राष्ट्रों को इस बात का अनुभव करना चाहिये कि जर्मनी को उसकी रक्षा के वास्ते केवल एक छोटी सी सेना और जहाजी बेड़े की स्वीकृति देना तब तक मजाक है जब तक कि आकाश मार्ग अरक्षित और आक्रमण के लिये खुला हुआ है। अतएव जर्मन मंत्रिमण्डल का कार्य तब तक शिक्षा देते रहने और उद्योग करते रहने का था, जब तक अन्त में जर्मनी ने वास्तविक समानता और सुरक्षा प्राप्त न करली।

इकतीसवां अध्याय

हिटलर की नई सरकार

हिटलर ने जर्मनी पर अभी केवल थोड़े ही समय तक राज्य किया है। समय कितना कम था और काम कितना अधिक था। कितना काम हो गया! जिस कार्य को करने के लिये वर्षों का अनुमान किया जाता था वह कुछ मास में ही हो गया। सभी विभागों में उन्नति आरम्भ हो गई है। सब कहीं लोग आगे बढ़े हैं। जो जर्मन कृषक कुछ वर्ष पीछे तक बिना अधिकार के किसी भी समय घर और खेतों से निकाले जा सकते थे, वह अब फिर अपनी पैतृक भूमि पर स्थित हो गये हैं। उनकी भूमि अब विश्राम की आवास नहीं। वह आशावादी सूदखोरों के पंजे से हटा ली गई है और फिर पवित्र और शुद्ध हो गई है। मंत्रीमंडल बेकारी के विरुद्ध भयंकर युद्ध में लगा हुआ है। इस साल लगभग ७० लाख बेकार आशा और उत्सुक नेत्रों से पेडल्फ हिटलर की

ओर देख रहे थे। हिटलर के शासनारूढ़ होने के दस मास के बाद ही उनमें से लगभग आधों को कार्य और भरणपोषण मिल गया था। बेशक हिटलर की वास्तव में यह अभूतपूर्व सफलता थी, जनता की सहानुभूति इस से भी अधिक हो गई। इससे बेकारी दूर होने में और भी सहायता मिली। सरकारी कार्य प्रणालियों से उसका और भी मुकाबला करने की तयारी की जा रही है। मोटरों के वास्ते सहस्रों मील नई सड़कें बनाने का आयोजन किया जा रहा है और उन पर कार्य आरम्भ कर दिया गया है; जिनमें से बहुत सी बन भी चुकी हैं। नई २ नहरें खुदवाई जा रही हैं। मोटरों का टैक्स उठा दिया गया है। बीमों की किस्तें (प्रीमियम) कम कर दी गई हैं और सहस्रों नई २ मोटरकार दैनिक बनाई जा रही हैं। इन आयोजनाओं का कुछ भाग रचनात्मक कार्य है। पूर्णतया मदी और लगभग दिवालिया फेशन की पुरानी आयोजना एक कानून बना कर साहस पूर्वक बन्द कर दी गई, जिससे साथ ही साथ सदस्यों के चंदे बच गये। थियेटर, फिल्मों, संगीत, और प्रेस को यहूदी विचारों से शुद्ध करके सभी प्रकार के दमनकारी प्रभावों से मुक्त कर दिया गया। सभ्य जीवन की सभी शाखाओं में नई फुरतयाही आरम्भ हो गई है। सार्वजनिक नेशनल सोशियलिस्ट सिद्धान्तों में आन्दोलन और राज्य एक हो गये हैं। दल और तफानी सेनाएं सरकार के साथ निकटता से आबद्ध हैं, जिनके कारण इस प्रकार लगातार और निर्विघ्न उन्नति किये जाते रहने का पूर्ण विश्वास है।

। इस समय सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात सबसे बड़े और सब
। आश्चर्यजनक विचार वास्तव में ही अस्तित्व में आगये। हिटलर
। असम्भव दिखलाई देने वाले कार्य को भी पूर्ण कर दिखलाया।
र्मन लोगों के विभागों और अनेक्य में से उसके सब वर्गों और
लों में से उसने एक संयुक्त जाति का निर्माण किया।

हिटलर के समय का प्रथम निर्वाचन

अभी तक जर्मन इतिहास में जो स्वप्न जान पड़ता था
ह वास्तविक रूप में आ गया। ऐडल्फ हिटलर के बोए हुए बीज
ें उत्पन्न हुई शानदार फसिल की एक यह आश्चर्यजनक घटना
ी कि ४ करोड़ २० लाख मतदाताओं (वोटरों) में से चार करोड़
एक संयुक्त दल बना लिया। १२ नवम्बर १६३६ का दिन
र्मन इतिहास में सदा ही अत्यन्त प्रतापी गिना जावेगा। इसके कुछ
मय के पश्चात् हिटलर ने न भूलने योग्य निम्नलिखित शब्द कहे
; '१२ नवम्बर ने केवल यही नहीं दिखलाया कि ४ करोड़ जर्मन
रकार के साथ एक हैं, केवल यही नहीं दिखलाया कि जर्मनों
ा बड़ा भारी बहुमत सरकार का समर्थन करता है, वरन् १२
म्बर ने यह भी दिखला दिया है कि जर्मनी फिर उत्तम और
माननीय बन गया है।'

१२ नवबर ने यह सिद्ध कर दिया कि हिटलर बार बार
र कहने में बिल्कुल ठीक था, 'जनता का आन्तरिक भाग
स्थ है, मुझे अपने आदमियों का विश्वास है। तथा यह लोग
क दिन ससार को दिखला देंगे कि उसने फिर उत्तम विचार

ग्रहण कर लिये और उन्नति कर ली ?' १२ नवंबर न केवल हिटलर का विश्वास जर्मन जनता के हृदय में भर दिया।

भूतपूर्व शासन प्रणाली की दुर्घटना पूर्ण आन्तरिक नीति ही रीश की विदेशी मामलों में लघु सफलता और निराशा पूर्ण निर्बलता का अनिवार्य परिणाम थी। यहां यह देखना है कि एक राष्ट्र की विदेशी नीति सदा उसकी आन्तरिक नीति का परिणाम होती है। आन्तरिक नीति ही आरंभिक महत्त्व की होती है। क्योंकि यह असंभव है कि एक राष्ट्र को अन्दर तो उसके सब राष्ट्रीय गुणों से रहित करके उसे पतित और कायर बना दिया जावे और विदेशी राष्ट्रों के साथ वीरतापूर्ण ढंग से कार्य किया जावे। प्रजातंत्र धोखादेही से बनाया गया था। अतएव यह बिल्कुल तर्कपूर्ण था कि वह धोखादेही से राष्ट्र के मुख्य अधिकारों को छोड़कर चलाया जाता। तौ भी पिछली शासन प्रणाली को अपनी विदेशी नीति पर और उसकी उस क्षेत्र में सफलता पर विशेष रूप से अभिमान था। यह बतलाया गया है कि हिटलर ने कुछ ही सप्ताह में उन सब कल्पित सफलताओं को नष्ट कर दिया, और थोड़े से ही समय में विदेशी नीति के क्षेत्र में टूट फूट के अतिरिक्त और कुछ नहीं छोड़ा। जब वर्ष के प्रथम कुछ मास में जर्मनी के बारे में घंटी बराबर सन्निकट बजती गई तो जिन लोगों ने इस प्रकार के वक्तव्य निकाले थे वह अंदर ही अंदर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि हिटलर ने सब राष्ट्रों को शत्रु बना लिया है। किन्तु उन्होंने इस विषय में कुछ भी नहीं कहा

कि पिछली दशाब्दी में इन राष्ट्रों ने जर्मनी के प्रति शत्रुता के अतिरिक्त कभी और कुछ प्रगट नहीं किया था। लोहे की अंगूठी वहां पहिले से ही थी। किन्तु पिछली शासन प्रणाली अपने ही लोगों को धोखा देने और यह विश्वास कराने में सफल हो गई कि दूसरे राष्ट्र जर्मनी के प्रति सद्भावनाओं से भरे हुए हैं। वास्तव में ऐसी सद्भावना कभी भी नहीं रही।

हिटलर की सरकार के विरुद्ध प्रचार कार्य

जर्मनी जेनेवा के दूसरे राष्ट्रों के कोड़े मारने वाले लड़के के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। जर्मनी के व्यय पर अन्तर्राष्ट्रीय समझौते किये गये, दक्षिणी अमरीका की छोटी से छोटी रियासत ने भी जेनेवा में ऐसा करुणापूर्ण कार्य नहीं किया, जैसा इतनी बड़ी शक्ति कहलाने वाले जर्मनी ने किया। यह सत्य है कि जब हिटलर ने सरकार को अपने हाथ में लिया तो यह दिखलाई देता था कि मानों यकायक सभी विरोधी शक्तियां जर्मनी का विरोधी नीति के क्षेत्र में पतन करने के लिये एक हो गई थीं। जर्मनी से निकाले हुए लोगों ने बदनामी के नीच युद्ध का कार्य करना आरंभ कर दिया था। सोशल डेमोक्रेटों के पहिले नेताओं ने विदेशों से जर्मनी में सशस्त्र हस्तक्षेप करने की अपील की थी। अन्त में उन्होंने अपने मुख पर के पर्दों को हटाया और अब जर्मन श्रमिक यह देख सके कि कैसे निर्बल और कमीन व्यक्तियों ने पिछली दशाब्दी में उनके भाग्यों पर शासन किया था। अपने

देश को भूलकर वह इतने पतित हो गये कि वह अपने पदों से हटाये जाने की अपेक्षा जर्मनी को फ्रांस या पोलैंड के आक्रमण के धुएं और आग की लपटों में देखना अधिक पसंद करने लगे। घृणा के अतुलनीय युद्ध ने पत्रों के असत्य समाचारों से सहायता पाकर विदेशों में जर्मनी के सम्बन्ध में बड़े २ ग़लत विचार उत्पन्न कर दिये। जर्मनी यकायक यूरोप की शान्ति को भंग करने वाला दिखलाई देने लगा। पूर्ण रूप से निःशस्त्र और अपनी दुःख पूर्ण आवश्यकताओं के लिये युद्ध करने वाला जर्मनी अब संसार को धमकी देने वाला और फ्रांस के लिए ख़तरा कहा जाता था। उस फ्रांस को जिसके पास इतने अस्त्र शस्त्र थे कि जितने इतिहास में संसार के किसी राष्ट्र के पास नहीं रहे, और यह दिखलाई देता था कि जैसे लोग इन बातों पर विश्वास करते थे।

हिटलर की सरकार की नयी घोषणा

किन्तु ऐडल्फ हिटलर ने यह प्रमाणित कर दिया कि वह केवल घर पर जर्मनी को पुनः जाग्रत करने वाली ही नहीं है वरन्, जैसा कि उसने संसार के सामने पहिली पहल प्रमाणित किया कि वह विदेशी राजनीति में भी एक सब से उच्च कोटि का राजनीतिज्ञ है। इस प्रकार के अशांत वायुमण्डल में उसने रीस्टाग के सन्मुख अपना शांति का प्रसिद्ध भाषण दिया। उस मध्याह्नोत्तर के समय संसार बड़ी सरगर्मी से प्रतीक्षा कर रहा

था कि नया जर्मन चैंसेलर, जिसको अधिक गाली दी जाती है, और जो जंगली सैनिक है, अब क्या कहेगा। उसने जर्मन जाति की शान्ति के लिये गहन अभिलाषा के विषय में और उसकी भयंकर निर्धनता और कष्ट के विषय में कहा। उसने बतलाया कि किस प्रकार इस बात की आवश्यकता है कि उसकी सभी शक्तियां उसको इस कष्ट से निकालें। उसने विनाशकारी प्रभावों और बेकारी के विरुद्ध अपने युद्ध के विषय में भी कहा और संजीदगी से समस्त समार के सन्मुख घोषित किया कि जर्मनी में कोई व्यक्ति और कोई जर्मन राजनीतिज्ञ किसी दूसरे देश पर आक्रमण करने का विचार नहीं करता और यह कि नया जर्मनी पारस्परिक प्रेमपूर्ण विचार के भावों में अपने पड़ौसियों का सहयोग चाहता था। किन्तु उसने गंभीर उत्साह और पुन जाग्रत जर्मनी के प्रकाशित मिष्ट शब्दों में जर्मनी के सम्मान और उसकी उस अभिलाषा के विषय में कहा कि वह अपने भाग्य के स्वयं ही स्वामी होना चाहते हैं। उसने यह भी बतलाया कि हमने यूरोप की शांति रक्षा के लिये बड़े २ बलिदान किये हैं और हम अब भी बलिदान करने को तयार हैं किन्तु एक बात कभी नहीं छोड़ी जा सकती। एक बात, जिसको कायर से कायर भी नहीं दे सकेगा। एक बात, जो एक जाति के लिये यदि वह स्वतन्त्र है तो हवा से भी अधिक आवश्यक है। और वह है राष्ट्र का सम्मान।

जर्मनी के शत्रु इस बात से बहुत निराश हुए और क्रोध में भर गये कि कुछ घंटों में ही इस विद्वत्तापूर्ण भाषण ने उनके

असत्यों के सारे जाल के थोड़ो देर में ही टुकड़े २ उड़ा दिये। किन्तु दूसरे देशों में उन लोगों ने, जो वास्तव में शांति चाहते थे आराम की सांस ली और इस लिये वह समझ गये कि जर्मनी जैसा बड़ा राष्ट्र ऐसी बात कभी न करेगा, जो स्वयं उसको सह्य न हो। भयप्रद तूफान बीता हुआ जान पड़ता था। किन्तु जर्मनी के शत्रु लोग जर्मनी के लिये राष्ट्रसंघ (League of Nations) में बड़ी भारी कठिनाइयां बढ़ाने और जर्मन लोगों को दुःखपूर्ण झगड़ों में डालने के लिये सरगर्मी से उद्योग करते रहे।

बत्तीसवां अध्याय

आन्तरिक शत्रुओं का निर्मूलन

यह पीछे बतलाया जा चुका है कि ३० जनवरी सन १९३३ को हिटलर के चैंसेलर बनने में जर्मनी मंत्रीमडल के तत्कालीन सदस्य तथा भूतपूर्व चैंसेलर हर वॉन पैपेन, जर्मन नेशनलिस्टों के नेता हुगेनबर्ग, तथा फौलादी टोप वालों के नेता सेल्डट की पूरी सहायता थी। यह लोग एक समय हिटलर के प्रबल विरोधी थे, किन्तु इस समय यह हिटलर के प्रधान सहायक बन गये थे। बल्कि यह कहना भी अनुचित न होगा कि हिटलर के उस समय चैंसेलर बनने के कारण यही थे।

हिटलर की आरम्भिक सरकार

हिटलर की यह आरम्भिक सरकार कई पार्टियों के सहयोग से बनी थी। अत आवश्यक था कि इस आरम्भिक मंत्रीमण्डल में उन सभी पार्टियों के प्रतिनिधि होते। यह अवश्य

है कि दूसरी पार्टी वालों ने नेशनल सोशिएलिज्म की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के लिये ही हिटलर के हाथ में शासन की बागडोर दी थी। सहायता देने वालों में से कुछ का तो यह उद्देश्य था, वरन् उनको विश्वास था कि हिटलर भी अपने पूर्ववर्ती चैंसलरों के समान अयोग्य प्रमाणित होगा और तब उसको अन्य पार्टियों की सहायता से सुगमता पूर्वक दबाया जा सकेगा। उन लोगों को यह पता नहीं था कि अब की बार दूसरे ही प्रकार के व्यक्ति से काम पड़ा है, और इस कूट युद्ध में भी उनको शीघ्र ही मुंहकी खानी पड़ेगी। हर वॉन पैपेन भी इन विचारों से शून्य न था।

हर वान पैपेन का व्याख्यान

१७ जून सन् १९३४ ई० को हर वॉन पैपेन ने एक व्याख्यान दिया था कि उसको रीश के प्रचार मन्त्री जोसेफ गोबेल्स ने जब्त कर लिया।

उसके ६ दिन के पश्चात् तारीख २३ जून को हर वॉन पैपेन ने सार० की दो सहस्र स्त्रियों के सामने मारबर्ग में एक और भाषण दिया। यह भाषण भी जब्त कर लिया गया। यहां तक कि इसकी तो एक प्रति भी कहीं न छोड़ी गई। इस भाषण में पैपेन ने पार्टियों को एक करने के हिटलर के कार्य की प्रशंसा भी की थी। सम्भवतः यह शब्द नाजी दल वालों को सांत्वना देने के लिये थे।

० जहा के यह स्पेशल कमिश्नर थे।

नाजियों में असतोष

इस समय कुछ उग्र विचार के नाजियों में सरकार की तत्कालीन नीति से असन्तोष भी उत्पन्न हो गया था। पैपेन के इस व्याख्यान से इस असन्तोष को और सहारा मिल गया। डाक्टर गोबेल्स को यह बात बहुत बुरी मालूम हुई। उनकी दृष्टि से पैपेन का सम्मान एक दम उठ गया। वह पैपन द्वारा की हुई हिटलर के चैंसेलर बनने की सहायता को भी एक दम भूल कर आग बबूला हो गया। उसने नाजियों के 'ग्रीष्मऋतु की रात्रि' के उत्सव में पैपेन पर इन शब्दों में आक्रमण किया —

"यह भूतपूर्व रिसाले के अफसर, क्लब में आराम कुर्सियों पर बैठ कर समालोचना करने वाले प्रतिक्रियावादी — हमको शक्ति प्रदर्शन करने से बन्द नहीं कर सकते। नेशनल सोशिएलिस्टों ने शक्ति इस कारण प्राप्त की है कि उस पर—किसी राजकुमार, किसी भारी से भारी व्यापारी, किसी बैंकर (साहूकार) अथवा पार्लमेंट के सरदार का—दावा नहीं है। नेशनल सोशिएलिस्ट मरकर इन सब के मुंह बन्द करेगी। वॉन पैपेन हिटलर में संतोष प्रगट करते हैं, किन्तु उनकी पार्टी के अफसरों में ऐतराज करते हैं। उनको स्मरण रखना चाहिये कि जर्मनी को इन्हीं छोटे आदमियों ने जीता है। चूहे के बिल में घुसे रह कर अपने को नाजी कहने वाले हमसे

— वान पैपेन पहिले रिसाले का एक अफसर था। वह एक प्रतिक्रियावादी दल का सदस्य भी था।

तेंतीसवां अध्याय

राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग

इस पुस्तक में राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग का उल्लेख नाम मात्र को ही किया गया है। किन्तु इस सारे नाटक में यदि प्रधान अभिनेता ऐडल्फ हिटलर है तो सूत्रधार राष्ट्रपति हिंडेनबर्ग हैं। अतएव उनके चरित्र का वर्णन किये बिना इस पुस्तक को समाप्त करना उचित न होगा।

हिंडेनबर्ग का प्रारंभिक जीवन

आपका पूरा नाम पाल वॉन बेनेकेनडोर्फ अंडवान हिंडेनबर्ग था। आपका जन्म अक्तूबर सन् १८४७ में पोसेन नामक स्थान में हुआ था। आप दस वर्ष की आयु में एक सैनिक विद्यालय में भर्ती हुए। १६ वर्ष की अवस्था में शिक्षा प्राप्त करते ही वह फौजी लेफ्टिनेंट होकर (सन १८६६ में) उस युद्ध में सम्मिलित हुए जो प्रशा ने आस्ट्रिया के साथ किया था। यह सन् १८७० में

द्वितीय जर्मन राष्ट्रपति हिंडनबर्ग — पृष्ठ २८४

जर्मनी—फ्रांस युद्ध में भी सम्मिलित हुए थे, इस युद्ध से उनकी ख्याति सारे देश में फैल गई।

हिंडेनबर्ग का युद्ध सचिव तथा सेनापति बनना

बयालीस वर्ष की अवस्था में सन १८८६ ई० में आप युद्ध सचिव और टेरीटोरियल सेनाओं के प्रधान बनाये गये। सन् १६०३ में उनको चौथे सेनादल के सेनापति का पद दिया गया। उस समय जर्मनी में क़ैसर विलियम का प्रताप छाया हुआ था। उनके स्वेच्छा पूर्ण शासन के कारण मंत्रियों से उनका कई २ बार मतभेद हो जाया करता था। अत आवश्यक था कि उनका मतभेद हिंडेनबर्ग से भी होता।

उनका अवसर ग्रहण करना

हिंडनबर्ग को कैसर का यह मतभेद ही असह्य था। फलत उन्होंने सन् १६११ में ६४ वर्ष की आयु में अपने पद से अवसर ग्रहण किया। अवसर ग्रहण करते समय उन्होंने जो महत्त्वपूर्ण बात कही थी उससे उनके हृदय की विशालता का अच्छा प्रमाण मिलता है। उन्होंने कहा था—"मैंने यथासम्भव अधिक से अधिक सम्मान सेना में प्राप्त किया है। युद्ध की भी अभी कोई सम्भावना दिखलाई नहीं देती। इस लिये अपने से नीचे के पद वालों के लिये आगे बढ़ने का मौका देने के लिये मुझे सेना से पृथक होकर अब विश्राम करना चाहिये।'

किन्तु उनका युद्ध न होने का अनुमान ग़लत साबित हुआ और सन १६१४ में महायुद्ध छिड़ ही गया।

हिंडेनबर्ग का महायुद्ध में सम्मिलित होना

रणभेरी बजते ही हिंडेनबर्ग का भी क्षात्रतेज जागृत हो उठा। उन्होंने सम्राट कैसर विलियम से निवेदन किया कि वह भी पोसेन के अपने एकान्तवास को छोड़कर अपनी पितृभूमि की सेवा करने को तयार हैं। कैसर को यद्यपि अपने इस वृद्ध सेनापति की राजभक्ति और कर्त्तव्यनिष्ठा में पूर्ण विश्वास था, किन्तु वह अपने प्रबन्ध में किसी का हस्तक्षेप नहीं चाहते थे। हिंडेनबर्ग के कोई कार्य लेने पर इस बात की पूरी सम्भावना थी। कैसर ने इस समय हिंडेनबर्ग की प्रार्थना पर कोई ध्यान न दिया।

उनकी पूर्वीय सीमा पर विजय

किन्तु जब रूस के आक्रमण करने पर पूर्वी प्रशा में जर्मनों की हार हुई तो कैसर को होश हुआ और उन्होंने हिंडेनबर्ग को बुला कर उन्हें पूर्वीय सीमा के युद्ध का भार सौंप दिया। वास्तव में इस पद के लिये हिंडेनबर्ग ही उपयुक्त व्यक्ति थे। जिस समय वह चौथे सेनादल के सेनापति थे तो उन्होंने प्रशा में रह कर इस बात का व्यवहारिक अनुभव किया था कि रूस से युद्ध छिड़ जाने पर जर्मनी को उसके साथ किस प्रकार युद्ध करना होगा। सेनापति का पद-भार ग्रहण करने के कुछ ही समय बाद हिंडेनबर्ग ने टैननबर्ग और मसाउरियन झीलों की लड़ाइयों में बड़े कौशल और बुद्धिमानी से रूसी फौजों को नष्ट कर डाला। इन युद्धों में रूस वालों की इतनी अधिक हानि हुई

कि आगे चल कर लड़ाई में वह लोग अधिक दिनों तक नहीं ठहर सके और बुरी तरह से हार गये।

उनका फील्ड मार्शल बनना

इसके बाद हिंडेनबर्ग ने पोलैंड और लोड्ज़ की लड़ाइया जीती। कौनसीलोफ़ के धावे की उनकी बहादुरी से तो सारा ससार चकित हो गया था। उसी साल कैसर ने उनको फील्ड-मार्शल बना कर उनका समुचित रूप से आदर किया।

हिंडेनबर्ग अपनी जीत का झंडा रूस की भूमि में दो वर्ष तक गाड़े रहे। उन्होंने रूसी सेना को बार-बार परास्त करके ध्वंस कर दिया। उनका युद्ध कौशल भी निराला था। किसी एक स्थान पर वह अपनी सेना को एकत्र करने लगते, उनको एकत्र होते देख कर शत्रु भी उनकी ओर को बढ़ता। तब वह उसे अपने साथ लिये हुए किसी उपयुक्त स्थान को हट जाते और वहा से शत्रु पर एकाएक टूट पड़ते थे। इसी कौशल से वह रूस की अपार सेनाओं का ध्वंस करने में सफल हुए थे।

परन्तु जब पश्चिमी युद्ध क्षेत्र में वर्डून में फाल्केनहेयन का पराजय हुआ और उसकी चोट से जर्मन सैनिक निरुत्साह हो गये तब हिंडेनबर्ग पूर्वीय युद्ध क्षेत्र से बुला कर वहां नियुक्त किये गये। उनकी नियुक्ति से जर्मन सैनिक उत्साह स भर गये। क्योंकि जर्मन जनता और सैनिकों का उनके साहस और कौशल पर अटल विश्वास था।

पश्चिमी युद्धक्षेत्र में पराजय

पश्चिमी युद्धक्षेत्र में भी हिंडनवर्ग ने अपने कौशल का काफी परिचय दिया। किन्तु यहां उन्हें वह सफलता प्राप्त न हो सकी। इसका कारण यह था कि इस युद्धक्षेत्र में मित्रराष्ट्र आपस में भेद भाव मिटाकर सगठित रूप से युद्ध कर रहे थे। इसके अतिरिक्त कैसर अपनी राय जरूर देते रहते थे। कैसर का ध्येय था कि चारों ओर से धावा बोल कर शत्रुओं की सारी शक्ति क्षीण कर देनी चाहिये। जर्मनी के लिये यही नीति काल स्वरूप प्रमाणित हुई। हिंडनवर्ग यद्यपि इसी नीति के अनुसार कार्य करते थे, किन्तु असफल होने पर पीछे लौटने के समय वह अपने बचाव की बात को भी नहीं भूलते थे। हार कर भागने की अवस्था में सैनिकों की रक्षा के लिये उन्होंने खाइयों का एक व्यूह तयार किया था, जो 'हिंडनबर्ग लाइन' के नाम से विख्यात है। इसी योजना के फलस्वरूप जर्मन लोग मित्र राष्ट्रों द्वारा सन १६१८ में बार २ बुरी तरह से हराये जाने पर भी तितर बितर होकर नहीं भागे।

जिस प्रकार सन् १८१३ में लिपजिक में 'राष्ट्रों के युद्ध' के बाद नेपोलियन बोनापार्ट का पतन निश्चित हो गया था, उसी प्रकार 'हिंडनबर्ग लाइन' के युद्ध के पश्चात् जर्मनी का पतन भी निश्चित हो गया था। अन्तर केवल इतना था कि सन् १८१३ में फ्रांस पर जर्मनी ने धावा किया था, और १६१८ में जर्मनी-द्वारा बार २ हार खाकर भी फ्रांस ने मित्र राष्ट्रों की सहायता से अपनी

जान हथेली पर धर कर जर्मनी पर धावा किया था।

जिस प्रकार लिप्ज़िक के युद्ध के बाद कुछ ही महीनों में नेपोलियन को राज त्याग करना पड़ा था, उसी प्रकार इस युद्ध के बाद क़ैसर को भी अपनी सारी आशाओं पर पानी फेर कर राज्य त्याग करने को विवश होना पड़ा। विकट 'हिंडेनबर्ग लाइन' के टूटने और जर्मनी के उस चोट को न सम्हाल सकने का दोष बहुत से विशेषज्ञ हिंडेनबर्ग को देते हैं। उनका कहना है कि उन्होंने इसका ध्यान नहीं रखा कि हार होने पर क्या स्थिति होगी। ख़ैर, कहने वाले चाहे जो कहें, वास्तव में तो यह उन्हीं के नाम का जादू था कि हारी हुई फौज जर्मनी तक अच्छी तरह वापिस आ सकी। हिंडेनबर्ग ने अपने भरसक, वह जो कुछ भी कर सकते थे, किया। उन्होंने जब विरोध करना व्यर्थ समझा तो उस धीरता का परिचय दिया, जिससे सारा संसार चकित हो उठा। जर्मनी का कल्याण उन्होंने इसी में समझा कि क़ैसर राज्य त्याग करें। इस पर क़ैसर हालैण्ड चले गये। अब लोग क़ैसर को डरपोक कह कर बदनाम करने लगे। यह बात हिंडेनबर्ग को असह्य हुई। उन्होंने क़ैसर के चले जाने का सारा उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले लिया। उन्होंने यह घोषित किया कि क़ैसर अपनी इच्छा से नहीं, वरन् उन्हीं की सलाह से अपना देश छोड़ कर हालैण्ड गये हैं। लोग यह सुन कर चकित से रह गये।

हिंडेनबर्ग का फिर अवसर ग्रहण करना

वारसाई की सन्धि हो जाने के पश्चात सन् १९१९ में

हिंडेनबर्ग वारसाई सन्धि के अनुसार सजा भुगतन के पश्चात् शेष जीवन को शान्तिके साथ व्यतीत करने के लिये हैनोवर चले आये।

हिंडेनबर्ग का राष्ट्रपति बनना।

सन् १६२५ में जर्मनी के प्रथम राष्ट्रपति एबर्ट की मृत्यु के बाद राजतन्त्रवादी यह प्रयत्न करने लगे कि होहनजोलर्न परिवार को शासन की बागडोर दी जावे। इसी लिये उन लोगों ने जारेस को राष्ट्रपति पद के लिये खड़ा किया। मगर जब प्रथम निर्वाचन में जारेस को पर्याप्त वोट नहीं मिले तो दूसरे निर्वाचन में हिंडेनबर्ग को खड़ा किया गया। वह २६ अप्रैल सन् १६२५ ई० को राष्ट्रपति चुने गये। हिंडेनबर्ग के जर्मनी का प्रेसीडेन्ट होने की खबर सुन कर अन्य देश वाले घबरा उठे। उन्हें डर हुआ कि यह राजभक्त योद्धा कैसर को जर्मनी में लाने की अवश्य चेष्टा करेगा। जर्मनी ने हिंडेनबर्ग का जी जान से साथ दिया और वह बहुमत से प्रेसीडेन्ट निर्वाचित किये गये।

उनकी राजभक्ति

किन्तु इस समय तक संसार में बड़े २ परिवर्तन हो चुके थे। हिंडेनबर्ग ने समझ लिया कि कैसर को गद्दी पर बैठाने की चेष्टा करने से जर्मनी का कल्याण नहीं होगा। इसके अतिरिक्त उन्हें जर्मन राष्ट्र के सन्मुख प्रजातन्त्र की रक्षा करने की शपथ भी याद थी। उन्होंने कोई ऐसा कार्य नहीं किया जिससे जर्मनी को बखेड़े में पड़ना पड़ता। कहा जाता है कि उनकी इस नीति से कैसर बहुत बिगड़े। उन्होंने हिंडेनबर्ग के सम्बन्ध में बहुत भला

बुरा भी कहा, किन्तु हिंडेनबर्ग ने क़ैसर पर कभी कोई दोषारोपण नहीं किया। इतना ही नहीं, बरन् वह मरते दम तक क़ैसर के शुभचिन्तक बने रहे, और मरने के कुछ ही घन्टे पहिले उन्होंने क़ैसर के पास अपनी अटल स्वामिभक्ति का सदेश भेजा था।

उनका स्वभाव

प्रेसीडेंट होने के बाद से मरते दम तक उनकी यही एक मात्र इच्छा थी कि किसी प्रकार जर्मनी की बिगड़ी हुई स्थिति सभल जाय। उनका ध्येय पितृभूमि का उत्थान करना था, किन्तु उन्होंने यूरोप की शान्ति को भंग करने का कोई कार्य नहीं किया। इतना ही नहीं, इन्होंने कई बार उसे बिगड़ते हुए देखकर संभाल लेने का सफल प्रयत्न किया था।

हिंडेनबर्ग में एक सब से बड़ा गुण यह था कि वह एक बार जिसका विश्वास कर लेते थे, उसका बराबर साथ देते रहने की भरसक कोशिश करते थे।

दूसरे वह एक सच्चे देशभक्त थे। वह अपने कर्तव्यपालन में शत्रुमित्र का भेद नहीं रखते थे। यदि उनको यह विश्वास हो जाता कि अमुक व्यक्ति से देश का भला होगा तो वह तुरन्त उस का साथ देने को तयार हो जाते थे, भले ही उससे उनका मतभेद रहा हो।

किन्तु जिस समय हिंडेनबर्ग को यह मालूम होता कि राष्ट्र का अमुक व्यक्ति से विश्वास उठ गया है तो फिर लाख कोशिश करने पर भी जनता की इच्छा के विरुद्ध वह कोई काम

करने को तयार नहीं होते थे। सन् १६३० की जुलाई में ब्रूनिंग की सरकार हार गई। उस समय हिंडेनबर्ग एक प्रकार से डिक्टेटर थे। सितम्बर के चुनाव में ब्रूनिंग के साथ बहुपक्ष नहीं था। देश का शासन प्रेसीडेंट के फ़र्मानों से हो रहा था। सन् १६३१ के मार्च में जर्मनी की पार्लियामेंट ने छै महीने तक न बैठने का निश्चय किया, किन्तु इसका विरोध जून में ही आरंभ हो गया। उस समय हिंडेनबर्ग ने चैंसेलर ब्रूनिंग को अधिकार दे दिया था कि यदि पार्लियामेंट सरकार की नीति का विरोध करे तो उसे भंग करके दूसरा चुनाव कराया जावे। किन्तु जब उन्होंने आगे चलकर देखा कि ब्रूनिंग की ओर किसी प्रकार भी बहुमत नहीं हो रहा है, तो उन्होंने तुरत ही जर्मनी के शासन की बागडोर दूसरे के हाथ में सौंप दी।

राष्ट्रपति पद के लिये उनका हिटलर को पराजित करना

इसी समय उनके राष्ट्रपतिपद की अवधि के दिन भी समीप आ गये। इस समय भिन्न २ दल सैनिक ढंग पर अपना सगठन कर रहे थे। जर्मनी में गृहयुद्ध छिड़जाने की आशंका से प्रेसीडेंट हिंडेनबर्ग ने निर्वाचन में फिर खड़े होने का निश्चय किया। इस चुनाव में तीन व्यक्ति उम्मेदवार थे—हिंडनबर्ग, हिटलर और थैलेमन। चुनाव में हिंडेनबर्ग को १,८६,५०,६४? हिटलर को १,३४,१७,४६० और थैलेमन को ३७,०५,?? वोट मिले थे। जर्मन शासनविधान के अनुसार किसी को भी काफ़ी वोट न मिलने से चुनाव दोबारा किया गया और १० अप्रैल

सन् १९३२ को वह साठ लाख वोटों के बहुमत से दूसरी बार जर्मन राष्ट्र के प्रेसीडेंट निर्वाचित किये गये।

हिटलर से मन्त्री बनने की बातचीत

हिंडेनबर्ग का काफी वृद्ध होने पर भी जर्मनी के शासन कार्य में काफी हाथ रहता था। जिस समय मतभेद होने के कारण ब्रूनिंग के मन्त्रिमण्डल ने अस्तीफा दे दिया, उस समय वॉन पैपेन को चैंसलर नियुक्त करके हिंडेनबर्ग ने सबको अचम्मे में डाल दिया था। किन्तु ३१ जुलाई के चुनाव में नाजीदल हिटलर की अध्यक्षता में रीश स्टाग में बहुसंख्या में हो गया। हिंडेनबर्ग ने हिटलर से प्रस्ताव किया कि वह वॉन पैपेन के साथ शासन-कार्य चलावे। किन्तु हिटलर ने इसको स्वीकार नहीं किया। हिटलर चाहता था कि मंत्रिमण्डल का नेतृत्व और सेना का भार उन्हें और उनके दल वालों को ही मिले। नाजियों की यह मांग स्वीकार नहीं की गई। हिंडेनबर्ग ने हिटलर को चेतावनी दी कि यदि वह गृह युद्ध करने का उद्योग करेंगे तो उनके विद्रोह को दबाने के लिये सैनिक शक्ति से काम लिया जावेगा। इससे पहिले ही वह हिटलर की तूफानी सेना को अवध घोषित कर चुके थे। इस बात का घोर प्रयत्न किया गया कि राष्ट्रपति वॉन पैपेन के मन्त्रिमण्डल को तोड़ कर हिटलर को मौका दें, किन्तु हिंडेनबर्ग ने किसी की सुनी।

मतभेद बढ़ता ही गया। आखिर नवम्बर में फिर चुनाव

करने का निश्चय किया गया। इस चुनाव में नाजी दल वाले ३४ सीट और खो बैठे। किन्तु हिटलर ने प्रेसीडेंट की शर्तों के अनुसार मंत्रिमण्डल में भाग लेने से इस समय भी इंकार कर दिया। मामला किसी प्रकार सुलझता दिखलाई नहीं देता था।

हिटलर का चैंसलर बनाया जाना

इसी बीच में नाजीदल का नेशनैलिस्ट पार्टी के साथ समझौता हो गया। अब दोनों मिल कर यह आरोप करने लगे कि सेना बर्लिन पर मार्च करके जेनेरल श्लीचर के नेतृत्व में सैनिक डिक्टेटरशाही स्थापित करने वाली है। जनता पर यह जादू काम कर गया और हिंडेनबर्ग ने श्लीचर को हटा कर हिटलर को चैंसेलर बना दिया।

रीशस्टाग के अग्निकाण्ड के पश्चात् नाजियों का प्रभुत्व काफी जम गया, यहां तक कि मार्च सन १९३२ के चुनाव के पूर्व नाजी लोग प्रेसीडेंट को घेर कर उन्हें पद-त्याग करने को बाधित करने का उपक्रम करने वाले थे। किन्तु यह षड्यन्त्र खुल गया और नेशनैलिस्ट दल वालों ने प्रेसीडेंट की सुरक्षा का प्रबंध कर दिया।

नाजियों के बार २ उत्तेजना देने पर भी हिंडेनबर्ग कभी भी अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। इसके विरुद्ध जब उन्होंने देखा कि नाजियों को अवसर देने का समय आ गया है और संभव है कि यह जर्मनी में शांति स्थापित कर सकें। तब २४ मार्च १९३२ को उन्होंने हिटलर को एक प्रकार का डिक्टेटर बना दिया।

हिटलर के हत्याकांड में तटस्थता

हिंडेनबर्ग का कार्य महान् था और उसमें उनको अनेक भर्रों में सफलता भी मिल चुकी थी। जर्मनी में अराजकता उठ खड़ी होने की आशंका से ही उन्होंने हिटलर के जून जुलाई १६३४ के हत्याकांड में भी बाधा नहीं डाली।

हिंडेनबर्ग का देहांत

हिंडेनबर्ग का देहान्त तारीख २ अगस्त सन् १६३४ ई० को हुआ था। मरते समय उनकी अवस्था ८६ वर्ष सात महीने की थी। इनकी पिता की मृत्यु भी ठीक उसी अवस्था में हुई थी। हिंडेनबर्ग का नाम ससार में कर्तव्यनिष्ठा और देशभक्ति के लिये सदा अमर रहेगा। जर्मन राष्ट्र के इतिहास में हिंडेनबर्ग का नाम बिस्मार्क के बाद सबसे ऊचे स्थान पर लिखा जावेगा। यद्यपि पतित और पददलित जर्मनी को फिर से जीवन दान देने का श्रेय हिटलर को है, तो किन्तु यदि हिंडेनबर्ग न होते तो सभव है कि जमनी महायुद्ध के पश्चात् इससे भी बुरी परिस्थिति में फस जाता।

चौबीसवां अध्याय

राष्ट्रपति हिटलर और उसका व्यक्तित्व

हिंडेनबर्ग के देहान्त के पश्चात् हिटलर चैंसेलर के साथ २ राष्ट्रपति भी बनाया गया। इस समय संसार में कोई ऐसा व्यक्ति है, जिस पर हिटलर के समान समस्त संसार का ध्यान इतना अधिक लगा हुआ हो? वास्तव में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जिसके अनुपम गुणों का वर्णन करना इतना कठिन हो। प्रत्येक व्यक्ति जो हिटलर और उसके अनुयाइयों के आन्तरिक सम्बन्ध को जानता है यह समझ लेगा कि हिटलर के अनुयाइयों का यह स्वाभाविक विश्वास है कि उनके नेता में सब गुण पूर्णता को पहुँच गये हैं। जिस प्रकार रोमन कैथोलिक लोग पोप को धर्म और नैतिक आचरणों के विषय में सब प्रकार से पूर्ण विश्वास योग्य समझते हैं उसी प्रकार नेशनल सोशियलिस्ट लोगों का आन्तरिक विश्वास

है कि राष्ट्र के राष्ट्रीय और सामाजिक स्वत्वों के विषय के राजनीतिक तथा दूसरी बातों में उनका नेता पूर्णतया विश्वास योग्य है। अपने अनुयाइयों पर उसके इस भारी प्रभाव का क्या रहस्य है? क्या वह उसके उत्तम मनुष्यत्व, उसके आचरण की प्रबलता अथवा उसकी अनुपम नम्रता में है? क्या वह उसकी इस राजनीतिक विशेष योग्यता में है, जिस से वह देख लेता है कि अब कोई कार्य किस प्रकार होने वाला है? अथवा उसकी अपने अनुयाइयों में न झुकने वाले विश्वास में है? किसी के मन में कोई भी योग्यता क्यों न हो वह इसी परिणाम पर आवेगा कि इन सब गुणों का साराश यह नहीं है। इस अनुपम व्यक्ति के अन्दर कोई रहस्यपूर्ण, अवक्तव्य और लगभग अबुद्धिगोचर गुण है, जिसका अनुभव नहीं किया जा सकता, जिसको बिल्कुल ही नहीं समझा जा सकता। उसके अनुयायी ऐडल्फ हिटलर में इस कारण विश्वास करते हैं कि उनको यह पूर्ण हार्दिक विश्वास है कि उसको परमात्मा ने जर्मनी की रक्षा करने के लिये भेजा है।

हिटलर का व्यक्तित्व

जर्मनी के लिये यह सौभाग्य की बात है कि हिटलर के अंदर एक वेगवान तर्कपूर्ण विचारक, एक वास्तविक गंभीर दार्शनिक, और एक लोह—निश्चय वाले मनुष्य के दुर्लभ गुणों का सम्मिश्रण उच्च परिमाण तक मजबूती से भरा हुआ है। उत्तम गुणों के साथ २ कार्य करने के निश्चय की समता कहीं २ ही

देखने में आया करती है। हिटलर में सब भिन्न २ बातें पूर्णता को पहुची हुई हैं।

जेनेरल गोएरिंग उसके विषय में लिखते हैं — "दसियों वर्ष से मैं उसके साथ कार्य कर रहा हूँ। उस से मिल कर प्रतिदिन मुझको एक नया और आश्चर्यजनक अनुभव होता है। मैंने उसे जिस क्षण प्रथमवार देखा और उसके विषय में सुना मेरा शरीर और आत्मा उसके साथ उसी क्षण से हो गया। मेरे बहुत से साथियों की भी यही दशा हुई। मैंने उत्साह पूर्वक उसकी सेवा करने की प्रतिज्ञा की और तब से निर्बाध रूप से मैं उसका अनुगमन कर रहा हूँ। गत महीनों में मुझे अनेक उपाधियां और सम्मान प्राप्त हुए हैं। किन्तु किसी उपाधि या सम्मान से मुझे इतना अभिमान नहीं हुआ जितना मुझे जर्मन जाति द्वारा दी हुई 'हमारे नेता का सबसे अधिक आज्ञाकारी 'सहायक' की उपाधि से हुआ है।

यह शब्द अपने नेता से मेरे सम्बध को प्रगट करते हैं। दश वर्ष से भी अधिक से मैंने निष्कम्प आज्ञाकारिता से उसका अनुगमन किया है, और इसी अनिर्वचनीय भक्ति के साथ मैं अंत तक उसका अनुगमन करूँगा। किन्तु मैं जानता हूँ कि नेता को भी मेरे प्रति उतना ही भारी विश्वास है और मैं जानता हूँ और अभिमान से कह सकता हूँ कि मुझमें अपने नेता का प्रशंसातीत विश्वास है। मेरे सारे कार्य का आधार मेरे लिये यही विश्वास है। जब तक मैं इस विश्वास पर दृढ़ हूँ मुझे इस बात

की कोई चिंता नहीं है कि मेरे मार्ग में क्या है। न तो अधिक कार्य, न बाहर के विघ्न और न किसी और प्रकार के विघ्न ही मेरे पास फटक सकते हैं। हमारे विरोधी इस बात को भी जानते हैं और इसी कारण से इस विषय में वह इतने जंगलीपन और निर्लज्जता से आंदोलन करते हैं। किसी विदेशी समाचार पत्र में आए दिन ऐसे समाचार निकलते रहते हैं कि गोयरिंग और हिटलर का झगड़ा बढ़ गया है अथवा ऐसी २ रिपोर्ट तो सबसे अधिक आती है कि हिटलर गोयरिंग को गिरफ्तार करना चाहता था, किन्तु पुलिस ने गिरफ्तारी की आज्ञा को मानने से इकार कर दिया। अथवा यह कि गोयरिंग ने हिटलर को पदच्युत करने का प्रयत्न किया, किन्तु उद्योग सफल न हो सका। मुझे ईर्ष्यालु, सदिग्ध और प्रधान शक्ति को अपने हाथ में लेने के अभिलाषी के रूप में प्रगट करने का उद्योग किया जाता है। अथवा यह कहा जाता है कि नेता को मेरी शक्ति में कोई भी वृद्धि होने से ईर्ष्या होती है। प्रत्येक व्यक्ति जो जर्मनी की परिस्थिति से परिचित है इस बात को जानता है कि हम में से प्रत्येक के पास उतना ही अधिकार रहता है जितना उसको हमारा नेता देना चाहता है। जब तक कि यह नेता के पीछे अथवा नेता उसके साथ न हो किसी को भी राज्य के क्रियात्मक कार्य का कोई अधिकार नहीं दिया जाता। किन्तु नेता की इच्छा अथवा अनुमति के बिना वह बिल्कुल ही निशक्त रहता है। नेता के विषय में यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि वह

जिसको चाहे हटा सकता है। उसकी साख और उसका अधिकार नि:सीम है। किन्तु संभवतः इतना अधिक अधिकार और शक्ति सम्पन्न होने के कारण ही वह उससे बहुत कम काम लेता है।"

यदि हिटलर किसी व्यक्तिको कोई पद दे देता है तो वह व्यक्ति तब तक पदच्युत नहीं किया जाता जब तक वह धोखा देने का अपराधी न ठहराया गया हो अथवा वह पूर्णतया अयोग्य प्रमाणित न हो। उसने अपने आधीनों की गलतियों को सदा ही अत्यन्त उदारता से क्षमा किया है। कितनी ही बार मुस्कराते हुए उसने गलतियों को छोड़ दिया है और जब कभी उससे उत्तरदायी को प्रथक् करने का अनुरोध किया गया तो वह कह देता है। 'प्रत्येक व्यक्ति में त्रुटियां होती हैं और प्रत्येक व्यक्ति गलतियां करता है। मैं उस व्यक्ति की कीमत करता हूं जो कम से कम, काम तो कर सकता है। वह गलती कर सकते हैं, काम को गलत ढंग पर भी कर सकते हैं, किन्तु सब से अधिक आवश्यकता यह है कि वह काम करने के योग्य तो हैं।' प्रत्येक अनुयायी के हृदय में उत्तरदायित्व का इतना आश्चर्यजनक भाव है कि कोई षड्यन्त्र, कोई गप्प अथवा कोई बुराई उसके वश में नेता के सन्मुख बाधा नहीं पहुंचा सकती। ऐडल्फ हिटलर का शुद्ध आचरण इस प्रकार के वार्तालाप के लिये अप्रवेस्य है। वह ऐसी बातों को सुनता ही नहीं। स्वयं ऐडल्फ हिटलर भी ऐसी महान आत्मा है कि वह अपने साथियों

की योग्यता, प्रतिभा या उनकी जनता में मान्य पर कभी ईर्ष्या नहीं करता। इसके विरुद्ध वह ऐसे व्यक्तियों से और अधिक प्रसन्न होता है। क्योंकि उनसे वह और अधिक विशेष कार्यों की आशा करता है। नेता रूप में यह भी इसका एक गुण है कि वह ठीक व्यक्तियों को उपयुक्त स्थान में नियुक्त करता है। हिटलर किसी व्यक्तिगत अनियन्त्रितता (डिक्टेटरी) को पसंद नहीं करता। वह अपने साथियों के ऊपर शासन से राज्य करके सिंहासन पर बैठना नहीं चाहता, न वह यह चाहता है कि लोग उससे डरा करें। वह चापलूसी करने वालों और स्थान की लालसा वालों से घृणा करता है। ऐडल्फ हिटलर का आदर्श जैसा कि उसने कई बार बतलाया है, सदा यह रहा है कि कार्यकर्ता लोग योग्य और दृढचित्त हों और उनके ऊपर आवश्यक रूप से एक नेता हो। इस सम्बन्ध में उसने कई बार 'बादशाह आर्थर की गोल मेज' का उल्लेख किया है। ऐडल्फ हिटलर कभी भी मंत्रिमण्डल कमीशन अथवा सर्वसाधारण असेम्बली का सभापति, नेता अथवा प्रधान चुने जाने की आवश्यकता नहीं समझता। वह जहां कहीं भी है, नेता है। उसका अधिकार अविच्छिन्न होता है। वह एक आश्चर्यजनक प्रकार से अपने आदमियों को, चाहे वह मन्त्री लोग हों अथवा साधारण तूफानी सेना वाले हों, अपने आधीन कर लेता है। उसकी व्यक्तिगत अनुपम प्रतिभा प्रत्येक को उसके जादू के वश में कर देती है। वह अपने सहायकों को उनके अपने कार्य और कर्तव्य में अधिक

से अधिक स्वतन्त्रता देता है। वहां वह पूर्णतया स्वतन्त्र होते हैं, और यदि किसी समय उसे वास्तव में ही हस्तक्षेप करना अभिष्ट होता है तो वह उसको ऐसे ढंग से करता है कि सम्बंधित व्यक्ति को लेशमात्र भी बुरा नहीं जान पड़ता। वरन् इसके विरुद्ध वह अपने को नेता के और भी समीप समझने लगता है। हिटलर के आसपास बने रहने वाले वह योद्धा हैं जो गत पन्द्रह वर्षों के युद्धों में बड़े कष्टों को सहन करके फौलाद के समान कठोर हो गये हैं। वह लोग रूखे और उद्धत हैं, किन्तु अपने अन्दर पूर्ण हैं। उनमें से प्रत्येक अपने २ कार्यक्षेत्र में शक्ति भर कर्त्तव्य पालन कर रहा है। उनमें से प्रत्येक के हृदय में अपने देश और नेता की सेवा करने का उद्देश्य भरा हुआ है। यह हो सकता है कि किसी विशेष प्रश्न पर उनमें मतभेद हो, किन्तु बड़े उद्देश्य के विषय में सभी संयुक्त हैं। और यहां पर भी नेता का शासक-व्यक्तित्व और उसके लिये प्रेम इन सबको एक विचार और एक निश्चय वाला बनाये रहता है। हिटलर की अभिलाषा सदा ही सावधानी से प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्य के लिये सबसे अच्छा आदमी देखने की रहती है। तब उसको इस बात से अधिक और कोई प्रसन्नता नहीं होती कि वह ऐसे निर्वाचन म निराश नहीं हुआ।

मन्त्रीमडल की बहुत सी बैठकें अभी तक हो चुकी हैं, और उनमें बहुत सा काम हो चुका है। उनसे बहुत से महत्त्वपूर्ण कानून बनाये जा चुके हैं। इस मन्त्रीमण्डल का सदस्य होना और

इसमें दूसरे मन्त्रियों के साथ कार्य करने की अनुमति मिलना वास्तव में प्रसन्नता की बात है। यहां वह लोग व्याख्यान सुनने में नहीं पड़ते। यहां दलों के दृष्टिकोण अथवा विशेष स्वत्वों के के विषय में कुछ नहीं कहा जाता। उसमें सहमत न होने योग्य मतभेद नहीं होता। यहां तो सबके सन्मुख जनता के हित का ही प्रश्न रहता है। मन्त्रिमण्डल का कोई सदस्य कभी इस बात को नहीं भूलता कि उनके नेता ने सदा ही किस प्रकार परिस्थित को ठीक २ समझा है, और किस प्रकार उसकी भविष्य वाणियां ठीक २ उतरीं। विवादों में महत्त्वपूर्ण और आवश्यक विषय का उपसंहार करने में वह सबको सहमत बनाता हुआ किस प्रकार सफल होता रहा। मन्त्रीमंडल की बैठक काफी रात तक होती रहती है। किन्तु कितना ही भारी काम होने पर भी उनमें से प्रत्येक उसमें अंत तक दत्तचित्त रहा और यह दिखला देता है जैसे समय के पख लग गये हों।

यदि किसी की इच्छा ऐडल्फ हिटलर का वर्णन करने की हो कि वह किस प्रकार का व्यक्ति है, और वह किस प्रकार कार्य करता है तो एक पूरी पुस्तक लिखनी पड़ेगी, उसका दैनिक जीवन कुछ इस प्रकार का है जो सदा बदलता रहता, सदा नया और सदा अस्थिर है। लोग आश्चर्य, प्रेम और भारी विश्वास में भरे हुए देखते हैं कि उनका नेता कार्य के उस भारी बोझ को निपटा रहा है। दिन के प्रत्येक घंटे और बहुत रात गये तक उसके देशवासी उस के महल के सन्मुख खड़े रहते हैं।

वह वहां इस विचार से खड़े रहते हैं कि उन दीवारों और खिड़कियों के दूसरी ओर उनका नेता जनता के लिये, उनके लिये जो बाहर खड़े हुए प्रतीक्षा कर रहे हैं, काम कर रहा है। कोई गुप्त मंत्र उनको वहां इस प्रकार खड़ा रखता है जिस प्रकार वह जमीन में गड़े हुए हों, और यदि वह यह सोचते हैं कि उन्होंने सैकिंड के एक भाग के लिये भी अपने प्यारे नेता की झलक खिड़की पर पा ली तब तो उत्साह का तूफान टूट पड़ता है। तमाम जर्मनी भर में यही होता है। जहां कहीं भी वह जाता है वहीं भारी भीड़ जमा हो जाती है और प्रसन्नता मनाई जाती है। सब कोई वहीं आकर अपने नेता का दर्शन करना चाहते हैं। उनकी और विशेष कर नवयुवकों की आंखें चमकने लगती हैं। अपनी नि:सीम कृतज्ञता में स्त्री और पुरुषों के झुंड प्रसन्नता की सीमा पर पहुंच जाते हैं। जनता के अंदर विद्युत्प्रवाह के समान यह समाचार फैल जाता है कि 'नेता आ रहा है।' जर्मनी के उत्तर, दक्षिण, पूर्व या पश्चिम में नगर या गांव में सब जगह यही होता है। चाहे वह विद्यार्थियों में अथवा व्यापार के नेताओं में भाषण करता हुआ हो, अथवा वह पीछा की नकली लड़ाई पर मार्च करती हुई सेनाओं के अन्दर से मोटर पर जा रहा हो अथवा चाहे वह जमन कारखानों में मजदूरों में जाता हुआ हो—सब कहीं यही दृश्य होता है। सब कहीं उस अनुपम उत्साह का दृश्य उपस्थित होता है, जो केवल गाढ़ विश्वास और अधिक से अधिक कृतज्ञता से ही हो सकता है।

जर्मन लोग जानते हैं कि उनका फिर एक नेता है। जर्मन लोग इस बात के लिये धन्यवाद देते हैं कि अन्त में एक व्यक्ति ने अपने लौहहस्त से शासन की बागडोर को थाम लिया है। जर्मन लोग फिर आराम की सांस लेते हैं कि अन्त में अब एक व्यक्ति उनकी आवश्यकता और कष्ट को दूर करने के लिये कार्य कर रहा है और अब उनको स्वयं अपना मार्ग ढूंढना नहीं पड़ेगा। जर्मनी की पिछली शासन प्रणालियों की सबसे बड़ी गलती यह थी कि लोग स्वयं शासन करना, नेतृत्व करना चाहते थे, किन्तु हिटलर के शासन में जनता अनुगमन कराये जाना तथा शासित होना चाहती है। सत्य तो यह है जर्मन जनता का अपने नेता में पूर्ण विश्वास है।

हिटलर एक असाधारण व्यक्ति है। उसकी महान विजय का आधार उसकी व्यक्तिगत प्रतिभा और प्रेरणा है। कोई भी भावुकता, निर्बलता अथवा आपत्ति उसे विचलित, अधीर अथवा विपथ नहीं कर सकती। उसके स्वभाव में धार्मिकता और गम्भीरता है।

हिटलर के जीवन की दूसरी विशेषता यह है कि वह बाल ब्रह्मचारी है। उसका हृदय देशभक्ति से इतना ठसाठस भरा हुआ है कि विवाहित जीवन के लिये उसमें कहीं भी स्थान नहीं है। इतना होने पर भी यह बात अत्यंत आश्चर्यजनक है कि स्वयं अविवाहित रहते हुए भी हिटलर ने जर्मन स्त्रियों के लिये कुमारी न रहना एक प्रकार से अनिवार्य बना दिया है। हिटलर के मनमें

स्त्री जाति के लिये बड़ा भारी मान है। वह समस्त स्त्री जाति को माता के रूप में देखता है। वह उन्हें जाति की उत्पादिका समझता है, न कि प्रेमपात्री अथवा पुरुषों की संगिनी। सिगरेट पीना तथा नशीली वस्तुओं का उपयोग स्त्रियों के लिये सर्वथा वर्जित है।

हिटलर सब प्रकार की विलासिता से दूर है। वह लगातार कई २ घंटों तक कार्य किया करता है तथा आमोद प्रमोद और आराम बहुत कम करता है। भोजन तो वह अत्यन्त सादा करता है।

हिटलर अपने दफ्तर में प्रातःकाल ब्राह्म मुहूर्त से सायंकाल तक अपनी मेज पर बैठा हुआ काम करता रहता है। लगभग एक बजे वह अपने कुछ मित्रों के साथ भोजन करता है। चाय के समय वह पैदल ही सड़क को पार करके नाजीपार्टी के पुराने प्रधान केन्द्र कैसरहाफ होटल में जाता है, जहां वह हल्का भोजन करते समय गाना सुनता है।

वह न कभी धूम्रपान करता और न शराब ही पीता है। हिटलर मांस भक्षण का विरोधी है और स्वयं भी मांस नहीं खाता; यद्यपि अंडों को वह अन्य यूरोपीय व्यक्तियों के समान मांस में नहीं गिनता।

प्रातःकाल के भोजन में वह प्रात अंडे, दूध, डबल रोटी और मुरब्बा लेता है। दोपहर के भोजन में वह शाक, सब्जियां तथा कुछ अन्य वस्तुएं लेता है। भोजन के सादेपन में उसकी बहुत प्रशंसा की जाती है। उसने निरामिष भोजन का प्रचार भी किया है।

वह एक स्वस्थ पुरुष और गठीला नवयुवक है। उसके नेत्रों और चेहरे में आकर्षण शक्ति है। वह प्रत्येक व्यक्ति से बड़े प्रेम और उत्साह के साथ मिलता है। उसकी भाषण शैली इतनी उत्तम है कि आज संसार में उसके समान बोलने वाला कोई नहीं है। कठिन से कठिन प्रश्न का उत्तर भी वह उसी समय दे देता है।

हिटलर में नेतापन के सभी गुण हैं। उसमें स्फूर्ति है, वीरता है और युद्ध कौशल है। वह दृढ़व्रती, गंभीर, स्थिरचित्त तथा दूरदर्शी है। उत्साह के साथ २ उसमें विवेक भी है। मातहतों के प्रति उसे हार्दिक प्रेम है। दम्भ और कपट का तो उसमें नाम तक नहीं है।

उसका सारा समय देश सेवा में ही व्यतीत होता है। उसके जीवन का ध्येय जर्मनी को संसार के समस्त राष्ट्रों के शिखर पर पहुँचा देना है।

पैंतीसवां अध्याय

वर्तमान जर्मनी

वर्तमान जर्मनी नाज़ी जर्मनी है। इसका उत्थान तथा निर्माण हिटलर के नाज़ीवाद द्वारा हुआ है। नाज़ीवाद का विकास जर्मनी के इतिहास में एक विचित्र घटना है; क्योंकि जर्मनी जैसे पीड़ित तथा पददलित देश से उन्नति की आशा कभी नहीं की जाती थी।

इस राष्ट्रजागृति का कारण वास्तव में सन् १६१६ की वारसाई की सन्धि है। इस सन्धि ने जर्मनी का अस्तित्व नष्ट करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी थी। इस सन्धि की कड़ी शर्तों ने ही जर्मनी को उत्तेजित किया। इस समय प्रत्येक जर्मन यह अनुभव करता है कि वारसाई की सन्धि जर्मनी के नाम पर कलंक है।

राष्ट्र संगठन

साम्यवादी प्रजातन्त्र की स्थापना के समय जर्मनी सतरह भागों में विभक्त था। किन्तु आज वह एक सूत्र में बंधा हुआ है। वहाँ की प्रधान शासनसभा रीशस्टाग में समस्त जर्मनी के प्रतिनिधि हैं। अतएव इस समय सब कुछ इसी के आधिपत्य में है। जर्मनी की प्रत्येक रियासत का एक गवर्नर होता है, जिसे प्रजातन्त्र के राष्ट्रपति हर हिटलर की आज्ञानुसार कार्य करना पड़ता है। जर्मनी की वर्तमान् शासन प्रणाली में हिटलर राष्ट्रपति तथा चॅंसेलर है। फलतः वह जर्मनी का अनियंत्रित अधिकारों वाला डिक्टेटर है। इसी डिक्टेटरी द्वारा जर्मनी का संगठन हुआ है। जर्मनी का यह संगठन यूरोप के इतिहास में एक मार्के की बात है। इस समय संगठित जर्मनी बड़ी भारी उन्नति कर रहा है।

जर्मनी और यहूदी

जैसा कि पीछे बतलाया जा चुका है हिटलर जर्मनी में जर्मनों के अतिरिक्त विदेशियों को बसने देना नहीं चाहता। यहूदियों के लिये तो जर्मनी इस समय नरक से भी अधिक यंत्रणा का स्थल बन गया है। हिटलर ने समस्त यहूदियों को तथा २ अक्तूबर सन् १९१४ ई० के पश्चात् जर्मनी में आकर बसने वाले ईसाइयों तक को जर्मनी से निकाल दिया है। यद्यपि हिटलर की इस घोषणा से सारे यूरोप में कोलाहल मच गया, किन्तु हिटलर सदा अपने निश्चय पर अटल रहता है। केवल नवम्बर

१६३३ ई० में ही जर्मनी से निकाले हुए यहूदी, ईसाई तथा अन्य विदेशियों की सख्या तीस सहस्र थी। यहूदियों के हटने से जमनी में बेकारी भी बहुत कुछ कम हो गई है। क्योंकि उनके रिक्त स्थान बेकार जर्मनों को ही दिये गये हैं।

प्रेस नियंत्रण

जैसा कि पीछे दिखलाया जा चुका है हिटलर समाचार पत्रों पर बड़ी कड़ी निगाह रखता है। किसी विदेशी को जर्मनी में पत्र-सम्पादन की आज्ञा नहीं। विदेशी साहित्य, पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएं आदि प्रजातन्त्र की आज्ञा के बिना जर्मनी में नहीं आ सकते। जर्मन प्रजातन्त्र के विरुद्ध किसी प्रकार के विचार प्रगट नहीं किये जा सकते। पत्र-पत्रिकाओं में जर्मन भाषा को ही स्थान दिया जा सकता है। हिटलर निकटवर्ती राष्ट्रों में भी जर्मन भाषा का प्रचार करता रहा है, क्योंकि जर्मन साहित्य द्वारा जब उनमें जर्मन-सभ्यता फैल जावेगी, तो वे जर्मनी से स्वतः ही प्रेम करने लगेंगे।

सामाजिक उन्नति

जर्मनी में सामाजिक उन्नति भी बड़ी तेजी से हुई है। जर्मन लोग सादा जीवन व्यतीत करते हैं। स्थान २ पर व्यायाम के अखाड़े खुले हुए हैं। मांस तथा मदिरा का प्रयोग बहुत कम किया जाता है। स्त्रियों को दफ्तरों अथवा फैक्टरियों में काम करने की आज्ञा नहीं। यहां तक कि घरेलू काम करने वाली नौकरियां तक हटा दी गई हैं। कोई जर्मन विदेशी स्त्री से विवाह

नहीं कर सकता। स्त्रियों को यहां भारतवर्ष के समान सन्तान पालन तथा गृहस्थ का काम सौंपा गया है। स्त्रियों को विलासिता की सामग्री में लाने से रोका गया है। वह पाउडर लगा कर बाहिर नहीं निकलतीं और न सिगरेट आदि पीती हैं।

जन संख्या

नाज़ी लोग युद्ध की सुविधा के लिये जर्मनी की जन संख्या भी बढ़ाना चाहते हैं। उनका आदर्श है कि प्रत्येक जर्मन बहुसन्तान वाला हो। विवाह करने वाले युवक युवतियों को राज्य की ओर से ५० पौंड उधार दिये जाते हैं। विवाह न करने वालों पर टैक्स लगाया जाता है। उद्देश्य यह है कि आठ करोड़ जर्मन भाषा-भाषी बढ़ कर ७५ करोड़ हो जावें।

सैनिक संगठन

वारसाई की संधि से जर्मनी को केवल एक लाख सेना रखने की ही अनुमति मिली थी। किन्तु हिटलर ने उक्त सन्धि का निरादर करके अपने यहां सरकारी सेना के अतिरिक्त बारह लाख आदमी वर्दी वाले हथियारबन्द और युद्ध विद्या में कुशल सन् ३४ में ही तयार कर लिये थे। उस समय जर्मनी में सरकारी एक लाख सेना के अतिरिक्त प्रशियन पुलिस के नाम पर एक लाख चालीस हजार आदमी थे। खाकी कमीज की तूफानी सेना में उस समय चार लाख साठ हजार जवान थे। काले कोट की नाज़ी सेना दो लाख थी। फौलादी टोप वाले सैनिक भी दो लाख थे। श्रमजीवियों की फौज दो लाख तीस हजार तक पहुंच गई थी। यद्यपि संगठन के नाम पर यह सब सेनाएं बाद में तोड़ दी

गई, किन्तु देश में सैनिक शिक्षा अनिवार्य होने के कारण यह संख्या कम न होकर उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है। हिटलर ने एक पान्तर सेना का संगठन भी किया है। इस सेना में सात वर्ष से लेकर अट्ठारह वर्ष तक के लड़के लड़कियां शामिल किये जाते हैं। सन् ३४ में इनकी संख्या भी पन्द्रह लाख तक पहुंच गई थी। इस प्रकार उस समय जर्मनी में २८ लाख सैनिक थे। जर्मन प्रजातन्त्र की आबादी पांच करोड़ है। यदि इस आबादी में ढाई करोड़ पुरुष मान लिये जावें तो इनमें २८ लाख अर्थात प्रति बारह में कम से कम एक व्यक्ति अवश्य ही सैनिक मिलेगा।

ख्वाकी कमीज वाले तूफानी सैनिकों के विषय में पीछे पर्याप्त रूप से बतलाया जा चुका है। काले कोट की वर्दी वाले सैनिकों का संगठन जेनेरल गोर्ण्रिंग ने किया था। स्टेलहेल्मेट के फौलादी टोप वाले सैनिक भी उत्तम सैनिक शिक्षा पाये हुए हैं इस सेना में राजकुमार, रईस और राजाओं के लड़के, व्यापारियें और उच्च कुटुम्ब वालों के नवयुवक भर्ती होते रहे हैं। या तीनों सेनाएं एक प्रधान सेनापति के आधीन थीं। उपसेनापतियें की सूची में जर्मन क़ैसर के पुत्र प्रिंस आगस्ट विलियम, प्रिंस फिलिप्स आदि के नाम भी हैं।

यह सारी सेनाएं बारह घंटे के नोटिस में एकत्रित की जा सकती हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा

नाजी लोगों का विश्वास है कि जर्मन-विश्वविद्यालयों को

सैनिक और सेनापति उत्पन्न करने चाहियें। स्कूलों में जो खेल सिखाये जाते हैं उनमें भी सैनिकता पाई जाती है। बम फेंकना आदि तो यह खेल २ में ही सीख जाते हैं। विश्वविद्यालयों में प्रत्येक विभाग में विशेष सैनिक व्याख्यान दिये जाते हैं। जिनमें कुछ निम्न लिखित हैं —

(१) चिकित्सा विभाग में 'जहरीली गैस' पर प्रोफेसर वहरेच की व्याख्यानमाला।

(२) इतिहास विभाग में (क) "सैनिक भूगोल और सैनिक नीति" पर डाक्टर वॉन नीडर मेयर का भाषण। (ख) "प्राचीन समय में युद्ध कला और कपट युद्ध" पर प्रोफेसर बयर का भाषण। (ग) इतिहास के चार महान् सैनिक युद्धों का महत्त्व।

(३) साइन्स विभाग में "सैनिक कौशल, गणित और पदार्थ विद्या से उसके सम्बन्ध" पर जनरल कार बेकर का भाषण।

(४) रसायन शास्त्र में "जहरीली गैस से बचाव कैसे किया जाय" इत्यादि स्कूलों में गैस, बम आदि का बनाना सिखाया जाता है। सैनिक लोग विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर बना कर भेजे जाते हैं। *इस समय जर्मन विश्वविद्यालय पूर्णतया सैनिकों के* हाथ में है।

श्रमजीवियों का संगठन

पहली मई सन् १९३४ से हिटलर ने जर्मनी के श्रमजीवियों

का संगठन इस प्रकार किया है कि राष्ट्र पूंजीपतियों से पूरा पूरा फ़ायदा उठा सके और श्रमजीवियों के अधिकार का अपहरण भी न हो।

जर्मनी के उद्योग और व्यवसाय १२ हिस्सों में बांट दिये गये हैं—सात व्यवसायिक और पांच औद्योगिक विभाग। जो यह हैं—

(१) कोयला, लोहा और फ़ौलाद, (२) मशीन और बिजली की चीज़ें; (३) लोहा और अन्य धातुओं का माल; (४) पत्थर, ईंट, लकड़ी और इमारत का सामान, (५) रसायन, तेल और काग़ज़, (६) चमड़ा और कपड़े का व्यवसाय, (७) खाद्य पदार्थ। पांच औद्योगिक व्यापार यह हैं—(१) हाथ के उद्योग धन्धे, (२) व्यापार, (३) बैंकिंग, (४) बीमा, (५) रेलगाड़ी और अन्य सवारियों का काम। इन सब का प्रबन्ध निम्न प्रकार से किया गया है:—

प्रत्येक उद्योग, व्यवसाय अथवा व्यापार का एक 'नेता' होता है। जिस व्यवसाय में २० आदमी से अधिक काम करें, उस व्यवसाय का मालिक नाज़ी परिभाषा के अनुसार 'नेता' होता है। उसके ऊपर नाज़ी आदर्शवाद के सभी उत्तरदायित्व आते हैं। कारखानों के श्रमजीवी 'अनुयायी' कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त तीन और संस्थाएं होती हैं, जिनकी सहायता से नाज़ी सम्प्रदाय ने मज़दूरों के स्वत्वों की रक्षा करने की योजना बनाई है। इनमें से एक अन्तरंग सभा, दूसरी श्रमनिक्षेप, और तीसरी

औद्योगिक न्यायालय है। अन्तरंग सभा व्यवसाय के नेताओं को व्यवसाय चलाने में उचित सलाह देती है, जिससे व्यवसाय के उत्तमता से चलने के साथ २ कार्यकर्ताओं में सहयोग और पारस्परिक सद्भावना बनी रहे, एवं श्रमजीवियों को कारखानों में आराम से श्रम करने का अवसर मिले। अन्तरंग सभा का निर्वाचन प्रतिवर्ष मार्च मास में व्यवसाय के मालिक और नाजियों द्वारा स्थापित मजदूर सभाएं किया करती हैं। यदि 'अनुयायी' लोगों को अन्तरंग सभा का निर्वाचन पसंद न आवे तो वह लोग श्रमनिक्षेप के सामने अपील कर सकते हैं। यदि अन्तरंग सभा को नेता अर्थात् मालिक का कोई भी प्रबन्ध आपत्तिजनक जान पड़े तो इस सभा को 'निक्षेप' के सामने अपील करने का अधिकार है। इस दशा में 'निक्षेप' का यह कर्तव्य होगा कि वह तहकीकात करके राज्य की ओर से इस मामले का उचित और न्यायपूर्ण फैसला करे।

निक्षेप में तेरह आदमी होते हैं, जिन्हें चैंसेलर तथा राष्ट्रपति हिटलर स्वयं चुनते हैं। प्रत्येक जिले का श्रमनिक्षेप पृथक् २ होता है। निक्षेपों का उद्देश्य अपने २ जिलों में व्यापारिक शान्ति रखना तथा पूंजीपतियों को श्रमजीवियों के स्वत्वों के ऊपर हस्तक्षेप करने से रोकना है। निक्षेप अन्तरंग सभाओं की कार्यवाहियों पर भी देखरेख तथा नियंत्रण रखती हैं। यही निक्षेप मजदूरी आदि की संख्या के सम्बन्ध में भी नियम बनाती

है और इस बात का प्रबन्ध करती हैं कि समस्त व्यवसायी उन नियमों का पालन करें।

औद्योगिक न्यायालय बड़ी विचित्र संस्था होते हैं। यह संस्थाएं व्यापारिक नेताओं पर नियन्त्रण रखती हैं। इनको उन पर मुकदमा चलाने का अधिकार है।

बेकारी की समस्या

नाज़ी शासन के आरम्भ में अर्थात् जनवरी सन् ३३ में जर्मनी में ६० लाख आदमी बेरोजगार थे। नाज़ी दल न साल भर के अंदर ? बेकारी को लगभग आधा कर दिया जैसा कि निम्नलिखित अकों से पता चलता है।

जनवरी सन् ३३ में	६० लाख	बेकार थे।
नवम्बर ,,	३७ लाख १५ हज़ार	,,
दिसम्बर ,,	४० लाख	,,
जनवरी सन् ३४ में	३७ लाख ७२ हज़ार	,,
फरवरी ,,	३३ लाख ७४ हज़ार	,,

इस समय यह संख्या लगभग सब की सब ही काम पर लगा दी गई थी। हिटलर ने बेकार लोगों की एक फौज बनाई है, जिसमें इन लोगों से सरकारी इमारतों, सड़कों आदि के बनाने का काम लिया जाता है। इसके अतिरिक्त बेकारों के लिये एक फंड भी खोला हुआ है। जिससे उन्हें सहायता दी जाती है।

फरवरी १९३४ के बाद से मई १९३६ तक हिटलर ने बेकारी के सम्बन्ध में और भी अधिक उन्नति की।

तारीख ३१ मई सन् १६३६ को जर्मनी में बेकारों की संख्या १४६१ २०१ थी। यह सख्या अप्रैल १६३४ से २ लाख ७२ हजार कम तथा सन १६३५ की भी कम से कम संख्याओं से दो लाख कम है।

नाज़ी दल का उद्देश्य

नाजी दल का उद्देश्य जर्मनी को केवल वारसाई सन्धि के शिकन्जे से छुड़ाना ही नहीं है, वरन उसका एक उद्देश्य यह भी है कि पृथ्वी भर के समस्त जर्मन लोग एक सूत्र में बंध जावें। हिटलर एक ऐसा विशाल जमन साम्राज्य बनाना चाहता है, जिसका एक कोना वियाना हो, सम्पूर्ण बालकन प्रायद्वीप उसके अन्तर्गत हो, तथा वह कुस्तुनतुनिया और बगदाद तक फैला हुआ हो। साथ ही पूर्व दिशा में पोलैंड और युक्रेन भी उसके अन्तर्गत हों। नाजी लोगों का यह भी उद्देश्य है कि टागुलैंड, कैमरून, जर्मन पूर्वी अफ्रीका और जर्मन पश्चिमी अफ्रीका, जो जर्मनी से छिन गये हैं, उसको फिर वापिस मिल जावें। इनकी शिकायत है कि सात्रे छै करोड़ जर्मनों को रहने के लिये पृथ्वी पर पर्याप्त स्थान नहीं मिल रहा है।

जर्मनी में इस समय एक ओर सम्पूर्ण राष्ट्र को शारीरिक तथा नैतिक दृष्टि से सशक्त करने का आन्दोलन चल रहा है तो दूसरी ओर इस बात का प्रचार हो रहा है कि व्यक्तियों को देश के लिये अपनी व्यक्तिगत अभिलाषाओं तथा जीवन को मिट्टी में मिला देना चाहिये, तथा राष्ट्र हित के नाम पर जो कुछ

कर्तव्य उसके सामने आवें उनको चुपचाप और सहर्ष शिरोधार्य करना चाहिये।

इस प्रकार जर्मनी का आंतरिक वर्णन करके अब उसकी परराष्ट्रीय स्थिति का वर्णन किया जाता है। आज वारसाई की सन्धि द्वारा पदस्खलित और पीड़ित जर्मनी का स्थान न केवल यूरोप में ही महत्त्वपूर्ण है, वरन् उसकी ससार भर की प्रमुख शक्तियों में गणना की जाती है। जर्मनी को यूरोप के युद्धों में प्राय: अपने सीमांतवर्ती प्रदेश राइनलैंड के कारण कूदना पड़ा करता है। अत: अगले अध्यायों में जर्मनी की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का वर्णन करते हुए पहिले राइनलैंड की स्थिति का विस्तार पूर्वक वर्णन किया जावेगा।

छत्तीसवां अध्याय

राइनलैण्ड की समस्या का इतिहास

राइनलैण्ड का अन्तर्राष्ट्रीय समस्या में महत्वपूर्ण स्थान

जर्मनी के राइनलैण्ड अल्सेस और लोरेन यह तीन प्रान्त, जर्मन-फ्रांस सीमा पर होने के कारण सदा से ही राजनीतिक झगड़ों के कारण बने रहे हैं। आरंभ में राइनलैण्ड प्रदेश जर्मनी का था, किन्तु सन् १८०१ में ल्युनेवीले की सन्धि के अनुसार इसको नेपोलियन ने छीनकर फ्रांस में मिला लिया था।

नेपोलियन के पतन के पश्चात् १० फर्वरी सन् १८१५ ई० को वियाना कांग्रेस में इसका अधिकांश भाग फिर जर्मनी को वापिस मिल गया। तब से लगाकर यह बराबर जर्मनी के ही पास रहा। गत महायुद्ध के समाप्त होने पर फ्रांस की गृद्ध दृष्टि फिर इस प्रान्त पर पड़ी। राइन नदी इस प्रान्त के बीच में से बहती हुई उत्तरी समुद्र में आ मिलती है। फ्रांस राइन नदी के

बाए किनारे (अपनी ओर के भाग) को अपने राज्य में सम्मिलित करना चाहता था। इससे जर्मन, राज्य का अष्टमांश उसकी समग्र संख्या का ग्यारह प्रतिशतक और उसके कोयले का बारह प्रतिशतक उससे छिन कर फ्रांस को मिलता था। अल्से प्रान्त के कोयले को इसके कोयले में सम्मिलित करने से इस योजना के अनुसार जर्मनी को अपने अस्सी प्रतिशतक कोयले से हाथ धोना पड़ता था।

वारसाई की सन्धि के अनुसार जर्मनी के अल्से और लोरेन प्रान्त तो फ्रांस को पूर्णरूप से दे दिये गये। राइनलैंड के सार प्रदेश का पन्द्रह वर्ष के लिये स्वतन्त्र अस्तित्व माना गया और उसको राष्ट्रसंघ के संरक्षण में रक्खा गया।

सीमांतवर्ती सार प्रदेश

सार फ्रांस और जर्मनी की सीमा पर राइनलैंड का एक उद्योग धन्धों और विशेष खानों वाला इलाका है। यह लोरेन के उत्तर में है। इसका क्षेत्रफल ७२६ वर्ग मील तथा जन संख्या ७६०,००० है। यहां मुख्य धन्धा कोयले, गैरु और कोक का होता है। यहा ३१ खानें हैं, जिनमें ६७,००० मनुष्य काम करते हैं। सन १६२४ से २७ तक यहा की औसत वार्षिक निकासी १३३,६१,००० टन थी। (यह संख्या सन् १३ से कुछ ही कमथी)। सन १६२७ में यहां की औसत मासिक निकासी ११, १४, १४० टन थी। लोहे की खानों में यहां ३३,००० मनुष्य काम करते हैं। सन् १६२७ में यहा १७, ८३,००० टन घटिया लोह और १८, ६३,०००

टन इस्पात खानों से निकाली गई थी। इसके अतिरिक्त वहा अन्य कुछ वस्तुएँ भी उत्पन्न होती हैं।

वारसाई की सन्धि और सार का शासन

इस सन्धि के अनुसार फ्रांस को महायुद्ध में उसकी उत्तरी खानों के नष्ट होने तथा क्षति पूर्ति की रकम की आंशिक देनदारी स्वरूप यहां की कुल खानें दे दी गईं। इन खानों के जिलों को जर्मनी से छीन कर सार का इलाका बनाया गया। यहा के निवासियों का सुरक्षा की गारंटी स्वरूप तथा फ्रांस को खानों से पूर्ण लाभ उठवाने के लिये इसका शासन एक अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन के आधीन किया गया। यह कमीशन राष्ट्रसंघ के सन्मुख उत्तरदायी था। राष्ट्रसंघ को इसका ट्रस्टी बनाया गया। इस कमीशन को पन्द्रह वर्ष के लिये शासन की वह सब सुविधाएं दी गईं जो पहिले जर्मन साम्राज्य में प्रशा और बैवेरिया को प्राप्त थीं। इसका प्रधान कार्यालय यहां के प्रधान नगर सार ब्रुकेन (Saar Brucken) में रखा गया। इस कमीशन के पांच सदस्य थे। एक फ्रांसीसी, एक सार का मूल निवासी (गैर फ्रांसीसी), एक ब्रिटिश, एक जेकोस्लोवाकिया निवासी तथा एक फिनलैंड निवासी था। इसका प्रधान ब्रिटिश सदस्य होता था, और यही शासन का प्रधान अधिकारी होता था। कमीशन के निर्णय बहुसम्मति से होते थे। सार के स्थानीय जर्मन अधिकारियों ने इस कमीशन की आज्ञा पालन करने की शपथ ली थी। यह निश्चय कर दिया गया था कि सन् १९३४ में पन्द्रह वर्ष पूर्ण होने

नियम बनाने का अधिकार भी दिया गया था। इस कमीशन का काम जर्मनी के सामान्य शासन में हस्तक्षेप करना नहीं था, किंतु इसको आर्थिक संरक्षण के वास्ते तटकरों पर प्रतिबन्ध लगाने का अधिकार दिया गया था।

राइन में पार्थक्य आन्दोलन

फ्रांस ने राइनलैण्ड को जर्मन प्रजातन्त्र का भाग इसलिये बना रहने दिया था कि इंगलैण्ड और अमेरिका उसके साथ सुरक्षा की संधि करा देंगे। किन्तु अमेरिका के उसमें सम्मिलित होने से निषेध करने के कारण यह बात जहां की तहां रह गई। अमेरिका की अस्वीकृति से पूर्व भी फ्रांस के सैनिक अधिकारियों ने राइन नदी के बाए किनारे पर पार्थक्य आन्दोलन को बहुत अधिक प्रोत्साहित किया था। राइन प्रदेश की कैथोलिक जनता को—जो पहिले से ही प्रशा के विरुद्ध थी—जर्मनी में बोल्शविक-वाद का भय दिखलाया गया। इस आन्दोलन के परिणामस्वरूप पार्थक्य आन्दोलन बहुत अधिक बढ़ गया। इन आन्दोलन कारियों ने जर्मनी की केन्द्रीय सरकार से बिल्कुल प्रथक् जर्मन प्रजातन्त्र के आधीन एक नया और स्वतन्त्र राइनलैण्ड राज्य बनाने की मांग उपस्थित की। इस आन्दोलन का नेता डाक्टर डार्टेन था। फ्रांस के सैनिक अधिकारियों ने उसको स्वतन्त्र राइनलैण्ड प्रजातन्त्र राज्य बनाने में बड़ी भारी सहायता दी। जर्मनी के सभी दल इस आन्दोलन के विरोधी थ। किन्तु अमेरीकन सेनापति के आरम्भ में ही (२२ मई १६१६ को)

विरोध करने से यह आन्दोलन अपनी बाल्यावस्था में ही मंदा पड़ गया। जिस समय ता० २४ जौलाई सन् १६२० को डाक्टर डार्टन जर्मनी के अनधिकृत प्रदेश में गिरफ्तार किया गया तो फ्रांसीसी हाई कमिश्नर ने उसके अधिकृत प्रदेश में भेजे जाने और छोड़े जाने की माग की थी।

रूर के झगड़े का पार्थक्य आन्दोलन पर प्रभाव

१० जनवरी १६२३ को फ्रास और बेल्जियम की सेनाओं ने रूर पर अधिकार किया। इसके पश्चात ७ मार्च १६२३ को उन्होंने कार्ल्स रूह (Karlsruhe) तथा राइन के दाहिने किनारे के बिशहेम तक के प्रदेश पर अधिकार कर लिया। अमरीका की सेना १० जनवरी १६२३ को पहिले ही हट गई थी। अब राइनलैण्ड के कमीशन में ब्रिटेन का अल्पमत ही रह गया। अतएव उन्होंने रूर पर आगे अधिक अधिकार करने के कार्य को बद कर दिया। किन्तु यह सेनाओं को वहा से वापिस आने को न कह सके। कोलोन के इलाके के ब्रिटिश अधिकार में होने से फ्रांसीसी सेनाए उससे अलग रहीं।

जर्मन अधिकारियों तथा प्रमुख नागरिकों के निकालने और जनता के नि शस्त्र करने से राइन के पार्थक्य आन्दोलन को नया जीवन मिल गया। फ्रासीसी अधिकारियों ने उनको बड़ी सहायता दी। अनेक बार उनकी स्वीकृति से पार्थक्यवादी शस्त्र ग्रहण करते थे और जब स्थानीय पुलिस उनसे लड़ती थी तो या तो उसके शस्त्र छीन लिये जाते थे अथवा

उसको गिरफ्तार कर लिया जाता था। कभी २ तो उसको पल्टन से शारीरिक दण्ड भी दिलवाया जाता था। किन्तु उनकी सहायता होने पर भी डूसेलडर्फ में वहां के स्थानीय अधिकारियों ने ता० ३० सितम्बर १९२३ को इस आन्दोलन को अच्छी तरह दबा दिया। २१ अक्तूबर १९२३ को ऐक्स-ला-चैपले (Aix La-Chapele) में राइनलैण्ड प्रजातन्त्र की स्थापना भी हो गई। किन्तु ब्रिटिश सरकार के दबाव से बेल्जियम ने इस आन्दोलन से अपना हाथ खींच लिया। अतएव यह प्रजातंत्र ता० २ नवम्बर १९२३ को अपने आप ही समाप्त हो गया। जनवरी १९२४ में अन्य अनेक स्थानों का आन्दोलन भी मंदा पड़ गया।

बैवेरिया के पैलेटिनेट (Palatinate) नामक स्थान में इस आन्दोलन को जेनेरल डे मेत्र ने कुछ अधिक समय तक चलाया। २८ अक्तूबर को उसने बैवेरिया सरकार को सूचित किया कि पैलेटिनेट अब बैवेरिया के अधिकार में नहीं रहा। पार्थक्यवादियों में फ्रांस की सहायता से लगभग २० सहस्र व्यक्ति सम्मिलित हो गये। अब जनता में एक प्रकार की शिथिलता सी होने लगी। फर्वरी मास में योग्य अधिकारी वापिस आ गये। किन्तु पूर्ण शान्ति मार्च १९२४ में ही हुई। नवम्बर १९२४ में जेनेरल डे मेत्र (De metz) के चले जाने से यह चला पूरी तौर से टल गई।

डावे की योजना

डावे के प्रस्तावों को स्वीकार करने के फल स्वरूप रूर

के कुछ भाग को खाली कर दिया दिया गया। बाद में डुसेलडार्फ, ड्यूसबर्ग और रूहराट को भी खाली कर दिया गया। नई फ्रेंच सरकार की नीति भी नई ही थी। उसने बिल्कुल ही नवीन आधार पर राइन के प्रश्न पर वादविवाद किया। तय किया गया कि यदि जर्मनी सन्धि की शर्तों को ईमानदारी से कार्यान्वित कर दे तो १० जनवरी १९२५ को राइन के उत्तरी भाग को भी खाली कर दिया जावे। हर्जाने के सवाल के उस समय के लिये तय हो जाने पर भी निश्शस्त्रीकरण के विषय में मतभेद हुआ। जर्मनी इस बात पर जोर दे रहा था कि उसका निश्शस्त्रीकरण पूर्ण हो चुका है। मित्र शक्तियों ने घोषणा की कि १० जनवरी तक सैनिक-अधिकार कमीशन की अंतिम रिपोर्ट के तयार न हो सकने से उस समय तक उत्तरी प्रदेश को खाली नहीं किया जा सकेगा। बाद की बातचीत में इंगलैण्ड का कहना था कि यदि जर्मनी इस सम्बन्ध में निश्शस्त्रीकरण की शर्तों के अनुसार कार्य कर दे तो उक्त प्रदेश को तुरन्त ही खाली कर दिया जावे। किन्तु फ्रांस इस आशय को व्यापक रूप में लेकर पूर्ण सुरक्षा चाहता था।

लोकार्नो पैक्ट

संसार का यह नियम है कि अत्याचारी व्यक्ति यदि किसी पर अत्याचार करता है तो पीड़ित के निर्बल रहने पर भी उससे सदा ही भयभीत रहता है। वारसाई की सन्धि के बाद से ठीक यही दशा फ्रांस की सदा रही है। यद्यपि वारसाई की सन्धि से

जर्मनी की जल सेना को नष्ट कर दिया गया था और उसकी स्थल सेना को भी घटा कर नष्ट प्राय कर दिया गया था तो भी फ्रांसीसी लोग इस बात को जानते थे कि वारसाई की सन्धि को जर्मनी ने विवश होकर ही खून की घूंट के समान पिया है। फ्रांसीसी राजनीतिज्ञों को विश्वास था कि वारसाई की सन्धि और रूर पर अधिकार करने का कांटा जर्मन देशभक्तों के हृदय में अवश्य ही खटक रहा होगा और इसमें आश्चर्य नहीं कि जर्मनी किसी समय भी गुप्त तयारी करके प्रतिशोध लेने को तयार हो जावे। इधर रूस की बोल्शविक सरकार भी उस समय फ्रांस तथा इंगलैण्ड जैसे साम्राज्यवादी देशों के लिये कम भय का कारण नहीं थी। अतः फ्रांस सरकार ने विचार किया कि किसी प्रकार अपनी जर्मनी और रूसी सीमा की सुरक्षा का प्रबन्ध रूस तथा जर्मनी के विरुद्ध करके उस सुरक्षा की गारंटी यूरोप की प्रधान शक्तियों से करा लेनी चाहिये। इस उद्देश्य को दृष्टि में रख कर फ्रांस ने पहिले इंगलैण्ड से परामर्श किया। इसके पश्चात् इंगलैण्ड और फ्रांस के उद्योग से प्रधान २ यूरोपीय शक्तियों की एक सभा स्वीजरलैंड के लोकार्नो नामक नगर में तारीख ५ अक्तूबर सन १९२५ ई० को की गई।

इस सभा में इटली, जर्मनी, फ्रांस, बेलजियम और इंगलैण्ड के निम्नलिखित प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।

जर्मनी—डाक्टर लूथर और हर स्ट्रेसमैन।

बेल्जियम—मोशिए माइल वैंडर वेल्डे।

फ्रांस—मोशिये ऐरिस्टाइड ब्रियाड ।

ग्रेट ब्रिटेन—मिस्टर आस्टिन चैम्बरलेन ।

इटली—सानूनर बेनिटो मुसोलिनी ।

यह कान्फ्रेंस ग्यारह दिन तक होती रही। इस कान्फ्रेंस से फ्रांस की इच्छा पूर्व और पश्चिम दोनों में ही स्थायी शान्ति स्थापित करने की थी। प्रत्येक यूरोपीय राज्य भी गत महायुद्ध से ऊब कर इस समय शान्ति ही चाहता था।

इस बात का भी पूर्ण सन्देह था कि यह कान्फ्रेंस बिल्कुल ही असफल हो जावेगी। रूसी राजनीतिज्ञों ने तो स्पष्ट रूप से घोषणा की थी कि लोकार्नो की सन्धि शान्ति की तयारी न होकर युद्ध की तयारी है। जर्मनी भी यही कहता था कि उसके कोलोन (Cologne) प्रदेश पर से अधिकार उठा कर शेष अधिकृत प्रदेश को भी शीघ्र ही खाली किया जावे और युद्ध के हर्जाने को सुविधा पूर्वक वसूल किया जावे। जर्मनी और रूस दोनों ने स्पष्ट कह दिया था कि फ्रांस का एकमात्र उद्देश्य उन दोनों को नष्ट करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं था। फ्रांस ने अनेक गुप्त सन्धियां की हुई थी, उसने पोलैण्ड और जेकोस्लोवाकिया के साथ सन्धियां कर ली थीं, इटली ने भी यूगोस्लैविया तथा अन्य कई छोटे २ राज्यों से सन्धियां की थीं। इन सब सन्धियों का उद्देश्य यही था कि फ्रांस और इटली की रूस और जर्मनी के संभावित आक्रमण से रक्षा की जावे। जर्मनी भी यह अनुभव करता था कि उसको अपनी परिस्थिति को स्पष्ट करके आक्रमण

करने के संदेह को मिटा देना चाहिये। यूरोप में स्थायी शान्ति स्थापित करने के लिये सन्देहों के दूर होने की नितान्त आवश्यकता थी। जर्मनी ने शीघ्र ही राष्ट्रसंघ का सदस्य बनने का निश्चय कर लिया। किन्तु राष्ट्रसंघ की नियमावली का नियम १६ उसके मार्ग में बाधक था। क्योंकि उक्त नियम के अनुसार जर्मनी का नि:शस्त्र होना अनिवार्य था। जर्मनी पहिले से ही निःशस्त्र था और संसार में उसके पास सबसे कम शस्त्र थे, अन्त में उपरोक्त राष्ट्रों ने उसको विश्वास दिलाया कि उसको नियम १६ के विरुद्ध राष्ट्रसंघ का सदस्य बनने की विशेष सुविधा दी जावेगी। लोकार्नो की सन्धि वार्ता में जर्मनी की पाश्चात्य सीमा के विषय में तो विशेष कठिनाई नहीं उपस्थित हुई। किन्तु पूर्वी सीमा के विषय में रूस और जर्मनी दोनों ने ही अधिक से अधिक सुविधाएं प्राप्त कीं।

लोकार्नो सन्धि पर १६ अक्तूबर सन् १९२५ ई० को उपरोक्त पांचों राज्यों ने हस्ताक्षर किये। इसके अनुसार जर्मन-बेल्जियन और जर्मन-फ्रांस सीमाओं को नि:शस्त्रीकरण प्रदेश घोषित किया गया। इस सन्धि के अनुसार पांचों ही राष्ट्रों ने इस बात की प्रतिज्ञा की कि वह एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध घोषणा न करेंगे। उन्होंने यह भी निश्चय किया कि राष्ट्रसंघ की स्वीकृति से ही कोई राज्य इस विषय में कुछ कार्य कर सकेगा। इस सन्धि के अनुसार ग्रेट ब्रिटेन ने अपने सिर इस बात का उत्तरदायित्व लिया कि यदि फ्रांस और बेल्जियम जर्मनी पर

आक्रमण करेंगे तो वह जर्मनी का समर्थन करेगा। इस उत्तरदायित्व को तभी तक के लिये स्वीकार किया गया था जब तक राष्ट्रसंघ इस उत्तरदायित्व को वहन करने योग्य पर्याप्त शक्तिशाली न हो जावे। यह भी निश्चय किया गया कि कोलोने प्रदेश को शीघ्र ही खाली कर दिया जावे और सीमान्त प्रदेश पर से सेनाएं हटाली जायें। जर्मनी को राष्ट्रसंघ में स्थायी स्थान देने का वचन भी दिया गया।

इस सन्धि का सबसे बड़ा प्रभाव यह हुआ कि राष्ट्रसंघ का प्रभुत्व जर्मनी पर भी हो गया। इस सन्धि के अनुसार जर्मनी ने यह भी स्वीकार कर लिया कि वह फ्रांस, बेल्जियम, पोलैण्ड अथवा जेकोस्लोवाकिया के साथ होने वाले किसी भी झगड़े पर पंचायत स्वीकार कर लेगा।

इस सन्धि के अनुसार (१) जर्मनी, बेल्जियम, फ्रांस ग्रेट ब्रिटेन और इटली ने एक दूसरे की रक्षा करने का वचन दिया।

(२) दो पंचायती बोर्ड बनाये गये, जिनमें एक ओर जर्मनी और दूसरी ओर बेल्जियम और फ्रांस थे। दो पंचायती सन्धियां भी हुईं, जिनमें एक ओर जर्मनी और दूसरी ओर पोलैण्ड तथा जेकोस्लोवाकिया थे।

(३) मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी को एक संयुक्त पत्र भेज कर विश्वास दिलाया कि वह राष्ट्रसंघ के नियम १६ के विरुद्ध भी जर्मनी को राष्ट्रसंघ का सदस्य बना लेंगे।

(४) सुरक्षा की दो सन्धियां की गई, जिनमें एक ओर फ्रांस और दूसरी ओर पोलैण्ड और जेकोस्लोवाकिया थे।

इस सन्धि के अनुसार जर्मन-बेल्जियम और जर्मन-फ्रांस सीमा वही स्वीकार की गई, जो वारसाई की सन्धि के अनुसार स्वीकार की गई थी।

रूर प्रदेश का खाली किया जाना

लोकार्नो की बातचीत से मित्र राष्ट्रों को केवल निःशस्त्रीकरण के सम्बन्ध में भी बातचीत करने का अवसर मिल गया। जर्मनी को राइन के निःशस्त्रीकरण के विषय में कुछ ऐसे प्रस्ताव दिये गये, जिनको स्वयं जर्मनी भी कार्यान्वित करने को सहमत था। अतएव एक समझौता हो ही गया। उसके अनुसार ग्रेट ब्रिटेन ने ३० नवम्बर १९२६ को कोलोन को खाली कर दिया। ३१ जनवरी सन् २६ तक राइन प्रदेश का उत्तरी भाग भी पूर्णतया खाली कर दिया गया। राइन के ऊपर अधिकार वारसाई की सन्धि की अवधि से भी एक वर्ष अधिक रहा। लोकार्नो सन्धि ने सुरक्षा के प्रश्न को राइन पर अधिकार के प्रश्न से बिलकुल पृथक् कर दिया। अब दोनों प्रश्नों के आधार पृथक् २ हो गये।

जर्मनी का राष्ट्रसंघ का सदस्य बनना

लोकार्नो समझौते के अनुसार परिस्थिति ठीक होते ही जर्मनी ८ सितम्बर १९२६ को नियमानुसार राष्ट्रसंघ का सदस्य बन गया। उसको राष्ट्रसंघ की साधारण समिति तथा स्थायी समिति दोनों में ही स्थान दिया गया।

राष्ट्रसंघ में राइनलैंड का खाली करने का प्रस्ताव

यद्यपि जर्मनी ने लोकार्नो की सन्धि के अनुसार राइनलैंड को निःशस्त्रीकरण प्रदेश स्वीकार करके वहा से अपनी सेनाएं हटाली थीं, किन्तु फ्रांस ने इस विषय में अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं किया था।

जर्मनी के राष्ट्रसघ में प्रवेश करने से स्ट्रैसमैन (जर्मनी) और ब्रियाद् (फ्रांस के प्रधान मन्त्री) में राइनलैंड को पूर्णतया खाली करने के प्रश्न पर विचार विनिमय हुआ। इसके मूल्य स्वरूप फ्रास ने प्रस्ताव किया कि जर्मनी के हर्जाने के बोर्डों को बाजार में बेच दिया जावे। किन्तु यह कार्य बिना जर्मनी की अधिक आर्थिक सहायता के नहीं हो सकता था। इससे फ्रास को एक अच्छी पूंजी मिल जाती, जिससे वह अपने सिक्के फ्रैंक की दर को ठीक कर लेता। जर्मनी की आर्थिक स्थिति इसके अनुकूल न होने से यह योजना भी असफल हुई। अब जर्मन सरकार ने इस बात पर जोर दिया कि राइन की मित्र राष्ट्रों की सेना की संख्या को कम किया जावे। यह भी कहा गया कि जर्मनी के राष्ट्रसंघ का सदस्य होने के कारण राइन पर अधिकार जमाये रखना बिल्कुल ही न्याय सगत नहीं है। जर्मनी ने हर्जाने की अदायगी के अतिरिक्त सन्धि की सभी शर्तों का पालन किया है। हर्जाने के प्रश्न का अधिकार के प्रश्न से कुछ सम्बन्ध भी नहीं है। अतएव राइन पर अधिकार बनाये रखने से सुरक्षा का प्रश्न कुछ भी सुगम नहीं होता।

जर्मनी ने सितम्बर १६२८ में राष्ट्रसंघ के अधिवेशन में और फिर लुगानो (Lugano) में राष्ट्रसंघ की कौंसिल के अधिवेशन में अपने इस न्याय संगत विचार पर बड़े बल पूर्वक जोर दिया कि जर्मनी के वार्साई की संधि के—क्षतिपूर्ति के प्रश्न के अतिरिक्त सभी शर्तों को पूर्णतया पालन कर देने से अधिकार करने वाली सेनाओं को तुरन्त ही हटा लेना चाहिये। क्षतिपूर्ति के प्रश्न का डावे के समझौते के अनुसार दूसरे प्रकार से ही प्रबन्ध किया गया है। फ्रांस और ब्रिटेन की सरकारों न वारसाई की सन्धि की धाराओं की दूसरी ही प्रकार से व्याख्या की। किन्तु ब्रिटिश सरकार न यह इच्छा प्रगट की कि इस प्रश्न को कानूनी ढंग से न सुलझा कर राजनीतिक ढंग से इस प्रकार सुलझाया जावे कि उसको लोकार्नो पैक्ट के अनुसार तय किया जा सके। अन्त में राष्ट्रसंघ न जेनेवा में निम्नलिखित दो प्रस्ताव स्वीकार किये-

(१) राइनलैंड को शीघ्र ही खाली करने के जर्मन चैंसेलर के अनुरोध के विषय में सरकारी तौर से वार्तालाप किया जावे।

(२) क्षतिपूर्ति की समस्या को पूर्णतया निश्चित रूप से सुलझाये जाने की आवश्यकता है। इस उद्देश्य के लिये छै सरकारों की ओर से आर्थिक विशेषज्ञों की एक कमेटी बनाई जावे।

राष्ट्रसंघ के इस प्रस्ताव के अनुसार बनाये हुए कमीशन का नाम 'यंग कमीशन' कहलाया। डावे कमीशन ने केवल सिद्धांतों का ही वर्णन किया था, किन्तु यंग कमीशन ने इस पुस्तक के पृष्ठ

२६ पर लिखे अनुसार अकों को निश्चित कर दिया। यह योजना हेग में सन् १६२६ में स्वीकार की गई। जनवरी १६३० में हेग कांफ्रेंस के दोबारा होने पर इस योजना को पूर्ण रूप से स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार जर्मनी के हर्जाने का प्रश्न पूरा हुआ।

राइनलैंड का पूर्णतया खाली किया जाना

इधर तो राष्ट्रसंघ के द्वितीय प्रस्ताव के अनुसार हर्जाने का प्रश्न तय किया जा रहा था उधर उसके प्रथम प्रस्ताव के अनुसार राइनलैंड में से सेनाओं को हटाया जा रहा था। ता० १४ सितंबर सन् १६२६ को ब्रिटिश सेनाओं ने वहां से हटना आरम्भ किया। निदान ३० जून सन् १६३० ई० तक राइनलैंड को पूर्णतया खाली कर दिया गया।

इसके पश्चात् जर्मनी में शांतिपूर्ण क्रांति हुई और वारसाई सन्धि के शत्रु ऐडल्फ हिटलर के हाथ में ३० जनवरी सन् १६३३ ई० को वहां का शासन भार आया।

सैंतीसवां अध्याय

हिटलर और यूरोप के राज्य

यद्यपि हिटलर के चैंसलर के रूप में दिये हुए प्रथम भाषण से शान्ति की ही ध्वनि निकलती थी, किन्तु यूरोप के चालाक राजनीतिज्ञों को उसका विश्वास नहीं हुआ। यद्यपि भिन्न २ पत्रों में उसके भाषण की प्रशंसा की गई किन्तु अन्दर से सभी सशंकित थे।

चार शक्तियों का समझौता

इस पुस्तक के पिछले अध्यायों में दिखलाया जा चुका है कि हिटलर को केवल दो राज्यों से ही जर्मनी की मित्रता की आशा थी—इटली और इंगलैण्ड से। इनमें से इंगलैंड फ्रान्स के साथ सन्धियों में बंधा होने के कारण उसके साथ घनिष्ठता नहीं कर सकता था। सामान्य मित्रता में वह लोकार्नो पैक्ट के द्वारा बंध ही चुका था, किन्तु इटली पर इस प्रकार की कोई विवशता नहीं

थी। अस्तु इटली के सर्वेसर्वा साइनर मुसोलिनी ने हिटलर की सरकार के स्थायी हो जाने पर उसके साथ मित्रता की नई सन्धि के लिये यूरोप के प्रमुख राष्ट्रों को निमन्त्रण दिया। यह सन्धि वार्ता इटली की राजधानी रोम में हुई थी। इसमें इँगलैंण्ड, फ्रान्स, इटली और जर्मनी ने भाग लिया था। अन्त में १५ जुलाई सन १९३३ ई० को सारी बातें तय होकर इस सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर हो गये। इस सन्धि पत्र पर निम्नलिखित व्यक्तियों के हस्ताक्षर थे—

साइनर मुसोलिनी (इटली),
राजदूत सर रेनाल्ड ग्राहम (ब्रिटेन),
मिस्टर डे० जौवेनोल (फ्रान्स),
हर वान हैसले (जर्मनी)।

इस सन्धि से मध्य यूरोप में दस वर्ष तक के लिये स्थायी शान्ति होने की आशा प्रगट की गई थी। यह स्पष्ट है कि फ्रान्स और ब्रिटन ने इस सधि को कुछ विशेष महत्व नहीं दिया। इस सन्धि से साइनर मुसोलिनी की यूरोप में खूब प्रशंसा की गई। १६ जुलाई को ऐडल्फ हिटलर ने इस सन्धि के लिये साइनर मुसोलिनी को बधाई का तार भेज कर इटली और जर्मनी में स्थायी मित्रता की आशा प्रगट की।

जर्मनी का राष्ट्रसंघ से पृथक होना

इसके थोड़े दिनों के पश्चात ही राष्ट्रसंघ की अध्यक्षता में जनेवा में निशस्त्रीकरण कान्फ्रेंस की गई। इस समय यूरोप के

गन्य हिटलर की बढ़ती हुई शक्ति से पर्याप्त मात्रा में डरने लगे थे। अतएव इस कांफ्रेंस का उद्देश्य जर्मनी के शस्त्रों पर विशेष पाबन्दी लगाना ही जान पड़ता था। इस अनुमान का कारण यह है कि इसमें बड़े भारी सशस्त्र राष्ट्रों के निशस्त्रीकरण के विषय में बिल्कुल ही वादविवाद नहीं किया गया। वादविवाद केवल जर्मनी के विषय में ही हुआ। यूरोप के राज्य एक निशस्त्र और सैनिक दृष्टि से सब से निबल देश को और भी निशस्त्र करना चाहते थे। इस समय जर्मनी को संसार के सन्मुख फिर शांति भंग करने वाला घोषित किया गया। हिटलर के शासन को स्वयं उसी के आदमियों और संसार के सामने नीचा दिखलाने के लिये इस कांफ्रेंस में लज्जाजनक शर्तें रखी गई। जेनेवा के राजनीतिज्ञ जर्मनी के संधिदूतों की अपेक्षा कहीं अधिक कपटी थे। उन्होंने चालाकी से जर्मनी को सदा ही हठी और न झुकने वाला सिद्ध करने का प्रयत्न किया। उन्होंने अचानक ही जोरदार और चालाकी शब्दों में यह घोषित कर दिया कि समानता, वास्तव में केवल सिद्धांतिक समानता है। दिसम्बर में जो श्लीचर के जर्मनी को वचन दिया गया था वह हिटलर के जर्मनी पर लागू नहीं हो सकता।

यह स्पष्ट दिखलाई दे रहा था कि उनका क्या उद्देश्य था। जर्मन लोग इस बात को जानते थे कि जेनेवा में निशस्त्रीकरण परिषद में क्या होगा। अब केवल एक ही बात मुख्य थी और उसके विषय में कोई संदेह नहीं किया जा सकता था। वह जर्मनी का सम्मान और उसका अन्य राष्ट्रों के साथ समानता का

प्रश्न था। परिस्थिति पर पूर्णतया विचार करके और अपने अंतर आत्मा को सावधानी पूर्वक टटोल कर हिटलर ने केवल एक ही सभव कार्य किया। उसने राष्ट्रसघ और उसके षडयन्त्रकारियों को एक ही वार में शतरंज की शह देने के लिये बड़ा भारी साहस पूर्ण कार्य किया। उसने १४ अक्तूबर सन् १९३३ को यह घोषित किया कि वह निःशस्त्रीकरण परिषद् और राष्ट्रसंघ दोनों से पृथक् होता है। इस साहसपूर्ण और फुर्तीले कार्य के सम्बन्ध में एक बार फिर समाचार पत्रों ने क्रोध की गर्जना की।

हिटलर किस प्रकार उस जाल से बच सका जो उसके वास्ते बिछाया गया था, जर्मनी किस प्रकार जेनेवा की बाजी के उन परम्परागत और सार्वजनिक नियमों को भंग कर सका जिनसे वह सदा हानि उठाता रहता था। अन्त में राष्ट्रसघ को विवश होकर यह समझ लेना पड़ा कि वह फिर एक प्रथम श्रेणि के विरोधी के सन्मुख खड़ा हुआ है।

अब हिटलर ने अपने को दमनकारी और असह्य बेड़ियों से मुक्त कर लिया था। पन्द्रह वर्ष के बधन प्राप्त और विदेशी राजनीति में नपुंसक जर्मनी ने फिर अपनी कार्य-स्वतन्त्रता को प्राप्त कर लिया। पहिली पहल अब जर्मनी केवल धन बजाने का ढोल नहीं था। पहिली पहल फुर्तीले जर्मन विदेशी नीति के घन की चोटों की आवाज सुनाई दी। वास्तविक बड़े भारी राजनीतिज्ञ मुसोलिनी के उज्वल विचार के परिणाम, चार शक्तियों के समझौते में सम्मिलित होकर जर्मनी ने सिद्ध कर

दिया कि वह किसी भी ऐसी परिषद् अथवा राजनीतिक कार्य से सम्बन्ध करने के लिये तयार है, जो सच्चाई के साथ शान्ति के कार्य को करना चाहे।

जर्मन जनता द्वारा हिटलर का समर्थन

जर्मनी के जेनेवा से चले आने के साथ ही साथ पिछला निर्वाचन युद्ध हुआ जिसका इकत्तीसवें अध्याय में वर्णन किया जा चुका है। यह निर्वाचन पिछले निर्वाचनों के समान असख्य दलों का युद्ध नहीं था। इस बार संयुक्त राष्ट्र एक होकर अपनी रक्षा कर रहा था। वह एक पुरुष के समान माग रहा था कि उसके लिये समानता का अधिकार स्वीकार किया जावे। वह जर्मनी के विरोधी राष्ट्रों के विरुद्ध अपने सम्मान के लिये एक मनुष्य के समान युद्ध कर रहा था। जर्मन लोगों ने संसार को दिखला दिया कि वह किसी भी ऐसी नीति में अपनी पूर्ण शक्ति से सहायता देने के लिये तयार है जो वास्तव में संसार में शान्ति स्थापित कर सके। किन्तु, दूसरी ओर, उसने संसार को यह भी दिखला दिया कि यदि वह जर्मनी के साथ बातचीत करना चाहे तो उसको जर्मनी को भी वही सम्मान, और अधिकार देने होंगे जो दूसरे राष्ट्र अपने २ लिये चाहेंगे। जर्मनी की समस्त जनता, लगभग अंतिम मनुष्य और अंतिम स्त्री तक ने अपने नेता की और उसकी स्वतन्त्रता और सम्मान की नीति का समर्थन किया। जर्मनी की भविष्य में भी किसी दूसरे राष्ट्र को लूटने अथवा आधीन करने की कोई इच्छा नहीं है। किन्तु साथ ही उसकी किसी भी राष्ट्र

को अपने को लूटने या आधीन करने की अनुमति न देगा।

रूस जर्मनी युद्ध की सम्भावना

उस कार्य से जिसको हिटलर ने उठाया हुआ है और उस युद्ध से, जो उसने भर पर चलाया हुआ है, केवल जर्मनी का ही सम्बन्ध नहीं है। हिटलर का उद्देश्य समस्त संसार के इतिहास के लिये महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि उसने अपने विश्वास के अनुसार साम्यवाद के विरुद्ध आजीवन युद्ध छेड़ दिया है और इसी कारण दूसरे यूरोपीय राष्ट्रों के लिये भी साम्यवाद का विरोध करने का मार्ग प्रदर्शन किया है। संसार के इतिहास में पहिले भी कई २ बार जर्मन राज्य में बड़े २ शक्तिशाली आध्यात्मिक युद्धों का निर्णय हुआ है। जर्मन सरकार का यह निश्चित विश्वास है कि यदि साम्यवाद और नेशनल सोशिएलिज्म के युद्ध में साम्यवादी की विजय हुई तो साम्यवादी जर्मनी में से प्राणघातक विष दूसरे यूरोपीय देशों में भी फैल जावेगा।

वह बड़ा भारी युद्ध—जिसके परिणाम पर न केवल जर्मनी का, वरन् यूरोप भर और समस्त संसार का भविष्य निर्भर है—स्वस्तिक और सोवियट तारे का युद्ध होगा। यदि सोवियट तारा विजयी हुआ तो जर्मनी भय के रक्तपूर्ण साम्यवादी राज्य के रूप में नष्ट हो जावेगा, और इस दुर्घटना में समस्त पश्चिमीय समार को जर्मनी का अनुकरण करना होगा। किन्तु यदि स्वस्तिक की विजय हो गई तो यूरोप की राजनीति में जर्मनी ही सारे राज्यों का भाग्य विधाता बन जावेगा।

यह निश्चय है कि जर्मनी सदा से ही यूरोप का हृदय या मौर है। अतएव यूरोप केवल तभी स्वस्थ होकर शान्ति से जीवित रह सकता है जब उसका हृदय भी स्वस्थ और शान्त हो। जर्मन जनता उठ खड़ी हुई है और जर्मनी फिर स्वस्थ हो गया है। उसके लिये केवल एक व्यक्ति ही गारंटी देने वाला है। और वह है जर्मन जाति का राष्ट्रपति और चैंसेलर तथा उसके सम्मान और स्वतन्त्रता की रक्षा करने वाला ऐडल्फ हिटलर।

अड़तीसवां अध्याय

फ्रांस और रूस की सन्धि

फ्रांस और रूस की सन्धि के विषय का यद्यपि हमारे ग्रन्थ से सामान्यतः सम्बन्ध नहीं जान पड़ता, किन्तु आज इसी सन्धि के कारण जर्मनी के राष्ट्रपति हिटलर को अपनी समस्त महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने का अवसर मिल गया है। अस्तु इस अध्याय में फ्रांस और रूस की सन्धि का उसके पूर्व इतिहास सहित वर्णन किया जावेगा।

फ्रांस और रूस की सन्धि (सन् १८९४)

लगभग चालीस वर्ष पूर्व सन १८९४ में फ्रांस और रूस में एक पारस्परिक सहायता की सन्धि हुई थी। उस सन्धि पत्र के आरम्भ में निम्नलिखित शब्द थे—

"फ्रांस और रूस दोनों की ही एकमात्र अभिलाषा शान्ति की रक्षा करने की है। अतएव यह केवल त्रिराष्ट्र गुट की सेनाओं

के आक्रमण से एक दूसरे की रक्षा करने के लिये निम्नलिखित शर्तों पर सन्धि करते हैं।"

उस सन्धि के अन्त में निम्नलिखित शब्द थे—

"उपरोक्त सभी शर्तों को अत्यन्त गुप्त रखा जावेगा।"

फ्रांस और रूस के अधिकारियों ने परस्पर बारबार मिल कर सन् १६१३ तक इस सन्धि को बराबर दृढ़ बनाये रखा। बाद में उपरोक्त सन्धिपत्र की व्याख्या में निम्नलिखित वाक्य भी बढ़ाये गये।

"दोनों ही देशों के अधिकारी इस बात को स्वीकार करते हैं कि 'रक्षात्मक युद्ध' शब्द से केवल वही युद्ध न गिने जावेंगे, जो अपने देशों की रक्षा के लिये ही किये जावेंगे। इसके विरुद्ध रूस और फ्रांस की सेनाएं अपने को पर्याप्त मात्रा में आक्रमण करने योग्य बनायेंगी। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये दोनों ही देशों की सेनाएं अपने को शीघ्र ही सुदृढ़ और सुसगठित करेंगी।"

फ्रांस और रूस की सन् ३६ की संधि

२७ फरवरी सन १६३६ को रूस और फ्रांस में फिर एक पारस्परिक सहायता की सन्धि हुई। इस सन्धि पत्र के आरम्भ में निम्न लिखित शब्द थे—

"सोवियट यूनियन की प्रबन्धकारिणी कमेटी और फ्रांसीसी प्रजातन्त्र के राष्ट्रपति दोनों की ही एकमात्र अभिलाषा यूरोप की शान्ति को बनाये रखने और अपने २ देशों के उन २

अधिकारों की रक्षा करने की है, जो उनको राष्ट्रसंघ के नियम द्वारा प्राप्त हैं। उदाहरणार्थ, सीमान्त प्रदेशों की रक्षा और राष्ट्रों की राजनीतिक स्वतन्त्रता आदि। अतएव यह राष्ट्रसंघ के नियमों की ठीक २ पाबंदी के लिये निम्नलिखित समझौता करते हैं।"

सन्धि पत्र में पांच धाराएं हैं और अंत में उसमें चार भाग और भी हैं।

यह कोई नहीं जानता कि इस सन्धि पत्र में उसी प्रकार की कोई गुप्त धारा (लिखित अथवा अन्य प्रकार से) भी है अथवा नहीं, जैसी १८६४ के सन्धिपत्र में थी। किंतु अनुभव यह बतलाता है कि इस विषय में कुछ न कुछ होना अवश्य चाहिये। इसके अतिरिक्त पिछले दिनों में रूस के जेनेरल स्टाफ के अफसर टुखुशेवस्की (Tukhushevsky) ने परिस में बहुत अधिक समय व्यतीत किया था। इस समय उसने अन्य कार्यों के अतिरिक्त फ्रांस के जेनेरल स्टाफ से भेंट की थी और फ्रांस के शस्त्रास्त्रों के कारखानों तथा समुद्री बदरों का भी निरीक्षण किया था। वह वहां निश्चय से केवल कौतुक के लिये ही नहीं गया था।

यह निश्चय जान पड़ता है कि पहिले के ही समान यह समझौता भी जर्मनी के ही विरुद्ध है। अतएव इस बात की आवश्यकता है कि इस समझौते की शर्तों पर विस्तार पूर्वक विचार किया जावे।

राष्ट्रसंघ की परिस्थिति

आज राष्ट्रसंघ एक ऐसी संस्था है, जिसका कार्य संसार

भर में सार्वजनिक शान्ति बनाये रखना है। उसको वास्तव में ही किन्हीं दो राष्ट्रों के झगड़े को सुलझाने योग्य पर्याप्त मात्रा में बलवान होने की आवश्यकता है। किंतु दुर्भाग्यवश वास्तव में न तो राष्ट्रसंघ का इतना सन्मान ही है और न उसके पास इतनी शक्ति ही है कि वह अपने निर्णयों के ऊपर अन्य राष्ट्रों को आचरण करने के लिये बाध्य कर सके। इसका मुख्य कारण यह है कि राष्ट्रसंघ के सदस्य बड़े २ राष्ट्र और विशेषकर फ्रांस अपने ही लाभ की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया करते हैं। जहां कहीं उनके स्वार्थ में बाधा पड़ती है वह राष्ट्रसंघ के निर्णय को प्रभावशून्य कर देते हैं। उदाहरणार्थ, यदि संसार भर को जर्मनी के विरुद्ध भड़काने का अवसर आवे तो फ्रांस राष्ट्रसंघ का सबसे बड़ा समर्थक बन जावेगा। किंतु यदि उसके अथवा उसके सैनिक मित्र राष्ट्रों के स्वार्थों में बाधा आवे तो वह राष्ट्रसंघ को नपुंसक बनाने में भी कुछ बाकी न छोड़ेगा। फ्रांस की यह नीति अभी २ जर्मनी और इटली के विषय में ठीक २ प्रमाणित हो चुकी है। यह कहा जा सकता है कि इटली की मित्रता के ऊपर ही फ्रांस ने ऐबीसीनिया को बलिदान कर दिया।

यूरोप की परिस्थिति

यूरोप की आज ठीक २ क्या परिस्थिति है और फ्रांस रूस संधि उसके लिये एक विशेष खतरा क्यों है? गत महायुद्ध के पश्चात् जो असंख्य संधियां हुई हैं, उनमें से एक यह है, जिसके अनुसार सन १९२५ में लोकार्नो में इङ्गलैण्ड, फ्रांस,

जर्मनी, इटली और बेल्जियम ने एक दूसरे की सीमा पर आक्रमण न करने का वचन दिया था। इसमें फ्रांस--जर्मन सीमा की गारंटी इन सभी शक्तियों ने की थी। इस सन्धि की सुरक्षा के प्रमाण स्वरूप जर्मनी से यह इच्छा की गई थी कि वह राइन नदी के बाएं किनारे और उसके दाहिने किनारे के पचास किलोमीटर अथवा लग भग ३१ मील प्रदेश को नि शस्त्रीकरण प्रदेश बना दे। इस बात के योग्य न होते हुए भी जर्मनी ने इसको केवल मित्रता का सम्बन्ध स्थापित करने के ध्यान से स्वीकार कर लिया। इस सम्बन्ध में हर हिटलर ने अपने ७ मार्च के भाषण में कहा था—

" अभी तक यह कभी नहीं हुआ था कि एक पराजित राष्ट्र को विजयी राष्ट्र के मुकाबले में अपने राज्य के छोटे २ भागों पर भी अधिकार न करने दिया जावे। किन्तु इस भारी बलिदान को भी मैं केवल इसलिये पूर्णतया करते जाना चाहता था कि जर्मनी की फ्रांस और इंगलैंड के साथ मित्रता बनी रहेगी और हमारी ओर से सुरक्षा का भाव भी स्पष्ट प्रतिभासित होता रहेगा "

किन्तु अब फ्रांस ने रूस के साथ पारस्परिक सहायता करने का समझौता कर लिया है। यह समझौता, अन्य सन्धियों के समान उसी प्रकार का है, कि समझौता करने वाले राष्ट्र अपने को राष्ट्रसंघ के नियम में बंधा हुआ बतलाते हुए भी झगड़ा होने पर एक दूसरे की सहायता को आ दौड़ें। फ्रांस--रूस सन्धि की

धाराओं के अनुसार चाहे जो कार्य किया जा सकता है, और आक्रान्ता (Agressor) के ऊपर राष्ट्रसंघ के निर्णय की बिना प्रतीक्षा किये भी चढ़ाई की जा सकती है। अतएव अब फ्रांस अथवा रूस कोई भी जर्मनी को किसी भी ऐसे समय आक्रान्ता घोषित कर सकते हैं, जब उनको ऐसा करने की आवश्यकता जान पड़े। तब वह सुगमता से राष्ट्रसंघ के निर्णय की बिना प्रतीक्षा किये हुए ही जर्मनी पर सैनिक आक्रमण कर सकते हैं। फ्रांस और रूस की यह स्वतन्त्रता ही यूरोप की सन्धि के मार्ग में बड़ी भारी बाधा है। इसके अतिरिक्त सोवियट रूस की तुलना जारशाही रूस से तो किसी प्रकार भी नहीं की जा सकती। वर्तमान रूस निश्चय से ही सैनिक शक्ति में बहुत अधिक बढ़ा चढ़ा है। इधर जर्मनी अथवा रूस का युद्ध होने की सम्भावना यूरोप में जर्मनी के अतिरिक्त अन्य किसी भी देश के साथ नहीं की जा सकती। अतएव यही समझा जा सकता है कि यह समझौता विशेष रूप से जर्मनी के ही विरुद्ध किया गया है। इसके अतिरिक्त जर्मनी के इस आरोप का प्रतिवाद भी नहीं किया गया है। इनका अन्य देशों के साथ युद्ध न हो सकने का कारण यह है कि पोलैण्ड, जेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, यूगोस्लैविया और इटली तो फ्रांस के घनिष्ट मित्र हैं। आस्ट्रिया और हंगेरी इटली के साथ बंधे हुए हैं। अतएव यह भी फ्रांस के अप्रत्यक्ष रूप से मित्र ही हैं। उत्तरी बाल्टिक राज्य इतने महत्वपूर्ण नहीं हैं कि वह किसी के लिये भय का कारण बन सकें। अतएव इस

प्रकार की विचार श्रेणि से केवल जर्मनी ही यूरोप में एक ऐसा राष्ट्र बच जाता है जिसके आक्रमण की सम्भावना की जा सकती है। इसके अतिरिक्त इस बात को भी सभी जानते हैं और इसको इस ग्रन्थ के पिछले अध्यायों में बतलाया भी जा चुका है कि नेशनल सोशिएलिस्ट (नाजी) जर्मनी और बोल्शेविक एक दूसरे के कट्टर शत्रु हैं। किन्तु राजनीतिक क्षेत्रों मे यह बात भी छिपी नहीं है कि नवीन जर्मनी का नेता, ऐडल्फ हिटलर इस बात का उद्योग कर रहा है कि जर्मनी की फ्रांस से मित्रता हो जावे। सार का जनमत लिये जाने के पश्चात् उसने घोषणा की थी कि दोनों देशों की परम्परा से चली आई हुई शत्रुता दूर हो जानी चाहिये।

हिटलर ने शस्त्रास्त्रों को परिमित करने, बमों तथा विषैली गैस पर प्रतिबन्ध लगाने आदि के सम्बन्ध में राष्ट्रसंघ को छोड़ देने पर भी समय २ पर अनेक प्रस्ताव किये हैं। किन्तु फ्रांस ने सदा यही उद्योग किया कि इस प्रकार का कोई समझौता न होने पावे। उसने सदा यही कहा कि जर्मनी के राष्ट्रसंघ का दोबारा सदस्य बने बिना उसके प्रस्तावों पर विचार नहीं किया जा सकता। यही परिस्थिति सन् १६३४ ई० तक रही। इस वर्ष जैसा कि दिखलाया जा चुका है जर्मनी के विरुद्ध फ्रांस रूस सन्धि कर ली गई है और उसको दोनों ही देशों की प्रतिनिधि सभाओं ने भी स्वीकार कर लिया है। प्रथम तो इस प्रकार के समझौते की कोई आवश्यकता ही नहीं थी। क्योंकि फ्रांस की सीमा पर

किसी प्रकार के भी भय की सम्भावना नहीं थी। जर्मनी के बड़े से बड़े शत्रु भी यह विश्वास करने को तयार नहीं हैं, कि हिटलर फ्रांस पर आक्रमण करना चाहता है। इसके अतिरिक्त, जर्मनी की ओर की फ्रांसीसी सीमा पर नवीन से नवीन सैनिक अनुसंधानों के आधार पर बड़े से बड़े मजबूत किले बने हुए हैं। सारी सीमा पर मैगनेटो लाइन (Magneto Lane) पड़ी हुई है, जिससे शत्रु के सीमा पर आते ही एक बत्ती लगाने से भी उसको पूर्णतया नष्ट किया जा सकता है। फ्रांस के इस प्रयत्न की प्रशंसा सभी सैनिक विशेषज्ञों ने की है। रूसी अतिथियों ने तो इसकी गत वर्ष भूरि भूरि प्रशंसा की थी। अब कि उस ओर की जर्मन सीमा वारसाई की सन्धि तथा लोकार्नो पैक्ट के कारण पूर्णतया अरक्षित है। फ्रांस रूस सन्धि के अनावश्यक होने का तीसरा कारण यह है कि ब्रिटेन और इटली ने लोकार्नो सन्धि के अनुसार इस बात की शपथ की हुई है कि यदि जर्मनी ने फ्रांस की सीमा पर आक्रमण किया तो वह फ्रांस की सहायता करेंगे। किन्तु इन सब बातों से भी फ्रांस की सुरक्षा की प्यास दूर न हुई और उसने इस सुरक्षा को भी अधिक दृढ़ करने के लिये रूस से सन्धि कर ली। यूरोप के नक्शे को देखने से पता चलता है कि जर्मनी यदि आक्रमण करना भी चाहे तो भौगोलिक परिस्थिति के कारण वह फ्रांस पर ही आक्रमण कर सकता है, रूस पर नहीं। किन्तु यदि फ्रांस अथवा रूस जर्मनी पर आक्रमण करना चाहें तो दोनों ही जर्मनी पर सुगमता से

आक्रमण कर सकते हैं। क्योंकि रूस का कार्य इस सम्बन्ध में उसकी जेकोस्लोवाकिया से सन्धि होने के कारण अत्यंत सुगम है। इधर जेकोस्लोवाकिया की फ्रांस के साथ इस प्रकार की सन्धि है कि वह उसके अंदर से जब चाहे अपनी सेना भेज सकता है। अथवा उसका सैनिक उपयोग कर सकता है। यह अफवाह है कि जेकोस्लोवाकिया के हवाई जहाजों के चौंतीस अड्डे रूसी हवाई सेना के लिये खुले हुए हैं। अतएव परिस्थिति यह है कि जर्मनी सब ओर से शत्रुओं द्वारा घिरा हुआ है, जिसकी वह शिकायत कर सकता है। अतएव इन सब बातों को देखते हुए यही उचित जान पड़ता है कि जर्मनी अपने राइनलैंड प्रदेश को सुरक्षित करे। क्योंकि शत्रुओं के बीच में उसको इस प्रकार अरक्षित रखना अब बुद्धिमानी नहीं है। यदि यूरोप में शान्ति हो सकती है तो वह जर्मन सीमा की सब ओर से रक्षा होने से ही हो सकती है।

इस समय परिस्थिति की विषमता का अनुभव ब्रिटेन, फ्रांस और बेल्जियम सभी में किया जा रहा है। ब्रिटिश सरकार स्वार्थी सन्धियों द्वारा पूर्णतया फ्रांस के साथ बंधी हुई है। वर्तमान ब्रिटिश सरकार भी नए २ उत्तरदायित्व लेकर आर फ्रांस की राजनीति का अनुसरण करके उसी प्रकार की गलतियां कर रही है जिस प्रकार की उसने गत महायुद्ध से पूर्व की थी। गत महायुद्ध के समय सर एडवर्ड ग्रे ने कहा था कि फ्रांस तो महायुद्ध में इस कारण कूदा है कि वह रूस के साथ सन्धि से बंधा हुआ

था। किन्तु ब्रिटेन युद्ध में इस कारण कूदा कि यह फ्रांस के साथ प्रतिज्ञाओं से बहुत कुछ बंधा हुआ था। ब्रिटिश लोकमत के इस विषय में विरुद्ध होते हुए भी ब्रिटेन फिर उसी भयानक मार्ग पर अब भी चल रहा है। यद्यपि ब्रिटिश पर राष्ट्र सचिव मिस्टर ईडन यह घोषणा कर चुके हैं कि उनकी परराष्ट्रनीति राष्ट्रसंघ पर निर्भर है, तो भी लोकार्नो सन्धि के उत्तरदायित्व का वह स्वीकार करते ही हैं।

इस समय रूस और फ्रांस की ओर से संसार भर में यह प्रचार किया जा रहा है कि केवल जर्मनी ही संसार की शांति भंग करने वाला है।

बोल्शेविक विभीषिका

राय हावर्ड से भेंट करते हुए रूस के डिक्टेटर स्टालिन ने अन्य विषयों पर वार्तालाप करते हुए यह भी कहा था—

"आज कल युद्धों की घोषणा नहीं की जाती। वह केवल आरम्भ कर दिये जाते हैं।'

"जब कोई राष्ट्र किसी अन्य राष्ट्र पर आक्रमण करना चाहता है तो चाहे वह उसकी सीमा से दूर ही क्यों न हो, उसकी सीमा को ढूँढना आरम्भ करता है, जिस को पार करके वह उस राष्ट्र की सीमा पर पहुँच सके जिस पर वह आक्रमण करना चाहता है।

"इस प्रकार की सीमाएं या तो शक्ति की सहायता से प्राप्त

करना ही चाहिये। नि शस्त्रीकरण तथा आर्थिक कार्य आदि इसी समय में किये जावेंगे।

इस उद्देश्य के लिये जर्मन सरकार निम्नलिखित शान्ति योजना उपस्थित करती है —

१—यूरोप में शान्ति स्थापना के लिये भविष्य में जो भी संधियां की जावें वह बिल्कुल समानता के आधार पर की जावें। संधि में भाग लेने वाले राष्ट्रों को सभी का सम्मान बराबर समझना चाहिये।

२—समय की अनिश्चितता को दूर करने के लिये जर्मन सरकार यूरोप में अनाक्रमक संधि (Non aggresive Pact) पर हस्ताक्षर करने तक के प्रथम समय की अवधि चार माह करने का प्रस्ताव करती है।

३—जर्मन सरकार विश्वास दिलाती है कि यदि फ्रांस और बेल्जियमकी सरकारों ने भी इसी प्रकार कार्य किया तो इस बीच में राइनलैंड में और सेनाएं नहीं भेजी जावेंगी।

४—जर्मन सरकार विश्वास दिलाती है कि इस बीच में राइनलैंड में स्थित जर्मन सेनाओं को फ्रांस और बेल्जियम की सीमाओं के पास नहीं ले जाया जावेगा।

५—जर्मन सरकार प्रस्ताव करती है कि गारंटी करने वाले राष्ट्र इंगलैंड और इटली का एक कमीशन बनाया जावे। दोनों राष्ट्रों के द्वारा यह विश्वास देने की गारंटी स्वरूप जर्मनी

उनकी तटस्थता की रक्षा के लिये अपने स्वत्व पर इस समय तक के लिये विक्षेप बल न देगा।

६— इस कमीशन में अपने ? प्रतिनिधि भेजने का अधिकार जर्मनी, बेल्जियम और फ्रांस तीनों को ही होगा। यदि जर्मनी, फ्रांस और बेल्जियम का यह विचार हो कि इस बीच में सैनिक परिस्थिति में कोई परिवर्तन हुआ है तो इसकी सूचना गारटी कमीशन को देने का उनको अधिकार होगा।

७—जर्मनी, बेल्जियम और फ्रांस इस बात के लिये सहमत हैं कि ऐसी दशा में वह ब्रिटिश और इटली की सेनाओं द्वारा कमीशन को आवश्यक जांच करके उस पर रिपोर्ट करने की स्वीकृति दें।

८—जर्मनी, बेल्जियम और फ्रांस इस बात का विश्वास दिलावें कि कमीशन की उठाई हुई आपत्तियों पर वह पूर्ण सतर्कता से ध्यान देंगे।

९—इसके अतिरिक्त, जर्मन सरकार अपने दोनों पड़ोसी राष्ट्रों के एहसान के बदले में इस बात के लिये पूर्ण सहमत है कि वह जर्मनी की पश्चिमी सीमा पर सेना के परिमाण को चाहे जितना परिमित कर दें।

१०—जर्मनी, बेल्जियम और फ्रांस तथा गारटी करने वाले दोनों राष्ट्र ब्रिटिश सरकार के नेतृत्व में तुरंत ही अथवा अधिक से अधिक फ्रांस के निर्वाचन के पश्चात् वार्तालाप करें। इसमें एक ओर फ्रांस और बेल्जियम में तथा दूसरी ओर जर्मनी

में परस्पर पच्चीस वर्ष तक आक्रमण न करने का समझौता किया जावे।

११—जर्मनी इस बात के लिये सहमत है कि इंगलैण्ड इस सुरक्षा के समझौते पर गारंटी, करने वाली शक्ति के रूप में हस्ताक्षर करे।

१२—यदि सुरक्षा की इन सन्धियों के परिणाम स्वरूप किसी समय जर्मनी की विशेष सैनिक सहायता की आवश्यकता आ पड़ी तो जर्मनी इस प्रकार की सन्धियों के लिये भी तैयार रहेगा।

१३—जर्मन सरकार सुरक्षा की इन सन्धियों के साथ आकाशीय मार्ग के लिये भी सन्धि करने को तयार है।

१४—जर्मन सरकार यह भी बतला देना चाहती है कि यदि पश्चिमी यूरोप की सुरक्षा की इन सन्धियों में इंगलैण्ड सम्मिलित होना चाहेगा तो जर्मन सरकार को इस में कोई आपत्ति न होगी।

१५—फ्रांस और जर्मनी के कई शताब्दी से चले आने वाले इन झगड़ों के समाप्त हो कर दोनों में सन्धि होने के लिये फ्रांस और जर्मनी यह प्रतिज्ञा करें कि दोनों ही देशों के स्कूलों तथा समाचार पत्रों में इस प्रकार की कोई बात न बतलाई जावेगी, जिससे दोनों राष्ट्रों के सम्बन्ध में बाधा आवे। दोनों ही राष्ट्र इस बात के लिये सहमत हैं कि राष्ट्रसंघ के प्रधान कार्यालय जेनेवा में एक ऐसे सम्मिलित कमीशन की स्थापना की जावे जो दोनों ही सरकारों के सन्मुख आई हुई शिकायतों को रखता रहे।

१६—जर्मनी और फ्रांस अपने २ देशों में जनमत लेकर इन सन्धियों की सम्पुष्टि करें।

१७—अपनी दक्षिणी पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी सीमा के राज्यों को निमंत्रित करके उनके साथ भी इसी प्रकार की अनाक्रमण सन्धियां करने के लिये जर्मन सरकार सहमत है।

१८—जर्मनी संधि की इस प्रकार की बात-चीत के आरंभ होते ही अथवा समाप्त होते ही राष्ट्रसंघ का फिर सदस्य बनने के लिये तयार है। साथ ही जर्मन सरकार आशा करती है कि कुछ समय के पश्चात मित्रता पूर्ण वार्तालाप के द्वारा औपनिवेशिक समानता और अधिकारों के प्रश्न तथा राष्ट्रसंघ की नियमावली को वारसाई के संधिपत्र में से पृथक कर दिया जावेगा।

१६—जर्मनी प्रस्ताव करता है कि एक अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चायती अदालत बनाई जावे, जो भिन्न २ संधिपत्रों की छानबीन करके उन पर निर्णय दे। इसके निर्णय सभी को स्वीकार करने होंगे।

इस पत्र के दूसरे भाग में शस्त्रों के परिमाण को निश्चित करने के क्रियात्मक प्रस्ताव हैं, जिनमें बतलाया गया है कि जर्मन सरकार को संसार भर का समझौता कराने के उद्योग में कोई विश्वास नहीं है, क्योंकि इस प्रकार के कार्यों में कभी सफलता नहीं मिला करती।

समुद्री शस्त्रास्त्रों को कम करने के परिणामों का उल्लेख करते हुए जर्मन सरकार का विचार है कि भविष्य में निरशस्त्रीकरण परिषदों का केवल एक ही उद्देश्य होना चाहिये। उनको

सोचना चाहिये कि आकाशीय युद्ध में युद्ध न करने वालों तथा घायलों की मनुष्योचित रक्षा करने का नियम बनाया जावे। अतएव जर्मन सरकार प्रस्ताव करती है कि इन परिपदों का तत्कालिक व्यवहारिक कार्य निम्न लिखित होना चाहिये—

(१) गैस, विष और भयकर बमों का बनाना बंद किया आवे।

(२) शत्रु की सेना और लड़ने वाले कैम्प से बाहिर खुले हुए नगरों तथा ग्रामो पर किसी प्रकार के भी बम न बरसाए जावें।

(३) युद्ध स्थल से लगभग बारह मील दूर के नगरों पर दूर की मार करने वाली बदूकों से गोलिया न बरसाई आवें।

(४) बड़ी से बड़ी गैस-टकियों का बनाना बंद कर दिया आवे।

(५) भारी नालवाली तोपों का बनाना बंद कर दिया आवे।

६ जर्मन सरकार इस प्रकार के किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय समझौते में भाग लेने के लिये सदा तयार रहेगी।

जर्मन सरकार को विश्वास है कि नि शस्त्रीकरण के लिये किया हुआ उद्योग कोई भी अन्तरराष्ट्रीय विश्वास, और व्यापारिक उन्नति को बढ़ाने में अत्यंन्त महत्त्व पूर्ण सिद्ध होगा। राजनीतिक सन्धियों के पश्चात् जर्मन सरकार आर्थिक समस्याओं के ऊपर अन्य राष्ट्रों से इस प्रकार के प्रस्तावों के सम्बन्ध में वार्तालाप करने के लिये सदा तयार रहेगी। वह यूरोप तथा ससार की आर्थिक परिस्थिति को उन्नत करने का अपने भरसक यत्न करेगी।

चालीसवां अध्याय

लोकार्नो शक्तियों का जर्मनी से पत्र व्यवहार

जर्मन सरकार के उपरोक्त पत्र से लोकार्नो शक्तियों की एक दम आखें खुल गईं। उनको अब जाकर हिटलर की असाधारण राजनीतिक योग्यता का पता लगा। फ्रांस, जो अब तक जर्मनी के साथ कठोरता का व्यवहार करने के लिये ही पैर पटक रहा था, एक दम ठंडा पड़ गया। अब सब को विश्वास हो गया कि हिटलर युद्ध नहीं वरन् वास्तव में ही सन्धि चाहता है। यूरोप तथा फ्रांस तक के सब समाचार पत्रों ने जर्मनी की इस सन्धि योजना की प्रशंसा की।

जर्मनी का यह पत्र बेल्जियम, इंगलैण्ड, फ्रांस और इटली सभी में भेजा गया। इटली और बेल्जियम को तो इसमें कुछ विशेष पूछना नहीं था। किन्तु फ्रांस और इंगलैण्ड को इसमें बहुत कुछ पूछना था।

फ्रांस की प्रश्नावली

फ्रांस ने इस सन्धि योजना पर बड़ी गंभीरता से विचार किया।

इस सम्बन्ध में यह ध्यान रक्खा गया कि इस सन्धि योजना के सम्बन्ध में फ्रांस का अपना व्यवहार सीधे जर्मनी से न कर इंगलैण्ड के द्वारा किया करे। पत्र जर्मनी ने अपनी सन्धि योजना तारीख १ अप्रैल को लंदन के परराष्ट्र विभाग में दी थी, किन्तु फ्रांस और इंगलैण्ड को इस पर विचार करने में अत्यंत अधिक समय लगा। फ्रांस ने इस योजना के सम्बन्ध में अपनी प्रश्नावली ता० २२ अप्रैल सन् १९३६ ई० तक बनाकर अपने लंदन स्थित फ्रेंच राजदूत के पास भेज दी, जिसने उसको ब्रिटेन के परराष्ट्र कार्यालय में पहुँचा दिया।

फ्रांस ने इसमें जर्मनी से निम्न लिखित प्रश्न पूछे हैं—

(१) क्या जर्मनी राष्ट्रसंघ में सम्मिलित होने से पूर्व लोकार्नो के संधि पत्र पर पुनर्विचार करना चाहता है?

(२) क्या जर्मनी डेंजिग कान्स्टीट्यूशन तथा मैमेल की स्थिति को यथापूर्व कायम रखने और आस्ट्रिया की स्वतंत्रता को स्वीकार करता है?

(३) क्या पश्चिमी हवाई सन्धि की घोषणा के अनुसार जर्मनी हवाई सेना की सीमा का निश्चय करने के लिये यथा सामान को भी तयार है?

(४) क्या जर्मनी पूर्वी सीमा पर स्थित देशों के साथ

अनाक्रमण सन्धि करने की इच्छा के साथ उन राष्ट्रों के भी इस अधिकार को स्वीकार करता है कि वे पारस्परिक सहायता के लिये अपने पड़ौसी राष्ट्रों से सन्धि कर सकें ?

(५) क्या जर्मनी इस के लिये तयार है कि यह भविष्य में बिना अन्य राष्ट्रों की सलाह के एक मात्र अपनी इच्छा से ही सधियों को भंग नहीं करेगा ।

ब्रिटेन की प्रश्नावली

ब्रिटेन ने अपनी प्रश्नावली के तयार करने में फ्रांस से भी अधिक समय लगाया । उसका खरीता फ्रांस के खरीते से कहीं लम्बा था । किन्तु उसके प्रश्न फ्रांस के समान स्थानिक न होकर वैधानिक अधिक थे । इसी कारण उस प्रश्नावली को इस ग्रन्थ में नहीं दिया गया।

जर्मनी तथा फ्रांस का सन् ३६ का निर्वाचन

फ्रांस द्वारा फ्रांस-रूस सन्धि तथा हिटलर द्वारा राइनलैंड में सेनाएं भेजना दोनों ही ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्न थे कि उनके विषय में देशवासियों के बहुमत की सम्मति को जानना अत्यंत आवश्यक था । सौभाग्यवश दोनों ही देशों में इन कार्यों के पश्चात् सार्वजनिक निर्वाचन का समय आ गया । जर्मनी के सार्वजनिक निर्वाचन में—जो मई में हुआ—बड़ी धूमधाम रही। इसमें नाज़ी दल के वास्ते राइनलैंड में सेना भेजने के प्रश्न पर ही वोट मांगे गये थ । इस निर्वाचन के फलस्वरूप हिटलर की नाज़ी पार्टी को ६५ प्रतिशतक वोट मिले । अब सब देशों की

की जाती हैं अथवा माग ली जाती हैं ।"

स्टैलिन की इस बात से तथा उसकी जेकोस्लोवाकिया के साथ सन्धि से इस बात का पता स्पष्ट रूप से लग जाता है कि रूस संसार में किस प्रकार की शान्ति चाहता है।

ब्रिटेन का कर्तव्य

इन सब बातों को ध्यान देते हुए इस समय ब्रिटेन के सिर पर ही यह कर्तव्य आकर पड़ता है कि वह इन समस्याओं को सुलझा कर संसार में शान्ति स्थापित करे। क्योंकि वही एक ऐसा राष्ट्र है जो किसी हद तक निष्पक्ष होने का दावा कर सकता है। इसके अतिरिक्त लोकार्नो पैक्ट के उत्तरदायित्व पर ध्यान देने से तो उसका यह कर्तव्य और भी स्पष्ट हो जाता है।

फ्रांस की तयारी

लोकार्नो से सुरक्षा का वचन पाने पर, इतने अधिक मित्र होते हुए भी फ्रांस अपनी पूर्वीय सीमा पर सात आठ करोड़ फ्रैंक की लागत की किलेबन्दी गुप्त रूप से करता रहा है। लोकार्नो के सन्धि के वार्तालाप तथा नि:शस्त्रीकरण परिषदों की बैठकों के समय भी फ्रांस में यही मनोवृत्ति काम कर रही थी। यह किलेबन्दी सन १९३३ ई० में पूर्ण हो चुकी है। आज फ्रांस संसार भर में सबसे बड़ी सैनिक शक्ति है। उसके संसार भर में सबसे मजबूत किले फ्लैण्डर्स पर्वत से लगाकर उत्तरी समुद्र तक फैले हुए हैं। उनकी सहायता के लिये अब उसके पास रूस-फ्रांस सन्धि भी

है। अतएव इस समय परिस्थिति बिल्कुल बदली हुई है। ब्रिटेन को अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहना ही चाहिये। उसने नये उत्पन्न किये हुए खतरों में पड़ने का वचन नहीं दिया था। क्योंकि लोकार्नो पैक्ट के किये जाने के समय की अपेक्षा फ्रांस के ऊपर इस समय खतरा कहीं अधिक है, और यह सब कारण उसी के जुटाए हुए हैं। अतएव इस समय ब्रिटेन का यह कर्तव्य है कि वह इस परिस्थिति को समझ कर अपने सिर व्यर्थ का उत्तरदायित्व न ले।

उनतालीसवां अध्याय

हिटलर का राइनलैण्ड मे सेनाए भेजना

फ्रांस-रूस सन्धि के समाचार के प्रकाशित होते ही यूरोप के राजनीतिक आकाश पर अशान्ति की घटाएं घिर आईं। जर्मन राष्ट्रपति फ्रेडक हिटलर ने रात भर इस सन्धि पर विचार किया। अन्त में उसने यही परिणाम निकाला कि यह सन्धि निश्चय से ही जर्मनी के विरुद्ध की गई है। उसको इस सन्धि में न केवल लोकार्नो पैक्ट की सद्भावनाओं का अभाव ही मिला वरन् उसको स्पष्ट दिखलाई दे गया कि इससे वास्तव में ही लोकार्नो पैक्ट टूट गया है। अतएव लोकार्नो पैक्ट के टूटने की भावना मनमें आते ही उसने अपने को लोकार्नो की प्रतिज्ञा से मुक्त समझ कर तुरंत ही अपनी फ्रांस की ओर की सीमा-राइनलैंड को सुरक्षित करने का निश्चय किया।

जर्मन सेनाओं का राइनलैण्ड में प्रवेश

हिटलर ने जर्मन सेनाओं को आज्ञा दी कि वह राइनलैण्ड में घुस कर उधर की सीमा को पूर्ण सुरक्षित करें। उसने घोषणा की कि वर्तमान् फ्रांस-रूस सन्धि स्पष्ट ही लोकार्नो पैक्ट के विरुद्ध है। अतएव अब जर्मनी उस सन्धि से अपने को मुक्त समझकर राइनलैण्ड पर सैनिक अधिकार कर रहा है। फलस्वरूप जर्मन सेनाओं ने ता० ७ मार्च १९३६ को राइनलैण्ड के निरस्त्रीकृत प्रदेश में प्रवेश किया।

हिटलर ने इस घोषणा में स्पष्ट कर दिया था कि राइनलैण्ड में सेनाएं भेजने का उद्देश्य शान्ति भग करना नहीं, वरन शान्ति की रक्षा करना है। उसने घोषणा की कि शत्रु को दबा कर समार में शान्ति स्थापित नहीं की जा सकती। शान्ति प्रेम तथा समानता के सिद्धान्त का आचरण करने से ही स्थापित की जा सकती है। उसने यह भी घोषणा की कि जर्मनी यूरोप की शान्ति का इच्छुक है। यदि उसके प्रस्तावों को स्वीकार किया जाय तो वह यह गारटी करता है कि यूरोप में आगामी पच्चीस वर्ष तक कोई युद्ध नहीं हो सकता। यदि उसके प्रस्ताव स्वीकार किये जावें तो वह फिर भी राष्ट्रसघ का सदस्य बनने को तयार है।

राइनलैण्ड के अधिकार पर लोकार्नो शक्तियों में खलबली

राइनलैण्ड में जर्मन सेनाओं के प्रवेश से सारे यूरोप में खलबली मच गई। इसकी सबसे अधिक चिन्ता फ्रास को हुई। उसने लोकार्नो में मिलने वाले राष्ट्र—इंगलैण्ड, बेल्जियम तथा इटली

को निमंत्रित करके इच्छा प्रगट की कि जर्मनी को राष्ट्रसंघ की परिभाषा में आक्रान्ता (Aggressor) घोषित किया जावे। फ्रांस की इच्छा इस मामले को राष्ट्रसंघ में उपस्थित करके जर्मनी के विरुद्ध दण्ड व्यवस्था का प्रयोग करने की भी थी। किन्तु जर्मनी के सौभाग्यवश इस समय लोकार्नो शक्तियों में भी एकता नहीं थी। इस समय इटली ऐबीसीनिया के साथ युद्ध में लगा हुआ था, राष्ट्रसंघ ने इटली का केवल विरोध ही नहीं किया था, वरन् उसने स्पष्ट रूप से इटली को आक्रान्ता कह कर उसके विरुद्ध आर्थिक बहिष्कार की दण्डव्यवस्था लागू की थी। इंगलैंड और फ्रांस दोनों ही राष्ट्रसंघ के नेता थे। अतएव इटली इस समय इन दोनों से ही अप्रसन्न था। इसी अप्रसन्नता के कारण इटली ने इस समय जर्मनी के विरुद्ध फ्रांस की पुकार पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। बेल्जियम की शान्ति नगण्य थी ही। अतएव फ्रांस ने केवल इंगलैण्ड से ही रियायत करने का अनुरोध किया। किन्तु इंगलैण्ड को भी सन् १६१४ के महायुद्ध से अच्छी शिक्षा मिल चुकी थी। इसके अतिरिक्त संभवतः —वह हिटलर के कार्य को इतना अनुचित भी नहीं समझता था। अतएव फ्रांस के जल्दी मचाने पर भी इंगलैण्ड ने इस विषय मे शान्ति से ही कार्य लेना उचित समझा।

लदन में लोकार्नो मे मिलने वाली शक्तियों के प्रतिनिधि एकत्रित हुए। अन्तर केवल यह था कि पहिली बार इन में जर्मनी भी था और अब की बार केवल इंगलैण्ड, इटली, फ्रांस, और

जर्मनी ही थे। फ्रांस के अतिरिक्त लगभग सभी सदस्य शीघ्रता करने से पूर्व जर्मनी की बात को पूर्णतया सुनना चाहते थे। किंतु फ्रांस का कहना था कि यदि जर्मनी इस रूस-फ्रांस सन्धि को अनुचित समझता था तो उसको हेग के अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में इसका मुकदमा चलाना चाहिये था। फ्रांस इस बात को स्वीकार करता था कि जर्मन-फ्रांस सीमा के विषय में नयी संधि की आवश्यकता है, किंतु उसका आग्रह था कि जब तक जर्मनी राइनलैंड से अपनी सेनाएं न हटा ले उसकी एक बात न सुनी जावे। किंतु यह शक्तियां जानती थीं कि हिटलर भी आखिर हिटलर ही है। वह इतनी आसानी से सिर झुकाने वाला नहीं है। अन्त में बहुमत से यही निश्चित हुआ कि हिटलर से उस योजना को मागा जावे, जिसके अनुसार वह यूरोप में पच्चीस वर्ष तक युद्ध न होने देने की गारंटी करता है।

इसके अतिरिक्त यह भी निश्चय किया गया कि यदि जर्मनी आक्रमण करे तो उसका एक होकर मुकाबला किया जावे। फल स्वरूप जर्मनी को पत्र भेजकर उसकी सन्धि योजना को जानने की इच्छा प्रगट की गई।

इस पत्र के उत्तर में इंगलैंड के जर्मन राजदूत हर वॉन रिबेनट्राप ने ता० १ अप्रैल १९३६ को इंगलैंड के परराष्ट्र कार्यालय में जर्मनी का निम्नलिखित पत्र मिस्टर ऐन्थोनी ईडन को दिया।

जर्मनी की सन्धि योजना

१—जर्मन जनता का अपनी स्वतन्त्रता और समानता के

दावे की सभी परिस्थितियों में रक्षा करने का पूर्ण निश्चय है। उसका विश्वास है कि यह स्वाभाविक अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धात ही किसी राष्ट्र का जीवन है। इनकी रक्षा में ही राष्ट्र का सम्मान है। राष्ट्रों में पारस्परिक किसी भी व्यवहारिक सहयोग के लिये इनका अस्तित्व अत्यत आवश्यक है। जर्मन जनता इन सिद्धातो से कभी भी पीछे नहीं हट सकती।

२—जर्मन जनता अपनी शक्ति भर अत्यत प्रेम से सार्वजनिक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के महत्त्वपूर्ण कार्य में अत्यंत प्रसन्नता से सहयोग करना चाहती है। यूरोप की रक्षा के लिये, उसकी सभ्यता तथा भलाई के लिये यह आवश्यक है कि यूरोपीय राष्ट्रों में परस्पर सद्भावना उत्पन्न हो।

यह जर्मन जनता की अभिलाषाए होने के कारण जमन सरकार पर भी अनिवार्य रूप से लागू हैं। जर्मन सरकार स्मरण कराना चाहती है कि सन् १९१८ में जर्मनी ने राष्ट्रपति विल्सन के चौदह सिद्धातों के अधार पर अस्थायी सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किये थे। इनमें से किसी में भी राइन प्रदेश के ऊपर जर्मनी के अधिकार में प्रतिबन्ध की कोई बात न थी। इसके विरुद्ध उक्त चौदह सिद्धांतों का आधार मूत सिद्धात इस प्रकार की नवीन अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली का निर्माण था, जिससे अधिक स्थायी शाति की स्थापना हो और जिसमें विजेता और विजित का पक्षपात किये बिना जनता के आत्म निर्णय के सिद्धान्त के सम्बन्ध में अधिक से अधिक पूर्ण न्याय किया जावे। इसके पश्चात यह

समय आया जब वारसाई की संधि पर हस्ताक्षर करने के पश्चात् उसी तारीख से राइनलैंड के प्रश्न पर जर्मनी को अब तक सदा ही दबना पड़ा। इस सम्बन्ध में गत तीन वर्षों में दिये गये जर्मन चैंसेलर के भाषण भी देखने योग्य हैं। किंतु यह प्रत्येक सरकार का कर्तव्य है कि वह अपने राज्य की यूरोप की सेना तथा मंत्रिमंडल की नीतियों से उत्पन्न हुई परिस्थिति से सदा रक्षा करती रहे। जर्मन सरकार यह स्पष्ट घोषणा करने के लिये जर्मन जनता की ऋणी है कि वह सदा ही अपने देश की यूरोप की सेनाओं और मन्त्रिमंडलों की नीति से रक्षा करेगी। वास्तव में यही कार्य रचनात्मक है। जर्मन सरकार पूर्ण विश्वास के साथ यह घोषणा करती है और इस कार्य में समस्त जर्मन जनता उसके साथ है। जर्मन सरकार का विश्वास है कि यूरोप के राजनीतिज्ञों के सन्मुख उपस्थित कार्य को निम्नलिखित तीन कालों में विभक्त किया जा सकता है—

१—वह काल जिसमें मनोमालिन्य क्रमशः कम हो और आरम्भ किये जाने वाले वार्तालाप के लिये अनुकूल और शुद्ध वातावरण बने।

२—यूरोप में शान्ति स्थापना के लिये किये जाने वाले वास्तविक वार्तालाप का समय।

३—उसके बाद का समय, जिसमें यूरोप में शांति स्थापना के लिये किये जाने वाले अन्य कार्य किये जायें। इस समय की अवधि को न तो निश्चित किया ही जा सकता है और न निश्चित

डाक्टर गोएबिल्स

पृष्ठ ३८२

विश्वास हो गया कि हिटलर का कार्य वास्तव में जर्मन जनता की आवाज थी। मई के अन्त में फ्रांस में भी सार्वजनिक निर्वाचन हुआ। यद्यपि इसमें फ्रांस–रूस सन्धि को करने वाले मोशिये फ्लैंडिन की पराजय हो गई। किन्तु फ्रांस के नये चैम्बर ने उक्त सन्धि को स्वीकार कर लिया। अब मिस्टर ब्लम नाम के एक यहूदी सज्जन फ्रांस के प्रधान मंत्री बनाये गये हैं।

फ्रांस और ब्रिटेन के प्रश्नों पर जर्मनी में विचार

पहिले जर्मनी का यह विचार था कि इंगलैण्ड और फ्रांस के प्रश्नों का उत्तर सार्वजनिक निर्वाचन के पश्चात् दिया जावे, किन्तु अबीसीनिया के मामले पर इंगलैण्ड की अस्थिर नीति देखकर जर्मनी ने सम्भवत यही उचित समझा कि इन प्रश्नों के उत्तर तब तक न दिये जावें जब तक इंगलैण्ड की विदेशी नीति स्थिर न हो जावे। वास्तव में इंगलैण्ड की विदेशी नीति की अस्थिरता से जर्मनी मई, जून और जुलाई के महीनों में बहुत परेशान रहा। इस पुस्तक के छपते ? यह समाचार मिला है कि जर्मनी ने ब्रिटिश प्रश्नों का उत्तर तयार कर लिया है। किन्तु यह उनको भेजने के लिये उचित अवसर की प्रतीक्षा में है।

उपसंहार

राइनलैण्ड में जर्मन सेना

जिस समय जर्मनी ने राइनलैण्ड में सेनाएं भेजी थी तो फ्रांस ने उसके पास धमकी भेजी थी कि यदि वह राइनलैण्ड में किलेबन्दी करेगा तो फ्रांस उस कार्यवाही करेगा। किन्तु जर्मनी ने इसकी कोई चिन्ता नहीं की। डाक्टर गोबिल्स का कहना है कि जर्मनी राइनलैण्ड को पूर्णतया सुरक्षित बनाने में व्यस्त है और शीघ्र ही यह कार्य हिटलर के संतोष योग्य पूरा हो जायगा।

इधर बर्लिन का सब से बड़ा हवाई जहाज तथा आक्रमण से रक्षा करने के लिये हजारों मनुष्यों के आने योग्य जमीन के अन्दर का मैदान भी तयार हो गया है।

आदेशप्राप्त देश

जर्मनी की सन्धि योजना से फ्रांस और इंगलैण्ड में उपनिवेशों के सम्बन्ध में बड़ी भारी चिन्ता की जा रही है। इधर जर्मनी में डाक्टर गोबिल्स ने घोषणा की है कि यह समय

आ गया है जब सभी देशों को जर्मनी के उपनिवेश वापिस करने पड़ेंगे। इस प्रश्न को लेकर फ्रांस की प्रतिनिधि सभा में प्रश्न पूछे जाने पर मो० द टाई ने अपने एक ब्राडकास्ट भाषण में अप्रैल १६३६ में घोषणा की थी कि फ्रांस ब्रिटेन के समान अपने आदेश प्राप्त देशों को नहीं छोड़ सकता। आपने आंकड़े पेश करके बतलाया कि जब से कामरून फ्रांस के आदेश में आया है, वह समृद्ध हो गया है। इस समृद्धि का लाभ वहां के मूल निवासियों को अधिक हुआ है।

२३ अप्रैल को कामन सभा में इंगलैण्ड के प्रधान मन्त्री मि० बाल्डविन ने भी इस बात को दोहराया कि ब्रिटिश सरकार का अपने किसी आदेशप्राप्त देश को छोड़ने का विचार नहीं है

जर्मनी में उपनिवेश आंदोलन

इधर जर्मनी में अपने उपनिवेशों को वापिस लेने का आंदोलन बराबर जोर पकड़ता आ रहा है। रीश बैंक के डाइरेक्टर इकी ने जून के आरम्भ में ही बैंक के अफसरों की एक बैठक में भाषण करते हुए कहा कि जर्मनी को कच्चे माल की उतनी ही बड़ी आवश्यकता है, जितनी कि उन उपनिवेशों की जो अंग्रेजों के किसी काम के नहीं हैं। यदि जर्मनी को अपनी आवश्यकताएं पूरी करने का अवसर नहीं दिया गया तो ब्रिटेन, बेल्जियम, फ्रांस, दक्षिणी अफ्रीका और आस्ट्रेलिया को अपने ? आदेशप्राप्त उपनिवेशों का—जो युद्ध से पूर्व जर्मनी के पास थे—शासन छोड़ना पड़ेगा। इससे उन्हें मिलने वाले माल को कोई जोखिम

नहीं होगी।

डाक्टर शैक्ट का भी जर्मनी के खोए हुए उपनिवेश वापिस लेने का आन्दोलन बड़ा व्यापक रूप धारण करता जा रहा है। जर्मनी में प्रत्येक व्यक्ति की यह धारणा होती जा रही है कि उसे अपने उपनिवेश वापिस लेने ही चाहियें। इटली द्वारा अबीसीनिया पर कब्जा किये जाने के बाद से तो जर्मनी अपने उपनिवेशों की माग पर और भी जोर दे रहा है।

इधर 'रीश कालोनियल पेमोसियशन' नाम से जर्मनी में एक नई सस्था की स्थापना हुई है, जो जर्मनी के खोए हुए उपनिवेशों को पुन प्राप्त करने के लिये प्रबल आंदोलन करेगी। प्रचार मंत्री डा० गोयल्स इसकी देख रेख करेंगे।

ब्रिटेन का रुख

इधर ब्रिटेन का लोकमत भी जर्मनी को उपनिवेश वापिस करने के विषय में जागृत होता जाता है। दक्षिण अफ्रीका की यूनियन सरकार के युद्ध मंत्री मि० पीरो ने लन्दन से प्रीटोरिया वापिस आने पर ता० १५ जुलाई को कहा था कि ब्रिटेन के प्रभावशाली क्षेत्रों में यह विश्वास घर करता जा रहा है कि जब तक जर्मनी को उसके छीने हुए उपनिवेशों के बदले में कुछ न मिलेगा ससार में शांति स्थापित नहीं हो सकती। इसका अर्थ है कि अफ्रीका में कुछ प्रदेश जर्मनी को दिये जांय। मि० पीरो ने कहा कि ब्रिटेन में यह विश्वास प्रगट किया जा रहा है कि अफ्रीका में श्वेताग सभ्यता की रक्षा और उसके प्रभुत्व को स्थायी बनाये

रखने के लिये जर्मनी का सहयोग आवश्यक है।

सुना जाता है कि जर्मनी टैंगेनिका को लेना चाहता है। किन्तु मि० पीरो की सम्मति में उसको देना ब्रिटेन के हित की दृष्टि से ठीक न होगा। उनकी इच्छा है कि उसके एवज में जर्मनी को कोई और बड़ा सा उपनिवेश दे दिया जावे। इस सम्बन्ध में शीघ्र ही जर्मनी, ब्रिटेन और फ्रांस में गुप्त मंत्रणा होने की सम्भावना है।

जर्मनी में भारतीय भाषाओं की शिक्षा

जर्मन की एकाडेमी की इण्डिया कमेटी के सहयोग से म्यूनिक यूनिवर्सिटी में आधुनिक भारतीय भाषाओं की पढ़ाई का प्रबन्ध किया गया है। १९३६-३७ के लिये डा० धीरेन्द्र कुमार मेहता को इसका प्रोफेसर नियुक्त किया गया है। यह किसी भी जर्मन यूनिवर्सिटी के लिये अपने ढंग की पहली बात है।

जर्मनी की सामरिक तयारी

आज कल समस्त यूरोप में शस्त्रों की दौड़ जोरों पर है। यह पीछे बतलाया जा चुका है कि जर्मनी ने भी वारसाई के बंधन को तोड़ कर सैनिक तयारी जोर शोर से करनी आरंभ कर दी है। युद्ध के सामान से उसके असंख्य शस्त्रागार भरे पड़े हैं। वैज्ञानिक-आविष्कारों द्वारा ऐसी २ भयकर गैसें बनाकर रक्खी गई हैं कि उनसे एक क्षण में ही लाखों की हत्या की जा सकती है। बारूद, गोलियों और मशीन गनों से तो सारा जर्मनी भरा पड़ा

है। हवाई जहाजों में भरने के लिये बड़े २ भयानक बम्ब बनाये गये हैं।

आजकल संसार में तीन प्रकार की सेना होती हैं—स्थल सेना, जल सेना और हवाई सेना। स्थल सेना के लिये प्रत्येक जर्मन को सैनिक शिक्षा दी जाती है। यह कहा जा सकता है कि वर्तमान सारे का सारा जर्मनी देश एक सैनिक छावनी है। जल सेना के लिये बड़े २ लड़ाई के जहाज बनाये गये हैं। इनका आकार किलों के समान होता है। इनके चारों ओर लोहा छवा होता है। इनमें मशीनगनें, तोपें और हवाई जहाज रखे होते हैं। लड़ाई के लिये इनको सदा तयार होना पड़ता है।

<u>हवाई-सेना</u>—जर्मनी की हवाई उन्नति के विषय में पीछे बहुत कुछ लिखा जा चुका है। उसकी हवाई सेना प्रतिदिन अधिकाधिक बलिष्ट होती जा रही है। हवाई जहाजों की संख्या इतनी अधिक बढ़ गई है कि वह विश्वविद्यालयों के अहातों में रखे जाने लगे हैं। हवाई जहाजों के अतिरिक्त ज़ैप्लिन भी बहुत बनाये गये हैं। ज़ैप्लिन हवाई जहाज की अपेक्षा बहुत बड़ा होता है। इसमें एक साथ सौ आदमी बैठ सकते हैं। इसका वेग हवाई जहाज से कई गुना अधिक होता है। इसमें एक बार जला हुआ पट्रोल ७५०० मील तक काम दे सकता है। इनकी सहायता से खाने की सामग्री शस्त्र तथा सैनिक पहुंचाये जाएंगे। आगामी युद्ध में वायुयानों का प्रयोग बहुत होगा, इसलिये यूरोप के सभी देश अभी से 'बम्ब रक्षित' मकान बनाने लगे हैं।

जर्मनी के शस्त्रीकरण में सब से अधिक भयानक यन्त्र सबमेरीन टारपीडो और जैप्लिन हैं। इन यन्त्रों के विषय में संसार का कोई देश जर्मनी का मुकाबला नहीं कर सकता।

सबमेरीन टारपीडो एक गोताखोर किश्ती होती है। गत महायुद्ध में इन्हीं की सहायता से जर्मनी ने अनेक जहाज डुबाये थे। इसलिये इनको पनडुब्बी भी कहते हैं। अब इसको पहिले की अपेक्षा भी अधिक भयानक बना लिया गया है। आजकल तो इसकी यह अवस्था है कि जर्मनी के पास डुबकी लगा कर अमरीका के पास निकलती है। इसकी सहायता से जर्मनी युद्ध के दिनों में भी व्यवसाय कर सकेगा।

ता० २६ अप्रैल १६३६ को ब्रिटेन की कामन सभा में बजट के ऊपर बहस करते हुए मि० चर्चिल ने जर्मनी की शस्त्र-वृद्धि के विषय में ऐसी आश्चर्य जनक बातें बतलायीं कि सभा सन्नाटे में आगई।

आपने कहा कि मुझे अत्यंत प्रमाणिक स्रोत से विदित हुआ है कि मार्च १६३३ के अंत से सन् १६३५ के अंत तक जर्मनी के सार्वजनिक ऋण में ७ अरब मार्क की वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त बढ़ाये हुए करों से भी ५ अरब मार्क की प्राप्ति हुई है। इस प्रकार साधारण बजट के अतिरिक्त ३॥ वर्षों में कम से कम बारह अरब मार्क अधिक खर्च किया गया है।

इसके अतिरिक्त इतने समय में जर्मनी का पूंजी-व्यय चौबीस अरब तक पहुंच गया है। खाली आर्थिक उद्देश्य से प्राईवेट

फारखानों के विस्तार पर प्रतिबन्ध लगा होने से समझा जा सकता है कि यह खर्च एक दम युद्ध की तयारियों में किया गया है।

जर्मनी की राष्ट्रीय आय १६३३ में १ अरब २० करोड़ मार्क से बढ़ कर १६३५ में ११ अरब मार्क तक पहुंच गई है। यह परिणाम शस्त्रास्त्र व्यवसाय को आरंभ करने का ही है। हर हिटलर के प्रभुत्व में आने के बाद से कुल मिलाकर २० अरब मार्क तक खर्च किया जा चुका है।

मि० चर्चिल का कहना है कि केवल १६३५ में ही जर्मनी ने युद्ध की तयारी में ८० करोड़ पौंड खर्च किये थे।

अपने भाषण के अन्त में आपने कहा कि यूरोप चरम सीमा की ओर दौड़ रहा है। वह इस पार्लमेंट के जीवन काल में ही चरम सीमा तक पहुंच जायगा। या तो वहां जाकर बड़े २ राष्ट्रों के हृदय मिल जावेंगे और वह एक दूसरे से हाथ मिला लेंगे, अथवा ऐसे भयंकर विस्फोट और आपत्तियों का सूत्रपात हो जावेगा, जिसके परिणाम की कल्पना मानवीय नेत्रों से परे है। यदि राष्ट्रों का मेल हो गया तो समृद्धि का उज्वल युग हमारे सामने आजावेगा; अन्यथा विनाश ही विनाश है।

जर्मनी के वर्तमान राजनीतिक सम्बंध

वैसे तो राष्ट्रसंघ से त्यागपत्र देते ही जर्मनी की वर्तमान सरकार का अन्तराष्ट्रीय सम्मान बढ़ गया था, किन्तु वार्सा-लस सन्धि के विरुद्ध यूरोप की प्रमुख शक्तियों को युद्ध की चुनौती

देकर राइनलैण्ड पर अधिकार करने से तो उसका सम्मान अत्यधिक बढ़ गया है। इस समय ससार के सब से प्रबल राज्य यह समझे जाते हैं और जर्मनी की भी उनमें गणना की जाती है–

सयुक्त राज्य अमरीका, इंगलैण्ड, जर्मनी, रूस, फ्रास, और इटली।

अतएव इस प्रकार के उत्तम सम्माननीय स्थान को प्राप्त कर लेने पर यह अनिवार्य था कि संसार की विभिन्न शक्तियां जर्मनी का हाथ थामने के लिये उसका मुह जोती।

जर्मनी और इटली में नई सन्धि

वैसे तो हिटलर के शासनारूढ़ होते ही मुसोलिनी ने उस से चार शक्तियों की रोम में कान्फ्रेस करके सन् १६३३ में मित्रता की थी, किंतु इस बार इटली के अबीसीनिया पर आक्रमण करने और राष्ट्रसघ का उसका विरोध करने से मुसोलिनी की इच्छा भी यूरोप में अपना गुट्ट बनाने की हुई।

जून १६३६ ई० के प्रथम सप्ताह में इटली और जर्मनी में एक गुप्त सन्धि होने का समाचार मिला था, जिसके अनुसार इटली जर्मनी की उपनिवेशों की माग का समर्थन करने वाला था, और जर्मनी के आस्ट्रिया की स्वाधीनता को अविरोध मान लेने की बात थी। किंतु तारीख २७ जून सन् १६३६ ई० को सरकारी तौर पर घोषणा की गई कि इटली और जर्मनी में दोनों देशों के हवाई यातायात की सुविधा एव सुव्यवस्था के लिये एक दश-वर्षीय सन्धि हो गई है। अनुमान किया जाता है कि इस

सन्धि के अनुसार इटली और जर्मनी में आने जाने वाले हवाई जहाजों के वर्तमान क्रम में कुछ परिवर्तन किया जावेगा।

इस सन्धि के अनुसार इटली एजियन द्वीप में एक हवाई अड्डा बनवावेगा, जिसका प्रयोग जर्मनी तुर्की और मध्य यूरोप तक के हवाई मार्ग पर कर सकेगा।

जर्मनी और चीन में गुप्तसंधि

ता० २६ जून को जापान की राजधानी से समाचार मिला है कि गत मई मास में बर्लिन में जर्मनी और चीन ने एक ऐसे सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर किये हैं कि जर्मनी चीन के 'टंगस्टन' (Tungston) नामक खनिज पदार्थ और तेल के बदल में उसे शस्त्रास्त्र भेजेगा। यह लेन-देन लगभग आठ लाख का होगा। इस समाचार का चीन तथा जर्मनी दोनों के ही अधिकारियों ने खंडन किया है। किन्तु अधिकारी क्षेत्रों में इस प्रकार की सन्धि को वास्तविक रूप ही दिया जा रहा है।

जर्मनी और आस्ट्रिया की सन्धि

इस ग्रन्थ के पिछले अध्यायों में जर्मन आस्ट्रियन भाग और उसके प्रति हिटलर की महत्त्वाकांक्षा का पर्याप्त वर्णन किया जा चुका है। हिटलर का विश्वास है कि जर्मनी और आस्ट्रिया दोनों को मिलकर एक राज्य ही बन जाना चाहिये। यह आन्दोलन किसी न किसी रूप में महायुद्ध से पूर्व भी था। नाज़ी सरकार के शासनारूढ़ होने पर इस आन्दोलन को अधिक प्रोत्साहन मिला, जिसके फलस्वरूप आस्ट्रिया में सहस्रों नाज़ियों को पकड़

कर जेल में ठूस दिया गया।

गत मास के पत्रों में समाचार आया था कि आस्ट्रिया में हैप्सबर्ग राजपरिवार के उत्तराधिकारी राजकुमार ओटो को गद्दी पर बिठा कर फिर से राजतन्त्र शासन प्रणाली स्थापित करने का आन्दोलन किया जा रहा है। सुनते हैं कि मुसोलिनी की इसमें सहानुभूति है और मुसोलिनी के ही द्वारा हिटलर को भी सहमत बनाने का उद्योग किया जा रहा है।

किन्तु ता० १२ जुलाई १६३६ ई० को बर्लिन और वियाना से जर्मनी और आस्ट्रिया में एक सन्धि होने का समाचार मिला। इस सन्धिपत्र में निम्नलिखित बातें हैं—

(१) जर्मनी आस्ट्रिया की पूर्ण स्वाधीनता को स्वीकार करता है।

(२) प्रत्येक देश दूसरे देश के आन्तरिक मामले में हस्तक्षेप न करने का वचन देता है। आस्ट्रियन नेशनल सोशिएलिज्म के प्रश्न पर भी जर्मनी मौन रहेगा।

(३) आस्ट्रिया की नीति विशेष कर जर्मनी के सम्बन्ध में इस आधार पर होगी कि आस्ट्रिया जर्मनी की एक स्टेट है।

रोम प्रोटोकोल १६३४ तथा १६३६ और आस्ट्रिया, इटली और हंगरी की मित्रता पहले के समान ही बनी रहेगी।

आस्ट्रो-जर्मन-पैक्ट की समाप्ति पर डा० शुपनिग के तार का जवाब देते हुए हिटलर ने निम्नलिखित तार दिया।

"आशा है कि यह पैक्ट आस्ट्रो-जर्मन जातीय एकता और

सदियों पुराने इतिहास से उत्पन्न परम्परागत सम्बन्ध को फिर से स्थापित करेगा और सयुक्त जर्मन राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त बनाते हुए यूरोप की शान्ति को दृढ करेगा।

यूरोप के पत्रों ने इस आस्ट्रो-जर्मन पैक्ट पर अनेक प्रकार की टिप्पणिया कीं। रोम के पत्र इसको मुसोलिनी की राजनीति की विजय समझते हैं। फ्रांस तथा रूमानिया के पत्र इस सन्धि पर भय प्रगट करते हुए इसमें अशान्ति की छाया देख रहे हैं।

लंदन के राजनीतिक हल्कों में—यह जानते हुए भी कि इस पैक्ट के कारण रीश की आस्ट्रियन नीति में बहुत अन्तर आजायेगा—पैक्ट का स्वागत किया गया है। अब जर्मनी आस्ट्रिया में एक विशाल आर्थिक योजना आरंभ करेगा, जिसके फलस्वरूप दोनों देश एक दूसरे के और अधिक समीप आ जावेंगे।

इस पैक्ट के कारण आस्ट्रियन चैंसेलर डा० शुशनिग ने एक घोषणा करके दस सहस्र नाजी २४ जुलाई को समाजवादी और साम्यवादी राजबन्दियों को छोड़ने का निश्चय किया है। जिन १०० नाजियों पर राजनीतिक अपराधों के कारण मुकदमे चल रहे थे वह भी वापिस ले लिये गये थे।

अब दोनों देशों के समाचार पत्र एक दूसरे देश में आ जा सकेंगे। वस्तु विनमय के लिये बार्टर के आधार पर एक एक आर्थिक योजना बनाई गई है।

इस पैक्ट के फलस्वरूप पहला शासन कार्य यह हुआ कि आस्ट्रियन मन्त्रिमण्डल में बिना किसी पद के एडमण्ड ह्रासटेन को लिया गया। यह जर्मन-पक्षपाती आस्ट्रियन मन्त्रिमण्डल में जर्मन सरकार का विश्वस्त प्रतिनिधि होगा।

मुसोलिनी ने इस सन्धि का अभिनन्दन करते हुए कहा कि इसके द्वारा यूरोप के पुनर्निर्माण की ओर उल्लेख योग्य कदम उठाया गया है।

इटली और जर्मनी की मैत्री के बीच जर्मनी द्वारा आस्ट्रियन स्वाधीनता का स्वीकार किया जाना ही एक बाधक कारण था, अब उसके दूर हो जाने से यह दोनों देश भी एक दूसरे के अधिक निकट आ जायेंगे।

इस सन्धि का श्रेय मुसोलिनी, जमनी के आस्ट्रियन राजदूत हर वॉन पैपन और आस्ट्रियन चैंसेलर डा० शुपनिग को दिया जाता है।

राजनीतिक क्षेत्रों में कहा जा रहा है कि गत महायुद्ध से पूर्व जिस प्रकार जर्मनी आस्ट्रिया-इटली का एक त्रिगुट था, वही फिर से बन गया है। किन्तु इस बार इटली छोटा हिस्सेदार नहीं है।

लोकार्नो कान्फ्रेंस का नया रूप

जर्मनी के राइनलैण्ड पर अधिकार करने के विरुद्ध फ्रांस २२-२३ जुलाई को लोकार्नो शक्तियों की कान्फ्रेंस करना चाहता था, किन्तु उपरोक्त सन्धियों के कारण मुसोलिनी ने बेल्जियम

सरकार को इस निमन्त्रण के उत्तर में लिखा कि वह बिना जर्मनी के ऐसी किसी कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिये तयार नहीं है। मुसोलिनी के इस स्पष्ट उत्तर से केवल इंगलैण्ड, फ्रांस और बेल्जियम की ही कान्फ्रेंस ता० २२ जुलाई को लंदन में की गई। क्योंकि प्रारंभिक बातचीत में जर्मनी को तो बुलाना इष्ट नहीं था और इटली उसके बिना आना नहीं चाहता था। इस कान्फ्रेंस में फ्रांस का रुख काफी मुलायम रहा। कान्फ्रेंस ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि लोकार्नो पैक्ट के स्थान में जर्मनी के साथ एक नई सन्धि की जावे, और इस सन्धि के लिये बातचीत करने के स्थान तथा समय का निश्चय इटली और जर्मनी की सम्मति से बाद में किया जावे।

संभवत उस नई सन्धि का वर्णन इस ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण में किया जावेगा।

हमारा द्वितीय ग्रन्थ

आत्म निर्माण

(देशभक्त ला० हरदयाल के Hints For Self Culture के पूर्वार्द्ध के आधार पर)

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। आधुनिक विज्ञान के द्वारा किये हुए आधुनिक आविष्कारों ने न केवल प्रांतों की, वरन् देशों, महाद्वीपों और महासागरों की सीमाओं तक को तोड़ डाला है। आज समस्त देशों के एक मनुष्य जाति के नाम पर अधिक से अधिक समीप होने की आवश्यकता है। इस विश्वबधुत्व (Cosmopolitanism) के मार्ग में बाधक—समाज, धर्म, जाति और राष्ट्र तक को भूल जाने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। देशभक्ति भी जब तक हमको अन्य देशों के निवासियों से घृणा करने का पाठ सिखाती है इस विश्वबंधुत्व के मार्ग में बाधक है। यह पुस्तक वास्तव में बुद्धिवाद (Rationalism) और विश्वबधुत्व की बाइबिल है। इसके चार खण्ड हैं —

बुद्धि निर्माण, शरीर निर्माण, ललित रुचिनिर्माण और चरित्र निर्माण। प्रस्तुत पुस्तक में आरम्भिक तीन खण्डों को ही दिया गया है।

बुद्धिनिर्माण में अनेक प्रकार के विज्ञानों तथा अन्य विद्याओं—गणित, तर्कशास्त्र, भौतिक विज्ञान रसायन विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान,

सरकार को इस निमन्त्रण के उत्तर में लिखा कि वह बिना जर्मनी के ऐसी किसी कांफ्रेंस में सम्मिलित होने के लिये तयार नहीं है। मुसोलिनी के इस स्पष्ट उत्तर से केवल इंगलैण्ड, फ्रांस और बेल्जियम की ही कान्फ्रेंस ता० २२ जुलाई को लंदन में की गई। क्योंकि आरंभिक बातचीत में जर्मनी को तो बुलाना इष्ट नहीं था और इटली उसके बिना आना नहीं चाहता था। इस कान्फ्रेंस में फ्रांस का रुख काफी मुलायम रहा। कान्फ्रेंस ने इस बात को स्वीकार कर लिया कि लोकार्नो पैक्ट के स्थान में जर्मनी के साथ एक नई सन्धि की जावे, और इस सन्धि के लिये बातचीत करने के स्थान तथा समय का निश्चय इटली और जर्मनी की सम्मति से बाद में किया जावे।

सम्भवत उस नई सन्धि का वर्णन इस ग्रन्थ के द्वितीय संस्करण में किया जायेगा।

हमारा द्वितीय ग्रन्थ

आत्म निर्माण

(देशभक्त ला० हरदयाल के Hints For Self Culture के पूर्वार्द्ध के आधार पर)

वर्तमान युग वैज्ञानिक युग है। आधुनिक विज्ञान के द्वारा किये हुए आधुनिक आविष्कारों ने न केवल प्रान्तों की, वरन् देशों, महाद्वीपों और महासागरों की सीमाओं तक को तोड़ डाला है। आज समस्त देशों के एक मनुष्य जाति के नाम पर अधिक से अधिक समीप होने की आवश्यकता है। इस विश्वबंधुत्व (Cosmopolitanism) के मार्ग में बाधक—समाज, धर्म, जाति और राष्ट्र तक को भूल जाने की आवश्यकता प्रतीत हो रही है। देशभक्ति भी जब तक हमको अन्य देशों के निवासियों से घृणा करने का पाठ सिखाती है इस विश्वबंधुत्व के मार्ग में बाधक है। यह पुस्तक वास्तव में बुद्धिवाद (Rationalism) और विश्वबंधुत्व की बाइबिल है। इसके चार खण्ड हैं —

बुद्धि निर्माण, शरीर निर्माण, ललित कलानिर्माण और चरित्र निर्माण। प्रस्तुत पुस्तक में आरम्भिक तीन खण्डों को ही दिया गया है।

बुद्धिनिर्माण में अनेक प्रकार के विज्ञानों तथा अन्य विद्याओं-- गणित, तर्कशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान,

आकाशज विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणि विज्ञान विज्ञान के इतिहास, विज्ञान के आरम्भिक सिद्धान्त, इतिहास, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र, दर्शन शास्त्र, समाज विज्ञान, भाषाओं, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अथवा विश्वभाषा, और तुलनात्मक धर्म का वर्णन करते हुए उनके अध्ययन की विधि और बुद्धिवाद में उनके प्रयोग का वर्णन किया गया है।

शरीर निर्माण में उत्तम स्वास्थ्य को प्राप्त करने की विधि और ललित रुचि निर्माण में भिन्न २ ललित कलाओं—वास्तुकला (Architecture) आलेख्यकला (Sculpture), चित्रकला, संगीत, कला, वक्तृत्व कला, कवित्वकला और उनके बुद्धिवाद में उपयोग का वर्णन किया गया है।

वास्तव में इस पुस्तक को पढ़कर आप सब प्रकार ~ अधविश्वासों तथा अविषयों को छोड़कर प्रत्येक बात पर विशुद्ध वैज्ञानिक ढंग से विचार करना सीख जायेंगे।

दर्शनक डा० हरदयाल की अनुपम लेखनी का चमत्कार देखना हो तो आज ही इस पुस्तक को मंगाकर पढ़ें।

आर्डर हाथों हाथ आ रहे हैं। शीघ्रता कीजिये अन्यथा आगामी संस्करण के लिये ठहरना पड़ेगा।

कला पुस्तक माला की प्रत्येक पुस्तक के समान लगभग ४०० पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य भी ३) ही है। साथ में कपड़े की पक्की जिल्द और तिरंगा टाईटिल है।

//